नरसिंहपुराण भापा की भूमिका।

भगवान्‌के दशो अवतारोंमेंसे नृसिंहावतारके भक्तोंके उप-
ारके लिये श्रीव्यासजीने इसनृसिंहपुराणको रचाहै और यों-
तो इसमें उन्होंने सर्ग,प्रतिसर्ग, मन्वन्तर तथा भगवान्‌के सब
अवतारोंकी कथा और अनेक भक्तोंके चरित्र वर्णन किये हैं पर
वेशेष करके नृसिंह भगवान्‌के चरित्रोंका अति विस्तारपूर्वक
वर्णन है। इसके सिवाय सूर्य तथा सोमवंशी प्रधान समराहों
के चरित्र ऐसे ढंगसे वर्णन किये हैं कि जिनके पढ़ने सुननेसे
कि हृदयमें एक अति अपूर्व प्रकाश होकर अवश्यही भक्ति
न होतीहै। भगवान् अपने भक्तों की रक्षा में कैसे तत्परहैं
र कैसे सहाय करते हैं यह बात इसके पठन से अच्छी प्र-
र दृष्टित होती है नृसिंहचौदश आदि व्रतोंका विधान और
जन की युक्ति भी इसमें वर्णितहै॥

वास्तविक इस पुराणके भाषानुवाद से सर्व साधारण और
वेशेषकर भगवान् नृसिंहके भक्तोंका वडा उपकारहुआ क्योंकि
योंतो सभी पुराणों में नृसिंहावतार का थोडा वहुत वर्णन है
पर इसमें विधिपूर्वक सबवृत्तांत वर्णन कियागयाहै और भाषा
होजाने से सबलोग पढ़कर उसके आशयको समझसके हैं॥
आशाहै कि सर्व साधारण इसे आदरपूर्वक ग्रहण करेंगे॥

द० मैनेजर अवध अखबार
लखनऊ मुहल्ला हजरतगंज

अथ नरसिंहपुराण भाषा की भूमिका ॥

वास्तविक भगवान् वेदव्यासजीने द्वापरके अंतमें पुरा[illegible] को रचकर देशका बड़ा उपकारकिया—इनमें उन्होंने चारो वेदों और छहो शास्त्रोंका आशय लेकर उपासना, कर्मकाण्ड, भक्ति ज्ञान, वैराग्य, नीति, ज्योतिष, वैद्यक इत्यादि२ अनेक उपकार और आश्चर्य विषयोंको लिखाहै जिनके देखनेसे हमारे [illegible] के हजारों बरसों पहिलेके धर्म, कर्म, आचार, व्यवह[illegible] हन के ढंग बहुत अच्छी तरह से मालूम होते हैं औ[illegible] षयक आख्यानोंके पठनमात्रसे मनुष्य शुभकर्मों के अ[illegible] करके उच्च और उत्तम पदवीको पहुँचसक्ते हैं। वेदव्यास[illegible] इन पुराणों में अनेक ऋषियों, मुनियों, भक्तों, महाराजों [illegible] समराहों तथा गुणी और निर्गुणी, पराक्रमी और बीरोंके ऐसे [illegible]नेक इतिहास लिखेहैं जिनके पढ़नेहीसे भक्ति, श्रद्धा और संत[illegible] एवम् उत्साहका अंकुर मनुष्यके हृदयमें उत्पन्न होता है और एक अति विचित्र आनन्द प्राप्त होता है ॥

इसके सिवाय उन्होंने इनमें भगवान् विष्णुके दशो अवतारों, अनेक देवी देवतों और तीर्थोंका वृत्तांतभी अतिविस्तार पूर्वकलिखाहै—एवम् दानोंका विधान, व्रतोंका माहात्म्य, पुण्यों के फल और पापोंके दण्ड; प्रायश्चित्तोंकेविधान और ब्राह्मण-क्षत्रिय आदि वर्णों और गार्हस्थ्य आदि आश्रमोंके धर्म कर्म पृथक् २ वर्णन किये हैं। निदान सृष्टिसे लेकर प्रलयतक और जन्मसे मरण पर्यन्तके सभी वृत्तांत लिखे हैं और मरणके उपरान्त तथा मनुष्य शरीर धारण करनेमें क्या २ दुःख सुख भोगने पड़तेहैं एवम् किन उपायोंसे मनुष्य मुक्तिको प्राप्तहो अचल सुखका भागी होताहै—यह सब अति वि[illegible]

अथ नरसिंहपुराण भाषा का सूचीपत्र ॥

नरसिंहपुराण भाषा का सूचापत्र ।

इति ॥

नरसिंहपुराण भाषा ॥

पहिला अध्याय ॥

श्लो० लक्ष्मीनृसिंहौकुरुतेप्रणम्य भाषान्तरंविप्रमहेशदत्तः ॥
श्रीमन्नृसिंहोपपुराणकस्यप्रीत्यैसतामल्पधियाम्मनोज्ञम् १

चौपै० नरसिंहमुरारी जगदघहारी चरणकमल शिरनाई ।
नरसिंहपुराणा सहितप्रमाणा भाषान्तर सुखदाई ॥
मैंकरतयथामति करिबुधगणनति करहिंकृपाहितजानी ।
नहिंजानतसंस्कृतजोजनतिनहितरचतनमृषाबखानी २

दो० यहि नरसिंहपुराणमहँ अरसठि हैं अध्याय ॥
सकलव्यासवर्णितसुबुध देखहिंअतिहरषाय ३
तहां प्रथमअध्याय महँ सबपुराण प्रस्ताव ॥
बहुरि सृष्टिकह सूतजू करिकै बहुत बनाव ४

श्रीनारायण नरोंमें उत्तमनर देवी व सरस्वती के नमस्कार करके फिर जयउच्चारण करनाचाहिये तपायेहुये सुवर्णके समान चमकतेहुये केशोंके मध्यमें प्रज्वलित अग्निकेतुल्य नेत्रवाले व बज्रसेभी अधिक नखोंसे स्पर्श करनेहारे दिव्यसिंह तुम्हारे नमस्कारहै १ क्षेत्ररूपी हिरण्यकशिपु दैत्य की छाती के रुधिर रूप कीचड़ के लगजानेसे लाल नृसिंहजीके हलरूप नखों के अग्रभाग आपलोगोंकी रक्षाकरें २ वेद के पारगामी त्रिकाल-

दर्शी महात्मा हिमवान् पर्व्वतपरकेवासी व नैमिषारण्यके रहने वाले मुनिलोग ३ और जो अर्व्वुदनाम वनके निवासी पुष्करारण्यबासी महेन्द्रपर्व्वतके रहनेवाले व बिन्ध्याचलपरकेनिवासी ४ धर्म्मारण्यके रहनेवाले दण्डकारण्यके वसनेवाले श्रीपर्व्वत परकेवासी व कुरुक्षेत्रके निवासी ५ कौमारपर्व्वतपरके निवासी व पम्पासरके तीरके रहनेहारे ये व और भी बड़ेशुद्ध मुनिलोग अपने २ शिष्योंसहित ६ माघमासमें प्रयागजीमें स्नानकरने केलियेआये वहां स्नानकर व मन्त्रजपादिकर ७ माधवदेवके नमस्कारकर व पितरोंका तर्प्पणकर उस पुण्यतीर्थके निवासी भरद्वाजजीकोदेख ८ उनकी पूजा विधिपूर्व्वककर व उनसे आप सब पूजितहो कुशासनादि आसनोंपर ९ भरद्वाजजी की आज्ञासेबैठ कृष्णचन्द्रके विषयकी बहुतसी कथा आपसमें कहने लगे १० जब वे महात्मालोग कथा कहकहाचुके तो वहां महातेजस्वी सूतजी कहींसे आगये ११ ये व्यासजीके शिष्य सब पुराणोंके जाननेवालेथे इनका लोमहर्षण नामहै वे आय सब मुनियोंके यथायोग्य प्रणामकर व उनसबोंसे आपभी पूजितहो १२ भरद्वाजजीकी आज्ञासे बैठगये तब व्यासजीके शिष्य उन लोमहर्षणजीसे सबमुनियोंके आगे बैठेहुये भरद्वाजजीने पूँछा १३ कि हे सूत शौनकके महायज्ञमें पूर्व्वसमय इनमुनियोंसहित हमने बाराहसंहिता तुमसे सुनीथी १४ अब इससमय तुमसे नारसिंहपुराणसंहिता सुनाचाहते हैं व येसबमुनिलोगभी सुननेहीकी इच्छासे यहां बैठेहैं १५ इससे हम तुमसे यह प्रश्न इन सब महात्मा महातेजस्वी बहुतकुछ जाननेवाले मुनियोंके आगे करतेहैं १६ यह संसार कहांसे उत्पन्नहोताहै व इसकी पालना कौन करता व यह चराचर जगत् अन्तमें लीन किसमें होताहै १७ पृथ्वीका प्रमाण कितनाहै व नृसिंह देवदेव किससे प्रसन्न होते हे महाभाग यह सब हमसे वर्णनकरो १८ सृष्टिकी आदि

कैसेहोती व अन्तभी कैसेहोता युगोंकी गणना कैसे होतीहैं व चतुर्य्युगी किसेकहतेहैं १९ इन सबयुगोंमें विशेषता कौनसी है व कलियुगमें और युगोंकी अपेक्षा कौन विशेषताहै मनुष्योंको छोड़ और लोग नृसिंह भगवान्‌की आराधना कैसे करतेहैं २० तीर्थ कौन २ बहुत पुण्यदायकहैं व पर्व्वत कौन २ पुण्यरूप हैं व मनुष्योंके पापहरनेवाली नदियां कौन २ बहुत पुण्यवाली हैं २१ देवादिकोंकी सृष्टि कैसेहोतीहै व मन्वन्तरों की कैसे ऐसेही प्रथम विद्याधरादिकों की सृष्टि कैसेहुई २२ अश्वमेधादि बड़े२ यज्ञकरनेवाले कौन २ राजाहुये व कौन२परमगतिको पहुँचे हे महाभाग यह सब यथाक्रम हमसे कहिये २३ इतनासुन सूतजी बोले कि हे तपस्वीलोगो श्रीव्यासजीके प्रसादसे हम सब पुराण जानतेहैं अब उन्हींके प्रणामकर नरसिंहपुराण आपलोगों से कहतेहैं २४ पराशरमुनिके पुत्र परमपुरुष जगत् व देवताओंके उत्पन्न करनेके स्थान सब विद्यावान् बड़ीमति देनेवाले वेद व वेदांगोंसे जाननेकेयोग्य निरन्तर शांतचित्त विषयबासना को निवृत्तकियेहुये शुद्धतेजसे प्रकाशित सबपापरहित श्रीवेदव्यास जीके सबप्रकारसे हम नमस्कार करतेहैं२५ व जिनके प्रसादसे इसवासुदेवजीकीकथाको हमकहेंगे उनअमिततेजस्वी भगवान् व्यासजीके नमस्कार करतेहैं २६ हे भरद्वाजजी जो प्रश्न आपने बहुत निर्णयकरके कियाहै वह बड़ाभारी है विना श्रीविष्णु भगवान्‌के प्रसादसे कोईभी इसका उत्तर नहीं देसक्ता २७ तथापि नृसिंहजीहीके प्रसादसे इससमय महापुण्यदायक पुराण कहेंगे भरद्वाजजी हमसे श्रवणकरो२८व हे सबमुनिलोगो आप लोगभी अपने २ शिष्योंके साथ बैठेहुयेनृसिंहपुराण सुनो हम जैसाकातैसा वर्णनकरतेहैं २९ नारायणही से यह सब जगत् उत्पन्नहोता व वही नरसिंहादिमूर्त्ति धारणकरके इसकापालन करतेहैं ३० व इसीप्रकार अन्तमें यह सब जगत् प्रकाशरूपी

श्रीहरिमें लीनहोजाताहै अब जिसप्रकार श्रीनारायण भगवान् इसे उत्पन्न करतेहैं हम कहतेहैं सुनिये ३१ हे मुनिराज सब पुराणोंका यह साधारण लक्षणहै जोकि इसआगेवाले श्लोकमें लिखाहै उसे प्रथम सुनकर हृदय में करलीजिये फिर पुराण सुनिये ३२ सर्ग प्रतिसर्ग वंश मन्वन्तर व वंशानुचरित येही पुराणोंके पांच लक्षणहैं अर्थात् जिसमें सृष्टि सृष्टिके नानाप्रकारके भेद वंश मन्वन्तरोंकी कथा व सूर्य्य चन्द्रवंशी राजाओं व सब अवतारोंकी कथाहो उसे पुराण कहते हैं ३३ इसलिये प्रथम महत्तत्वादि आदि सृष्टिका वर्णन फिर अनुसर्ग इन्द्रिय सहित देवविराट्की उत्पत्ति फिर वंशोंका वर्णन फिर मन्वन्तरों की कथा तदनन्तर सूर्य्य चन्द्र वंश्यादि राजा आदिकों की व अवतारोंकी कथा कहते हैं ३४ हे ब्राह्मणो प्रथम महदादि आदि सृष्टि कहतेहैं क्योंकि उसीसे लेकर देवताओं व राजाओंके चरित होतेहैं ३५ सृष्टिके प्रथम व प्रलयके पीछे कुछभी नहींरहता है केवल अपने एकान्तस्थलमें सनातन परब्रह्म परमात्मा रहता है ३६ वह ब्रह्म कहाताहै व एकही रहता दूसरा कोई नहीं केवल प्रकाशमात्र रहता व सबके प्रकाशहोनेका कारण वही होता वह नित्यहै निरंजन कुछ करता धरता नहीं शान्तरूप रजोगुण सत्त्वगुण तमोगुणसे रहित रहता व नित्य निर्म्मल शुद्धहै ३७ फिर वह ब्रह्म आनन्दसागर स्वच्छसर्वज्ञ ज्ञानरूपी अजनाश रहितहै व जिनको मुक्तिकी इच्छा होती वे उसीके पानेकी इच्छा करते हैं ३८ फिर वह अविनाशी अच्युत सबको पवित्र करनेवाला वही स्वच्छ ब्रह्म जो कि सब ज्ञानियोंका स्वामी है सृष्टि के समय अपने हृदयमें लीन इस जगत्के बनानेकी इच्छा करताहै ३९ जैसेही वह इच्छा करताहै कि उससे प्रकृति उत्पन्न हो आतीहै उससे फिर महत्तत्त्वकी उत्पत्ति होती वह महत्तत्त्व सात्त्विक राजस व तामसके भेदसे तीन प्रकारका होता है ४०

फिर उसी महत्तत्त्वसे तामस वैकारिक तैजस व भूतादिके भेद से तीन प्रकारका अहंकार उत्पन्न होताहै ४१ वह अहंकार जैसे प्रकृतिसे महत्तत्व आच्छादित रहताहै वैसे महत्तत्वसे आच्छादित होताहै इससे ५ पृथ्वी अप तेज वायु आकाश पंचमहाभूत व गन्ध रस रूप स्पर्श व शब्द तन्मात्र उत्पन्नहोतेहैं ४२ उनमें शब्द तन्मात्रसे आकाश उत्पन्न होता इसीसे आकाशका गुण शब्दहै वह शब्दमात्र आकाश भूतादिकों को प्रथम आच्छादित करताहै ४३ उससे बलवान् वायु उत्पन्नहोता उसका स्पर्श गुणहै यह शब्द तन्मात्र आकाशका गुण स्पर्शको आच्छादित करता है ४४ फिर वायु अपने विकारसे रूपतन्मात्रको उत्पन्न करता उससे तेज होताहै इसीसे तेजका गुण रूप है ४५ जब स्पर्शमात्र वायुने रूप तन्मात्रको उत्पन्न किया तो उससे जल उत्पन्न होते जिनका गुण रसहै ४६ फिर रूप तन्मात्र रसमात्र जलोंको आच्छादित करलेताहै तो रूपतन्मात्र गन्धको उत्पन्न करताहै उस गन्धसे यह पृथ्वी उत्पन्न होती इससे सब भूतोंसे अधिक गुण हैं क्योंकि इसमें शब्द स्पर्श रूप रस व गन्ध सब इकट्ठे रहते हैं इस पृथ्वीका गुण गन्ध है ४७।४८ इन सबमें उनकी २ मात्रा रहतीहैं इससे शब्दादि आकाशादिके तन्मात्र कहाते हैं तन्मात्र अविशेष कहाते व आकाशादि विशेष ४९ व यह भूततन्मात्र सृष्टि तामस अहंकारसे होती है सो हेभरद्वाज हमने तुमसे विस्तार पूर्वक वर्णन किया ५० हे भरद्वाज इस रीतिसे तामससे तो पंचमहाभूतोंकी सृष्टिहुई औरइन्द्रियां सब तेजस कहातीहैं व उनमें दश वैकारिक देवगण रहतेहैं व ग्यारहवां उनमें मन रहताहै ५१।५२ उन दश इन्द्रियोंमें पांच तो ज्ञानेन्द्रियहैं व पांच कर्म्मेन्द्रिय उन सबको व उनके कर्म्मों को भी कहते हैं सुनिये ५३ कान नेत्र जिह्वा नासिका व त्वचा इन पांचोंसे सुनने देखने स्वाद जानने सूँघने व समझनेका ज्ञान

होताहै इससे ये पांच ज्ञानेन्द्रिय कहाती हैं ५४ पायु उपस्थ हस्त पाद व बाणी पुरीषोत्सर्ग करने भोग करने व मूत्र करने काम करने चलने व बोलनेसे ये पांच कर्म्मेंद्रिय कहाती हैं ५५ आकाश वायु तेज जल व पृथ्वी ये पांचो शब्द स्पर्श रूप रस व गन्धसे क्रमपूर्व्वक युक्त रहते हैं ५६ इन सबोंमें नानाप्रकारके बीर्य्य हैं इससे इन सबोंने प्रथम अलग २ फिर एकत्र होकरभी सृष्टिको उत्पन्न करना चाहा परन्तु कुछभी न करसके ५७ तब सब आपसमें मिलकर एकही संग बलकर यहांतक कि सबके सब एकमें मिलकर ५८ व पुरुषभी जब आय उसमें टिका फिर प्रकृतिने भी अपना अनुग्रह किया तो महत्तत्त्वादिकोंने सबके संग अण्डको उत्पन्न किया ५९ वह अण्ड क्रम २ से बढ़कर जल के बबूलेके समान हुआ फिर बढ़ते २ बहुत बड़ाहो उसी जल में पड़ारहा ६० वह प्राकृती विष्णुका उत्तम स्थान हुआ उसमें फिर वह सर्व्वप्रेरक सबका स्वामी परमेश्वर सब कुछ करने में समर्त्थ श्रीविष्णु भगवान् अप्रकट रूप होकर६१ जो कि ब्रह्मस्वरूपी आपहैं जब पैठा तो वह अण्ड फूटा उसके गर्भके जल से सब समुद्र होगये ६२ व उसी अण्डमेंसे पर्व्वत द्वीप समुद्र प्रकाश व सब देवता असुर मनुष्यादि उत्पन्न होगये ६३ व श्री विष्णु भगवान्का एक रजोगुणी स्वरूप ब्रह्माके नामसे प्रसिद्ध होकर जगत्की सृष्टि करनेमें उद्यत हुआ ६४ व जो २ सृष्टि फिर उन विष्णुरूपी ब्रह्माजी ने की उसकी रक्षा श्रीभगवान् विष्णुजी नृसिंहादि रूपधारण करके करनेलगे ये परमेश्वर विष्णु के रूप प्रत्येक कल्पके किसी २ युगमें होते हैं फिर अन्तमें वही विष्णु रुद्रका रूपधर संहार करते हैं ६५ वे परमेश्वर पुराण पुरुष विष्णु ब्रह्माके रूपसे सृष्टि करते व पालनकी इच्छासे श्री रामचंद्रादि रूपधारणकर पालते व रुद्ररूपहो संहारकरते६६॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेसृष्टिकथनेप्रथमोऽध्यायः १॥

दूसरा अध्याय ॥

दो० कहंवद्वितीयाध्यायमहँसृष्टिप्रलयसविधान ॥
ज्यहिवर्ण्यहुसवसूतजीमुनिसोंसहितवखान १

सूतजी फिर भरद्वाजादि मुनियोंसे बोले कि नरसिंहजी ब्रह्माहोकर जिसप्रकार जगत् की सृष्टिकरनेमें प्रवृत्त होतेहैं वह तुम से कहते हैं भरद्वाज सुनो १ हे विद्वन् यद्यपि नारायण भगवान् ब्रह्मालोक पितामहके नामसे प्रसिद्धहोकर उत्पन्न कहे जातेहैं पर वास्तवमें वे नित्यहैं यह उत्पन्न होना केवल कथन मात्रहै २ पर जैसा कैसा उत्पन्नहोनाहो जब ब्रह्मा उत्पन्नहोते तो उनकी आयुष् उनके वर्षोंके प्रमाणसे सौवर्षकी होतीहै वह आयुष्काल बीतते २ परिणामको प्राप्तहोती है ३ अब अन्य चर वा अचर पृथ्वी पर्व्वत समुद्र वृक्षादिकोंकी आयुबतातेहैं सुनिये ४ उनमें प्रथम मनुष्योंके कालकी संख्या तुम से कहते हैं अठारह निमेषकी एककाष्ठाहोतीहै ५ व तीसकाष्ठाकी एक कला तीसकलाका एक मुहूर्त्त व तीसमुहूर्त्तोंका मनुष्योंका एक रात्रिदिन होता है व तीसरात्रिदिनका एकमासहोता है और एकमासमें दो पक्षहोतेहैं ६ छमासोंका एकअयनहोता व उत्तरायण व दक्षिणायनके भेदसे दो होतेहैं दक्षिणायन देवताओं की रात्रिहै व उत्तरायणदिन कहाता है ७ । ८ दो अयनोंका मनुष्योंकावर्ष होताहै व मनुष्योंके एकमासमें पितरोंका रात्रिदिन होताहै ९ व वस्वादिकों के रात्रिदिनसे मनुष्योंकाएकवर्ष होता है देवताओं के १२००० वर्ष में सत्ययुगादि सब युग होते हैं १० उन चारोंयुगोंके जाननेकीरीति हमसेसुनो देवताओंके १२००० कोचारसे गुणाकरनेसे सत्ययुग तीनसेगुणनेसे त्रेता दोसेगुणनेसेद्वापर व एकसे गुणनेसे कलियुग होताहै ११ बसदिव्यवर्षोंके हजारको आगेके बुद्धिमानोंने चारयुगकहे हैं इनसबयुगोंमें अपने २ युगोंकी संख्याके अनुसार संध्याहोती

है १२व संध्यांशभी उतनाही उतनाहोताहै जितनी २सन्ध्याहोती हैइससन्ध्या व सन्ध्यांशकेबीचमें जितना कालहोताहै १३उसी को सत्ययुग त्रेता द्वापरादिकाल कहतेहैं उनकाक्रम सत्य त्रेता द्वापर व कलियुग यहहै १४जब ये चारोंयुग हजारबार बीततेहैं तो ब्रह्माजीका एकदिन होताहै व हे ब्रह्मन् ब्रह्माजीके एकदिन में चौदह मन्वन्तर बीतते हैं १५ अब कालका कियाहुआ मन्वन्तरोंका प्रमाण हमसे सुनो प्रत्येक मन्वन्तरमें सप्तर्षि इन्द्र मनु मनुके पुत्र १६ ये सब एकही समय में उत्पन्न कियेजाते व एकही समयमें नष्ट कियेजाते हैं इकहत्तर चौयुगीका एक मन्वन्तर होताहै १७यही समय उसके मनु व इन्द्रादिकोंका होता है यह स्पष्टतापूर्व्वक योंहै कि देवताओंके बारहहजार वर्षों में सत्ययुग त्रेता द्वापर कलियुग चारोंयुग बीतजाते हैं १८ उनमें देवताओं के चारहजार वर्ष अर्थात् मनुष्यों के १७२८०००. वर्षोंका सत्ययुग होताहै व देवताओं के तीनहजारवर्ष अर्थात् मनुष्योंके १२९६००० वर्षों का त्रेतायुग होता है १९ व देवताओंके दो सहस्रवर्ष अर्थात् मानुषों के ८६४००० वर्षोंका द्वापरयुग होताहै इसी प्रकार देवताओं के एकसहस्र अर्थात् मनुष्योंके ४३२००० वर्षका कलियुग होता है २० व जो युग देवताओंके जितने हजार वर्षोंका होताहै उतनेही सौवर्षों की सन्ध्यायुगके आदिमें होती है व उतनाही सन्ध्यांश युगके अंत में होताहै २१ जैसे कि देवताओंके चारहजार वर्षोंका सत्ययुग होताहै तो उसमें ४०० वर्षोंकी सन्ध्या व ४०० वर्षोंका सन्ध्यांश सब ८०० वर्ष और मिले होते हैं २२ ऐसेही त्रेतामें ६००वर्ष व द्वापरमें ४०० वर्ष कलियुगमें २०० वर्ष मिले होतेहैं हेमुनिराज इसप्रकार सन्ध्या व सन्ध्यांशके बीचमें जित्तना कालहोता है उतनेहीका वहयुग कहाता है २३ व सत्य त्रेता द्वापर कलि के नामसे प्रसिद्ध रहताहै इन्हीं सत्यादि चारों युगोंकी एकचौ-

युगी कहाती है जब हजार चौयुगी बीत जाती हैं तो ब्रह्मा का एकदिन होताहै २४ प्रत्येक मन्वन्तर में मनुष्योंके वर्षोंके प्रमाणसे ३०६७२०००० तीश किरोड़ सतसठलाख बीशहज़ार वर्ष होते हैं व इन्हीं तीशकिरोड़ आदिके चौदह गुने अर्थात् ४२९४०८०००० चार अर्ब उन्तीश किरोड़ चालीस लाख अस्सीहजार मनुष्योंके वर्षोंका ब्रह्माजीका एकदिन होताहै २५ इतनेही वर्षोंके पीछे ब्रह्माजीका नैमित्तिक प्रलय होताहै इसमें सब सृष्टिको अपनेमें करके हरि भगवान् सो रहते हैं २६ फिर जब रात्रि बीतजातीहै व ब्रह्माजी जागते हैं तो देवता पितृ गन्धर्व विद्याधर राक्षस यक्ष दैत्य गुह्यक मनुष्यादिकोंकी सृष्टि करते हैं २७ ऐसेही फिर दिनके अन्तमें सोरहते इसप्रकार जब ब्रह्माजी सौवर्ष जीतेहैं उसमें प्रत्येक दिनमें सृष्टि करते व रात्रि में सोतेहैं २८ ब्रह्माकी आयुष्के पीछे महाप्रलय होताहै इसको ब्रह्मकल्प कहते हैं इसीमें मत्स्यजी का अवतार हुआ था २९ इस कल्पके पीछे वाराहकल्प हुआ जिसमें श्रीविष्णु भगवान् ने अपने मनसे वाराहावतार धारणकिया ३० यह अवतार रसातलसे पृथ्वी लेआनेके लिये हुआ इसमें देवता ऋषियोंने बड़ी स्तुतिकी ३१ इसमें भी सृष्टि करकराय विष्णुरूपी ब्रह्माजी के प्रलयके पीछे सब जगत्को अपने उदरके भीतरकर नारायण भगवान् जलमें शेषजीके ऊपर शयनकर रहते हैं ३२॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेसर्गरचनायांद्वितीयोऽध्यायः २॥

तीसरा अध्याय॥

दो० पुनितृतीयअध्यायमहँ सृष्टिहि केर बखान॥
कीनसूतमुनिसोंबहुतविधिसोंसहितविधान १

सूतजीबोले कि हे महाभाग उसमहाप्रलयके जलमें शेषनागके ऊपर सोतेहुये श्रीनारायण भगवान्की नाभीसे कमल जामा उससे वेदवेदाङ्गोंके पारगामी ब्रह्माजी उत्पन्नहुये १ उन

से उन्होंनेकहा कि हे महामतिवाले सृष्टिकरो ऐसा कहकर ना-
रायणप्रभु अन्तर्द्धान होगये २ अच्छा हम सृष्टि करेंगे यह कह
ब्रह्माजी उन्हीं विष्णुभगवान् की चिन्तना करनेलगे परन्तु उ-
न्हें जगत्के उत्पन्नकरनेका कुछ बीज न मिला कि उससे सृष्टि
करते ३ तब इसबातपर ब्रह्माजीके बड़ाक्रोध उत्पन्नहुआ उस
क्रोधसे उत्पन्न होकर उनकी गोदमें आकर एकबालक बैठगया
४ व रोदन करनेलगा ब्रह्माजीने रोंकाभी पर उसने नहींमाना
कहा कि मेरानामक्याहै तो ब्रह्माजीने कहा तुम्हारा रुद्रनामहै
५ परतुम सृष्टिकरो ब्रह्माजीके ऐसाकहनेपर उन्होंने सृष्टिकरना
चाहा पर कर न सके उसीजलमें स्नानकर तपकरनेलगे ६ जब
रुद्र उसजलमें पैठगये तब ब्रह्माजीने अपने दहिनेहाथके अँ-
गूठेसे एकऔर पुरुष उत्पन्नकिया ७ उसपुरुषका दक्षनामधराया
फिर बायेंहाथके अँगूठेसे उनकी स्त्रीको उत्पन्नकिया दक्षतेउस
स्त्री में स्वायम्भुव मनुको उत्पन्न किया ८ उन स्वायम्भुवजी से
फिर सृष्टिहुई इसप्रकार सृष्टिकीइच्छा कियेहुये ब्रह्माजीसे सृष्टि
होतीहै वह तुमसे हमने कही अब और क्या सुनाचाहतेहो ९
यहसुनकर भरद्वाजमुनिने पूँछा कि हे लोमहर्षण तुमने यह सृष्टि
हमसेसंक्षेपरीतिसे कही अबविस्तार पूर्व्वकवर्णनकरो १० सूतजी
बोले कि इसप्रकार जब ब्रह्माजी कल्पकेपीछे सोकरउठे तोउन
बड़े बलवान् ब्रह्माजीने सबलोक शून्यदेखा ११ येब्रह्माजी ना-
रायण भगवान्कीही मूर्त्तिहैं इससे अचिन्त्य व सबसे प्रथमहैं
न इनका आदिहै न अन्तहै १२ क्योंकि नारायण भगवान् के
विषयमें यह श्लोकपढ़ाजाताहै जिनकीमूर्त्ति ब्रह्माजीहैं व आप
ब्रह्महैं इसजगत् के उत्पन्नहोनेव नाशके कारणहैं १३ जलोंको
नार कहतेहैं व नरके पुत्रोंको जल कहतेहैं व जल पूर्व्वसमयमें
उनका (अयन) स्थानथा इससे वे नारायण कहातेहैं १४ जब
ब्रह्माजीने पूर्व्वसमयके अनुसार सृष्टिकरनेकी इच्छाकी तो अ-

कस्मात् उनके शरीरसे तम उत्पन्नहुआ १५ उसतमके पाँच नामहैं तम मोह महामोह तामिस्र अन्धतामिस्र येपाँच अविद्या की गाँठें हैं बस उन्हीं ब्रह्माजीसे इसअविद्या की उत्पत्तिहुई १६ इन्हीं अविद्यारूप पाँचों तमोंसे यह सृष्टि सबओरसे आच्छादित रहतीहै सृष्टि जाननेवाले पण्डितोंने इन्हींको मुख्य सृष्टि कहाहै १७ जिससे कि दूसरीबार ध्यानकरनेसे येपांच प्रकारके अन्धकार उत्पन्नहुयेथे इसीसे इनको तिर्य्यक्स्रोतकहते हैं व इनसे जो सृष्टि होती वह तिर्य्यग्योनि कहाती है १८ ये सब पशुगण व कुमार्ग्गगामीलोग इसीतिर्य्यग्योनिमें हैं इस सृष्टिकोभी असाधकमान चारमुखवाले ब्रह्माजीने १९ ऊर्ध्वस्रोतनाम तीसरी सृष्टि बनाई उससे प्रसन्नहोकर उन्होंने अन्य सृष्टिके रचनेकी इच्छाकी २० इच्छाकरतेही उनकी सृष्टिकी बड़ी वृद्धिहुई उस सृष्टिका अर्व्वाक्स्रोत नामहुआ मनुष्य सब प्रकारके इसी सृष्टिमें हैं ये सब सब कार्य्योंके साधक हैं २१ इनमें नवप्रकार हैं व सब मनुष्य तमोगुण और रजोगुण को धारणकरतेहैं इसीसे ये कर्म्मकरने में दुःखभी पातेरहतेहैं पर फिर २ वैसेही कर्म्म कियाकरते हैं २२ हे मुनिसत्तम यह बहुत प्रकारकी सृष्टि तुमसे हमनेकही पहिली तो महत्तत्त्वादिकोंकी सृष्टिहै दूसरी उनके गुणोंकी २३ तीसरी उनके विकारोंकी जो कि इन्द्रियोंकी सृष्टि कहातीहै व चौथी स्थावरोंकी सृष्टिहै यह मुख्यसृष्टि कहातीहै २४ व जो तिर्य्यक्स्रोत कहातीहै वह तिर्य्यग्योनि पशुओंकी सृष्टिहै यह पांचईं सृष्टिहुई इसकेपीछे ऊर्ध्वस्रोतस्सृष्टि जो देवसृष्टि कहातीहै यह छठींहै २५ इसकेपीछे अर्व्वाक्स्रोतस् मनुष्योंकी सृष्टिहुई यह सातईंहै आठईं अनुग्रह सृष्टि जो सात्विकीसृष्टि कहातीहै २६ नवईं रुद्रसृष्टि इस नव प्रकारकी सृष्टिमें पांच तो वैकृत कहाती हैं जो महदादिकों के विकारोंसे होतीहैं व तीन प्राकृतहैं जो प्रकृतिसे उत्पन्नहोतीहैं

व एक जानो सबसे प्रथम परमेश्वर की इच्छाहीहै २७ येही प्राकृत व वैकृत दोनोंप्रकारकी सृष्टियां जगत्का मूलकारण हैं जो सब ब्रह्माजीके सृष्टिकरने के समय उत्पन्नहुई जिनका वर्णन हमने आपसेकिया २८ इनसब प्रत्येक विकारोंकी सृष्टि वह अनन्त भगवान् परमपरेश नारायण अपनी मायामेंस्थित होकर करताहै जबकि वह अपनी इच्छासे प्रेरितहोताहै व उसमें सम्पूर्ण विद्या विद्यमान हैं २९ ॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेसृष्टिरचनाप्रकारोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

दो॰ चौथे महँ पुनि सृष्टिकर वर्णन कीन्ह्यों सूत ॥
जासु सुने नर होतहैं सृष्टि ज्ञान मजबूत १ ॥

भरद्वाजजीने पूँछा कि आपने कहा कि अप्रकट जन्म वाले ब्रह्माजीसे नव प्रकारकी सृष्टिहुई सो वह कैसे बढ़ी यह हमसे कहिये १ सूतजी बोले कि प्रथम ब्रह्माजीने मरीच्यादि मुनियों की सृष्टिकी उनके नाम येहैं मरीचि अत्रि अंगिरा पुलह क्रतु २ पुलस्त्य प्रचेता भृगु नारद व वसिष्ठ ३ फिर सनकादिकों की सृष्टिहुई येलोग निवृत्तमार्ग्ग में युक्तहुये व मरीच्यादि प्रवृत्त मार्ग्गपर आरूढ़हुये उन लोगोंके बिवाह व पुत्रादिभी हुये पर नारदजी मुक्तिमार्ग्गके अधिकारीहुये ४ और जो दक्षप्रजापति ब्रह्माजीके अंगसे उत्पन्नहुये उनकी कन्याओंकी सन्तानसे सब जगत् भरगया ५ देवता दानव गन्धर्व्व सर्प्प पशुपक्ष्यादि सब ये परम धार्म्मिक दक्षजी की कन्याओंसेही उत्पन्नहुये ६ चार प्रकारके चर अचर प्राणी उन्हीं दक्षजीकी सृष्टिमें उत्पन्न हुये व सब वृद्धिको पहुँचे ७ ये मरीचिसे लेकर वसिष्ठ पर्य्यन्त सब ऋषिलोग जोकि ब्रह्माजीके मानसी पुत्रथे सबकेसब अनुसर्ग्ग के करनेवाले हुये ८ सृष्टिमें सब प्राणियोंको व बुद्धि इन्द्रियोंको वेही महात्मा श्रीनारायणजी उत्पन्न करते हैं फिर वेही ब्रह्मा व

ऋषियोंकी मूर्त्ति धारणकर सब प्राणियोंको उत्पन्न करते हैं ६॥
इतिश्रीनरसिंहपुराणेचतुर्थोऽध्यायः४॥

पांचवां अध्याय॥

दो॰ पँचयें महँ पुनिगुनि कही सृष्टिअनेक प्रकार।
जामहँ कश्यप युवतिकी सन्ततिकर विस्तार १॥

भरद्वाजमुनिने फिर प्रश्न किया कि हे सूतजी अब प्रथम हमसे रुद्रसर्गकी उत्पत्ति कहिये फिर मरीच्यादिकोंने जिस प्रकार सृष्टिकी उसका वर्णन कीजिये १ व इसकाभी वर्णन कीजिये कि प्रथम ब्रह्माजीकेमनसे उत्पन्न वसिष्ठजी मित्रावरुणके पुत्र कैसेहोगये २ यहसुनकर सूतजीबोले कि रुद्रकीसृष्टि व उनके प्रतिसर्ग व मुनियोंके भी प्रतिसर्ग कहतेहैं सुनो ३ जब प्रलयके पीछे ब्रह्माजीहुये तो उन्होंने अपने समान पुत्र होनेका ध्यानकिया इतने में उनकी गोदमें नील व अरुणरंग का एक बालक उत्पन्नहोकर आबैठा ४ उस बालकके शरीर में आधेअंग तो स्त्रीकेथे व आधे पुरुषके पर अति प्रचण्ड शरीर धारणकिये अपने तेजसे सब दिशाओं व प्रदिशाओं को प्रकाशित करताथा ५ उसबालकको तेजसे प्रकाशितदेख ब्रह्माजीबोले कि हे महाद्युतिवाले हमारेकहनेसे अब तुम अपनेको अलग २ बांटदो ६ हे ब्राह्मणदेव जब ब्रह्माजीने ऐसा कहा तो रुद्ररूपी उस बालकने अपने रूपको दोठिकाने कर दिया उससे एकस्त्रीका स्वरूप दूसरा पुरुषका होगया ७ फिर उस पुरुषमें दश और होगये इसलिये ग्यारहस्वरूप होगये उनग्यारहोंके नाम कहते हैं हे मुनिसत्तम सुनो ८ अजैकपात् अहिर्बुध्न कपाली रुद्र हर बहुरूप त्र्यम्बक अपराजित ९ वृषाकपि शम्भु कपर्दी व रैवत येग्यारह रुद्रकहाये जो सब भुवनोंके स्वामी हैं १० फिर रुद्रजीने उसस्त्रीमेंभी दश और स्त्रियां करदीं जिससे वेभी ग्यारहहोगईं परन्तु उन सबोंका नाम एक

उमा यहीरहा वेही बहुतरूपोंसे सब मूर्त्तियोंको प्राप्तहोती रहीं ११ फिर उन महाउग्र तेजस्वी रुद्रजीने जलमें बहुत दिनोंतक अतिघोर तपकिया तपकरनेके पीछे उनप्रतापी रुद्रजीने बड़ी सृष्टिकी १२ पर तपोबलसे विविधप्रकारकी उनकी सृष्टिहुई किसीके तो पिशाचोंकेसे मुखहुये किसी २ के सिंहोंके समान किसी २ के ऊंटोंके किसी २ के मकरोंके समान मुखहुये १३ भूत प्रेत पिशाच डाकिनी ब्रह्मराक्षस विनायकादि साढ़ेतीन किरोड़ अतिभयंकर उग्रस्वभाव प्राणी उत्पन्नहुये १४ फिर अन्यका-र्य्यकेलिये स्कन्दजीको उत्पन्नकिया इसप्रकार हमने तुमसेरुद्र की सृष्टिकही १५ अब मरीच्यादिकोंसे जो अनुसृष्टिहुई उसे कहतेहैं सुनो देवताओंसे लेकर पर्व्वत वृक्षादि स्थावर पर्य्यंत सब प्रजाओंको ब्रह्माजीने उत्पन्नकिया १६ परन्तु जब ऐसी सृष्टिकरनेसे उनकी प्रजा न बढ़ी तो उन्होंने मरीच्यादि पुत्रों को मनसेउत्पन्नकिया १७ उनके नामयेहैं मरीचि अत्रि अंगिरा पुलस्त्य पुलह क्रतु प्रचेता वसिष्ठ व भृगु १८ ये नव ब्रह्माजी के मानसी पुत्र पुराणोंमें निश्चित हैं अग्नि व पितरलोग ये भी दोनों ब्रह्माजी के मानसीही पुत्रहैं १९ जब सृष्टिका समय आया तो ब्रह्माजीसे स्वायम्भुव राजा उत्पन्नहुये फिर शतरूपा नाम कन्या उत्पन्नकर स्वायम्भुवको ब्रह्माजीने स्त्रीबनानेके-लियेदिया २० उनस्वायम्भुव महाराजसे शतरूपाजीने प्रिय-व्रत व उत्तानपाद दोपुत्र व प्रसूतिनाम कन्या उत्पन्न किया २१ स्वायम्भुवजी ने उस अपनी प्रसूति कन्याको दक्षजीको दिया प्रसूतिमें दक्षजीने २४ कन्या उत्पन्नकीं २२ उनदक्षकी २४ कन्याओंकेनाम हमसे सुनिये श्रद्धा प्रीति धृति तुष्टि पुष्टि मेधा क्रिया २३ बुद्धि लज्जा वपु शान्ति सिद्धि व कीर्त्ति इन तेरहोंको धर्मजीने अपनीस्त्रियांबनानेकेलिये ग्रहणकिया २४ उनश्रद्धादि स्त्रियोंमें कामादि पुत्र धर्मसे उत्पन्नहुये इससे

उनके पुत्र पौत्रादिकोंसे धर्म्मका वंशबढ़ा २५ उनतेरहोंके पीछे जो छोटी ११ और कन्याहुईं उनकेनाम हमसे सुनो सम्भूति अनसूया स्मृति प्रीति क्षमा २६ सन्नति सत्या तुर्य्या ख्याति ख्यातिके मातरिश्वा व सत्यवान् दो पुत्रहुये २७ फिर उनमें दशाईं स्वाहानाम कन्याहुई व ग्यारहईं स्वधा इनसबोंको दक्षजीने मरीच्यादि ऋषियोंको दिया २८ मरीच्यादिकोंके जो पुत्रहुये उनको हम तुमसे कहते हैं सुनो सम्भूतिनाम मरीचिकी स्त्रीने कश्यपमुनिको उत्पन्नकिया २९ व अंगिराजीकी स्मृतिनामस्त्री ने सिनीवाली कुहू राका व अनुमति इनचार कन्याओंको उत्पन्नकिया ३० व अत्रिकीस्त्री अनसूयाने पापरहित चन्द्रमा दुर्व्वासा व योगिराज दत्तात्रेयनाम तीन पुत्र उत्पन्नकिये ३१ व जो अग्नि अभिमानी पुत्र ब्रह्माजीके मानसीहुयेथे उनसे उनकी स्वाहानामस्त्रीमें तीन पुत्रहुये ३२ एक पावक दूसरा पवमान तीसरा शुचि इनके फिर अग्निहुये ३३ इनमें पिता पुत्र पौत्र सब मिलेहुये हैं सब ४९ अग्नि कहाते हैं रूपभी सबोंका एकही प्रकारकाहै ३४ व ब्रह्माजीने जोपितरोंको उत्पन्न कियाथा जिनको हमने तुमसे कहाथा उनसे उनकी स्वाहानाम स्त्रीमें मेना व वैधारिणी दो कन्या उत्पन्नहुई ३५ ब्रह्माजीने पूर्व्वकालमें दक्षजीसे प्रजाउत्पन्न करनेकेलिये आज्ञादीथी जैसे उन्होंने प्रजाओंकी उत्पत्तिकी हम कहतेहैं सुनो ३६ दक्षजीने प्रथम मनहीसे देवता ऋषि गन्धर्व्व असुर व नागादिकों को उत्पन्नकिया ३७ जब उनके मनसे उत्पन्न देवता असुरादि न बढ़े तो उन्होंने सृष्टिकेहेतु बड़ा विचारकरके ३८ मैथुन धर्म्म से बिबिधप्रकारकी प्रजाओंको उत्पन्नकिया उसकाक्रम यह है कि प्रथम उन्होंने बीरणप्रजापति की कन्या असिक्रीके संग अपना बिवाहकिया ३९ उसमें उन्होंने साठकन्या उत्पन्न कीं यह बात हमने सुनीहै उनमें दशतो धर्म्मकोदीं व तेरह कश्यप

जीको ४० सत्ताईसचन्द्रमाको चार अरिष्टनेमीको दो बहुपुत्र को दो अंगिराको४१ दो बड़ेपण्डित कृशाश्वको अब इनसबोंके पुत्रकन्यादि हमसेसुनो विश्वासे विश्वेदेवउत्पन्नहुये व साध्याने साध्योंको उत्पन्नकिया४२ मरुत्वतीमें मरुत्वान्हुये वसुनाम में वसुलोग भानुनाममें सबभानुलोगहुये व मुहूर्त्तामें मुहूर्त्तज सब देवताहुये४३ लम्बामें घोषादि श्रहीरीके धाम उत्पन्नहुये व जामि में नागवीथी उत्पन्नहुई व अन्य सब पृथ्वीके विषय मरुत्वती में उत्पन्नहुये ४४ संकल्पाके संकल्पनामपुत्र हुआ व जो एक-ही बलप्राण के बहुत से देवगणहैं उनकी संख्या व नाम सुनो ४५ जैसे कि वसु ८ हैं उनके नाम ये हैं आप ध्रुव सोम धर्म्म अनिल अनल ४६ प्रत्यूष व प्रभास येही आठ वसुहैं इनके पुत्र व पौत्रादि सैकड़ों हजारों हैं ४७ साध्यगण बहुतहैं उनके पुत्र सहस्रोंहैं अदिति दिति दनु अरिष्टा सुरसा स्वसा ४८ सु-रभि विनता क्रोधवशा इरा कद्रु मुनि धर्म्मज्ञा ये कश्यपजीकी स्त्रियांहैं इनके पुत्रोंकेनाम हमसेसुनो ४९ कश्यपजीसे अदिति में अति सुन्दर बारहपुत्र उत्पन्नहुये उनकेनाम हम तुमसे क-हतेहैं सुनो ५० भग अंशु अर्य्यमा मित्र वरुण सविता धाता विवस्वान् ५१ त्वष्टा पूषा इन्द्र व विष्णु और कश्यप से दिति नाम स्त्री में दो पुत्रहुये यह बात हमने सुनीहै ५२ एक महाश-रीरवान् हिरण्याक्ष जिसको भगवान् वाराहजीने मारा व एक हिरण्यकशिपु जिसे श्रीभगवान् नृसिंहजीनेमारा ५३ औरभी बहुत दितिकेपुत्र दैत्यहुयेहैं व दनुनाम स्त्री के सब दानवहुये व कश्यपजीसे अरिष्टामें सब गन्धर्व उत्पन्नहुये ५४ सुरसामें सब विद्याधरोंके बहुत से गण उत्पन्नहुये व कश्यपजीने सुरभिनाम स्त्रीमें सब गाय बैल उत्पन्नकिये ५५ कश्यपजीकी विनतानाम स्त्रीमें अति विख्यात गरुड़ व अरुण दो पुत्रहुये उनमें गरुड़ देवताओंके देव अमित तेजस्वी श्रीविष्णुभगवानके ५६ बाहन

हुये व अरुण सूर्य्यनारायण के सारथि स्वसा जिसका ताम्राभी नाम है उसमें कश्यपसे ६ पुत्रहुये ५७ अश्व उष्ट्र गर्दभ हस्ती गवय मृग और क्रोधानामस्त्रीमें वे लोग उत्पन्नहुये जो पृथ्वी में दुष्टजाति हैं ५८ इराने वृक्ष वल्ली शाण आदि सब वृक्षभेद उत्पन्न किये व स्वसाके यक्ष राक्षसभी हुये और मुनिनाम स्त्री में अप्सराहुई ५९ और कद्रूके सब महाविषधर उल्वण स्व-भाववाले सर्प्प उत्पन्नहुये व जो २७ सोमकीस्त्रियां कहीथीं उ-नके ६० बड़ेपराक्रमी बुध आदि पुत्रहुये और अरिष्टनेमी की स्त्रियोंमें सोलहसन्तानहुये६१व बहुपुत्र विद्वान्के विद्युत्आदि चार कन्याहुई और प्रत्यंगिरके सब ऋषिलोग पुत्रहुये जोकि जातिसे ऋषि कहातेहैं यौंतो कर्म्मोंसे वहुत ऋषिहोजातेहैं ६२ व कृशाश्वदेवर्षिके देवता व ऋषि दो प्रकारके पुत्रहुये ये सब सहस्रयुगोंके पीछे फिर २ उत्पन्नहुआ करतेहैं ६३ इतने स्था-वर जंगम कश्यपमुनि के सन्तान हमने कहे ये सब स्थितिमें टिकेहुये नृसिंहदेवके धर्म्ममें टिके रहते हैं ६४ हे विप्र इतनी विभूतियां हमने तुमसे कहीं व दक्षकी कन्याओंकी सब सन्त-ति सुनाई६५जो कोई श्रद्धापूर्व्वक इनका कीर्त्तन करताहै वह अवश्य सन्तानवान्होताहै व उसकेवंशकानाश नहींहोता ६६॥

दो० सर्गऔरअनुसर्गसबकहासहितविस्तार॥
जोहरिपरनरपढ़हिंगेपैहहिंविमलअचार १।६७।

इतिश्रीनरसिंहपुराणेसृष्टिकथनेपञ्चमोऽध्यायः ५॥

छठवां अध्याय॥

दो० उर्व्वशिलखिमित्रावरुणवीर्य्यपतनभोतासु॥
मुनिवसिष्ठपुनिमे वही छठयेंमाहिं प्रकासु १

सूतजी भरद्वाजादि मुनियोंसे बोले कि हे ब्राह्मणश्रेष्ठो हम ने श्री विष्णुभगवान् के इसजगत्की सृष्टि तुम लोगोंसे जैसे कि उनमहात्मासे देव दानव यक्षादि उत्पन्नहुये १ जिससृष्टिमें

तुमने हमसे पूँछाथा कि वसिष्ठमुनि तो ब्रह्माकेपुत्रथे फिर मित्रा वरुणकेपुत्र कैसेहुये २ सो अब वह पुराना पुण्यदायक इतिहास तुमसे कहते हैं चित्तसावधान करके सुनिये ३ सब धर्म्म अर्थोंके निश्चय जाननेवाले सब वेदवादियों में श्रेष्ठ व सब विद्याओंके पारगन्ता दक्षनाम प्रजापतिहुये ४ उन्होंने सब शुभ लक्षण सम्पन्न व कमलनयनी अपनी तेरहकन्या कश्यपमुनि को ब्याहदीं ५ उनके नाम कहतेहैं हमसे सुनो अदिति दिति दनु काष्ठा मुहूर्त्ता सिंहिका मुनि ६ इरा क्रोधा सुरभि विनता सुरसा स्वसा कद्रू सरमा जिसे देवशुनीभी कहते हैं ७ ये सब दक्षकी कन्या हैं इन सब को उन्हों ने कश्यपजीको दीं उन सबों में ज्येष्ठ व अति श्रेष्ठ अदितिनाम स्त्री है ८ अदितिने अग्नि समानप्रकाशित बारहपुत्र उत्पन्नकिये उनकेनाम हम से सुनो ९ जिनके कारण ये सबरात्रिदिन बार २ हुआ करते हैं भग अंशु अर्य्यमा मित्र वरुण १० सविता धाता विवस्वान् त्वष्टा पूषा इन्द्र व विष्णु इनमें विष्णु बारहवेंपुत्रहैं ११ ये बारहपुत्र अपनी २ पारीपर तपतेरहतेहैं व वर्षाभी करातेहैं उनमें मध्यमपुत्रका वरुणनामहै १२ वे लोकपाल कहाते हैं व वारुणीदिशामें सदारहा करते हैं ये पश्चिमसमुद्रके भी पश्चिमदिशामें सदाबिराजते रहतेहैं १३ वहां सुवर्णका एक श्रीमान् नाम पर्व्वत है उसके सबशृंग रत्नोंसे बनेहैं व नानाप्रकारके धातुओं झरनोंसेभी शोभित हैं १४ वह सबका सबपर्व्वत रत्नमयहै उसकी बड़ी२ गुहाओंमें सिंहशार्दूल व्याघ्रादि जन्तु रहतेहैं १५ व बहुत प्रकारके एकांतस्थल बनेहैं जिनमें सिद्ध व गन्धर्व्व लोग सदारहते हैं जब सूर्य्य वहां पहुँचतेहैं तो इसओर अन्धकार होजाताहै १६ उसपर्व्वतके एक शृंगपर महादिव्य सुवर्ण से बनीहुई अति रमणीय मणियों के खम्भोंसे विश्वकर्म्माकी बनाईहुई १७ सब भोग विलासके पदार्थोंसे भरीपुरी विश्वा-

वती नामपुरीहै उसमें अपने तेजसे दीप्यमान वरुणनाम आ-
दित्य १८ ब्रह्माजी की आज्ञासे इन सब लोकोंकी रक्षाकिया
करते हैं व गन्धर्व्व अप्सरादि उनकी उपासना कियाकरते हैं
१९ एकसमय दिव्यगन्ध अंगोंमेंलगाये व दिव्यभूषणोंसे भू-
षित वरुणजी मित्रके संग बनकोगये २० जाते २ कुरुक्षेत्रमें
पहुँचे जोकि अति रमणीय ब्रह्मर्षियोंसे सेवित नानाप्रकारके
पुष्पफलोंसेयुक्त व नानाप्रकारके तीर्त्थोंसेयुक्त था २१ जिसमें
सैकड़ों स्थान ऊर्द्धरेता मुनियोंके थे ऐसे बहुत पुष्प फल जल
युक्त उत्तमतीर्त्थमेंजाकर २२ चीर व मृगचर्म्म धारणकर दोनों
जन तपकरनेलगे वहां एक बड़े सुंदर बनके एकांत स्थलमें
विमलजल सहित एक अतिमनोहर तड़ागथा २३ उसके कि-
नारे २ नानाप्रकारके वृक्ष वल्ली गुल्मादि विद्यमानथे उनपर
व जलके किनारे भी नानाजातिके पक्षीबोलरहेथे नानाप्रकार
के वृक्षोंसे चारोंओर से घिराहुआथा कमलभी बहुत तरहके
उसमें फूलरहेथे २४ उसतड़ागका पौण्डरीकनामथा नानाजा-
तिकी मछलियां व कछुये उसमें भरेथे उसतड़ागपर मित्र व
वरुण दोनों भाई घूमते २ पहुँचे २५ व दोनों जनोंने उससरो-
वरमें बहुत सी और अप्सराओंके संग स्नान करती व मधुर
स्वरसे गातीहुई उर्व्वशी अप्सराको देखा २६ जिसका अति
गौर तो स्वरूपथा मानों दूसरीलक्ष्मीहीथी व शिरकेकेश अति
काले व चीकनेथे २७ कमलकेपत्रों के समान विशालनेत्र थे
ओष्ठ ऐसे अरुणथे कि पकेहुये कुँदुरूकोभी लजवातेथे बोल
अतिही मृदुथा सुननेवालेके कानोंमें मानों अमृतही पिलाता
था २८ दांतोंकी अतिघनी पंक्ति शंख कुन्द व चन्द्रमा की उ-
जलाईसेभी अधिक दिखाईदेतीथी भौंहें बहुत अच्छी नासिका
अति उत्तम मुख सुन्दर सुन्दर माथा व अति मनस्वी स्वभाव
था २९ और सिंहकेसमान पतली कमर नाभिके नीचेकाभाग

जांघें व छाती बहुत मोटी मधुर वचन बोलनेमें चतुर कटि ब-
हुत सुन्दर हँसना अति मनोहर ३० अरुण कमलके समान
हाथ अतिसूक्ष्मअंग पद बहुतही मनोहर विनय से युक्त पूर्ण-
मासीके चन्द्रमाकीसी देहकीचमक मतवालेहाथीकी सी चाल
३१ ऐसी उर्व्वशीकारूप देखकर वे दोनों मित्र व वरुण मोहित
होगये क्योंकि उसका हँसना कटाक्षकरना मुसुकराना ३२ ऋ-
तुपवन जोकि शीतल मन्द सुगन्ध बहता था मत्तभ्रमरों का
गुञ्जारना कोकिलोंका शब्दकरना ३३ सुन्दर स्वरसहित गाना
इनसबों से युक्त उर्व्वशीने जैसेही कटाक्षपूर्व्वक दोनों महाश-
योंकी ओर देखा कि दोनों का वीर्य्यस्खलित होगया ३४ वह
कुछ जलमें कुछ स्थलमें व कुछ कमल में जा गिरा उसमें जो
वीर्य्य कमलमें गिरा उससे तो निमिके शापसे अपना शरीर
छोड़ वसिष्ठजी उत्पन्नहुये ३५ व जो स्थलमें अर्थात् एककुम्भ
में गिराथा उससे अगस्त्यजी उत्पन्नहुये व जो जलमें गिराथा
उससे एक बड़ीभारी मछली उत्पन्नहुई बस जब इन दोनों म-
हात्माओं का वीर्य्य इसरीतिसे पतितहुआ तब उर्व्वशी अपने
स्वर्गलोक को चलीगई ३६। ३७ व वे दोनों देवता फिर उ-
नदोनों ऋषियोंके निकट आकर अच्छी तरह देखकर अपने
आश्रमपर तपस्या करनेलगे ३८ उनदोनों की इच्छा थी कि
हम तपकरके परंज्योतिस्सनातनब्रह्मको पहुँचजावें तप करते
हुये उनदोनोंके पास आकर ब्रह्माजी यह बोले कि ३९ हे मित्रा
वरुण देवो तुम दोनोंजने पुत्रवान्‌हुये व वैष्णवीसिद्धि तुमदोनों
जनोंको होगी ४० अब इससमय दोनों जाकर अपने अधि-
कार पर टिको इतनाकह ब्रह्माजी तो अन्तर्द्धान होगये और
वे दोनों अपने अधिकारपर जाकर स्थितहुये ४१ हे विप्र इस
प्रकार महात्मा वसिष्ठ व अगस्त्य जिसप्रकार मित्रावरुणकेपुत्र
हुये वह हमने तुमसे वर्णनकिया ४२ यह वरुणजीका पुंसवन

आख्यान बड़े २ पापोंका नाशकहै पुत्रकी कामना कियेहुये जो पुरुष पवित्र होकर इसे सुनतेहैं ४३ वे बहुतही शीघ्रपुत्र पातेहैं इसमें कुछ संशय नहीं है व जो कोई ब्राह्मण इसे देवता व पितरोंके यज्ञमें पढ़तेहैं ४४ उनके देवता व पितर दोनों तृप्त होकर परम सुखपातेहैं व जो कोई पुरुष नित्यप्रातःकाल उठकर इसे सुनेगा ४५ वह जबतक इसलोक में रहेगा सुख भोगेगा अन्तकालमें विष्णुलोक को जायगा इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है ४६॥

दो॰। वेदवेदिवर्णित बहुरि ममसुखगत इतिहास॥
जोयहपढ़िहिसुनिहिउभयपैहहिंहरिपुरवास॥४७॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेपुंसवनोपाख्यानेषष्ठोऽध्यायः ६॥

सातवां अध्याय॥

दो॰। कहब सप्तमाध्यायमहँ जिमि मार्कण्ड मुनीश॥
तपसों जीत्यहुमृत्युकहँ बहुरिसुमिरि जगदीश॥१॥

इतनी कथासुन भरद्वाजमुनिने पूंछा कि हे सूतजी तुमने पूर्व्वकालमें सूचित कियाथा कि मार्कण्डेय मुनिने मृत्युकोजीत लिया सो कैसेजीता यह इतिहास हमसे वर्णन कीजिये १ सूतजीबोले कि यह बड़ाभारी आख्यानहै हम कहते हैं भरद्वाज जी तुम व सब ऋषिलोग त्रित्तलगाकरसुनो २ महापुण्य कुरुक्षेत्र तीर्थमें अतिश्रेष्ठ व्यासजीके आश्रममें बैठेहुये मुनियोंमें श्रेष्ठ स्नान जप किये वेदवेदार्थके निश्चय जाननेवाले सबशास्त्रोंमें विशारद मुनिशिष्योंके मध्यमें विराजमान श्रीकृष्ण द्वैपायन व्यासजीसे प्रणामकरके परम धर्म्मात्मा उनके पुत्र शुकाचार्य्यजीने यही अर्थ पूंछाथा जो कि तुमलोगों ने हमसे पूंछा है ३।४।५ सो हम जिसप्रकार उन्होंने पूंछा सब तुमसे कहते हैं क्योंकि नृसिंहजीके भक्त तुमने इन सब मुनियोंके सामने हमसे पूंछाहै ६ श्रीशुकाचार्य्यजी व्यासजीसेबोले कि हे तातमार्कंडेय

मुनिने मृत्युको कैसे जीतलिया यह आख्यानहम आपसेसुन-
नाचाहते हैं कहिये ७ यहसुन व्यासजीबोले कि मार्कण्डेयमुनि
ने जिसप्रकार मृत्युको पराजित किया वह सब हे वत्सकहते हैं
सुनो ८ व हे मुनिलोगो तुमभी यह हमारा कहाहुआ इतिहा-
ससुनो व हमारे शिष्यलोगभी इस महाअद्भुत आख्यानको
सुनें ९ भृगुमुनिसे ख्यातिनाम स्त्रीमें मृकण्डुनाम पुत्र उत्पन्न
हुआ उन महात्मा मृकण्डुकीस्त्रीका सुमित्रानामथा १० वहसु-
मित्रा बड़ी धर्म्मज्ञ धर्म्ममें निरत व पतिकीशुश्रूषामें सदानिर-
तरहती उसमें मृकण्डुजीसे महामुनि मार्कण्डेयजी उत्पन्नहुये
११ ये भृगुजीके पौत्र महाभाग्यवान् मार्कंडेयजी बड़े बुद्धिमान्
हुये व बाल्यावस्थाहीमें बुद्धिमान् होनेके कारण अपने पिता
को बहुत प्रियहुये इससे पिताने सब संस्कार बड़े प्रेमसेकिये
१२ मार्कंडेयजी बालकहीथे कि एकज्योतिर्वित्पण्डितने आ-
करकहा कि बारहवें वर्षमें इसलड़केकी मृत्युहोजायगी १३ यह
बात सुनकर उनके माता पिता बहुत दुःखितहुये जब उनको
देखते तभी उनका हृदय कांपनेलगताथा १४ यद्यपि उनका
हृदय सन्तप्तही बनारहता पर मुण्डन यज्ञोपवीतादि कर्म्म उ-
न्होंने वेद विधिसेकिये कराये १५ फिर गुरूके यहां वेद पढ़ने
को भेजा वहां गुरुशुश्रूषा करतेहुये उन्होंने सांगोपांग सबवेद
पढ़े व सबशास्त्रभीपढ़े पीछे फिर अपनेघरमेंआये १६ व अपने
पिता माताके प्रणामकर विनय पूर्व्वक महामति मार्कंडेयजी
घरमें रहनेलगे १७ परन्तु उन महाबुद्धिमान् व नम्र महात्मा
पुत्रको देख २ उनके पिता माता बहुत दुःखितहुये १८ तब
अत्यन्त दुःखित अपने पिता माता को देखकर मार्कंडेय मुनि
बोले कि आपलोगोंको ऐसादुःख क्योंहै १९ हे माताजी पिता
जी सहित तुम सदा ऐसादुःख कियाकरतीहो इसका कारण
पूंछतेहुये हमसे अवश्यकहो २० जब इसप्रकार पुत्रने पूंछा तो

उनकी माताने जैसा वह ज्योतिर्वित् कह गयाथा सब वृत्तांत कहा २१ सो सुनकर मार्कंडेयजीने अपनी माता व पितासे कहा कि आप दोनों इस विषयमें कुछभी शोच न करें २२ हम तपस्यासे मृत्युको दूरकरदेंगे व जैसे चिरंजीवीहोंगे वैसा तप करेंगे आपलोग सन्देह न करें २३ इसप्रकार पिता माताको आशा भरोसादेकर नाना ऋषिगणोंसे सेवित वल्लीबटनाम बड़ेभारी बनको तपकरनेको चलेगये २४ वहां बहुतसे ऋषियोंके संग बैठेहुये अपने पितामह महात्मा परम तपस्वी भृगु मुनिको देखा २५ व यथोचित उनके व सब ऋषियोंके प्रणाम कर परम धार्मिक मार्कंडेयजी हाथ जोड़कर खड़ेहुये २६ तब आयुष्हीन अपने पौत्रकोदेख महामतिमान् भृगुजी मार्कंडेय नाम बालकसेबोले २७ हे वत्स यहां क्योंआये तुम्हारे पिता कुशल पूर्व्वक हैं व तुम्हारी माता व बन्धुवर्ग सब अच्छे हैं यहां आनेका क्या कारणहै कहो २८ जब भृगुजीने ऐसापूंछा तो महामति मार्कंडेयमुनिने सब उसज्योतिर्वित्का बचन उनसे कहा २९ पौत्रका बचन सुनकर भृगुमुनि फिर बोले कि हे महाबुद्धिवाले यदि ऐसाहै तो फिर तुम कौन कर्म्म करना चाहतेहो ३० मार्कंडेयजीबोले कि हम सब प्राणियोंके हरने-वाली मृत्युको जीतनाचाहते हैं इससे आपके शरणमें आयेहैं इस विषयमें हमसे कुछ उपाय बताइये ३१ भृगुजीबोले कि हे पुत्र बड़ीभारी तपस्यासे बिनानारायणकी आराधनाकिये मृत्यु को कौनजीतसक्ताहै इससे तुम तपसे उनकी पूजाकरो ३२ उन अनन्त अज अच्युत पुरुषोत्तम भक्तप्रिय सुरश्रेष्ठ विष्णुजीके शरणमें भक्तिसे प्राप्तहोओ ३३ हे वत्सउन्हीं अनामय नारा-यणके शरणमें पूर्व्व समय बड़ीभारी तपस्यासे नारदमुनिगये थे ३४ हे महाभाग उन्हीं नारायणजीके प्रसादसे ब्रह्माजीके पुत्रनारदमुनि शीघ्रही दृढ़ता व मृत्युको जीतकर अब सुख

पूर्व्वक विचरतेहैं ३५ इससे हे वत्स उन पुण्डरीकाक्ष जनार्दन नरसिंह भगवान्को छोड़ और कोई मनुष्य कौन मृत्युके पराक्रमका निवारण करसक्ताहै ३६ बस तुम उन्हीं अनन्त अज विष्णु कृष्ण जिष्णु श्रीपति गोविन्द गोपति देवकेशरणमेंजाओ ३७ हे वत्स जो तुम निरन्तर महादेव नृसिंह भगवान्की पूजा करोगे तो अवश्य मृत्युको जीतलोगे इसमें कुछभी सन्देह नहीं है ३८ व्यासजी शुकाचार्य्य से बोले कि जब उनके पितामह ने ऐसा कहा तो महातेजस्वी मार्कण्डेयजी विनय पूर्व्वक अपने पितामह भृगुजीसे फिर बोले ३९ हे तात आपने यह तो बताया कि विश्वेश्वर प्रभु श्रीविष्णुभगवान् आराधना करने के योग्यहैं पर यह तो बताइये कि कहां व किसप्रकारसे उनकी आराधना हमकरें ४० कि जिससे सन्तुष्ट होकर वे हमारी मृत्यु को तुरन्त दूरकरदें व चिरजीवी बनादें ४१ भृगुजी बोले कि सह्यपर्व्वत पर जो तुंगभद्रानदीहै वहां एक भद्रवटनामस्थान है वहां जाकर केशवभगवान्का स्थापनकर ४२ पुष्पधूपादिकों से जगन्नाथ भगवान्की पूजाकरो इन्द्रियों को मनके आधीन करलेना व मनको तत्त्वसे संयमन करना ४३ शंख चक्र गदा धारणकियेहुये देवदेवेश नारायणजीके हृदय कमलमें स्थापित कर एक मनसे ध्यान करतेहुये ॐनमोभगवते वासुदेवाय इस द्वादशाक्षर मन्त्रको जपना ४४ क्योंकि देव देव श्रीविष्णुभगवान्जीका जो कोई यह मन्त्रजपताहै उसके ऊपर प्रसन्नहोकर विश्वात्मा श्रीभगवान् मृत्युको दूरकरदेतेहैं ४५ व्यासजी शुक्राचार्य्यसे बोले कि जब भृगुजीने ऐसा कहा तो उनके प्रणाम करके मार्कंडेय तपोवनको चलेगये यह तपोवन सह्यपर्व्वतके पादसे बहतीहुई तुंगभद्रानदीके तटपरहै जोकि नानाप्रकारके वृक्षों व लताओं से युक्त व नानाप्रकारके पुष्पोंसे शोभित ४६ छोटी २ झाड़ी बांसों व विशेष लताओंसे घनाथी वहां विष्णु

भगवान् को स्थापन करके क्रमसे गन्ध पुष्प धूपदीपादिकोंसे ४७ देवदेवेश विष्णुकी पूजा महामुनि मार्कण्डेय ने की व वहां हरिकी पूजाकरके अति दुष्कर तप करनेलगे ४८ उसमें एक वर्षतक तो निद्राआलस्य छोड़कर मुनि निराहाररहे फिर जब उनकी माताका बतायाहुआ काल संनिकटआगया ४९ तो उस दिन महामति मार्कण्डेयजीने स्नानकरके व विधिपूर्वक श्री विष्णु का पूजन करके व विशुद्धमन होकर मनमें सब इन्द्रियों कोकर ५० स्वस्तिक आसनबांधकर प्राणायाम करके ओंकारके उच्चारणसे हृदयकमलको विकाशितकरातेहुये बुद्धिमान् मुनिने ५१ उसकेमध्यमें यथाक्रम सूर्य सोम व अग्निकेमण्डलोंको स्थापितकर फिर श्रीहरिके सिंहासनको बनाया उसपरसनातन ५२ पीताम्बर धारणकिये शंख चक्र गदालिये श्यामस्वरूप ब्रह्मरूप हरिको भावपुष्पोंसे पूजकर उसीपर स्थापितकरके ध्यानकरते हुये ॐनमोभगवते वासुदेवाय इसमन्त्र का उच्चारणकिया ५३ व्यासजी बोले कि इसप्रकार श्रीमान् मार्कण्डेयजीका ध्यान करते २ देवदेव जगत्पति में मनलगगया ५४ उसी समयमें यमराजकी आज्ञासे यमराजके दूत पाश हाथोंमेंलिये उनमुनिके लेने को आये परन्तु विष्णुभगवान्के दूतोंने उनकोमारा ५५ ५६ जब वे बेचारे यमदूत शूलोंसेमारेगये तो ब्राह्मणको छोड़ हमलोग तो लौटिजातेहैं अब मृत्यु आप आवेगी ऐसा कहकर चलेगये ५७ इतना सुनकर विष्णुभगवान्केदूत बोले कि जहां हमलोगोंके स्वामी सब लोकोंकेनाथ श्रीविष्णुभगवान्का नाम उच्चारणहोताहै वहां यमराज मृत्यु व सब गिननेवालोंमें श्रेष्ठ काल कौन होताहै ५८ व्यासजी शुकजीसे बोले कि दूत तो चलेहीगयेथे मृत्युआई व महात्मामार्कण्डेयजीसे बोलकर विष्णुके दूतों की शंका से इधर उधर घूमनेलगी ५९ व विष्णु के दूतभी बहुत शीघ्रमूसलों को उठाकर विष्णुकी आज्ञा से

आज मृत्युको मारडालेंगे यह विचारकरके खड़े होगये ६० व तब श्रीविष्णुमें मन अर्पितकरके महामतिमान् मार्कण्डेयजी नम्रहोकर जनार्दनभगवान्की स्तुतिकरनेलगे६१उनको विष्णु जीनेही कानोंमें जो स्तोत्रसुनादिया उसीसेसुवचनसे व सुन्दर मनसे माधवजीकी स्तुति करनेलगे ६२ मार्कण्डेयजी बोले॥

दो० नारायणकजनाभहृषिकेशपुरातनजौन॥
सहसनयनप्रणवौंसुममृत्युकरेकृतिकौन १।६३
अजअव्ययगोविन्दअरुकमलनयनभगवन्त॥
प्रणवौंममकाकरिहिकहुमृत्युसुनमतअनन्त २।६४
वासुदेवजगयोनिरविवर्णअतीन्द्रियतोरि॥
विनयकरतदामोदरहुमृत्युकरेकामोरि ३।६५
शंखचक्रधरदेवअव्ययअरुजग्रस्वरूप॥
प्रणवौंमृत्युहमारकाकरिहैहैंहेभूप ४।६६
विष्णुवराहनृसिंहअरुवामनमाधवराम॥
करहुँप्रणामजनार्दनहिंमृत्युकरिहिकावाम ५।६७
पुण्यपुरुषपुष्करजगतपतिक्षेमकअरुबीज॥
लोकनाथत्वहिंनमतममृत्युकरिहिकाचीज ६।६८
विश्वरूपजगयोनिबिनयोनिमहात्माआप॥
भूतात्माबिनवौंसदामृत्युकरिहिकापाप ७।६९
सहसशीर्षवरदेवअरुव्यक्ताव्यक्तपुरान॥
महायोगबिनतीकरतकरुकामृत्युअयान ८।७०

इसप्रकार महात्मा मार्कण्डेयजीको विष्णुभगवान्का स्तोत्र पढ़तेहुये सुनकर विष्णुके दूतोंसे ताड़ित मृत्यु वहांसे भागगई ७१ इस रीति से उन बुद्धिमान् मार्कण्डेयजीने मृत्युको जीत लिया सो क्यों न जीतें नृसिंह भगवान्के प्रसन्न होनेपर कौन पदार्थ दुर्लभ होता है ७२ मृत्युके नाश करनेवाला शुभ व पुण्यदायक यह मृत्युञ्जयनाम स्तोत्र मार्कण्डेयके हितके लिये

श्रीविष्णुजीने अपने मुखारविंदसे कहा था ७३ जो पुरुष यह स्तोत्र नित्य त्रिकाल पढ़ताहै अच्युतमें चित्त लगायेहुये उस पुरुषकी अकालमें मृत्यु कभी नहीं होती है ७४॥

हरिगीतिका॥

मनकमलमहँ शाश्वतअनादि पुराणपुरुष ध्यायके।
ज्यहिनाम नारायण परायण जननपालत आयके॥
त्यहिचिन्त्य सूर्य्यहुसों प्रकाशित मृत्युकहँ सोजीतिकै।
मुनिराज भार्गववंशभूषण भयहु निर्भय प्रीतिकै १। ७५

इतिश्रीनरसिंहपुराणेमार्कण्डेयमृत्युंजयोनामसप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवाँ अध्याय॥

दो॰ अठयेंमहँ निज पुरुषके वचन श्रवणकरि सौरि॥
बहुविध हरिमाहात्म्य कह नरकविनाशन चौरि १

श्रीव्यासजी शुकाचार्य्यजीसे बोले कि श्रीविष्णु भगवान् के दूतोंसे पीड़ित होकर मृत्यु व यमदूत अपने राजाके समीप जाकर बड़ारोदन व पुकारकरके बोले १ हे राजन् जो हम लोग आपके आगे कहते हैं उसे सुनिये आपकी आज्ञासे हमलोग जाकर मृत्युको दूर स्थापित करके २ किसी देवदेवको एकाग्र मनसे ध्यान करतेहुये भृगुजी के पौत्र ब्राह्मण श्रेष्ठ मार्कण्डेय के समीप गये ३ पर हम सब उसके समीप न जासके व जब तक जानेका विचारकरें २ तब तक कुछ बड़े २ शरीरके पुरुषों ने मुशलोंसे हम लोगोंको पीटडाला ४ हम लोग तो फिर वहां से लौटआये पीछे वहां मृत्युगई हम लोगोंको अति भयभीत कराते हुये उन लोगों ने मृत्युको भी मुशलोंसे मारा ५ इससे मृत्यु सहित हम लोग उस तपस्वी ब्राह्मणको यहां लेआने में असमर्थ हैं ६ सो हे महाभाग हम लोग अब आपसे यह पूँछते हैं कि उस ब्राह्मणमें ऐसा तेज कहांसे आया व वह किसका

ध्यान करता था व जिन लोगोंने हम लोगों को ताड़ित किया वे कौनथे ७ व्यासजी शुकजीसे बोले कि इस प्रकार यमराज जीसे जब उनके दूतोंने व मृत्युने कहा तो कुछदेरतक विचारांश व ध्यान करके यमराज बोले ८ अये हमारे सब दूतो व मृत्यु तुम सब हमारा सत्य वचन सुनो जोकि हम ज्ञान योगसे कहते हैं ९ भृगु के पौत्र महाभाग्यवान् व महामति मार्कण्डेयमुनि आज अपनी मृत्यु होना जानकर मृत्युके जीतनेकी इच्छा से बनको गये १० वहां भृगुके बतायेहुये मार्गके अनुसार बहुत तप उन्होंने किया उसमें हरिकी आराधना व ध्यान करते हुये विष्णु भगवान्का द्वादशाक्षर मंत्र जपतेरहे ११ व एकाग्र मन से श्रीहरि का ध्यान करते रहे हे किंकरो वे मुनिराज निरन्तर योगाभ्यासमें युक्तरहे १२ अये हरिके ध्यान करनेमें चतुर हमारे दूतो उस महामुनिका बल और कुछ कालके जीतनेवाला हम नहीं देखते १३ केवल केशव भगवान्काबल देखते हैं क्योंकि भक्तवत्सल हृषीकेश निरन्तर जिसके हृदयमें स्थित रहते हैं केशवके शरणको प्राप्त व विष्णुरूप पुरुषको कौन देखसक्ता है १४ इससे वह नारायण भगवान्का दासहै व वे उनके दूत हैं जिन्होंने तुम लोगोंको मारापीटा इससे अब आजसे तुम लोग वहां कभी न जाना जहां वैष्णव लोगहों १५ हम इस बातको आश्चर्य नहीं मानते जोकि तुम लोगोंकी वहां मारहुई किंतु आश्चर्य इस बातका मानते हैं जोकि उन बड़ी कृपा करनेवाले विष्णुदूतोंने तुम लोगोंके प्राण नहीं लेलिये १६ भला नारायणके भजनमें तत्पर उसब्राह्मणको कौन देखसक्ताहै तुम महापापियोंने श्रीहरिके भक्त मार्कण्डेयजीकेलेआनेका विचारकिया था यह अच्छा नहीं कियाथा १७ अब हम तुम लोगोंको आज्ञा देते हैं कि जो लोग देवताओंके देव श्रीनृसिंहजीकी उपासना करतेहों उनके पास कभी भूलसेभी न जाना १८ व्यासजी इसी

कथाको शुकजीसे कहते हैं कि यमराज इस प्रकार अपने दूतों व मृत्युसे कहकर नरकोंमें पड़े हुये दुःखित पुरुषों को देखकर उनसे कहनेलगे १९ वह वचन उन्हों ने बड़ी कृपासे कहा था विशेष करके विष्णु भगवान्‌की भक्तिसे व जनोंके ऊपर अनुग्रह करनेके लिये वह कहते हैं सुनो २० कहा कि अये लोगो तुम सब नरकमें पच्यमानहो तुम लोगोंने क्लेश नाशनेवाले केशव भगवान्‌का पूजन क्यों नहींकिया २१ भला जो विष्णुभगवान् अन्य पूजाकी सामग्री न होने पर जलमात्रसे पूजा करने पर प्रसन्न होकर अपना लोक देदेतेहैं उनकी पूजा तुम लोगों ने क्यों न की २२ नरसिंह हृषीकेश कमलनयन श्रीनारायण स्मरणमात्रसे मनुष्योंको मुक्तिदेते हैं उनका पूजन तुमने क्यों नहीं किया २३ इस प्रकार नरकनिवासियोंसे कहकर यमराज जी फिर अपने दूतोंसे विष्णुजीकी भक्तिसे युक्तहोकर बोले २४ अव्यय विश्वात्मा श्रीविष्णु भगवान्‌ने एक समय नारदजीसे व और भी वैष्णवोंसे कहाहै उन सबोंके मुखसे हमने सुनाहै २५ वह हरिका वचन प्रीतिसे तुम लोगोंसे कहेंगे इससे हरिभगवान् के प्रणाम करके तुम लोग शिक्षाके लिये चित्त लगाकर श्रवण करो २६ वह भगवान्‌जीका वचन यहहै कि ॥

दो० कृष्णकृष्ण हेकृष्ण इमि कहिसुमिरत जो मोहिं ॥
जलभेदनकरि कमलजिमि नरकउधारहुँ ओहिं १।२७
नारसिंहजलजाक्षसुर ईशत्रिविक्रमराम ॥
मैंतवशरणकृपायतन देहुमोहिनिजधाम २।२८
देवदेवलवशरणहूँ इमिकहिसुमिरैजोय ॥
ताहिउबारहुँक्लेशसोंसकलदुरितदुखखोय३।२९

व्यासजी श्रीशुकदेवजीसे बोले कि इसप्रकार यमराजके मुखसे श्रीहरिका वचन सुनकर सब नरक निवासी हे कृष्ण हे कृष्ण हे नरसिंह ऐसा ऊँचेस्वर से पुकारउठे ३० व जैसे २.

नरकनिवासियों ने हरिकानाम कीर्त्तनकिया वैसेही २ हरिकी भक्तिको प्राप्तहोकर वे सबकेसब ऐसा बोले ३१ ॥

चौ० श्रीभगवान महात्माकेशव । नमोनमो करतेहमहैंतव ॥
जासुनामकीर्त्तनसोंआशू । नरकअनलकरहोतविनाशू १। ३२
हरिभक्त प्रियरक्षक देवा । लोकनाथ हम करत सुसेवा ॥
शान्तचित्तयज्ञेशरमेशा । तुम्हेंनमतहमसहतकलेशा २। ३३
अप्रमेयनरसिंहअनन्ता । नारायणगुरु श्री भगवन्ता ॥
गदाचक्रधरतोहिंनमामी । म्वहिंजानियआपनअनुगामी३।३४
वेदप्रिय बिक्रमरुमहाना । महिधरवेदअंग भगवाना ॥
श्रीबराहनरसिंहतुम्हारे । करतप्रणाम हरहुदुखसारे ४। ३५
बामनदीप्तिसानब्राह्मणतनु । तुमबहुज्ञ वेदान्त वेदमनु ॥
अरुवेदाङ्गनमतप्रभुतोहीं । करतप्रणामउधारहुमोहीं ५। ३६
बलिबन्धनमहँ दक्षमुरारी । वेदपालसुरनाथ खरारी ॥
परमात्माव्यापकभगवाना।विष्णुतुम्हेंप्रणमतकरिध्याना ६।३७
शुद्धचतुर्भुजशुद्धद्रव्यधर । जामदग्न्यवरपरशुधरेकर ॥
रामक्षात्रिनाशकभगवाना। करतविनयतवयशकरिगाना ७।३८
रावणान्तकारक श्रीरामा । परमपुरुषपूरण सबकामा ॥
यहिदुर्गन्धिनरकसोंमोहीं । नाथउबारहुबिनवहुँतोहीं ८। ३९

श्रीव्यासजी शुकदेवजीसे बोले कि जब नरकनिवासियोंने इसप्रकार श्रीविष्णुभगवान् का कीर्त्तन भक्तिपूर्व्वक किया तो उन महात्माओं की नारकीपीड़ा जातीरही ४० व सबके सब कृष्णरूप धारणकरनेवाले दिव्यबस्त्रोंसे विभूषित अंगोंमें दिव्य चन्दनादि सुगन्धितवस्तु लगायेहुये व दिव्य भूषणोंसे भूषित होगये ४१ उनको दिव्यविमानोंपर चढ़ाकर व यमराजके पुरुषोंको भयभीतकरके श्रीहरिकेदूत श्रीभगवान्केशवजीके धाम को लेगये ४२ जब इसतरह श्रीविष्णुभगवान्के दूत उनसब नरकवासियों को बैकुण्ठको लेगये तो यमराजजीने श्रीहरि के

प्रणाम किया ४३ कि जिसके नामके कीर्त्तनमात्र से नरकके रहनेवाले तुरन्त वैकुंठको पहुँचायेगये उन महागुरु नृसिंहजी के नमस्कार करते हैं ४४ व जोलोग उन नृसिंह भगवान् के प्रणामकरतेहैं उनकेभी हम बार २ नमस्कार करते हैं ४५ इस प्रकार श्रीभगवान् व उनके प्रणाम करनेवालों के नमस्कार करके व नरकके अग्निको शान्त देखकर व सब यन्त्रादिकों को विपरीत जानकर यमराजजीने फिर अपने दूतोंके सिखाने का विचारांश किया ४६॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेयमगीतानामाष्टमोऽध्यायः ८॥

नवां अध्याय॥

दो० नवयेंमहँयमपुनिकह्यो निजदूतनसोंयेह॥
जहांहोहिंवैष्णवसुनहुजनिजायहुतिनगेह१

श्रीव्यासभगवान् शुकाचार्य्यजीसे बोले कि फांसी हाथोंमें लियेहुये अपने पुरुषोंको देखकर यमराजजीने कानके समीप मुखलगाकर यह कहा कि तुमलोग श्रीविष्णुके भक्तोंको छोड़दो क्योंकि हम अन्यलोगों के दण्डदेनेमें समर्थ हैं वैष्णवोंके शासन करनेमें नहीं हैं १ देवगणोंसे पूजित ब्रह्माजीने सबलोगोंके हितके व अहित करनेके लिये हमको इस अधिकारपर नियत कियाहै पर हम श्रीहरि व गुरूसे जो लोग विमुखहैं उन्हीं को दण्ड देतेहैं और हरिचरणारविन्दों के स्मरण पूजनादि करने वालोंके नमस्कार करते हैं २ व हम भी वासुदेव भगवान्से अपनी सुन्दरगति चाहते हैं इससे भगवद्दासों में व भगवान्के स्मरणादिमें मनलगाये रहतेहैं व मधुदैत्यके मारनेवाले श्रीहरि के वशमें हैं स्वतन्त्र नहीं हैं इससे श्रीकृष्ण भगवान् हमारे मार डालने में समर्थ हैं ३ भगवान्से विमुख पुरुषकी सिद्धि कभी नहीं होती जैसे कि बिष अमृत कभी नहीं होताहै क्योंकि जो सहस्रों वर्षों तक अग्निमें तपाया क्या गलायाजावे पर लोह

सुवर्ण नहीं होता ४ चन्द्रमासे जो पापकी श्यामताका चिह्न है
वह कभी नहीं मिटसक्ता न वह सूर्य्यके समान तापही कभी कर-
सक्ताहै व जो भगवान् अनन्तहीमें चित्त लगाताहै और किसी
में नहीं लगाता वह पुरुष जो मलिन भी हो तो भी तेजसे प्र-
काशित रहता है ५ देखो श्रीविष्णुजीकी भक्तिके बलसे महा-
देवजी ने विष भक्षण करलिया व अगस्त्यमुनि ने समुद्रको पी
लिया इन्द्र सदा असुरोंसे पीड़ित रहते हैं परन्तु भक्तिहीके बल
से बचे रहते हैं व महादेवजीके ऐसे भूत प्रेत पिशाचादि सेवक
हैं तथापि भक्तिके बलसे पूज्यहैं ६ इसके विशेष महादेवजी विष
भक्षण करते सर्प्पोंको अंगोंमें धारण करते व बौद्धमतवालोंके
आचार्य्य पांच तो अपने शिरमें शिखा रखते हैं व जो कुछ क-
हते हैं सब वेद शास्त्रसे विपरीतही कहते इसी रीतिसे और २
देवादिकोंमें भी अगुण विचार करके श्रीनारायणकी उपासना
को छोड़ और किसीकी मुक्ति सिद्धिके देनेवाली नहीं है ७ दे-
वता व गुरूके चरणों में दृढ़ प्रसाद करानेवाले व मोक्ष देने के
कारण हरिके चरणारविंदोंका स्मरणकरो क्योंकि सैकड़ों पुण्यों
के करने से यह मनुष्यका शरीर मिलता है इसे इन्द्रियों केही
अर्थमें लगाना वृथाहै ८ क्योंकि मोक्षमार्ग्ग दिखानेवाला पु-
रुष औरोंके चित्तको रमित करताहै आप नहींकरता वह भस्म
के लिये चन्दनके वृक्षको जलाताहै ऐसा अनारी है व ऐसे श-
रीरको पाकर हाथ जोड़ेहुये सुरेन्द्र जिस नारायणके नमस्कार
करते हैं मनुष्य देह पाकर उसका भजन नहींकरते वे लोग च-
न्दनके वृक्षके तुल्य उत्तम मनुष्य देहको राखके लिये जलाते
हैं जो सुख अन्य योनियोंमें भी मिलते हैं उन मैथुनादिकों में
लगाते हैं ९ ऐसा कहकर यमराजने अविहतगति सनातन सब
से अग्रज व जगत्में जन्म निवारण करनेवाले परमेश्वर ना-
रायणके नमस्कारहै यह अपनी पुरीमें डंका बजवाकर पुकरवा

दिया १० जिसको सुनकर चित्रगुप्तादि यमदूतोंने उस दिनसे विष्णुभक्तोंको यमपुरकोलानेसे छोड़दिया क्योंकि उन्होंने पाशधारी अपने सब पुरुषोंसे सबके सुनतेमें यह कहा कि ११ अरे दूतो वैष्णवों को छोड़दो क्योंकि हम अन्य लोगोंके स्वामी हैं वैष्णवोंके नहींहैं व हमारा यहअष्टक जो कोई पढ़ेगा वा सुनेगा वह सब पापोंसे छूटजावेगा व हरिलोकको जावेगा १२॥

हरिगीतिका॥

हरिभक्तिवर्द्धन शत्रुमर्दन पुण्य यह यमराज को।
वरवचनहमतुमसनकहा प्रणतार्त्तिहर गुणभ्राजको॥
अब कहतपुनि भृगुपौत्र गाथा जो पुरातन है सही।
ज्यहिकीनभार्गवतनयमुनिवर जोमुनीशनकीकही१।१३

इतिश्रीनरसिंहपुराणेयमाष्टकवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय॥

दो० दशयेंमहँ भृगुपौत्र कर तपहरिदर्श वरादि॥
लाभहोन बहुभांतिकह वेदव्यास श्रुतिवादि १

श्रीव्यासजी शुकदेवमुनिसे बोले किइसप्रकार प्रशंसाकरने के योग्य व्रत करनेवाले मार्कण्डेयमुनि तपस्यासे मृत्युको जीत कर अपने पिताके स्थानको गये १ व वहां अपने पिता माता को आनन्द करके भृगुजीके कहनेसे विवाहकरके विधान सहित उस स्त्रीसे वेदशिरो नाम पुत्रको उत्पन्न किया २ फिर रोगादि रहित निर्विकार श्रीनारायणको यज्ञसे पूजित करके व श्राद्ध करनेसे पितरोंकी पूजा करके और अन्नदानसे अतिथियोंका सत्कार पूजन करके ३ फिर सब तीर्थों के राजा प्रयाग तीर्थ में जाकर महातेजस्वी मार्कण्डेयजी अक्षयवटके नीचे बैठकर तप करनेलगे ४ जिसके प्रसादसे पूर्व्वसमयमें अपनी मृत्युको जीतलिया था उन्हीं देवदेव नारायणके पूजनके लिये परमतप करनेलगे ५ बहुत दिनों तक तो केवल वायु पीकर रहे इससे

तपकरते २ शरीर बनाय दुर्ब्बलहोगया एकसमय महातेजस्वी मार्कण्डेयजी ६ चन्दन पुष्प धूप दीपादिकोंसे माधव भगवान् की पूजा करके मनसे उन्हींका स्मरण करतेहुये एकाग्र मनसे शंख चक्र गदा हाथोंमें लिये श्रीनारायणजीकी स्तुति करनेलगे ७ मार्कण्डेयजी बोले कि ॥

चौ० नरनरसिंह प्रलम्बबाहुहरि। अच्युतकमलनयनभव जलतरि॥श्रीनरनाथ विष्णुपुरुषोत्तम। क्षितिपतिनुतपदतुम्हें करतनम १।८ जगपति क्षीरपयोधि निवासी। शार्ङ्गपाणिश्री पतिरिपुनासी ॥मुनिसमूह बंदितश्रीश्रीधर। ईश्वरईश गुविन्दनमत अर २।९ अजवरेण्य जनदुःख बिनाशन।गुरुपुराण पुरुषोत्तम प्रभुभन॥ सहससूर्य्य द्युतिअच्युतमाधव।हरिनमामिकरि भक्ति सुमामव ३।१० क्षितिपति लोकनाथ जगकारण। प्रजानाथ त्रैलोक्य सुधारण ॥ पुण्यवान परगति सब साषी। करत प्रणाम मधुरवच भाषी ४।११ जो अनन्तशय्यापर सोवत। प्रलय पयोधि मध्य श्रम खोवत ॥ क्षीराधिकण बीचीसों सिंचित।श्रीनिवास प्रणमत सुर अंचित ५। १२ नारसिंहतनु मधुकैटभहर। सकल लोकदुखहर सुरगण भर॥ विष्णु हिरण्यगर्भ जगस्वामी। प्रणतपाल तव चरणनमामी ६।१३ विभुअनन्त अव्यक्त अतीन्द्रिय। निजनिजरूप बिराज विप्रप्रिय॥ योगेश्वरनुत तवपदपंकज। नमतजनार्द्दन ज्यहि प्रणमतअज ७।१४ चिदानन्द आनन्द बिरजअज ॥ योगि ध्येय शिरधरत चरणरज ॥ लघुसोलघु अक्षय अवृद्धिहरि। प्रणमतत्वहिं निजमन सुस्थिरकरि ८।१५॥

श्रीव्यासजीबोले कि जब महाभाग्यवाले मार्कण्डेजीने यह स्तोत्र पढ़कर इतनीस्तुति श्रीनारायणजीकीकी तो आकाशवाणीहुई १६ हे ब्रह्मन् तुम ऐसाक्लेश क्योंकरतेहो जिससे माधवके दर्शन नहींहोते जब तक तुम सब तीर्थोंमें स्नान न कर-

लोगे तब तक भगवान्के दर्शन न होंगे १७ जब इस प्रकार आकाशवाणी सुनी तो मार्कण्डेयजीने सब तीर्थोंमें स्नानकरनेका मन किया परन्तु यह तो बिदितही न था कि सब तीर्थ कहां २ हैं इसलिये आकाशबाणीकी ओर मुखकरके कहा कि हमको सब तीर्थ बताओ तुम जो कोईहो तुम्हारे नमस्कार करतेहैं १८ यह सुनकरवाणी फिर बोली कि हे ब्राह्मण इसस्तोत्रसे फिर नारायण प्रभुकी स्तुतिकरो बिना इसके करनेसे सब तीर्थोंका फल न पाओगे १९ आकाशबाणीकी ऐसी सुबाणी सुनकर वहां विधिपूर्व्वक स्नानकर तपस्यामें टिककर दर्शन करने की इच्छासे श्रीहरिकी आराधना करनेलगे २० उसकाक्रम ऐसा है कि पुरुषोत्तम पुरीमें जाकर स्नानकरके देवदेव नारायणजीकी स्तुति महातपस्वी मार्कण्डेयमुनि करनेलगे २१ जब येनारायण हरिकी तपस्याकरनेलगे तो और भी ब्राह्मणोंके बहुतसे बालक वहांसनातन ब्रह्मकोतामगातेहुये तपकरनेलगे २२ और इन्होंने तो गन्ध पुष्पादिकोंसे पुरुषोत्तमजीकी पूजाकरके ऊपरको दोनों हाथ उठाकर उत्तम बाणियोंसे बड़ी स्तुतिकी २३ मार्कण्डेयजी बोले कि हे भगवन् जिसस्तोत्रके पाठकरनेसे सब तीर्थोंकाफल मिले वह स्तोत्रभी हमसे कहिये २४ यह सुनकर आकाशबाणी फिरहुई कि स्तोत्र यह है ॥

दो॰ जय जय जय केशव रमाधव जय देव सुरेश ॥
पद्मपलाशाम्बक बिजय जय बामन अवधेश ॥ १ ॥ २५
पद्मनाभ बैकुण्ठ जय जय गोपति गोबिन्द ॥
हृषीकेश अच्युत दमोदर जय पदअरबिन्द ॥ २ ॥ २६
जय लोकेश्वर शंखकर गदापाणि महिधारि ॥
शूकर कमलापति जयाच्युत जगगुरुरु मुरारि ॥ ३ ॥ २७
जय यज्ञेश वराह जय जय भधर भूमीश ॥
योगप्रवर्त्तक योगपति जय योगेश महीश ॥ ४ ॥ २८

धर्म्मप्रवर्त्तक योगकर कृतप्रिय जय यज्ञेश॥
जय यज्ञांग मखेश जय जयजयजय कमलेश ५।२९
नारद सिद्धिद पुण्यकर गृह जयजय जगवन्द्य॥
वैदिकभाजन देव जय जय जय जय सुरनन्द्य ६।३०
चतुर्ब्बाहु जय दैत्यभयकारक शंकर साधु॥
सर्ब्बात्मन् सर्ब्बज्ञजय शाश्वतविजय अबाधु ७।३१
जय विष्णो महदेवजय नित्य अधोक्षज तोहिं॥
विनय करत हम जोरिकर दीजै दर्शन मोहिं ८।३२

व्यासजी शुकाचार्य्यजीसे बोले कि जब बुद्धिमान् मार्कण्डेयजीने इसप्रकारस्तुतिकी तोपीताम्बरओढ़े शंख चक्र गदा हाथमें लिये सबभूषणोंसेभूषित तेजसेसबदिशाओंकोप्रकाशितकराते हुये सनातन जनार्दन श्रीविष्णुभगवान् वहांप्रकटहुये३३।३४ बहुतदिनोंसे जिनके दर्शनकी अभिलाषाकियेथे उन श्रीविष्णु भगवान्जी को देखकर झटपट शिर झुँकाकर पृथ्वीपर गिर भक्तिसे बार २ गिरते उठतेहुये मार्कण्डेयजी दोनोंहाथ जोड़ भगवान् के खड़ेहोकर स्तुति करतेहुये बोले ३५। ३६॥

चौ० देवदेवमहदेव महोदय। महाकाय ब्रह्मेन्द्रविनोदय॥ महाप्राज्ञमहचित्ततुम्हारे। विनयकरतभयहरहुहमारे १। ३७ रुद्रचन्द्रपूजित पदपंकज। कमलपाणि मर्दित दानवध्वज॥ करतप्रणाम युगलकरजोरे। नाथहरहु सबदुखभयमोरे २।३८ शेषभोगकृत शयनसनातन। सनकसनन्दन आदिभक्तजन॥ तवपदपंकज लोचनलाये। नमतसदा अतिशयहरषाये३ विद्याधरगन्धर्व्वयक्षगण। किन्नरकिम्पूरुषशुभवचभण॥ गावततव यशसततमुरारी। नमोनमोहमकरतपुकारी ४। ३९ नारायणनरसिंहजलेश्वर। गोबर्द्धनगुहवास महेश्वर॥ पद्मनाभगोविन्द तुम्हारे। करतप्रणामहरहुदुखसारे ५। ४० विद्याधरमायाधर यशाधर। त्रिगुणनिवासयोगधरदरहर॥ त्रेतानलधरत्रितयत-

त्वधर। कीर्तिधराच्युतमोहिंसदाभर ६।४१ त्रयसुपर्णत्रिनिके तत्रिवेदी। धरतदंडत्रयहरतसुभेदी॥ करतविनयहमरमानिवा- सू। करियकृपाहरियेउरत्रासू ७। ४२ सजलजलदसमश्याम शरीरा। तड़ितविनिन्दकपीतकचीरा॥ कटककिरीटकियूरहार मणि। करतप्रकाशितदिशासदागणि ८। ४३ विश्वमूर्तिमधु- सूदनस्वामी। कनकरत्नकुंडलसुललामी॥तासोंमंडिकपोलसुहा- वन। देखतहीअघओघनशावन९। ४४ लोकनाथयज्ञेश्वरम- खप्रिय। तेजोमयनिजजनप्रियहृतप्रिय॥वासुदेवपुरुषोत्तमअघ हर। करतप्रणामरामदीजेवर १०। ४५॥

व्यासजी बोले कि भगवान् जनार्दन देवदेव प्रसन्नहोकर इतनी स्तुति सुनकर मार्कंडेयजीसे बोले ४६ कि हे वत्स हम तुम्हारे इसबड़ेभारी तपसे व इनस्तोत्रोंसे स्तुतिकरनेसे बहुत सन्तुष्टहुये अब इससमय तुम्हारे सब पाप नष्टहोगये ४७ हे विप्रेन्द्र हम वरदेनेकेलिये प्राप्तहुयेहैं जोचाहो वरमांगो हमारा दर्शन बिनातपस्या किसीको नहीं होसक्ता ४८ यह सुन मार्क- डेयजीबोले कि हे देवदेव हम इससमय आपके दर्शनसे कृतार्थ हुये हे जगत्पते केवल आप अपनी अचलभक्ति हमकोदें ४९ औरभी हेमाधव श्रीपतिजी जो आप हमारेऊपर प्रसन्नहुयेहों तो हे हृषीकेश हमको बहुत दिनकेलिये आयुदीजिये जिसमें बहुतदिनोंतक आपकी पूजाकरें ५० श्रीभगवान् बोले कि मृत्यु तो तुमने पहिलेही जीतली अब चिरंजीवीहोओ व मुक्तिदायि- नी अचला वैष्णवीभक्ति तुम्हारेहो ५१ व हेमहाभाग यहतीर्थ आजसे तुम्हारे नामसे प्रसिद्धहोगा व फिर तुम हमको क्षीरसा- गरमें शयनकियेहुये देखोगे ५२ व्यासजी बोले कि इतना कह कर कमलनयन करुणायन श्रीभगवान् वहीं अन्तर्धान होगये व धर्मात्मा मार्कंडेयजीभी मधुसूदनभगवान्की चिन्तना करते हुये ५३ व देवदेव शुद्धस्वरूपकी पूजा करतेहुये व नमस्कारकरते

हुये वेद शास्त्र व पुण्य सब पुराण ५४ गाथाइतिहास व पितरों के हितकारी श्राद्धादिके प्रकरण सब मुनियोंको सुनानेलगे ५५ बहुतदिनोंकेपीछे एकसमय परमेश्वर श्रीविष्णुभगवान्‌के वचन का स्मरणकरतेहुये सबशास्त्र जाननेवालों में श्रेष्ठ मार्कंडेय जी समुद्रमें बसतेहुये श्रीजनार्दन भगवान्‌के दर्शनकरनेको गये ५६ परन्तु बहुतदिनोंतक उस समुद्रमें अमयुक्त होकर भृगुके पौत्र मार्कंडेयजी हरिभक्तिकोप्राप्तहोकर क्षीरसमुद्रमें जाकर शेषशय्यापर शयनकियेहुये हरिको उन्होंने देखा ५७॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेमार्कण्डेयचरित्रेदशमोऽध्यायः १०॥

ग्यारहवां अध्याय॥

दो० ग्यारहयें अध्यायमहँ मुनि मार्कण्ड महान॥
बहुविधिहरिकीस्तुतिकरीवरलहसाहितविधान १॥

श्रीव्यासजी बोले कि चराचरके गुरू जगन्नाथ श्रीहरि के प्रणाम करके शेषनागहीको शय्याबनाकर उसपर सोतेहुये श्री भगवान् की स्तुति मार्कण्डेयजी करनेलगे १ मार्कण्डेयजी बोले कि हे भगवन् हे विष्णो हे पुरुषोत्तम प्रसन्नहोओ हेदेव देवेश हे गरुड़ध्वज प्रसन्नहोओ २ हेलक्ष्मीश हे विष्णो हे धरणीधर प्रसन्नहोओ हे लोकनाथ हे परमेश्वर प्रसन्नहोओ ३ हे सर्व्वदेवेश हे कमलनयन प्रसन्नहोओ हे मन्दरधर हे मधुसूदन प्रसन्नहोओ ४ हेशुभगाकांत हे भुवनाधिप प्रसन्नहोओ हे महादेव हे केशव आज हमारेऊपर प्रसन्नहोओ ५ हे कृष्ण हे अचिन्त्य हे विष्णो हे अव्यय हे विश्व हे अव्यक्त तुम्हारी जयहो व हे विष्णो तुम्हारे नमस्कार है ६ देव अजेय सत्य अक्षरकाल ईशान सर्व्व तुम्हारी जयहो व तुम्हारे नमस्कार है ७ यज्ञपते नाथ विश्वपते भूतपते सर्व्वपते बिभो तुम्हारी जयहो ८ विश्वपते दक्ष पापहर अनन्त जन्मजरानाशक तुम्हारी जयहो व तुम्हारे नमस्कार है ९ हे भद्रांत भद्रेश तुम्हारी जयहो व तु-

म्हारे नमस्कार हैं हे कामद हे काकुत्स्थ हे मानद हे माधव तु-
म्हारी जयहो १० शंकर श्रीश देवेश तुम्हारी जयहो व तुम्हारे
नमस्कार है कुंकुमरक्ताभ पंकजलोचन तुम्हारी जयहो ११ हे
चन्दनलिप्तांग श्रीराम तुम्हारी जयहो व तुम्हारे नमस्कार है
हे जगन्नाथ हे देवकीनन्दन तुम्हारी जयहो १२ हे सर्व्वगुरो हे
श्रेय जयहो व तुम्हारे नमस्कारहै हे सुन्दर हे सुन्दरीवल्लभ हे
पद्माभ जयहो हे सर्व्वांगसुन्दर हे वन्द्य जयहो व तुम्हारे नम-
स्कारहैं १३ सर्व्वद सर्व्वेश शर्म्मद शाश्वत भक्तों के मनोरथ
देनेवाले हे प्रभ विष्णो तुम्हारी जयहो व तुम्हारे नमस्कार है
१४ कमलनाभ कमलमाली लोकनाथ वीरभद्र तुम्हारे नम-
स्कारहैं १५ त्रैलोक्यनाथ चतुर्म्मूर्त्तिधारी जगत्पति देवाधिदेव
नारायण तुम्हारे नमस्कारहैं १६ वासुदेव पीताम्बरधारी नर-
सिंह शार्ङ्गधारी तुम्हारे बार २ नमस्कार हैं १७ कृष्णराम च-
क्रायुध शिव देव भुवनेश्वर तुम्हारे बार २ नमस्कारहे १८ वे-
दान्तवेद्य अनन्त विष्णु सकलाध्यक्ष श्रीधर अच्युत तुम्हारे
नमस्कारहै १९ लोकाध्यक्ष जगत्पूज्य परमात्मा तुम्हारे नम-
स्कारहै तुम सब लोकोंकी माताहो व तुम्हीं जगत्के पिता हो
२० दुःखितोंके सुहृदमित्र व प्रिय तुम्हींहो हे प्रपितामह तुम्हीं
सबके गुरू तुम्हीं गति तुम्हीं साक्षी व तुम्हीं पति तुम्हीं सबके
परायणहो २१ ध्रुव तुम्हींहो व वषट्कार करनेवाले तुम्हींहो हवि
व अग्नि तुम्हीं हो शिव वसु धाता ब्रह्मा सुरेश्वर सत्र तुम्हीं
हो २२ यम रवि वायु जल कुबेर मन दिन रात्रि चन्द्रमा धार-
णाशक्ति लक्ष्मीकी शोभा क्षमा व पर्व्वत सब तुम्हींहो २३ सब
जगतोंके कर्त्ता व हर्त्ता मधुसूदन तुम्हींहो व तुम्हीं सबके रक्षक
भी हो चर अचर सब तुम्हींहो २४ हे परमेश्वर करण कारण
के कर्त्ता तुम्हींहो हे शंख चक्र गदा हाथोंमें लेनेवाले माधव मेरा
उद्धारकरो २५ हे प्रिय हे पद्मपलाशाक्ष हे शेषपर्य्यंक पर शयन

करनेवाले हेपुरुषोत्तम भक्तिसे निरन्तर तुम्हारेही प्रणामकरता हूँ २६ हेदेव श्रीवत्ससे चिह्नित जगत्के बीजरूप श्याम कमल नयन व कलियुगके भी पापोंके नाश करनेवाले तुम्हारे शरीर के नमस्कार करताहूं २७ लक्ष्मी धारण करनेवाले उदार अंग वाले दिव्यमालासे विभूषित मनोहर पीठवाले महाबाहु ग्रहण कियेहुये भूषणोंसे भूषित २८ कमलनाभ विशालनयन कमल पत्र सदृश नेत्रवाले लम्बी व ऊँची नासिकावाले सजलमेघ सम नीलस्वरूप २९ दीर्घबाहु पीनताके कारण गुप्तांगवाले रत्नों के हारसे शोभित बक्षस्स्थलवाले सुन्दर भौंहवाले ललाटपर मुकुट धारणकिये चीकने दांतोंवाले सुन्दर नयनवाले ३० मनोहर बाहु अरुणओष्ठ रत्नजटित कुंडलधारी गोले कंठवाले मोटेकंधेवाले सरसरूप श्रीधर हरि ३१ सुकुमारस्वरूप अज नित्य नीले घुँघुवारे केशोंवाले ऊँचे स्कन्धवाले चौड़ीछातीवाले कर्णपर्यन्त विस्तृत नेत्रवाले ३२ सुवर्णवत्प्रकाशित कमल सदृश मुखवाले लक्ष्मीजीके बड़ेभारी ईश्वर सब लोकोंके विधाता सब पापोंके हरनेवाले हरि ३३ सब लक्षणोंसे सम्पन्न सब प्राणियोंके मनके हरनेवाले विष्णु अच्युत ईशान अनन्त व पुरुषोत्तम ३४ मनसे तुम्हारे नित्य नमस्कार करताहूं तुम नारायण रोगरहित वरदान देनेवाले इच्छा पूरण करनेवाले कान्तस्वरूप अनन्त अमृत व शिवरूपहो ३५ हे भक्तवत्सल विष्णो शिरसे सदा तुम्हारे नमस्कार करताहूं वायुके चलनेसे चंचल अति घोर इस महार्णवमें ३६ सहस्रफणोंसे शोभित अनन्त शरीर की शय्याके ऊपर रम्य विचित्र शयनपर जोकि मन्दपवन के चलनेसे रमण करनेके योग्य है ३७ लक्ष्मीजीके भुजपंजर से दुलराये हुये तुमको यहां सर्व्वभूतमय मैंने देखा जोकि मनसे भी आप अगोचर रहते हैं ३८ हे भगवन् इस समय तुम्हारी मायासे मोहित मैं अतीव दुःखसे पीड़ितहूँ क्योंकि स्थावर जं-

गम सब नष्ट होगये हैं व इस एकार्णवमें मैं विद्यमानहूं ३९ सब
से शून्य होनेके कारण इसमें अन्धकारही दिखाई देताहै इस-
से दुःपार दुःख के कीचड़ के तुल्य दुःख देनेवालाहै ४०शीत
आतप वृद्धता रोग शोक व तृष्णादिकों से मैं अत्यन्त पीड़ि-
तहूँ हे अच्युत व शोक मोह ग्रहरूपों से ग्रस्तहोकर इसभव-
सागर में विचरताहूँ ४१ सो भाग्यवशसे आज यहां तुम्हारे
चरणारविन्दोंके शरणमें पहुँचा परन्तु इसमहाघोर एकार्णवमें
नानाप्रकार के दुःखोंसे पीड़ितहूँ ४२ बहुतदिनोंसे भ्रमणकर-
ते २ वनाय थकगयाहूँ इससे आज तुम्हारे शरणमेंहूँ हेकमल
नयन विष्णो हे महामाय अब प्रसन्नहोओ ४३ हे विश्वयोने हे
विशालनयन हे विश्वात्मन् हे विश्वसम्भव मैं अनन्यशरण
होकर तुम को प्राप्तहुआ हूँ हे कुलनन्दन ४४ शरणागत व
आतुर मुझको कृपासेपालो हे पुराण पुरुषोत्तम पुण्डरीकाक्ष
तुम्हारे नमस्कारहै ४५ हे अञ्जनवच्छ्याम हे हृषीकेश हेमा-
यामय तुम्हारे नमस्कार है हे महाबाहो संसारसागर में डूबते
हुये मुझको उबारो ४६ क्लेशरूप महाग्रहोंसे अति क्लेशयुक्त दु-
स्तर व शङ्करभवसागरमें पतित मुझअनाथ दीन कृपणको उ-
बारो हे गोविन्द हे वरदेश तुम्हारे नमस्कारहै४७त्रैलोक्यनाथ
हरि भूधर देवदेव श्रीवल्लभ तुम्हारे बार२ नमस्कारहैं ४८ हे
कृष्ण हेकृष्ण तुम बड़ेकृपालु व अगतिवालोंकी गतिहो हेमधु-
सूदन संसारसागरमें डूबतेहुये लोगोंके ऊपर प्रसन्नहोओ४९
एक आद्य पुरुष पुराण जगत्पति कारण अच्युत प्रभु जनार्दन
जन्मजरा दुःखनाशन सुरेश्वर सुन्दर लक्ष्मीपति ५० वृहद्भु-
जावाले श्याम व कोमलस्वरूप शुभश्रेष्ठरूप श्रेष्ठमुख कमल-
दलनेत्र लहरियोंके समान विस्तृतकेशोंवाले हरि अति मनो-
हररूप निरन्तर सदाविद्यमान रहनेवाले हेईश्वर तुम्हारे नम-
स्कार करताहूँ ५१ जिह्वा वही है जो हरिकी स्तुति करती है

व चित्त वही है जो हरिमें अर्पित है व जो हाथ तुम्हारीपूजा करते हैं वेही सदा बड़ाई करने के योग्य हैं ५२ अन्यसहस्रों जन्मों में जो मैंने पापकिया हो हे गोविन्द वह वासुदेव ऐसा कीर्त्तन करने से आप हरलें ५३ व्यासजी बोले कि जब बुद्धिमान् मार्कण्डेयजीने इसप्रकारस्तुतिकी तो सन्तुष्टहोकर विश्वात्मा गरुड़ध्वज श्रीहरि उनमुनिसे बोले ५४ कि हे विप्र भृगुनंदन हम तुम्हारी तपस्या व स्तुतिसे प्रसन्नहुये तुम्हारा कल्याणहो वरमांगो जो कुछ मांगोगे सब वरदेंगे ५५ यह सुनकर मार्कण्डेयजी बोले कि हे देवेश यदि आप सन्तुष्टहुयेहों तो अपने चरणकमलमें हमको सदा भक्तिदें व एक और भी वर तुम से मांगते हैं ५६ कि जो कोई इसस्तोत्रसे नित्य तुम्हारी स्तुति करे हे देवेश हे जगत्पते उसको स्वर्गलोक में बास देना ५७ व पूर्व्वकालमें तपकरतेहुये मुझको जो आपने दीर्घायुदीथी आज इससमय वह सब तुम्हारे दर्शनसे सफलहुई ५८ व हे भगवन् हे देवेश तुम्हारे चरणारविन्दों की पूजा करताहुआ जन्ममृत्युरहित मैं नित्य यहीं बसनाचाहताहूँ ५९ श्रीभगवान् बोले किहे भृगुश्रेष्ठ हममें तुम्हारी अचलभक्तिहो व उसीभक्ति से कालसे तुम्हारीसदा मुक्तिरहेगी कभी तुमको काल न बाधितकरेगा६० व जो कोई हमारी दृढ़भक्तिकरके सायंकाल इस तुम्हारे कहेहुये स्तोत्रको पढ़ेगा वह हमारे लोकमें जाकर सदा हर्षितरहेगा ६१ व हे भृगुश्रेष्ठ जहां २ स्थित होकर तुम हमारा स्मरण करोगे वहां २ हम प्राप्तहोंगे क्योंकि जिस्से हम भक्तोंके बशमेंरहतेहैं ६२ व्यासमुनि बोले कि॥

दो० इमिभृगुश्रेष्ठ मुनीन्द्रसों कहिमाधवभे मौन॥
हरिहिलखतसर्व्वत्रमुनि तहँबस्यो तजिगौन॥६३
विप्रकहा हम चरितयह वरमति भार्गव केर॥
मार्कण्डेय महर्षिमोहिं भाष्यो निजमति हेर२।६४

चौपै० करिहरि पूजा मन तजि दूजा जो यह चरित पुराना।
भृगुसुत सुतकेरो नितहियहेरो पढ़िहैं सहितविधाना॥
वेनरगतपापा बिरहितदापा पूजित भक्तनपाहीं।
नरहरिपुरवसिहैंभूषणलसिहैंप्रमुदितह्वैमनमाहीं॥६५

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेमार्कण्डेयचरित्रन्नामैकादशोऽध्यायः११॥

बारहवां अध्याय॥

दो० द्वादशयें अध्यायमहँ यमरुयमी सम्वाद॥
ज्यहिसुनि दृढ़मति नरनके होतविनष्ट विषाद १

सूतजी भरद्वाजादि मुनियोंसेबोले कि सब पापनाशनी पुण्यरूपिणी अमृतवत्स्वादुयुक्त इसकथाको श्रवणकरकेधर्म्मात्मा शुकाचार्य्यजी अतृप्तहोकर व्यासजीसेबोले १ श्रीशुकजी बोले कि धीमान् मार्कण्डेयजीकी तपस्या अतीव आश्चर्य्य करानेवालीहै कि जिसके करनेसे उन्होंने साक्षाद्विष्णु भगवान् के दर्शनकिये जिससे कि मृत्युकोभी पराजित करदिया २ हे तात इसपुण्य वैष्णवीकथाके सुननेसे हमारी तृप्तिनहींहुई इससे औरभी पुण्यवती व पापहरनेवाली कथाहमसे कहिये ३ सो प्रथम जो मनुष्य दृढ़चित्त सदारहते हैं इससे अकार्य्य कभी नहीं करते उनलोगोंके लिये जो पुण्य ऋषियों ने कहाहो वह हमसे कहिये हे महामतिवाले ४ यह सुनकर व्यासजीबोले कि दृढ़ चित्तवाले नरोंको इसलोकमें व परलोकमें जो पुण्यहोताहै वह हम कहते हैं सुनो ५ इस विषयमें एक पुरातन इतिहासहै जिसमें महात्मा यमराज व उनकी भगिनी यमीका सम्वादहै ६ अदितिके विवस्वान् नाम पुत्रहुये उनके दोसन्तानहुये एक यमराज व उनसे छोटी यमीनाम कन्या ये दोनों बड़े तेजस्वीथे ७ वे दोनों अपने मनसे क्रीड़ाकरतेहुये अपने पिताके उत्तम भवनमें बड़ेहुये ८ एकदिनकी वार्त्ताहै कि यमी अपने सगेभाई

यमराजजीसे यहबोली कि जो भाई पतिकी इच्छाकियेहुई अ-
पनी भगिनीके साथ भोगकरनेकी इच्छा न करे ६ उसनेभ्राता
होकर क्याकिया जो अपनी भगिनीकापति न होगया वहजा-
नों उत्पन्नही नहींहुआ क्योंकि किसी प्रकारसे नहीं उत्पन्नहुआ
१० अनाथ नाथकी इच्छा करतीहुई अपनी भगिनी का नाथ
जो नहीं होता उसकी भगिनी उसको अपना भर्त्ताबनाना चा-
हतीहै तो भी वह उसको अपनी स्त्री नहीं बनाना चाहता ११
यह लोकमें भ्राता नहीं कहाता बरन मुनिश्रेष्ठ कहाताहै क्योंकि
उसके बिचारसे तो सबकन्याहीहैं कोईभी संसारमें उसकी भा-
र्य्या नहीं होसक्ती १२ हा भ्राताकी इच्छा से भगिनी कामसे
जलाई जाय व भाई उसको शान्त न करे यहबड़े आश्चर्य्यकी
बातहै इससे हे भाई जो कार्य्य हम तुम्हारे साथ कियाचाह-
ती हैं वह तुम हमारे साथ करना चाहो १३ यदि ऐसा न
करोगे हमारे संग भोग न करोगे तो तुम्हारी इच्छा कियेहुई
हम बिचेतन होकर मरजायँगी हे भाई काम का दुःख अ-
सह्य है तुम क्यों हमारी इच्छा नहीं करते १४ हे प्रिय कामा-
ग्नि से अत्यन्त सन्तप्त होकर मैं ऐसा बकती हूँ अब बिल-
म्ब न करो हे कान्त कामसे पीड़ित मुझ अपनी स्त्री के बशी-
भूतहोओ देरी न करो १५ अब अपने शरीर से हमारे शरीर
का संयोग करने के योग्य तुमहो अर्थात् हमारे संग मैथुन
करो यमराज बोले कि हे भगिनि यह लोकविरुद्ध धर्म्म कैसे
तुम कहतीहो १६ हे भद्रे ऐसा सुचैतन्य कौन पुरुषहै जो अ-
कर्त्तव्यकार्य्यको करे हे भामिनि हम तुम्हारे शरीरकेसंग अपने
शरीरका संयोग न करेंगे १७ कामसे पीड़ितभी अपनी भगिनी
के मनोरथको भाई अपनेसे नहीं पूरणकरता क्योंकि जो भगि-
नीकेसंग भोगकरताहै वह महापापी गिनाजाता है १८ हेशुभे
भ्राता भगिनीकेसंग भोगकरै यह पशुओंका व पक्षियोंकाधर्म

है मनुष्य देव राक्षस दैत्यादिकों का नहीं १९ यमी बोली कि
जैसे माताके पेटमें हम तुम दोनों एकही स्थानमेंरहे वह संयोग
दोषदायी नहीं हुआ ऐसेही यह भी संयोग दोषदायी न होगा
२० हे भाई मुझ अनाथकाभी अच्छा तुम क्यों नहीं चाहते
देखो निऋतिनाम अपनी भगिनीकेसंग एक राक्षस नित्यभोग
करताहै २१ यमराज बोले कि लोगों के निन्दित आचरणकी
निन्दा ब्रह्माजीनेभी कीहै इससे जो कार्य्य प्रधान पुरुष करतेहैं
लोग उन्हीं कर्म्मोंके अनुयायी होते हैं इससे प्रधानपुरुष को
चाहिये कि सदा अनिन्दितही आचरणकरे क्योंकि उसका आ-
चरण देखकर औरलोग करतेहैं २२ इससे निन्दितकर्म्म यत्न
से बराना चाहिये यही धर्म्म का लक्षण है क्योंकि जो २ आ-
चरण श्रेष्ठपुरुष करताहै सो २ इतरलोगभी करते हैं २३ व
जिसका प्रमाण श्रेष्ठ करताहै लोग उसीके अनुयायी होते हैं
इससे हे सुभगे हम तुम्हारे वचनको अति पाप मानतेहैं २४
क्योंकि यह सब धर्म्मोंसे विरुद्धहै व लोकमें विशेषकरके इससे
हमसे और जोकोई रूप शीलमें विशेषहो २५ उसकेसंग आ-
नन्दकरो वह तुम्हारा पतिहोगा हम तुम्हारेपति नहींहोसक्के हे
भद्रे हम दृढव्रतहैं अपनेशरीरसे तुम्हाराशरीर नहीं स्पर्शकर-
सक्के २६ मुनिलोग उसे महापापी कहतेहैं जो कि भगिनी के
संग भोगकरताहै यमी बोली कि हम तुम्हारा ऐसा रूप इस
लोकमें दुर्ल्लभ देखतीहैं पृथ्वीपर रूप व अवस्था कहां प्रति-
ष्ठितहै २७ हम नहीं जानती कि तुम्हाराचित्त क्यों ऐसाप्रतिष्ठित
है जो कि अपने रूप व गुणोंसे युक्त व मोहित हमको तुम नहीं
चाहते २८ व तुम्हारे हृदयको भी नहीं जानती किस वस्तुसे
ऐसा बनायागयाहै व कहां स्थितहै जैसे पतलीकटि का हरुली
हस्तिनीके ऊपर छपटताहै वैसेही तुम क्यों नहीं छपटते २९
और मैं तो तुमको ऐसे प्राप्तहोना चाहती हूँ जैसे लता वृक्षमें

छपटकर उसीमें पच्चीहोजातीहै इससे अब दोनोंबाहुओंसे तुम को छपटाकर हँसतीहुई स्थितहोतीहूँ चाहेजोहो ३० यमराज बोले कि हे देवि हे श्यामलोचने हे सुश्रोणि तू अन्य किसी देव की सेवाकर वह जैसे मतवालाहाथी हथिनीको आलिंगनकरता है वैसेही तुझको आलिंगितकरेगा ३१ कामसे मोहितचित्त तेरेविभ्रमको जो प्राप्तहुआहो उसी देवकी देवी तू जाकरहो हे श्रेष्ठरंगवाली ३२ मनुष्यलोग जो सबप्राणियोंको इष्टहोतीहै उसे श्रेष्ठकहतेहैं व कल्याणयुक्त और सुन्दर अंगवालीको संस्कारयुक्त कहतेहैं ३३ परन्तु जो विद्वान्होतेहैं वैसीस्त्रियोंकेभीलिये दूषित कर्म्म नहींकरते इससे हेमहाप्राज्ञेहम तुझको नहींप्राप्तहुये इसके लिये परिताप नहीं करते न करेंगे क्योंकि हम दृढ़व्रतहैं ३४ व हमाराचित्त निर्म्मलहै और विष्णु व रुद्रमें सदा स्थितरहताहै इसीसे हम पापकरनेकी इच्छा नहींकरते क्योंकि धर्म्ममें हमा- राचित्त लगताहै व दृढ़व्रतहै ३५ व्यासजी इसीकथाको शुका- चार्य्यसे कहनेलगे कि इसप्रकार बार२ यमीने कहाभी परन्तु दृढ़व्रत करनेवाले यमराजने उसका कार्य्य न किया इसीसे वे देवत्वको प्राप्तहुये ३६ इससे जो दृढ़चित्तवाले पुरुष इसप्रकार पाप नहीं करते उनके लिये अनन्त फल कहेगये हैं व उनको स्वर्गका फलहोताहै ३७ यह सनातन पूर्व्व समयका यमीका उपाख्यान सबपापहरनेवाला है इससे निन्दारहित होकर इसे सुनना चाहिये ३८ जो ब्राह्मण नित्य इसे हव्य कव्यदेनेके स- मय पढ़ते हैं उनके पितर सन्तृप्तहोकर यमालयको नहीं जाते ३९ व जो कोई इसको पढ़ताहै वह पितरोंसे अनृण होजाता है व यमराजकी कठिन यातनाओंसे छूटजाताहै ४०॥

चौपै० सुतयह आख्याना उत्तमभाना जोसब वेदनगावा।
हमतुम्हेंबतावा अतिमनभावा बहुतपुरातनकहावा॥
यहहै अघहारी पदिहिपुकारी सो न परिहि भवकूपा।

अबकाहबखानों जो सुतमानों कहहुँस्वमति अनुरूपा १।४१

इतिश्रीनरसिंहपुराणेयमीयमसम्वादेद्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवां अध्याय॥

दो० तेरहयें अध्यायमहँ पतिव्रता अरुविप्र॥
सम्भाषणकरिकरनकहजननीसेवाक्षिप्र १

श्रीशुकाचार्य्यजीने श्रीव्यासमुनिसे कहा कि हे तात यह तो बड़ी विचित्र वेदकी कथा तुमने हमसे कही अब और भी पाप प्रणाशनी व पुण्यदेनेवाली कथा कहिये १ व्यासजी बोले कि हम एक उत्तम पुराना वृत्तांत कहतेहैं जिसमें एकपतिव्रतास्त्री का व एककिसी ब्रह्मचारीका सम्बाद है २ वेदपारगामी नीतिमान् सर्व्वशास्त्रोंके निश्चयार्त्थ जाननेवाले व्याख्यान करनेमें परिनिष्ठित अपने धर्म्मकार्य्य में निरत परधर्म्मसे विमुख ऋतुकालमेंही अपनीस्त्रीके संग भोगकरनेवाले अग्निहोत्र करने में परायण एककश्यपनाम ब्राह्मणहुये ३।४व सन्ध्यासमय व प्रातःकाल अग्निमें आहुतिदेकर ब्राह्मणों को तृप्तकरतेहुये व गृहमें आयेहुये अतिथियों को पूजतेहुये नरसिंहजी की पूजा किया करतेथे ५ उनकीस्त्रीका सावित्री नामथा वह बड़े भाग्य वाली पतिव्रता व अपने पतिकी शुश्रूषामें व प्रियहित करने में रत महाभाग्यवती थी ६ व बहुत दिनोंतक अपने पतिकी सेवाही करने से परोक्षज्ञान को प्राप्तहुई व सकलगुणों से सम्पन्न होकर कल्याणवती व निन्दारहितहुई ७ उसस्त्रीके साथ वे धर्म्मात्मा ब्राह्मणदेव मध्यदेश के नन्दिग्राम नाम तीर्त्थ में अपने अनुष्ठान में परायण होकर निवास करते थे ८ व उसी नगर की उत्तर ओर अयोध्यापुरी का रहनेवाला महामतिवाला एक यज्ञशर्म्मा नाम ब्राह्मण था उसकी स्त्री का रोहिणी नामथा यह बड़ीसाधु प्रकृतिवालीथी ९ व स्त्रियोंके सब लक्षणों से सम्पन्न व पतिकी सेवामें तत्पर रहतीथी उसने अपने पति

के संयोगसे एकपुत्र उत्पन्नकिया १० यह ब्राह्मण यायावरवृत्ति वालाथा अर्थात् शिलोञ्छवृत्तिवाला था जब उसके पुत्र उत्पन्न हुआ तो उसपंडितने स्नानकरके अपने पुत्रका जातकर्म्मकिया व बारहें दिन अपने तनयका देवशर्म्मा नाम धराया ११।१२ सो ऐसेही नहीं पुण्याहवाचन करके वेदविधिसे नामकरणकिया फिर चौथेमासमें निष्कासन कर्म्म किया १३ जब वर्षभर पूर्ण हुआ तब विधिपूर्व्वक उसका मुंडन कराया होतेहोते जब सात वर्षका हुआ तब गर्भसुधा अष्टमवर्षमें यज्ञोपवीत किया १४ इसप्रकार उपवीत धारणकर अपने पिताही से उसने वेद पढ़े परन्तु एक वेद पढ़नेको बाकीहीरहा कि स्त्रीके अर्थ पिता तो स्वर्गी होगया १५ पिताके मरजाने पर मातासहित वह पुत्र बहुत दुःखित हुआ तब सब लोगोंने धैर्य्यधारण करके उसको पितृकार्य्य करनेकी आज्ञादी १६ तब जैसा वेदमें प्रेतकार्य्यका विधान है देवशर्म्मा ने वैसाकिया व फिर गंगादिक तीर्थों में जाय विधिसे स्नानकरके उसीग्राममें पहुँचा जहां कि वह पतिव्रतास्त्री रहतीथी वहां पहुँचकर अपनेको ब्रह्मचारीकरके प्रसिद्ध किया१७।१८व उसग्राममें भिक्षामांगलाकर वेदपाठ कियाकरे व होमकरताहुआ उसीनन्दिग्राममें कुछदिन ठहरगया१९वहां जब पति मृतकहोगया व पुत्र ब्रह्मचारी होकर तीर्थोंको चला गया तो कोईरक्षकन रहनेकेकारण उसदेवशर्म्माकी माता बहुत दुःखितहुई२०एक दिनकी वार्त्ता है कि नदीमें स्नानकरके उस ब्रह्मचारीने अपना वस्त्रसूखनेकेलिये फैलादिया व आप मौन व्रतधारणकरके जपकरनेलगा२१इतनेमें एककौआ व एकबगुली दोनों उसकावस्त्रलेकर उड़गये उनदोनोंको लेजातेहुये देखकर देवशर्म्माने बहुत उनको बकाझका २२ उसकेबकने अपकारकरनेसे वे दोनों पक्षी उसवस्त्रपर विष्ठाकरके चलेगये तब आकाशमें उड़े जातेहुये उनपक्षियों को देवशर्म्माने बड़े रोषसे

देखा २३ उसके रोषके अग्निसे जलकर वे दोनों पक्षी पृथ्वी पर गिरपड़े उनदोनोंको मरकर पृथ्वीपर गिरेहुयेदेख वह ब्राह्मण बहुत विस्मित हुआ व कहनेलगा कि तपकरने से मेरे समान और कोई पृथिवीपर नहींहै यह मानकर उसीनन्दिग्राम में भिक्षामांगनेकोगया २४ व ब्राह्मणोंके घरोंमें घूमता २ तपस्या के गर्व्वसेयुक्त वह ब्रह्मचारी उसगृहके द्वारपर पहुँचा जिसमें वह महापतिव्रतास्त्री रहतीथी २५ उसब्रह्मचारीने जाकर भिक्षाकेलिये पुकारा व पतिव्रतानेसुना परन्तु इसके पूर्व्व उसके पतिने किसी कार्यकेलिये आज्ञादीथी इसलिये वहपतिकाकार्य करनेलगी२६वह कार्यकरके फिर उसने अपनेपतिकेचरण गर्म जलसेंधोकर व पतिको समभावुआकर संतुष्टकरकराकरभिक्षा देनेको घरसे बाहर निकली२७तब क्रोधसे लालनेत्रकरके ब्रह्मचारीने भस्मकरदेनेकी इच्छासे बार२उसपतिव्रताकीओर नेत्र फाड़ २ कर देखा उससावित्री नाम पतिव्रताने हँसकर उसब्रह्मचारी से कहा कि २८ न मैं कौआहूँ न बगुली जो कि तुम्हारे क्रोधसे मरकर नदीकेतीर पै पृथ्वी पर गिरपड़े यदि भिक्षालेना हो तो कोपशान्तकरो भिक्षालो २९ जब सावित्रीने ऐसा कहा तो ब्रह्मचारीनेमारेडरके आगे बढ़करभिक्षाली व दूरहीसे अर्थ जानलेनेवाली उसकी शक्तिको मनसे चिन्तनाकरनेलगा ३० इससे आश्रम पर आय अपने मठमें भिक्षाधरके जब पतिव्रता भोजनकरचुकी व उसका पतिभी गृहस्थ तो थाही कहीं किसी कार्य्यकेलिये घरसे बाहर निकलगया ३१ तब फिर उसके घर पर आय उस पतिव्रता से ब्रह्मचारी बोला कि हे महाभागे पूँछतेहुये मुझसे यथार्थसे यह कहो ३२ कि बिनादेखी सुनीबात के जानलेने का ज्ञानइतनी शीघ्रताकेसाथ तुमको कैसेहुआ जब उससाधु चित्तवाली पतिव्रतासे ब्रह्मचारीने ऐसा कहा तो वह पतिव्रता ३३ घरमें आकर पूँछतेहुये उसब्रह्मचारीसे बोली

कि हे ब्रह्मन् जो हम से तुम पूँछते हो वह एकाग्रचित्त होकर सुनो ३४ जो अपने धर्म्मसे बढ़ाहुआ कर्म्म है वह हम तुम से कहेंगी स्त्रियोंको पतिकी शुश्रूषा करनाही सर्व्वोपरि धर्म्म है ३५ सो हे महामते वहीपति शुश्रूषारूप धर्म्म हम सदाकिया करती हैं और कुछ नहीं करतीं बस दिनरात्रि सन्देहरहित होकर वही कर्म्म श्रद्धासे करती हैं जिससे पतिका परितोष होता है ३६ बस यही करतीहुई हमको विनादेखेसुने पदार्थकाज्ञान अपने स्थानही पर बैठे २ होजाताहै और भी तुम से कहेंगी यदि इच्छा हो तो सुनो ३७ तुम्हारे पिता शिलोञ्छवृत्तिधारण कियेथे इससे अत्यन्त शुद्धथे उनसे वेदपढ़कर पिताकेमरजाने पर प्रेतकार्य्यकरके तुरन्तयहां चलेआये हो ३८ वहां वृद्ध दीन तपस्विनी अनाथ व बिधवा अपनी माताको छोड़कर अपना पेटपालनेकेलिये व देश देखनेकेलिये यहां चले आये हो ३९ भलाजिसने तुमको प्रथम गर्भमें धारणकिया फिर जन्महोने पर पालनलालन किया उसमाताको छोड़कर हे ब्राह्मण बनमें आकर तपस्या करतेहुये तुम कैसे लज्जित नहीं होते ४० हे विप्र जिसने बाल्यावस्थामें तुम्हारा मल मूत्र अपने हाथों से उठाया उसदुःखित माताको घरमें छोड़ बनमें घूमनेसे तुमको क्याहोगा४१जिससे तुमने माताकोदुःखदियाहै इससे तुम्हारे मुखमें दुर्गन्धिआतीहै तुम्हारे पिताहीने तुम्हारेसंस्कारकियेहैं इससे तुमको यह शक्तिहुई है मातासे तो कुछ कामही नहीं ४२ हे दुर्बुद्धे हे पापात्मन् इससमय तुमने वृथा पक्षियों को भस्म किया क्योंकि उसका स्नान वृथाहै तीर्थ करना वृथाहै जपना वृथा व होम करना वृथाहै ४३ व हे ब्रह्मन् वह वृथाही जीता है जिसकी माता अत्यन्त दुःखित होरही है व जो मातृवत्सल पुरुष निरन्तर अपनी माताकी रक्षा करताहै ४४ वह जानों सब अनुष्ठान करता है व इस लोक में परलोकमें उसको सब फल

मिलते हैं हे ब्रह्मन् जिन पुरुषोंने अपनी माताके वचन पाले४५ वे इस लोकमें व परलोकमें भी मान्य हैं व नमस्कार करने के योग्यहैं इससे जहां तुम्हारी माताहै आजही वहां जाकर ४६ उसकी रक्षाकरो क्योंकि जब तक वह जीती है उसकी रक्षा करनाही तुम्हारा परमतपहै और सब वस्तुओंके नाशनेवाले इस क्रोधको छोड़दो४७अब जिन दोनों पक्षियोंको तुमने मारडाला है अपनी शुद्धताके लिये उनका प्रायश्चित्तकरो हमने यथातथ्य यह सब तुमसे कहा४८हे ब्रह्मचारिन् जो तुम सज्जनोंकी गति चाहतेहो तो जो २ हमने कहाहै सबकरो ब्राह्मणके पुत्रसे ऐसा कहकर वह पतिव्रता चुप होरही ४९ व वह ब्राह्मणभी अपने अपराध क्षमा करताहुआ सावित्रीसे बोला कि हे श्रेष्ठरंगवाली अज्ञानसे कियेहुये मेरे पापों को क्षमाकर ५० हमने क्रोधदृष्टि से जो तुम्हारा अप्रिय कियाहै वह क्षमाकरो तुमने हमारे बड़े हितकी बातें कहीं उसका मैं तुम्हारा ऋणी हूँ ५१ अब वहां जाकर जो २ कार्य्य हमारे करनेके योग्यहों सब हमसे बताओ जिनके करनेसे हमारी सुगतिहो ५२ जब उस ब्राह्मणने ऐसा कहा तो उस पूँछतेहुये विप्रसे वह पतिव्रता बोली कि जो कर्म्म तुम्हारे करनेके योग्यहैं वे हम कहतीहैं हमसे सुनो ५३ हेब्रह्मन् इस अपनी भिक्षावृत्ति से निश्चयकर अपनी माताका पालन पोषण करना व इन दोनों पक्षियोंका प्रायश्चित्त चाहे यहां कर डालो वा वहां जाकर करना ५४ व यज्ञशर्म्माकी कन्या तुम्हारी भार्य्या होगी उसे जाकर धर्म्मसे ग्रहणकरो पर जब तुम अपने वृतें वहां जाओगे तो वह अपनी सुता तुमको देगा ५५ उसस्त्री में तुमसे एक पुत्र होगा और तुम्हारी सन्ततिके बढ़ानेवाला होगा व जैसे तुम्हारे पिताकी यायावृत्तिथी वैसेही तुम्हारी भी होगी ५६ फिर जब तुम्हारी स्त्री मरजायगी तो तुम त्रिदण्डी होजाओगे व सन्न्यासाश्रमके धर्म्मके विधिपूर्व्वक करनेसे नर-

सिंहजीके प्रसादसे बैकुंठको प्राप्त होओगे ५७ पूँछतेहुये तुमसे यह हमने भावी कहदी है जो इसे झूँठ न मानतेहो तो सब हमारा वचनकरो ५८ ब्राह्मण बोला कि हे पतिव्रते हे शुभेक्षणे अभी मैं माताकी रक्षाके लिये जाताहूं व जाकर सब तुम्हारे वचन करूंगा ५९ हे ब्रह्मन् देवशर्म्मा यह कहकर शीघ्रतासे चलागया व क्रोध मोह छोड़कर अपनी माताकी रक्षा बड़े यत्न से करनेलगा ६० फिर विवाह करके वंश करनेवाला सुन्दरपुत्र उत्पन्न करके स्त्रीके मरजाने पर सन्न्यासी होकर ढीला पत्थर व सुवर्ण को समान समझता हुआ नरसिंहजी के प्रसाद से परमसिद्धिको प्राप्त हुआ ६१॥

चौपै० यहतुमसनभाना सहितविधाना पतिव्रताकी गाथा।
अरुमातारक्षण बहुतविलक्षण धर्म्मकर्म्मके साथा॥
जो जननी सेवा तजिसबमेवा करिहै मनतनु बाणी।
सोजगतरुबंधनकरिकैखंडन हरिपुरजाइहिप्राणी१।६२

इतिश्रीनरसिंहपुराणेब्रह्मचारिपतिव्रतासम्वादोनामत्रयोदशोऽध्यायः१३॥

चौदहवां अध्याय॥

दो० चौदहयें महँ एक द्विज गाथाकही मुनीश॥
जोस्त्रीमरनेपरसकलतजिप्रविश्योजगदीश १

व्यासजी शुकाचार्य्यजीसे बोले कि हेवत्स व हेहमारे शिष्यो सब पापोंके नष्टकरनेवाली उत्तम कथा हम कहतेहैं सुनो १ वेद शास्त्र पढ़नेमें विशारद पूर्व्वसमयमें एक श्रेष्ठ ब्राह्मणहुआ उसकीस्त्री मरगई तो वह विधिपूर्व्वक स्नान करनेकेलिये तीर्थों कोचलागया २ व स्त्रीके कर्म्ममें निस्स्पृहहोकर निर्ज्जनस्थान में जाकर उसने बड़ातपकिया भिक्षामांगकर तो भोजनकरता था व जपस्नानादिकों में परायणरहता ३ फिर क्रमसे गंगा यमुनासरस्वती बितस्ता अर्थात् व्यासा व पुण्यगोमतीमें स्नान करके गयाजीमें पहुँचकर पिता पितामहादिकों का तर्प्पण क-

रके महेन्द्राचलपर पहुँचा ४ वहां भी कुण्डोंमें स्नानकरके उस महामतिवालेने परशुरामजीको देखा फिर उसी प्रकारसे वहां भी पितरोंकी तृप्तिकरके चलते२ पापहरनेवाले एक वनमेंपैठा ५ वहां एक पर्व्वतपरसे गिरतीहुई बड़ीभारीनदी देखी उसको भक्तिसे शिरपर धारणकिया वह नारसिंह तीर्थथा इससे जैसेही सब पापनाशनेवाली उसधाराको शिरपरधारण किया कि उसब्राह्मणका शरीर शुद्धतोथाही अतिशुद्ध होगया ६ यहवन व तीर्थ विन्ध्याचलपरहै उसमें टिकेहुये अनन्त अच्युतभक्तों व मुनीन्द्रोंसे पूजित की आराधना पर्व्वतपर उत्पन्न अच्छे २ पुष्पोंसे करके सिद्धिकी इच्छा करके स्थितहुआ बहुतकालतक पूजाकरतारहा उसकी पूजासे सन्तुष्टहोकर नृसिंहजीने स्वप्न में दर्शन देकर कहा ७ कि हे द्विज किसी आश्रम में न रहना गृहके भंगकरनेका कारणहै इससे तुम उत्तम आश्रमको ग्रहणकरो क्योंकि जो किसीआश्रममें नहींहोते वे चाहे वेदोंके पारगामी भी हों तो भी हम उनके ऊपर अनुग्रह नहीं करते ८ तथापि यद्यपि तुम किसी आश्रममें आज कल नहीं हो पर तुम्हारी निष्ठा देखकर तुम्हारे विषयमें प्रसन्न होकर हमने तुम से ऐसा कहा है जब उनपरमेश्वर ने ऐसा कहा तो यह ब्राह्मण उनके वाक्यको अच्छे प्रकार विचारकरके ९ नरसिंहमूर्त्तिहरि की आज्ञाको अलंघ्यमानकर विधिपूर्व्वक सन्न्यासी होगया त्रिदण्डकोधारणकर कमलाक्षकीमाला पहिन कुशकी पवित्री हाथोंमें धारणकर पापहारी तीर्थमें स्नानकरके स्थितहुआ १० व हृदय में हरिको स्मरण करताहुआ सावित्रीजीका दोषरहित मन्त्र जपनेलगा व जिस किसी प्रकार से कुछ शाकभी पाकर उसके भोजन से सन्तुष्ट होकर वन में बसनेलगा ११ व नरसिंहमूर्त्तिविष्णुजी की पूजाकरके व हृदयमें नित्य शुद्धस्वरूप आदि पुरुष का ध्यानकर बड़े कुशासनपर एकान्तमें बैठकर हृं-

दयमें सबका अभिनिवेशकरके १२ सब इन्द्रियोंके बाहरीगुणों का भेद भगवान् अनन्तमें मिलाकर जाननेके योग्य आनन्द-स्वरूप अज विशाल सत्यात्मक क्षेमकेस्थान बरदेनेवाले १३ परमेश्वरकी चिन्तनाकर उसीस्थानपर देहको छोड़कर मुक्तहोकर परमात्मा की मूर्त्तिहोगया मुक्ति देनेवाली इसकथा को जो लोग नरसिंहजी को स्मरण करतेहुये पढ़ते हैं १४ वे लोग प्रयागतीर्थ में स्नानकरनेका फल पाकर श्रीहरि के बड़े पदको प्राप्त होते हैं १५ ॥

चौपै॰यह बहुत पुरातन पातकशातन पावनपुण्य चरित्रा। लखितवअभिलाषा हमसुतभाषा पूँछयंहुजौनविचित्रा॥ जगवृक्ष विनाशी सबसुखराशी है यह संशय नाहीं। अबपुनिकाचाहतमनसोंगाहतकहहुजौनचितमाहीं १।१६

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

दो॰ पन्द्रहें महँ ज्ञानिनर जगतरु तरत न आन॥ अरुजिमिसोउपजतस्वईबर्णितसहितविधान १

इतनीकथा सुनकर श्रीशुकदेवजीने प्रश्नकिया किहेपिताजी सब मुनियोंसमेत हम इससमय जिससे संसार वृक्ष उत्पन्न होकर परिवर्त्तित होताहै वह सुना चाहतेहैं १ आपने पूर्वकाल में इस संसार वृक्षको सूचितकिया था इससे आपही इसके कहनेके योग्यहैं क्योंकि और कोई संसार के उद्धारका भेद नहीं जानता २ सूतजी भरद्वाजादि मुनियोंसे बोले कि शिष्योंके मध्य में बैठेहुये उनकेपुत्र शुकदेवजीने जबऐसा पूँछा तो श्रीव्यासजी संसार वृक्षका लक्षण कहतेहुये बोले३ कि सबहमारे शिष्यगण सुनें व पुत्र तुमभी सुनो जिससे यह संसार वृक्ष घिराहुआहै वह कहते हैं ४ इस संसाररूप वृक्षका मूल अव्यक्त है फिर आगे उठकर खड़ा होजाताहै बुद्धि इसका स्कन्धहै इन्द्रियां सब अं-

कुर व कोटरहैं ५ पृथ्वी जल तेज वायु व आकाश ये पांच महा-भूत इसकी शाखाहैं व पत्रभीहैं धर्म व अधर्म्म ये दोनों पुष्प हैं सुख व दुःख ये दोनों इसके फलहैं ६ यह सनातनब्रह्म वृक्ष सब प्राणियोंकी जीविकाका स्थान है बस इस ब्रह्मवृक्ष से परे ब्रह्महीं है ७ हे वत्स इसप्रकारसे ब्रह्मवृक्षका लक्षण हमनेकहा इस वृक्षपर चढ़ेहुये प्राणी मोहित होते हैं ८ जो ब्रह्मज्ञान से परांमुख हैं दुःख सुख युक्त होकर बहुधा वेही प्राकृती मनुष्य निरन्तर इस वृक्षको प्राप्तहोते हैं ९ इस वृक्षको काटकर कुशल ब्रह्मवादी लोग मोक्षपदको प्राप्तहोते हैं व पापी लोग कर्म्म व क्रियाको नहीं काट पाते इससे दुःखित भ्रमण किया करतेहैं १० ज्ञानरूपी परमखड्गसे इसको काट व भेदन करके लोग अम-रताको प्राप्त होतेहैं फिर वहांसे कभी नहीं लौटते ११ देह व स्त्रीमय फांसीसे बँधाहुआभी पुरुष छूटजाता है क्योंकि पुरुषों को ज्ञानही सब वाञ्छित देताहै व ज्ञानही नरसिंहजीको संतुष्ट करताहै व विना ज्ञानके पुरुष पशुकेसमान समझाजाताहै १२॥

चौपै० निद्रा आहारा मैथुनचारा अरु भय सबहि समाना।
नरपशु अरुपक्षी निजप्रियभक्षी औरन भेदबखाना॥
नरमहँ हैज्ञाना अतिअधिकाना पशुसों याहि महाना।
जोज्ञानविहीनापुरुषमलीनापशुसमपरतलखाना॥१३

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेपंचदशोऽध्यायः १५॥

सोलहवां अध्याय॥

दो० सोलहयेंमहँ भवतरत करतजो हरिपदध्यान॥
नारद शिवसम्वादसों यह वर्ण्यो सविधान १

श्रीशुकदेवजीने प्रश्नकिया कि संसार वृक्षपर चढ़कर सुख दुःखादि नानाप्रकारके द्वन्द्वदृढपाशोंसे अपने को बँधआकरके पुत्र ऐश्वर्य्यादिकोंकी द्वारा योनिसागरमें गिरायागया जोपुरुष है१ फिर काम क्रोध लोभादि विषयोंसे पीड़ितहोकर पुत्र स्त्री

इच्छाआदि अपने गौणकर्म्मोंसेभी बँधुआहोताहै २ वह किस उपायसे शीघ्रही दुस्तर भवसागरको तरताहै व उसकीमुक्ति कैसेहोतीहै हे तात हमारे इसप्रश्नका उत्तर बताइये ३ व्यास जीबोले कि हे वत्स हे महाप्राज्ञसुनो जो जानकर पुरुषमुक्ति पाताहै वहदिव्य उपाय तुमसे कहेंगे हमने पूर्व्वकालमें नारद जीसे सुनाथा ४ यमलोकमें घोररौरव नरकमें धर्म्म व ज्ञानसे रहित पुरुषोंको पड़ेहुये अपने कर्म्मोंसे महादुःख पातेहुये देख कर ५ व पापी जन महाघोर पापकरनेसे घोर नरकमें पड़ते हैं यह देखकर नारदजी जहां महादेवजीरहते हैं वहांगये ६ व गंगाधर महादेव शंकर शूलपाणिके विधिपूर्व्वक प्रणामकरके पूंछनेलगे७ नारदमुनिबोले कि संसारमें जो पुरुष शुभ अशुभ कामभोग सुख दुःखादि महाद्वन्द्वों से व शब्दस्पर्शादि विषयों से व कामक्रोध लोभादि ६ ऊर्म्मियोंसे युक्तहोकर पीड़ितहोताहै ८ वह मृत्युरूप संसारसागरसे कैसेछूटे हे भगवन् हे शंकर इसका निश्चय हमसेकहो हमारे श्रवणकरनेकी इच्छाहै ९ नारदजीका ऐसा बचन सुनकर त्रिलोचन शम्भु हर प्रसन्नमुख होकर उनऋषिसेबोले१० महेश्वरजी कहनेलगे कि हे ऋषिसत्तम अतिगुप्त एकान्तमें कहनेके योग्य अमृतरूप ज्ञान कहेंगेसुनो वह दुःखोंको नाशता है व सब बन्धनोंके भयोंकोभी नाशता है ११ तृणादि चतुर पर्य्यन्त चारप्रकारको चराचर सब जगत् जिसकी मायासे सदा सोया करताहै १२ सोउन्हीं विष्णुजीके प्रसादसे यदि कोई जागताहै वह संसारको तरता है नहीं तो वहतो देवताओं करकेभी बड़े दुःखसे तरनेकेयोग्य है १३ जो पुरुषभोग ऐश्वर्य्यादिकोंके मदसे उन्मत्तहोकर तत्त्व ज्ञानसे विमुख होजाता है वह संसार सागरके महाकीचड़में वृद्धगऊके समान फँसताहै १४ जो कर्म्मोंसे कुशवारीके कीड़े के समान अपनेको अच्छीतरह बांधता है उसकीमुक्ति सैकड़ों

कोटियों जन्मोंसे भी हम नहीं देखते १५ इससे हे नारद सब कोईश देवताओंके भी देव नाशरहित श्रीविष्णुजीकी आराधना एकाग्रचित्त होकरकरे व उन्हींका अच्छेप्रकार ध्यानकरे १६ क्योंकि जो कोई विश्वरूपीआदि अन्तरहित सबकेआदिभूत अपनी आत्मामें टिकेहुये सब कुछ जाननेवाले अमलस्वरूप श्रीविष्णुका ध्यानकरताहै वहविमुक्त होजाता है १७ निर्विकल्प निराकाश निष्प्रपंच निरामय वासुदेव अज विष्णुजीका ध्यान करताहुआ पुरुष विमुक्तहोताहै १८ निरंजन सबसे पर शान्तस्वभाव अच्युत भूतभावन देवगर्भ व्यापक श्रीविष्णुका सदाध्यान करताहुआ विमुक्तहोता है १९ सब पापोंसे विनिर्मुक्त अप्रमेय लक्षणरहित निर्वाण अनघ श्रीविष्णुजीका सदाध्यानकरनेसे विमुक्तहोताहै २० अमृत परमानन्दरूप सर्व्व पापविवर्जित ब्रह्मण्य कल्याण करनेवाले श्रीविष्णुका सदा कीर्त्तन करके विमुक्तहोता है २१ योगेश्वर पुराण पुरुष शरीररहित गुहानिवासी अमात्र व अव्यय विष्णुका ध्यान सदाकरताहुआ विमुक्तहोताहै२२ शुभ अशुभसे विनिर्म्मुक्त अमूर्त्तियोंसेपर व्यापक विनयकरनेके योग्य व अमल विष्णुजीका जो सदा ध्यान करताहै वह विमुक्तहोताहै २३ सब सुख दुःखादि द्वन्द्वोंसे विनिर्मुक्त सब दुःखोंसे विवर्जित तर्कणाकरनेके अयोग्य व अजश्रीविष्णुको जोमनसे ध्यानकरताहै वह विमुक्तहोता है २४ नामगोत्र रहित अद्वैत चतुर्थ परमपद व सबके हृदयमें वर्त्तमान श्रीविष्णुका जो कोई सदा ध्यान करताहै वह विमुक्तहोताहै २५ अरूप सत्यसंकल्प शुद्धस्वरूप आकाशके समान सबसेपर व सर्व्वत्र व्याप्त श्रीविष्णु भगवान्‌को एकाग्रमनसे सदा ध्यान करताहुआ पुरुष मुक्तहोजाता है २६ सर्व्वात्मक स्वभावमें स्थित आत्म चैतन्यरूप शुभ्र व एकाक्षर श्रीविष्णुजीका सदा ध्यान करताहुआ विमुक्तहोताहै २७ अ-

निर्व्वाच्य अविज्ञेय अक्षरादि असम्भव एक नूतन श्रीविष्णु का ध्यान सदा करताहुआ विमुक्तहोता है २८ विश्वके आदि विश्वके रक्षक विश्वकेनाशक सवकामदेनेवाले व भूत वर्त्तमान भविष्य तीनोंकालोंमें विद्यमान श्रीविष्णुजीका सदा ध्यानकरताहुआ विमुक्तहोताहै २९ सब दुःखोंकेनाशक सवशान्तियों केकारक हरिको आनन्दमें मग्नहोकर पुरुषकीर्त्तन करनेहीसे विमुक्तहोताहै ३० ब्रह्मादि देवताओं गन्धर्व्वों मुनियों सिद्धों चारणों व योगियों से सेवित श्रीविष्णुका ध्यान करताहुआ पुरुष विमुक्तहोताहै ३१ यहविश्व विष्णुमेंस्थितहै व विष्णु विश्वमें टिकेहैं व विश्वके ईश्वर अजश्रीविष्णुजीके कीर्त्तनमात्र से विमुक्तहोताहै ३२ संसारबन्धनसे मुक्तिकी इच्छा कियेहुआ पुरुष सम्पूर्ण काम करनेवाला भक्तिहीसे वरदान करनेवाले विष्णुका ध्यान करताहुआ विमुक्तहोताहै ३३ व्यासजीबोले कि पूर्व्वकालमें जब नारदजीने ऐसा पूँछा तो महादेवजीने जोकुछ उनसे कहा वह हमने तुमसे कहा ३४ सो हे तात तुमभी निर्बीज केवलब्रह्म उन्हीं विष्णुजी का ध्यानकरो निरन्तर नाश रहित ध्रुवपद पाओगे ३५ महादेवजीके कहनेसे नारदजीने श्री विष्णु भगवान्‌की प्रधानता सुनकर व अच्छे प्रकार विष्णुजी की आराधना करके परमसिद्धिपाई ३६ ॥

चौ० नरहरिमहँ करिमानस जोई। जो यह चरित पढ़िहिनर कोई ॥ शतजनि कृतताकेसब पापा। नष्टहोहिं नहिंमृषा अलापा १। ३७ महादेव कीर्त्तितहरिकेरो। यह पुण्यस्तव निजहियहेरो ॥ प्रातअन्हाय नित्य जो पढ़ई। अमृतरूप ह्वै सो नर तरई २। ३८ ॥ हरिगीतिका ॥

अच्युत अनन्त अनादि हरिकहँ हृदयमहँ जे ध्यावहीं।
अरु करहिं कीर्त्तन नित्य चितधै परमपद ते पावहीं ॥
पुनि प्रभु उपासक जननके ढिग जाय सुख भोगैंमहा।

अरु वैष्णवीवर सिद्धिलहिहैं यहसकल श्रुतिहूकहा ३१।३९

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेषोडशोऽध्यायः १६॥

सत्रहवां अध्याय॥

दो० सत्रहयें अध्याय महँ अष्टाक्षर माहात्म॥
कह्यहुव्यासशुकसोंबहुत विधिनिर्णयकरिश्रात्म १

यह श्रवणकरके श्रीशुकदेवजी ने व्यासजी से प्रश्नकिया कि हेतात विष्णुजी में निरन्तर तत्परहोकर क्या जपनेसे संसारके दुःखसे छूटताहै यह सबोंके हितकेलिये हमसे कहियें हे पिताजी १ व्यासजी बोले कि हम सबमंत्रोंमें उत्तम अष्टाक्षर मंत्र कहते हैं जिसको जपताहुआ पुरुष जन्म संसारबन्धनसे छूटताहै २ कमलरूप मनमेंस्थित शंख चक्र गदा धारणकिये हुये श्रीविष्णु का ध्यान एकाग्रमनसे करके फिर मंत्रका जप ब्राह्मण करे ३ एकान्त निर्ज्जनस्थान में विष्णु के आगे वा जलके समीप चित्तमें श्रीविष्णुजीको स्थापित करके अष्टाक्षर मंत्रजपे४इसअष्टाक्षरमंत्रके नारायण आपतोऋषिहैं व गायत्री छन्दहै तथा परमात्मा देवताहैं ५ उन आठ अक्षरोंमें प्रथम ॐकारहै उसका शुक्लवर्णहै दूसरे नकारका रक्तवर्ण तीसरे मोकार का कृष्णवर्ण व चौथे नाकारकाभी रक्तवर्ण है६पांचवें राकारका कुंकुमके समानरंगहै छठेंयकारकापीतवर्णहै व सातवें णाकारका अंजनकेतुल्य रंगहै व आठवें यकारका बहुतप्रकार का वर्णहै ७ ॐनमोनारायणाय यही सब अर्थोंके सिद्धकरनेवाला अष्टाक्षरमंत्रहै जोकि जपतेहुये भक्तोंको स्वर्ग व मोक्षका फलदेताहै व वेदोंकी याञ्चासे यहसनातनमंत्र सदासिद्धही रहताहै८तथा सब पापोंको हरता व सब मंत्रोंमें उत्तम श्रीमान् यह मंत्रहै इस अष्टाक्षर मंत्रको जपताहुआ पुरुष नारायणजीका स्मरणकरता है ९ व जो इसेसंध्याके अंतमें जपताहै वह सबपापोंसे छूटजाता है यही परममंत्रहै व यही परमतपहै १० यही परममोक्षहै यही

स्वर्ग कहाजाताहै यह मंत्र सब वेदोंके रहस्योंसे निकालागया है ११ सोभी विष्णुभगवान् ने सब वैष्णव मनुष्यों के हितके लिये पूर्व्वसमयमें निकालाहै और किसीने नहीं ऐसाजानकर ब्राह्मणको चाहिये कि अवश्य अष्टाक्षरमंत्रका स्मरणकरे १२ व पाप शोधनेके लिये स्नानकरके शुद्धहोले तब इसमंत्र को पवित्र स्थानमें जपे जप दान होम व यात्रा व ध्यानोंके पर्व्वोंमें जपनाचाहिये १३ इस नारायणजीके मंत्रको सबकर्म्मोंके पूर्व्व में व अन्तमेंभी जपनाचाहिये व एकाग्रचित्तहोकर सहस्र वा लक्ष नित्यजपे १४ व जो विष्णुभक्त ब्राह्मणोत्तम प्रत्येकमास की द्वादशी में स्नानकरके शुद्धहोकर ओंनमोनारायणाय इस मंत्रको सौवार जपताहै १५ वह रोगरहित परमदेव नारायण को प्राप्तहोताहै व जो गन्ध पुष्पादिकोंसे नारायणकी आराधना करके जपे १६ वह ब्रह्महत्यादि महापापों से युक्तभीहो तो भी छूटजाय इसमें कुछ संशय नहीं है व जो हरिको हृदय में करके इसमंत्रको जपे १७ वह सब पापोंसे विशुद्धात्मा होकर परमगतिको जाय एकलाख जपनेसे आत्माकी शुद्धिहोगी १८ व दूसरे लक्षके जपने से मंत्रकी शुद्धिहोगी व तीसरे लक्षके जपने से स्वर्ग्गलोक पावेगा १९ चौथे लक्षके जापसे हरिके समीप बसे पांचवेंलक्षके जपनेसे निर्म्मल ज्ञानपावे २० व छठें लक्षके जपनेसे विष्णुमें स्थिरमति होवे सातवेंलक्षके जपतेही स्वरूप ज्ञानपावे २१ व आठवें लक्षके जपने से मोक्षपद को प्राप्तहो अपने २ धर्म्ममें युक्तहोकर ब्राह्मणोत्तम इस मंत्र को जपे २२ यह अष्टाक्षरमंत्र सब सिद्धियोंको देताहै और दुःस्वप्न आतुर पिशाच सर्प्प ब्रह्मराक्षस २३ चोर नीच व नानाप्रकार की मनकीव्यथा मंत्रजपनेवालेके निकट नहीं आतीं व एकाग्र मनसे स्वस्थचित्त करके विष्णुकाभक्त दृढ़व्रतहोकर २४ मृत्यु भय नाशनेवाले इस नारायणजी के मंत्रको जपै क्योंकि यह

मंत्रोंका परममंत्रहै व देवताओंका परमदेव है २५ सब गुप्त पदार्थोंमें परमगुप्तहै इस मंत्रमें ओंकारादि ८ अक्षरहैं व आयुर्दाय धन पुत्र पशु विद्या महायश२६धर्म्म अर्थ काम व मोक्ष जपकरनेवाला मनुष्य पाताहै वेदकी श्रुतियों के उदाहरण से यह सत्य व नित्यहै २७ यह मंत्र मनुष्योंको सिद्धिकरनेवाला है इसमें संशय नहींहै ऋषि पितर देवता सिद्ध असुर वराक्षस २८ इसी परममंत्रको जपकर सिद्धिको प्राप्तहुयेहैं व जो कोई ज्योतिषआदि शास्त्रों के द्वारा अपनाकाल जानकर विधानसे अन्तकालमें जपताहै वह विष्णुजीके परमपदको जाताहै २९ नारायणायनमः यहमंत्र संसार घोरविष हरनेकेलिये परममंत्र है हे भव्यमतिवाले रागरहित पुरुषो सुनो हम ऊपरको बाहु उठाकर कहते हैं ३०। ३१ हे पुत्र व हे शिष्यो ऊपरको बाहु उठाकर आज हम सत्य कहते हैं कि अष्टाक्षर मंत्र से पर कोईमंत्र नहींहै ३२ सत्य २ फिर सत्य भुजाउठाकर कहते हैं कि वेदसे कोईशास्त्र पर नहीं है व न केशवसे पर कोई देवहै ३३ हम सब शास्त्रोंको देखकर व वार२ विचारकरके कहते हैं कि नारायणदेव ध्यानकरनेके योग्य हैं ३४ शिष्योंसे व तुमसे यह सबमंत्रका विधान व विविधप्रकारकीकथा हमने कही अब जनार्द्दनभगवान्का भजनकरो ३५॥

चौ॰ यहअष्टाक्षरमंत्रपुनीता। सर्व्वदुःखनाशनहरिप्रीता॥ जपहुयाहिसुतजो मनमाहीं। पहुतसिद्धि पूरीइकठाहीं॥१॥३६ व्यासभषित यहस्तवन पुनीता। जेसन्ध्यात्रयमहँ जननीता॥ पढिहैंतेसित हंससमाता। हैतरिहैं संसारमहाना॥२॥३७॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेमाषानुवादेसप्तदशोऽध्यायः १७॥

अठारहवां अध्याय॥

दो॰ अट्ठारहें अध्याय महँ सुरअश्विनीकुमार॥ जन्मकथाअरुयमयमीकथासहितविस्तार १॥

सूतजी भरद्वाजादिमुनियों से बोले कि सबपापोंके नाशने-वाली व पुण्यरूपिणी कथा व्यासजी के मुखसे सुनकर नाना प्रकारके मुनिलोग व महाभाग्यवाले महामति शुकाचार्य्य व और ऋषिलोगभी नारायणमें तत्परहुये हे भरद्वाजजी १।२ इसतरहसे विचित्र व पापनाशनेवाली मार्कण्डेयादिकोंकी कथा हमने तुमसे कही अब फिर और क्या सुनाचाहतेहो ३ भरद्वा-ज़जीने पूँछा कि वस्वादिकोंकी व हमारी सृष्टि तो आपने कही परन्तु अश्विनीकुमार व पवनोंकी उत्पत्ति नहीं कही इससे अब वह कहो ४ सूतजी बोले कि पूर्व्वसमयमें पवन व पराशरमुनि ने विष्णुपुराणमें पवनोंका जन्म विस्तार पूर्व्वक कहा है ५ व अश्विनीकुमार नाम दोनों देवताओंकीभी उत्पत्तिकहीहै परन्तु अब इनकी सृष्टि संक्षेपरीतिसे कहते हैं हमसे सुनो ६ दक्षकी सब से बड़ी कन्याका अदिति नाम था उसमें कश्यपऋषि से आदित्यनाम पुत्र हुये उनको त्वष्टाने अपनी संज्ञानाम कन्या स्त्री बिनानेकोदी ७ उन्होंने मनोज्ञ व रूपवती उसत्वष्टाकी कन्या संज्ञाकेसंग कुछ कालतक भोगविलास किया परन्तु वह सूर्य्य का ताप न सहसकी इससे अपने पिताके यहां चलीगई ८ उ-सकन्या को देख पिता उससे बोला कि हे पुत्रि तुम्हारे पति सूर्य्य स्नेह से तुम्हारी रक्षाकरते हैं वा कठोरतासे करते हैं ९ पिताका वचन सुनकर संज्ञा उनसे बोली कि पति के प्रचण्ड तापसे हम जलगईं १० ऐसा सुनकर पिताने उससे कहा हे पुत्रि अभी भर्त्ताके गृहकोजा ११ क्योंकि युवती स्त्रियोंका पतिकी शुश्रूषा करनाही कल्याणदायक धर्म्म है हम भी कुछ दिनों में वहां आकर अपने जामाता सूर्य्यकी उष्णता कमकरदेंगे १२ यह सुनकर संज्ञा फिर पति के गृह में पहुँचकर कुछ दिनों में श्राद्धदेव बैवस्वतमनु यम व यमी तीनसन्तान उसने सूर्य्यसे उत्पन्नकिये फिर पतिकी उष्णता बहुत दिनोंतक न सहसकी

इससे अपनी बुद्धिकेबलसे अपनी छायासे छायानाम स्त्री पति के भोगकरनेके लिये उत्पन्नकरके वहां स्थापितकर उत्तर कुरु देशोंमेंजाकर आप घोड़ीकास्वरूप धारणकरके विचरनेलगी १३ सूर्य्यने भी उसे संज्ञाही मानकर उसस्त्री में फिर तीन सन्तान उत्पन्नकिये १४ मनु शनैश्चर दो पुत्र व तपतीनाम कन्या छायाको अपने सन्तानोंमें अधिक स्नेह देखकर यमराजने अपने पिता से कहा कि यह हमारी माता नहींहै १५ पिताने भी यह सुनकर भार्य्यासे कहा कि सब सन्तानोंमें समतारक्खो १६ फिर भी अपने पुत्रादिकों में अधिक स्नेहकरतीहुई छायाको देखकर यम व यमीने उससे बहुत प्रकारसे समझाकर कहा पर फिर भी सूर्य्यकेनिकटहोनेसे दोनों चुपहोरहे १७ तब छाया ने यम यमी को शापदिया कि यम तुम प्रेतोंके राजाहोओ व यमी तुम यमुनानाम नदीहोओ १८ तब क्रोधसे सूर्य्यजीने भी छायाकेपुत्रों को शापदिया कि हे पुत्र शनैश्चर तुमग्रहहोओ उसमें भी क्रूर दृष्टिवाले व मन्दगामी फिर पापग्रह १९ व हे पुत्रि तू तपतीनाम नदी हो ऐसा शापदेकर सूर्य्यजीने ध्यानमें टिककर विचार किया कि संज्ञा इससमय कहां स्थित है २० ध्यान दृष्टिसे उत्तर कुरुदेशों में घोड़ी होकर विचरतीहुई संज्ञा को देखकर आपनेभी अश्वकारूप धारणकर वहां जाय उसके संग मिलापकिया २१ उसघोड़ी के रूपमें टिकीहुई संज्ञामें से अश्वरूप सूर्य्य से अश्विनीकुमार नाम दो देव उत्पन्नहुये व अतिशय शरीरवाले उनदोनों को साक्षात् प्रजापतिजी वहां आकर देवत्व यज्ञभागत्व व देवताओंकी वैद्यत्व देकरचलेगये सूर्य्यजी भी घोड़ेकारूप छोड़ व अपनी संज्ञास्त्रीको भी पूर्व्वंवत् रूपवती करके संगलेकर स्वर्ग को चलेगये २२ तब विश्वकर्म्माने वहां आकर उसकेनामोंसे सूर्य्यकी स्तुतिकरके उनकी उष्णताके अंशबहुतसे सूक्ष्मकरडाले २३॥

चौ० इमिउत्तमनासत्यककेरी। बिप्रकहाउत्पत्तिसुहेरी ॥ पुण्यपवित्रपापकीनाशिनि। भरद्वाजमुनिमुदितहोहुगुनि १।२४ सूर्य्यतनयअश्विनीकुमारा। देववैद्यवररूपअपारा ॥ तिनकर जन्मपुरुषक्षितिमाहीं। मुनिसुरूपदिविप्रमुदितजाहीं २।२५

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेअश्विनीकुमारोत्पत्तिर्नामा-
ष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय॥

दो० उन्निसयें अध्यायमहँ अष्टोत्तर शतनाम ॥
विश्वकर्म्म भाषितकहे रविके बहुत ललाम १

भरद्वाजजीने सूतजीसे प्रश्नकिया कि विश्वकर्म्मा ने जिन नामोंसे सूर्य्यजी की स्तुतिकीथी सूर्य्यके उननामोंके सुननेकी हमारीइच्छाहै हेसूत कहिये१सूतजीबोले कि विश्वकर्म्माने जिन नामोंसे सूर्य्यजीकी स्तुतिकीहै सब पाप हरनेके योग्य वे नाम हमसे सुनो कहतेहैं २ आदित्य १ सविता २ सूर्य्य ३ खग ४ पूषा ५ गभस्तिमान् ६ तिमिरोन्मथन७ शम्भु ८ त्वष्टा ९ मार्तण्ड १० आशुग ११।३ हिरण्यगर्भ १२ कपिल १३ तपन १४ भास्कर १५ रवि १६ अग्निगर्भ १७ अदिति पुत्र १८ शम्भु १९ तिमिरनाशन२०।४ अंशुमान् २१ अंशुमाली २२ तमोघ्न २३ तेजोनिधि २४ आतापी २५ मण्डली २६ मृत्यु २७ कपिल २८ सर्व्वतापन २९।५ हरि ३० विश्व ३१ महातेजाः ३२ सर्व्वरत्न प्रभाकर ३३ अंशुमाली ३४ तिमिरहा ३५ ऋग्यजुस्साम भावित ३६।६ प्राणा विष्करण३७ मित्र३८ सुप्रदीप ३९ मनोजव ४० यज्ञेश ४१ गोपति ४२ श्रीमान् ४३ भूतज्ञ ४४ क्लेशनाशन ४५।७ अमित्रहा ४६ शिव ४७ हंस ४८ नायक ४९ प्रियदर्शन ५० शुद्ध ५१ विरोचन ५२ केशी ५३ सहस्रांशु ५४ प्रतर्द्दन ५५।८ धर्म्मरश्मि ५६ पतंग ५७ विशाल ५८ विश्वसंस्तुत ५९ दुर्व्विज्ञेय गति ६०

सूर ६१ तेजोराशि ६२ महायशा ६३ । ९ भ्राजिष्णु ६४ ज्योतिषामीश ६५ विजिष्णु ६६ विश्वभावन ६७ प्रभविष्णु ६८ प्रकाशात्मा ६९ ज्ञानराशि ७० प्रभाकर ७१ । १० आदित्य ७२ विश्वदृक् ७३ यज्ञकर्त्ता ७४ नेता ७५ यशस्कर ७६ विमल ७७ वीर्य्यवान् ७८ ईश ७९ योगज्ञ ८० योगभावन ८१ । ११ अमृतात्मा ८२ शिव ८३ नित्य ८४ वरेण्य ८५ वरद ८६ प्रभु ८७ घनद ८८ प्राणद ८९ श्रेष्ठ ९० कामद ९१ कामरूपधृक् ९२ । १२ तरणि ९३ शाश्वत ९४ शास्ता ९५ शास्त्रज्ञ ९६ तपन ९७ शय ९८ वेदगर्भ ९९ विभु १०० वीर १०१ शान्त १०२ सावित्रिवल्लभ १०३ । १३ ध्येय १०४ विश्वेश्वर १०५ भर्त्ता १०६ लोकनाथ १०७ महेश्वर १०८ महेन्द्र १०९ वरुण ११० धाता १११ विष्णु ११२ अग्नि ११३ दिवाकर ११४ । १४ इनमें शम्भु कपिल अंशुमाली आदित्य शिव तपन ये ६ नाम दुवारा आये हैं इससे उनके निकालनेसे १०८ रहते हैं इननामोंसे विश्वकर्म्माने सूर्य्यकी स्तुतिकी तब प्रसन्नहोकर भगवान्‌रवि विश्वकर्मासेबोले १५ कि यन्त्रपरचढ़ाकर हमारेमण्डलको सूक्ष्मकरदो तुम्हारी बुद्धिमें यहीविचारहै हमने जानलियाहै ऐसाकरनेसे हमारी उष्णता शान्तहोजायगी जब सूर्य्यजीने ऐसा कहा तो हे द्विज विश्वकर्म्माने वैसाही किया १६ फिर विश्वकर्म्मा की कन्या संज्ञाके ऊपर सूर्य्य की उष्णता शान्तहोगई व रविजी फिर विश्वकर्म्मासेबोले १७ कि तुमने जिससे कि अष्टोत्तरशत नामोंसे हमारी स्तुतिकीहै इससे वरमांगो क्योंकि हे पापरहित हम तुमको वरदिया चाहते हैं १८ जब भानुजीने ऐसा कहा तो विश्वकर्म्मा उनसे यहबोले कि हे देव यदि आप हमको वरदिया चाहते हैं तो एक यह वरदें १९ कि इननामोंसे जो मनुष्य नित्य तुम्हारी स्तुतिकरे हे भास्करदेव उसके पापोंका क्षय आपकरें २० ॥

अनरण्य अनरण्यसे दीर्घबाहु व दीर्घबाहुसे अज १२ अज से दशरथ दशरथसे श्रीरामचन्द्रजी १३ श्रीरामचन्द्रसे लव लवसे पद्म पद्मसे अनुपर्ण अनुपर्णसे वस्त्रपाणि १४ वस्त्रपाणि से शुद्धोदन शुद्धोदनसे बुध बस बुधसे सूर्य्यवंश निवृत्त हुआ १५ ये सूर्य्यवंशमें उत्पन्न राजा प्रधान २ हमने कहे हैं इन महाराजोंने इस पृथ्वीका भोग धर्म्मसे कियाहै १६ ॥

चौपै॰ यह सूरजकेरो वंश घनेरो हम मुनि तुमसन गावा। जहँबहुतमहीपतिभेअतिवरमतिअरुसबमहानुभावा॥ अब सुनु शशिकेरो वंशसुटेरो जहँ भे भूप महाना। करिनिजमनसुस्थिर यहकुलपुष्टिर जियसोंकरहुप्रमाना१।१७

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेएकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय॥

दो॰ बाइसयें महँ सोमकर वंश कह्यो गुनि सूत॥ जासु सुने नरहोत हैं कृष्णभजन मजबूत १

सूतजी भरद्वाजादिकों से बोले कि हे भरद्वाज हे महामुने सोमवंश सुनो यह पुराणोंमें बड़े विस्तारसे वर्णित है पर हम इससमय संक्षेपसे कहतेहैं १ प्रथम ब्रह्माहुये ब्रह्मासे मानसी मरीचिनाम पुत्रहुये मरीचिसे कर्दम प्रजापतिकी कन्यामें कश्यप हुये२ कश्यपसे अदितिनामस्त्रीमें आदित्यहुये आदित्यसे सुवर्चलानाम स्त्रीमें मनुहुये ३ मनुसे सुरूपामें सोम सोमसे रोहिणी में बुध बुधसे इलामें पुरूरवाः ४ पुरूरवासे आयु आयुसे रूपवतीमें नहुष ५ नहुषसे पितृमतीमें ययाति ययातिसे शर्मिष्ठामें पूरु ६ पूरुसे वृशदामें सम्पाति सम्पातिसे भानुदत्तामें सार्व्वभौम सार्व्वभौमसे वैदेहीमें भोज ७ भोजसे लिंगामें दुष्यन्त दुष्यन्तसे शकुन्तलामें भरतहुये ८ भरतसे नन्दामें अजमीढ अजमीढसे सुदेवीमें पृश्नि पृश्निसे उग्रसेनामें प्रसर प्रसरसे बहुरूपामें शान्तनु शान्तनुसे योजनगन्धामें विचित्रवीर्य्य वि-

चित्रवीर्य्यके अम्बिकामें पाण्डु ६ पाण्डुसे कुन्तीदेवीमें अर्जुन
अर्जुनसे सुभद्रा में अभिमन्यु १० अभिमन्यु से उत्तरा में
परीक्षित परीक्षितके मातृमतीमें जनमेजय जनमेजयके पुण्य-
वतीमें शतानीक ११ शतानीकसे पुष्पवतीमें सहस्रानीक स-
हस्रानीकसे मृगवतीमें उदयन उदयनसे वासवदत्तामें नरवाहन
१२ नरवाहनसे अश्वमेधामें क्षेमकनाम पुत्रहुआ बस क्षेमकसें
पाण्डवोंका व सोमका वंश निवृत्तहुआ १३ ॥

चौ० राजवंशउत्तम यहजोई । नित्यसुनतशुभ पावतसोई॥
सर्व्वपापछूटतसोप्रानी । हरिगतिपावतनिजमनमानी १ । १४
जोयहिनित्यपढ़तजनकोई । पितहिश्राद्धमहँसुनवतसोई ॥ जो
कुछपितरनदेतदिलावत । अक्षयहोतसंकलमनभावत २ । १५
सोमवंशिवरभूपनकेरी । वंशकीर्त्तिवर्णीहियहेरी ॥ सुनतहिपाप
नशावनहारी । मन्वन्तरसुनुदशअरुचारी ३ । १६

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेसोमवंशानुकीर्त्तनन्नाम
द्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

दो० तेइसयें महँ चारिदश मन्वन्तर की गाथ ॥
मनुमनुसुतऋषिसुरसुरपसकलकहेइकसाथ १

सबसे प्रथम स्वायम्भुव मन्वन्तर है उसका स्वरूपकहिंचुके
हैं फिर सृष्टिकी आदिमें दूसरेस्वारोचिषनाम मनुहुआ १ उस
स्वारोचिष नाम मन्वन्तरमें विपश्चिन्नाम तो इन्द्रहुये पारावत
संज्ञक तुषित देवताहुये २ ऊर्ज्जस्तम्ब सुप्राण दन्त निर्ऋषभ
बरीयान् ईश्वर व सोम ये सात ऋषिहुये किंपुरुषादि स्वारो-
चिषमनुके पुत्र राजाहुये ३ तीसरेमनुका उत्तमनामथा सुधामा
सत्य शिव ४ प्रतर्द्दन वंशवर्त्ती ये पांच अपने द्वादश २ गणों
सहित देवथे उनदेवताओं के इन्द्रका इसमनुमें सुशान्तिनाम
था ५ वैद्यउसमें सप्तर्षिहुयेथे उसमें परशुचित्रादि मनुकेपुत्र

हुये ६ चौथा तामसनाम मनुहुआ उसमन्वन्तर में पर सत्य सुधी आदि २७ गण देवताहुये७ व भुशुण्डीनाम इन्द्रथे हिरण्यरोमा देवश्री ऊर्ध्वबाहु देवबाहु सुधामा पर्जन्य व मुनि ये सप्तर्षिथे८ज्योतिर्द्धामा पृथु काश्य अग्नि व धनक ये तामस मनुके पुत्रराजाहुये९पांचवां रैवतनाम मनुहुआ उसमें अमित निरत वैकुण्ठ सुमेधाआदि चौदहगण देवताहुये सुरांतक इन्द्र का नामहुआ सप्तकादिक मनुकेपुत्र राजाहुये १० शान्त शांतनव विद्वान् तपस्वी मेधावी सुतपा ये सप्तर्षिहुये ११ छठां चाक्षुषनाम मनुहुआ पुरु शतद्युम्न आदि उसके पुत्रराजाहुये सुशांत आद्य प्रसूत भव्य प्रथित महानुभाव लेखाद्य ये पांच अपने आठ २ गणों सहित वहां देवथे १२ इन देवताओंके इन्द्रका मनोजवनामथा व मेधा सुमेधा बिरजा हविष्मान् उत्तम मतिमान् सहिष्णु येसप्तर्षिथे १३ इससमय सातवां बैवस्वत नाम मनु विद्यमान है इसके इक्ष्वाकु आदि क्षत्रिय पुत्रहुये १४ वे सब राजाहुये आदित्य विश्वेदेव वसु रुद्रादिक देवगणहुये इस मन्वन्तरमें पुरन्दरनाम इन्द्र हैं १५ वसिष्ठ कश्यप अत्रि जमदग्नि गौतम विश्वामित्र व भरद्वाज ये सप्तर्षि हैं १६ अब इसके आगे जो सातमन्वन्तर होनेवाले हैं उन्हेंकहते हैं जैसा कि आदित्यसे जो संज्ञानाम स्त्रीमें मनुहुयेथे उनका वृत्त कहचुकेहैं व संज्ञाकी छायामें सूर्य्यहीसे एकदूसरे मनुहुये वे अपने पूर्व्वज सावर्णिमन्वन्तरको सावर्णिक अठयें मनुकेनामसे प्रसिद्धकरके भोगेंगे उसेसुनो १७ सावर्णिनाम आठवां मनुहोगा सुतपादिक उसमें देवगणहोंगे उनके इन्द्रबलिहोंगे १८ दीप्तिमान् गालव द्रोणाचार्य्यकेपुत्र अश्वत्थामा व्यास व ऋष्यशृंग ये सातसप्तर्षिहोंगे व विरांज उर्व्वरीयवान् निर्म्मोकादि सावर्णि मनुके पुत्र राजाहोंगे १९ नवयें मनुका दक्ष सावर्णिनामहोगा व धृति कीर्त्तिदीप्ति केतु पंचहस्त निरामय पृथुश्रवादि मनुके

पुत्र राजाहोंगे २० व मरीचिगर्भ सुधर्म्मा हविष्मान् आदि देवगणहोंगे उनके इन्द्रका अद्भुतनामहोगा २१ सवन कृतिमान् हव्य वसु मेधातिथि व ज्योतिष्मान् ये सप्तर्षिहोंगे दशवां ब्रह्म सावर्णिनाम मनुहोगा २२ विरुद्धादिक उसमें देवगणहोंगे उन के इन्द्रका शांतिनामहोगा २३ हविष्मान् सुकृति सत्य तपोमूर्त्ति नाभाग प्रतिमोक व सप्तकेतु ये सप्तर्षिहोंगे सुक्षेत्र उत्तम भूरिषेणादि ब्रह्मसावर्णिके पुत्रराजाहोंगे २४ एकादशयें मन्वन्तरमें धर्म्म सावर्णिनाम मनुहोगा २५ व सिंहसवनादि देवगणहोंगे उनके इन्द्रका दिवस्पतिनामहोगा २६ व निर्म्मोह तत्त्वदर्शीनिकम्प निरुत्साह धृतिमान् व रुच्य ये सप्तर्षिहोंगे २७ चित्रसेन बिचित्रादि धर्म्म सावर्णिके पुत्र राजाहोंगे बारहवांरुद्र सावर्णिनाममनुहोगा २८ उसमें इन्द्र कृतधामा नामहोंगे हरित रोहित सुमनस सुकर्म्मा सुतपानाम देवगणहोंगे २९ तपस्वी चारुतपा तपोमूर्त्ति तपोरति तापोधृति ज्योतिस्तप येसप्तर्षिहोंगे ३० देववान् देवश्रेष्ठाद्यउसमनुके पुत्रराजाहोंगे ३१ तेरहवांरुचि सावर्णिनाम मनुहोगा स्रग्वी बाण सुधर्म्मा आदि देवगणहोंगे उनके इन्द्रका ऋषभनामहोगा ३२ निश्चित अग्नितेजा वपुष्मान् धृष्ट बारुणि हविष्मान् नहुष भव्य ये सप्तर्षिहोंगे व सुधर्म्मा देवानीकादि मनुके पुत्र राजाहोंगे ३३ चौदहयें मनुका भौमनामहोगा उसमें इन्द्रका सुरुचिनामहोगा चक्षुष्मान् पवित्र कनिष्ठाभ देवगणहोंगे ३४ अविबाहु शुचि शुक्रमाधव व जितश्वासादि ये सप्तर्षिहोंगे उरुगम्भीर ब्रह्मादिक उसमनुके पुत्र राजाहोंगे ३५ इसप्रकार तुमसे चौदह मन्वन्तरकहे व राजाभी कहे जिनसे भूमिकी पालनाहोतीहै ३६ मनु सप्तर्षि देवता राजा मनुकेपुत्र व इन्द्र ये सब मन्वन्तरके अधिकारी होते हैं इससे मनुमें बराबर रहतेहैं ३७ जब ये चौदह मन्वन्तर बीतजाते हैं तब हज़ार चौयुगियां होतीहैं इतनेहीका ब्रह्माजीका एक दिन

होताहै३८व दिनकेपीछे इतनीहीबड़ी ब्रह्माजीकीरात्रिभी होती है उसमें ब्रह्मरूपधारी सर्वात्मा नृसिंहजी शयनकरतेहैं३९उतने समयतक भगवान् तीनोंलोकोंको ग्रसलेतेहैं व वही फिर सृष्टि की आदिमें बनातेभी हैं यह सब अपनी मायामें स्थित होकर सर्व्वरूपी जनार्दन भगवान् किया करते हैं ४० जागने के पीछे जैसा पूर्व्व में विश्वरहता है वैसीही फिर युगकी व्यवस्थाके साथ सृष्टिरचते हैं ४१ ॥

हरिगीतिका ॥

मनु अमर मनुसुतनृपति मुनिवर इन्द्रमुख सबहीकहे ।
सब हैं विभूति नृसिंहजी की स्थिति टिकेही जो रहे ॥
सबचर अचर सुरआदि तन्मय जानिये अरु मानिये ।
यहचारि अरुदशमनुनगाथानित्यनिजहिय आनिये १।४२

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेमन्वन्तरानुवर्णनन्नाम त्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

दो० चौबिसयें अध्याय महँ नृप इक्ष्वाकु चरित्र ।
सूतकह्यो मुनिवरनसों जो सबभांति विचित्र १

सूतजी भरद्वाजादि मुनियोंसे बोले कि इसके पीछे हम सूर्य्यवंशी व सोमवंशी राजाओंका सुननेवालोंके पापोंका नाशक वंशानुचरित कहेंगे १ सूर्य्यवंशमें उत्पन्न मनुके पुत्र राजाइक्ष्वाकुजीका वर्णन हमने पूर्व्वसमय में किया था अब उनका चरित सुनो २ हे महाभाग पृथ्वीपर सरयूनदीके तीर एक महाशोभन व दिव्य अयोध्यानामपुरी है ३ यहपुरी इन्द्रकी अमरावतीनाम पुरीसे भी अत्यन्त ऋद्धि सिद्धिमती है व तीसयोजनकी लम्बी चौड़ी है हाथी घोड़े रथ पैदरोंके समूहोंसे व कल्पद्रुमके समान प्रकाशित वृक्षोंसे शोभितहै४ शहरपनाह खांवां फाटकोंके ऊँचे परके तोरणोंसे विराजमानहै क्योंकि ये सब वहां सुवर्णहीके हैं

व चौरहे सब सवप्रकार से बनेबनाये हैं ५ अनेक तो उसमें भू-
मि परके धवरहरे हैं व सब मन्दिर नाना प्रकार के पात्रों से
भरेहुये हैं व नाना प्रकार के कमलों के समूहों से युक्त बाव-
लियोंसे शोभित है ६ विष्णु शिवादि देवताओं के मन्दिरों से
व उनमें बैठेहुये ब्राह्मणों के कियेहुये वेद शब्दों से शोभित है
वीणा वेणु मृदङ्गादिकों के उत्कृष्ट शब्दोंसे युक्त है ७ व शाल
ताल नारियर कटहर असला जामुनि आम्र कैथा व अशोकादि
वृक्षोंसे उपशोभितहै ८ फुलवाड़ियों व विविध प्रकारके उपवनों
से युक्त व सब ओर फलेहुये वृक्षोंसे युक्तहै चमेली बेला निवारी
जाती पाड़रडांड़ चम्पादिकोंके वृक्षोंसे अतिमनोहरहै ९ कँदैल
कठचम्पा केतकीसे भी अलंकृतहै केली व केला बिजौरे निम्बू
आदि के बड़े २ फलों से विराजमान है १० कहीं २ चन्दनादि
सुगन्धित वस्तुओं से व नागरंगादिकोंसे शोभितहै व सर्वत्र
नित्यनये २ उत्सवों से प्रमुदितरहती व गाने बजानेमें निपुण
लोग ठौर २ गाते बजाते रहतेहैं व रूपधन निरीक्षणादिकोंसे
शोभित नरनारियोंसे सर्वत्र भूषितरहतीहै ११ नानाप्रकारके
देशोंके मनुष्योंसे सदाभरी पुरीरहती है पताका ध्वजादिकोंसे
उपशोभित व देवपुत्रोंकी प्रभाके समान दीप्तियोंसे युक्त महा-
राजकुमारोंसे शोभितहै १२ देवस्त्रियोंके तुल्यसुरूपवतीस्त्रियों
से भरीहुई है व बृहस्पति के समान सत्कवि ब्राह्मणों से भरी
पुरीहै १३ दूकानदारों व और पुरवासियोंकी भीड़से शोभित
व कल्पवृक्षों सेभी शोभित है व उच्चैःश्रवाके तुल्य घोड़ों तथा
ऐरावतके समानगजोंसे संकुलहै १४ इसप्रकार नानाप्रकारके
भावोंसे अयोध्या इन्द्रपुरीके तुल्यवरन उससे भी अधिकशो-
भायमान होतीहै इसपुरीको देखकर एकसमय ब्रह्माकी सभा
में नारदजीने यह श्लोकगायाथा १५ कि स्वर्ग बनातेहुये ब्र-
ह्माकी निपुणता व्यर्थहोगई क्योंकि नाना प्रकारके इष्टभोगों

से युक्तहोनेके कारण अयोध्यापुरी स्वर्गसे बहुतअधिकहोगई है १६ उस अयोध्यापुरीमें महाराज इक्ष्वाकुजीबसे तब ब्राह्मणोंने अभिषेक किया कि उन महाबलीने धर्म्म युद्धसे अन्य खण्डमण्डलेश्वर राजाओंको जीतलिया १७ माणिक्य युक्त मुकुट शिरोंपरधरे मण्डलाधिप राजाओंने नमस्कारकर व भय से उनके चरणोंको पूज्यस्थान समझा १८सो अक्षतबलवाले सब शास्त्रोंमें विशारद तेजसे इन्द्रकेतुल्य मनुके पुत्र इक्ष्वाकुजीबड़े प्रतापीहुये १९ धर्म्मशास्त्र व न्यायके अनुसार वेदज्ञ ब्राह्मणों की आज्ञानुसार धर्म्मात्मा महाराज ने समुद्र पर्य्यंत इसपृथ्वीका पालनकिया २० उनबलवान्ने समरमें सबभूपतियोंको अस्त्रोंसे जीतलिया व तीक्ष्ण अस्त्रोंसेजीतकर उन लोगोंकेचामरछत्रादि महाराज चिह्नछीनलिये व बहुत२दक्षिणा देकर यज्ञकिये उनसे उन्होंने परलोकोंको जीतलिया व प्रतापी महाराज इक्ष्वाकुजीने नाना प्रकारके दानोंसेभी परलोकजीत लिये२१व दोनों हाथोंसे तो पृथ्वीकाधारणकरलिया तदनन्तर जिह्वाके अग्रभागसे सरस्वतीका धारण किया व राजलक्ष्मीको वक्षस्स्थलसे व चित्तसे श्रीविष्णुकीभक्तिको धारणकिया २२ बैठनेकेसमयके असलवस्त्रोंमें तो महाराजने हरिकेरूप लिखायेथे व लेटनेके वस्त्रोंमें माधवकेरूप व सोनेवालोंमें अनन्तके रूप लिखायेथे २३ बसतीनों कालों में वस्त्रोंमें लिखेहुये श्रीहरिके रूपोंकी पूजागन्ध पुष्पादिकोंसे महाराज सब कियाकरतेथे २४ इसीसे महाराज स्वप्नमें भी श्याममेघके समान कृष्णचन्द्रजी को व शेषनागके ऊपर शयनकरतेहुये पद्मनाभजीको व पीताम्बरकोभी देखाकरतेथे २५ इसीसे कृष्णचन्द्रके रंगके समान कृष्णमेघमें भी महाराजस्नेह करतेथे व कृष्ण मृग तथा कृष्ण कमलमेंभी स्नेह अधिककरतेथे २६ ऐसाकरते २ श्रीहरिकी दिव्यआकृतिके दर्शनकेलिये राजाकी तृष्णा अपूर्व्व बढ़ी २७

जब तृष्णा बढ़ी तो महाराजने राज्यके भोगको असारसमझा व गृह स्त्री पुत्र क्षेत्रादिकोछोड़दिया क्योंकिये सब उनको दुःखद दिखाईदिये २८ यह विचारा कि वैराग्य युक्त ज्ञानके समान इसलोकमें कुछ नहीं है ऐसीचिन्तना करके तपस्यामें चित्तल-गाया २९ व जाकर अपने पुरोहित वसिष्ठजीसे उपाय पूंछा कि हे मुने हमतपोबलसे नारायणके दर्शन किया चाहते हैं ३० सो उसका उपाय आप हमसेकहें जब राजाने ऐसाकहा तो तपमें मनलगायेहुये महीपतिसे वसिष्ठजीबोले ३१ क्योंकिवे एक तो धर्म्मज्ञथे व सदा राजाके हितमें तत्पररहतेथे कहा कि महाराज जो नारायण हरिके दर्शन किया चाहतेहो तो ३२ अच्छीरीति से कियेहुये तपसे जनार्द्दन भगवान्की आराधनाकरो क्योंकि विनातपकियेहुये कोईभी पुरुष देवदेव जनार्द्दनजीको ३३ कभी नहीं देखसक्ता इससे उनकी पूजा तुम तपसेकरो सो यहांसे आ-ग्नेयकोणमें सरयूजीके किनारे ३४ गालवादि ऋषियोंका उ-त्तम आश्रमहै यहांसे वह पावनस्थान पांचयोजनपरहै ३५ वह स्थान नाना प्रकारके वृक्षगणोंसे आकीर्णहै व नाना प्रकारके पुष्पोंसे युक्तहै अब नीतिमान् अपने अर्ज्जुननाममन्त्रीको जो कि महाबुद्धिमान्है ३६ राज्यकाभार सौंपकर व सन्ध्याबन्दन श्राद्धादि पितृकर्म्मकाण्ड भी उसी को सौंप कर गणेशजी की पूजाकरके यहांसे चलो ३७ व वहांजाकर सिद्धहोनेकी इच्छा करके तपकरो जैसा तपस्वीलोग अपना वेषरखतेहैं वैसाहीवेष धारणकर कन्दमूल फल भोजन करतेहुये तपकरना ३८ व ना-रायण भगवान्का ध्यानकरतेहुये यहमन्त्र सदाजपो ॐनमोभ गवतेवासुदेवाय यह द्वादशाक्षर मन्त्रसिद्धिकारक है ३९ इस मन्त्रको जपकर बहुतसे पुराने मुनिलोग उत्कृष्ट सिद्धिको प्रा-प्तहुयेहैं यहांतक कि चन्द्र सूर्य्यादिग्रह ऊंचेजा २ कर फिरलौट आतेहैं ४० पर द्वादशाक्षर मन्त्रकी चिन्ताकरनेवाले नहीं

निवृत्तहोते बाहरकी इन्द्रियोंको मनमें स्थापनकरके व मनको सूक्ष्मपरमात्मामें ४१ हे राजन् इसप्रकार मन्त्रकोजपो मधुसूदनको अवश्यदेखोगे हमने हरिकेप्राप्तिकी तपस्याकरनेकेवि-षयमें यह उपाय तुमसे कहा ४२ जो तुमने पूंछा हमने कहा जो इच्छाहो तो यहीकरो सब से उत्तम उपायहै ४३॥

चौपै० जबइमिमुनिभाषा करि अभिलाषा राजासबमहि भारा।
बरमन्त्रिसमर्प्यो गतसबदर्प्यो करिगणपति नतिबारा॥
बहुसुमनमँगाई अतिहरषाई करि करि सुखकी पूजा।
निजपुरसोंबाहरनिकस्योनाहस्तजिसबसोंसबदूजा॥४४

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेइक्ष्वाकुचरित्रेचतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

पच्चीसवां अध्याय॥

दो० पच्चिसयेंमहँ गजबदन पूजा जिमिनृपकीन।
अरुहरिहिततपकीनसो वर्ण्यो सूतप्रवीन॥ १॥

इतनी कथा सुनकर भरद्वाज मुनिने प्रश्नकिया कि महात्मा उसमहाराज ने गणेशजीकी स्तुति कैसेकी व जिसप्रकार उन्हों ने तपकिया हो वह हमसे कहो हे महामतिवाले १ सूतजी बोले कि चतुर्थीकेदिन राजा ने तीनबार स्नानकरके रक्तवस्त्रधारण कर व रक्तगन्धका अनुलेपन करके २ सुन्दरअति रक्त पुष्पों से गणेशजीकी पूजाकी जैसा उनके पूजनका विधानहै वैसे रक्त चन्दन मिलेहुयेजलसे स्नानकराया ३ व रक्तचन्दनहीसे ले-पन करके रक्तपुष्पों से पूजनाकिया फिर घृत व चन्दन युक्त धूप दिया फिर गुड़ व खांड़ घृत मिलाकर हरिद्राकी नैवेद्यलगाई ४ इसप्रकार विधिसे पूजनकरके गणेशजी की स्तुति राजाकरने लगे इक्ष्वाकुजी बोले कि महादेवजी के नमस्कार करके हम विनायकजीकी स्तुतिकरतेहैं ५ महागणपति शूर अजित ज्ञान-वर्द्धन एकदन्त द्विदन्त चतुर्दंत व चतुर्भुजक त्र्यक्ष त्रिशूल हस्त रक्तनेत्र वरप्रद आम्बिकेय शंकुकर्ण प्रचण्ड विनायक७

आरक्त दण्डी वह्निवक्त्र हुतप्रिय ऐसे गणेशजी जोकि विनापूजा
कियेहुये सबकार्य्यों में विघ्नकरतेहैं ८ उत्तमयंकर उग्ररूप उमाके
पुत्रगणाध्यक्षके नमस्कार करते हैं जोकि मदसेमत्त विरूपाक्ष व
भक्तोंकेविघ्नोंको रोकतेहैं ९ कोटि सूर्य्यसम प्रकाशित फूटेहुये अं-
जनकेसमान श्यामस्वरूप शुद्ध व निर्मल शांतरूप विनायकके
नमस्कारकरतेहैं १० गजवदनके नमस्कारहै व गणोंकेपतिके नम-
स्कारहै मेरु व मन्दराचलके रूपवालेके नमस्कारहै व कैलास-
वासीके नमस्कारहै ११ विरूपके ब्रह्मचारीके भक्तस्तुतके व वि-
नायकके नमस्कारहै १२ हे गणेश तुमने पूर्व्वसमयमें गजकारूप
धारणकरके देवताओंकाकार्य्य सिद्धकरनेकेलिये दैत्योंकोत्रासि-
तकियाथा १३ ऋषियों व देवताओंके नायकत्वको भी प्रकाशित
कियाहै शिवपुत्र तभीसे तुम इधर उधर देवताओं से पूजित
होते हो १४ सर्व्वज्ञ कामरूपी गणाध्यक्ष तुम्हारी आराधना
कार्य्यकेलिये जो कोई रक्तपुष्पोंसे व रक्तचन्दन मिलायेहुये जल
से १५ आप रक्तवस्त्रधारण करके चतुर्थीकेदिन करताहै तीनों
कालोंमें वा एकहीकालमें नियमित भोजन करके पूजाकरताहै
१६ वह राजा वा राजपुत्र वा राजमन्त्री वा राज्यको तुम्हारी
कृपासे वशमें करलेताहै हे गणेश्वर १७ इससे हे विनायक तु-
म्हारे हम नमस्कार करतेहैं हमारेतपमें अविघ्नकरो हमने इस
प्रकारसे स्तुतिकी है व भक्तिसे विशेष रीतिसे पूजाकीहै १८
इससे जो फल सब तीर्थोंकी यात्राकरनेमें हो व जो फल सब
यज्ञोंके करनेसे हो वह फल विनायक देवकी स्तुति करनेसे हो
१९ व पूजक को विषम न हो व वह निरादर को कहीं न प्राप्त
हो व विघ्नभी उसका न हो व जहां वह उत्पन्न हो वहां उसे अ-
पनी ज्ञातिका स्मरण बनारहै जो कोई इसस्तोत्रको पढ़े वह छः
मासमें सब कुछ करनेमें समर्थ हो व वर्षभरमें सिद्धिकोपावे
इसमें संशय नहीं है २० सूतजी बोले कि हे द्विजपूर्व्वकाल में

इसरीति से गणेशजीकी स्तुतिकरके राजाइक्ष्वाकुजी तापसोंका वेषधारण करके तपकरनेकेलिये बनकोचलेगये २१ व सर्पकी केंचुलके समान चमकतेहुये बड़े मोलके बस्त्रउतारकर वृक्षका बड़ाकठोर बकला कटिमें धारण किया २२ व ऐसेही सुवर्णके रचित सब कंकण उतारकर कमलकेफलोंकी मालाबनाकर व कमलहीके सूत्रोंके कंकणधारणकिये २३ ऐसे शिरपरसे रत्न व सुवर्णसे शोभित मुकुटको उतारकर तपकरनेके लिये राजा ने जटाकलापधारणकिया २४ इसरीतिसे बसिष्ठजीके कहनेके अनुसार तापसवेष करके तपोवनमेंजाके शाक मूलफल खातेहुये राजा तपकरनेलगे २५ ग्रीष्मऋतुमें पांच अग्नियोंके मध्यमें बैठकर महातप किया व वर्षाकालमें निरालम्ब ऐसेही बाहर बैठकर व हेमन्तऋतु में जलके भीतर खड़ेहोकर २६ व फिर सब इन्द्रियों को शान्तकरके मनमें स्थापित करके व मनको श्रीविष्णुजी में प्रवेश कराके द्वादशाक्षर मन्त्र जपनेलगे २७ जब केवल बायु भक्षणकरके राजा मंत्रजपनेलगे महात्माराजा के निकट लोकके पितामह ब्रह्माजी आकर प्रकटहुये २८ उन पद्मयोनि चतुर्म्मुखब्रह्माजीको आयेहुये देखकर भक्तिभाव से प्रणामकरके व स्तुतिकरके राजाने प्रसन्न किया २९ जैसे कि हिरण्यगर्भ जगत्स्रष्टा महात्मा वेदशास्त्र जाननेवाले चारमुख वाले तुम्हारे नमस्कारहै ३० जब इसप्रकार राजाने स्तुतिकी तो जगत् बनानेवाले ब्रह्माजी महासुखदायक राज्य छोड़े हुये शान्तचित्त तपकरतेहुये राजासेबोले ३१ कि हे राजन् लोकों के प्रकाश करनेवाले सूर्य्यजी तो तुम्हारे पितामह हैं व सब मुनियोंकेभी मान्य मनुजी तुम्हारे पिताहैं ३२ व तुम्हारे पिता पितामहने पूर्व्वकालमें बहुत तपकियाथा पर जबतक कुछ शरीरमें पापरहै तभीतक उन्होंनेभी तपकिया व सबको तभीतक करना चाहिये ३३ पर तुम सब राज्यभोग छोड़कर घोर तप

किसलिये करतेहो यह हमसेकहो हे नृपोत्तम ३४ जब राजासे ब्रह्माजीने ऐसा कहा तो वे उनके प्रणामकरके यह वचनबोले कि यहतप हमाराभगवान्‌केदर्शनकरनेकीइच्छासेहै ३५ कि जिसमें शंख चक्र गदा धारणकियेहुये श्रीभगवान्‌के दर्शन अच्छी तरहसेहों जब राजाने ऐसाकहा तो हँसतेहुयेसे ब्रह्माजी राजा से बोले ३६ कि तपकरनेसे तो तुम नारायणविभुको नहीं देख सक्के क्योंकि हमसदृश लोगभी क्लेशनाशन केशवजी को नहीं देखसक्के ३७ इसविषयमें एक पुरानीकथा कहते हैं सुनो महाप्रलय होजानेपर भगवान् विष्णुजी सबलोकोंको अपनेमें लीन करके ३८ अनन्तनाग को शय्यावनाकर शयनकररहतेहैं तब सनन्दनादि ऋषि वहां उनकी स्तुति कियाकरते हैं ३९ उन सोतेहुये नारायणजीकी नाभिसे एक कमल उत्पन्न होताहै हे राजन् उसी शुभ कमलपर वेद जाननेवाले हम पूर्वकाल में उत्पन्नहुये व स्थितहुये ४० उसपरसे नीचेको दृष्टिकरके हमने कमलनयन भगवान्‌को देखा वे अनन्तनागकी शय्यापर भिन्न अञ्जन के समान चमकतेहुये श्यामस्वरूप दिखाई दिये ४१ जो कि अलसीके पुष्पके रंगकेथे व पीतवस्त्र धारणकियेशयन करतेथे दिव्यरत्नोंसे उनकेअंग विचित्रथे व मुकुटसे विराजित होतेथे ४२ व कुन्द इन्दुके सदृश गौरवर्णके अनन्तजीथे जिनको वे शय्या बनायेथे व सहस्रोंफणों के मध्यमें स्थित मणियों से प्रकाशित होरहेथे ४३ एकक्षणमात्र हमने उनको वहांदेखा पर फिर हमको न दिखाईदिये तब हे नृपोत्तम हम बड़ेभारी दुःखसे युक्तहुये ४४ तब हम कौतूहलसे अनामय नारायणजी के दर्शनकेलिये उस कमलकी नाड़ीके आश्रयसे नीचेको उतरे ४५ व उसजलमें जाकर ढूँढ़ा परन्तु हे राजेन्द्र हमने फिर न देखा तब फिर उसीकमलका आश्रयणकरके उन्हीं लक्ष्मीनाथ की चिन्तना करनेलगे ४६ व वासुदेवजीके उसरूपके देखनेके

लिये बड़ाभारी तप हमने किया तब हमसे अन्तरिक्षमें टिकी हुई आकाशबाणीने यह कहा कि ४७ हे ब्रह्मन् वृथा क्योंक्लेश को प्राप्तहोते हो इससमय हमारा वचनकरो तुम बड़ाभारी भी तपकरोगे तोभी भगवान्‌विष्णुको अब न देखोगे ४८ जो देखने की इच्छा हो तो अब उनकी आज्ञा के अनुसार सृष्टि करो व शुद्ध स्फटिकमणिके समान प्रकाशित शेषनागको पर्य्यंकबनाय शयन करतेहुये ४९ भगवान्‌का जो रूप तुमने देखाथा जोकि फूटे व धोटेहुये अंजनकेतुल्य चमकताथा उसरूपको एकपत्र में उल्लिखित करके रत्नके सिंहासनपर स्थापित करके ५० हे महामते नित्यभजते व देखतेरहो तो माधवभगवान्‌को देखोगे हे राजन् जब उस आकाशबाणीने हमसे ऐसाकहा तो हमने तपकाकरना छोड़दिया ५१ व लोकके सब प्राणियोंकी सृष्टि करनेलगे जब सृष्टि करचुके तो हमारे मनसे विश्वकर्म्मा प्र- जापति प्रकटहुये ५२ व उन्होंने अनन्त और कृष्णकीदोमूर्त्तियां अतिसुन्दर बनाईं जैसी दोमूर्त्तियां हमने प्रथम जलमें देखीथीं व विमानपर उल्लिखितकरके पूजीथीं ५३ फिर हमउनकीपूजा वैसेही करके हरिकेआगे स्थितहोकर बोले कि तुम्हारे प्रसादसे श्रेष्ठतप व उत्तमज्ञान ५४ पाकर व मुक्तिपाकर विकार रहित क्रियाका सुख देखेंगे सो हे नृपवरेश्वर वही हम तुमसे कहेंगे ५५ इससे तुम घोर तपको छोड़कर अपनी पुरीको जाओ व प्रजाओंका पालनकरो क्योंकि प्रजापालनकरनाही राजाओंका धर्म्म व तपहै ५६ हम सिद्ध द्विजगणोंसे युक्त एकविमान तुम्हारे निकटभेजेंगे उसपरस्थित देवेशकी आराधना तुम करना व सब बाहरके शुभ अर्थों से भी ५७ अनन्त नारायण को उसीपर शयन करतेहुये यज्ञोंसेभी पूजना व निष्काम होकर धर्म्मसे प्र- जाओंकी पालना करना ५८ ऐसा करनेसे वासुदेवजीके प्रसाद से राजन् तुम्हारी मुक्तिहोगी यह कहकर पितामहजी ब्रह्मलोक

को चलेगये ५९ व इक्ष्वाकुजी ब्रह्माजीके वचनकी चिन्तनाकर-
तेहुये स्थितरहे थोड़ेही दिनोंके पीछे वह विमान राजाके आगे
प्रकटहुआ ६० यह माधव व अनन्तजी का विमान ब्रह्माजी का
दियाहुआ आया इसपर सब उत्तम २ विप्र बैठेथे ६१ उस वि-
मानकोदेख व परमभक्तिसे पुरुषोत्तमजीके प्रणामकरके व ऋ-
षियों ब्राह्मणों के प्रणाम कर विमानको संगलेकर राजा अपनी
पुरीको चलेगये ६२ वहां अपूर्व्व शोभा से युक्त लाजा अक्षत
उछालतेहुये पुरवासी व नगरकी नारियोंने राजाके गृहमें राजा
को पहुँचाया ६३ फिर अपने सुन्दर मन्दिरमें उस विमान को
स्थापित कर उन ब्राह्मणोंके संग हरिकी आराधना करने लगे
पूजा अपनी पतिव्रता स्त्रीके घिसेहुये चन्दनसे ६४ व सुगंधित
पुष्पोंकी मालासे करतेथे करते २ राजाकी बड़ी प्रीति बढ़ी राजा
के पूजन करनेके लिये सब पुरवासी कपूर चन्दन कुंकुम अगर
लातेथे ६५ व नानाप्रकारकेउत्तम २ वस्त्र व महिषाख्य गुग्गुल
व विष्णुजीकेयोग्य मालती आदिके उत्तम सुगन्धित पुष्प आन २
करदेतेथे ६६ इसप्रकार विमानपर विराजमान श्रीविष्णुजीकी
पूजा गन्ध पुष्पादिकोंसे तीनोंकालोंकी सन्ध्याओंमें परमभक्ति
से होती व वैष्णवी मंत्रों स्तोत्रोंके जपने पढ़नेसे होती थी ६७
व शंखादि बाजोंके शब्दोंसे व गानेके महा कोलाहलोंसे व शा-
स्त्रोक्त मंत्र पढ़ २ कर सम्मुख अवलोकन करनेसे तथा प्रसन्नता
पूर्व्वक रात्रिमें जागरण करनेसे होती ६८ इसप्रकार श्रीहरिका
परमउत्सव प्रतिदिन राजा करताथा व नानाप्रकारके यज्ञों से
सर्व्वदेवमय श्रीहरि को सन्तुष्ट करके ६९ निष्काम दान धर्म्म
करनेसे राजाने परमज्ञान पाया व यत्नसे पूजा करते २ पृथ्वीकी
रक्षा करते कराते व केशवकी पूजा करतेहुये ७० राजाने पितरों
के लिये पुत्रों को उत्पन्न कर व ध्यानसे शरीरको छोड़ व केवल
ब्रह्मका ध्यान करतेहुये वैष्णवपदको पाया ७१ ॥

चौपै० विमल विशोका शुद्धशलोका अज अद्वैत अनन्ता।
शान्त स्वरूपा वेद निरूपा सदानन्द भगवन्ता॥
ताकरकरिध्याना चढ़्योविमाना तजिभवदुःखदुरन्ता।
गोहरिपदपावनवैष्णवभावनजोसुखदेततुरन्ता॥७२

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेइक्ष्वाकुचरित्रेपंचविंशोऽध्यायः२५॥

छब्बीसवां अध्याय॥

दो० छब्बिसयें अध्याय महँ सब रविवंशी भूप॥
कहे गये संक्षेप सों निजमति के अनुरूप १

इक्ष्वाकुजीके त्रिकुक्षिनाम पुत्रहुये जब इनके पिता सिद्ध होगये तो महर्षियोंने उनको गद्दीपर बैठाया ये धर्म्म से पृथ्वीको पालतेहुये विमानपर स्थित भोगशायी अच्युत व अनन्त की आराधना करके यज्ञोंसे भी देवताओंकी पूजा करके अपने सुबाहुनाम पुत्रको राज्याभिषेककरके स्वर्ग को चलेगये उनआजमान सुबाहुसे उद्योतनाम पुत्रहुआ वह सप्तद्वीपवती पृथ्वीका पालन धर्मसेकर अपनेपितामहकेसमान नारायणमें परमभक्ति करके बहुत२ दक्षिणा देकर नाना प्रकारके यज्ञोंसे निष्कामसन हो श्रीहरिकी पूजाकरके नित्य निरंजन निर्विकल्प परंज्योति अमृताक्षर परमात्मरूपका ध्यानकरके हरि अनन्तपारकी आराधनाकर स्वर्गकोचलागया १ यह जानो कहीचुके हैं कि इसमें प्रधानही राजाओंकावर्णन है इससे इसीवंशमें एकअसंहताश्व राजाहुये उनके मान्धातानाम पुत्रहुये इनका जब महर्षियों ने राज्याभिषेक किया तो ये तो अपने स्वभावहीसे विष्णुभक्तथे इससे अनन्त शेषकी शय्या बनायेहुये श्रीअच्युतकी आराधना भक्तिसे करतेहुये व यज्ञोंसेभी उनकी पूजाकरके धर्म्मसे सप्तद्वीपवती पृथ्वीकी पालना करकेस्वर्गको चलेगये २ उनकेविषयमें यह श्लोक मुनियोंने गायाहै कि॥

दो० सूर्य्य उअत जहँसों रहत जितने महँ सब ठाम॥

राज तहांलग सब रहो मान्धाता कर वाम १।३

मान्धाताके पुरुकुश्यहुये जिन्होंने देवताओं व ब्राह्मणों को यज्ञोंसे व दानोंसे सन्तुष्ट किया ४ पुरुकुश्यके दृषद दृषदके अभिशम्भु अभिशम्भुके दारुण दारुणके सगर ५ सगरसे हर्य्यश्व हर्य्यश्वसे हारीत हारीतसे रोहिताश्व रोहिताश्वसे अंशुमान् ६ अंशुमान्के भगीरथ हुये जिन्हों ने बड़ी तपस्यासे स्वर्गलोक से सम्पूर्ण पापनाशनी अर्थ धर्म्म काम व मोक्ष देनेवाली गंगा जीको पृथ्वीतलपर पहुँचाया व केवल अस्थियों के चूर्ण शेष रहनेवाले कपिल महर्षिकी दृष्टिसे भस्महुये सागराख्य अपने पितरोंको गंगाजलका स्पर्श कराकर स्वर्गमें पहुँचाया भगीरथके सौदास सौदासके सत्रसव ७ सत्रसवके अनरण्य अनरण्यके दीर्घबाहु ८ दीर्घबाहुके अज अजसे महाराज दशरथ जी उनके गृहमें रावणादिकोंके मारडालनेके लिये साक्षान्नारायण परब्रह्म श्रीरामचंद्र महाराजाधिराजने अवतार लिया ९ वे अपने पिताकी आज्ञासे अपनी भार्य्या व छोटेभ्राताके साथ दण्डकारण्यमें पहुँचकर तप करनेलगेवनमें रावण उनकीभार्य्या को हरलेगया इससे भाई के संग दुःखित होकर अनेक कोटि वानरोंके नायक सुग्रीवको सहाय बनाय समुद्रमें सेतु बांधकर उसपर होकर उन वानरों सहित लंकामें जाय देवताओंके कंटकरूप सपरिवार रावणको मार सीताजीको लेकर फिर अयोध्याजीमें आकर भरतसे राज्याभिषेक पाकर विभीषणको लंका का राज्यदेकर विमानपर चढ़ाय लंकाको भेजदिया व उसी विमानपर परमेश्वर श्रीरामचन्द्रजीभी विभीषणकेलेजानेसे चले गये व राक्षसोंकी पुरी लंकामें बसनेकी इच्छाभी विभीषण के हेतुकी व वहीं एक पुण्यारण्य स्थापित किया १० उसे देख वहीं महाशेष नागकी शय्यापर भगवान् शयनकररहे इससे विभीषण वहांसे वह विमान फिर आगेको न लेजासके श्रीरामचंद्र

जीके कहनेसे अपनी पुरीको चलेगये ११ वहां नारायणश्रीराम जीके निवास करनेसे वह स्थान बड़ाभारी वैष्णवक्षेत्र होगया सो अबभी दिखाई देताहै श्रीरामचन्द्रजीसे लव लवसे पद्म पद्म से ऋतुपर्ण ऋतुपर्ण से अस्त्रपाणि अस्त्रपाणि से शुद्धोदन व शुद्धोदनसे बुधहुये बुधसे यह वंश निवृत्त हुआ १२॥

चौपै० इतने भूपाला अतिहि विशाला सूर्य्य वंशपर धाना।
तुम सन हमगाये सबन बताये गाये जौन महाना॥
जिनमहिकरपालनअरुजनलालनकीनमलीबिधिपाहीं।
अरुबहुमखकरिकेदेवनभरिकेपालेद्विजशकनाहीं॥१३॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेसूर्य्यवंशानुचरितंषड्विंशोऽध्यायः २६॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

दो० सत्ताइसयें महँ कहब सोम वंशि नृपगाथ॥
जाहिसुने नरनारिसब बहुबिधि होतसनाथ१॥

सूतजी बोले कि अब सोमवंशी राजाओं के चरित संक्षेप रीतिसे कहतेहैं१ आदिमें सब त्रिलोकीको अपने उदरमें करके एकार्णवके महाजलमें शेषनागको शय्याबनाकर ऋग्वेदमय यजुर्म्मय सामसय अथर्व्वमय भगवान् नारायण योगनिद्राको अपनी इच्छा से ग्रहण करते हैं २ शयनकियेहुये उनकी नाभि से महाकमल उत्पन्न हुआ उसकमल पर चार मुखके ब्रह्माजी हुये ३ उनब्रह्माजी के मानसी पुत्र अत्रिजी हुये अत्रि के अन-सूयामें सोम उत्पन्नहुये उन्होंने दक्षप्रजापतिकी स्त्रैंतीसरोहि-एयादि कन्या भार्य्या बनाने के लिये ग्रहण कीं पर सबसे ज्येष्ठ रोहिणी के ऊपर बहुत प्रसन्नहुये इसीसे रोहिणी में बुधनाम पुत्र उन्होंने उत्पन्नकिया ४ बुधभी सर्व्वशास्त्र जानतेहुये प्रया-गके निकट प्रतिष्ठान पुरमें बसे व वहां उन्होंने इलानामस्त्रीमें पुरूरवानाम पुत्र उत्पन्न किया अतिशयरूपवाले इस राजाकी भार्य्या स्वर्ग के भोगों को त्यागकर बहुत दिनों तक उर्व्वशी

अप्सराहुई ५ पुरूरवासे उर्व्वशीमें आयुनाम पुत्रहुआ यहधर्म्म
से राज्यकरके स्वर्गको चलागया ६ आयुके रूपवतीमें नहुष
नाम पुत्रहुआ जिसको इन्द्रतामिली नहुषके पितृमतीमें ययाति
नाम पुत्रहुआ ७ जिसके वंशसे उत्पन्न सब वृष्णिवंशी हैं यया-
तिके शर्म्मिष्ठामें पूरुनाम पुत्रहुआ ८ पूरु के वंशदामें संयाति
पुत्रहुआ पृथ्वी पर इसराजाके सबकाम संपन्नहुये ९ संया-
तिके भानुदत्तामें सार्व्वभौम नाम पुत्र हुआ वह सबपृथ्वी को
धर्म्मसे पालताहुआ यज्ञदानादिकोंसे नरसिंह भगवान्‌की आ-
राधना करके सिद्धिको प्राप्तहुआ १० इस सार्व्वभौम के वैदे-
हीनामस्त्रीमें भोजहुआ जिसके वंशमें पूर्व्वकालके देवासुर सं-
ग्राममें श्रीविष्णुजीके चक्रसे माराहुआ कालनेमि दैत्य कंसके
नामसे प्रसिद्ध होकर वृष्णि के वंशमें उत्पन्न श्रीवासुदेवके हा-
थोंसे घातितहोकर मरगया ११ उस भोजके कलिंगानाम भा-
र्य्यामें दुष्यन्तनाम पुत्रहुआ इसने नरसिंह भगवान्‌की आरा-
धनाकरके निष्कण्टकराज्य धर्म्मसे भोगकरके अन्तमें स्वर्ग
वासपाया दुष्यन्तके शकुन्तलामें भरतनाम महाराज पुत्रहुआ
वह धर्म्मसे राज्य करताहुआ बहुत दक्षिणादे २ कर यज्ञोंके
करनेसे सर्व्वदेवमय भगवान्‌की आराधनाकरके सर्व्वाधिकारों
से निवृत्तहो ब्रह्मध्यानमें तत्परहोकर परम उत्कृष्ट वैष्णवज्यो-
तिमें लीनहोगया १२ भरतके आनन्दामें अजमीढनाम पुत्र
हुआ यह परम वैष्णव नरसिंहजीकी आराधना करके धर्म्मसे
राज्य करतारहा पुत्रहोनेके पीछे स्वर्गको चलागया १३ अज-
मीढके सुदेवीमें वृष्णिपुत्रहुआ वहभी बहुत वर्ष तक धर्म्मसे
राज्य करताहुआ दुष्टोंको दण्ड व सज्जनोंका पालनकरताहुआ
सप्तद्वीपवती पृथ्वीको वशमेंकर उग्रसेनामें प्रत्यञ्चनाम पुत्र
को उत्पन्न करके स्वर्गी हुआ १४ यहभी धर्म्म से पृथ्वी का
पालन करताहुआ प्रतिवर्ष एक ज्योतिष्टोम नाम महायज्ञ कर-

तारहा अन्तमें मोक्षपदको प्राप्तहुआ प्रत्यञ्च के बहुरूपा में शान्तनु नाम पुत्रहुआ १५ जिसको देवताके दियेहुये रथपर चढ़ने में प्रथम असामर्थ्य थी फिर सामर्थ्य होगई १६॥
इतिश्रीनरसिंहपुराणेसोमवंशानुचरितेसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

दो० हरिहरादिनिर्म्माल्य के उल्लंघन में दोष॥
अट्ठाइसयें महँ कहे मिटत द्विजनसंतोष १

भरद्वाजमुनि इतनी कथा सुनकर बोले कि राजा शन्तनु को स्यन्दनके चढ़नेमें प्रथम क्यों अशक्तिरही व फिर उनको आरोहणमें कैसे शक्तिहुई यह हमसेकहो १ सूतजीबोले कि हे भरद्वाज सुनो पूर्व्वकालका वृत्ततुमसे कहतेहैं वह राजा शन्तनु का चरित मनुष्योंके सब पापोंको हरता है २ राजा शन्तनु नरसिंहावतार के बड़े भक्तथे व नारदमुनिके कहेहुये बिधानसे श्री माधवजीकी पूजाकरतेथे ३ एकदिन उन्होंने नरसिंहदेव की निर्म्माल्य नांघी इससे हे विप्र राजा शन्तनु देवताके दियेहुये उत्तम स्यन्दनपर ४ न चढ़सके एकक्षणमात्र में उनकी शक्ति जातीरहीइससे वेअपनेमनमें विचारनेलगे किएकाएकी हमारी रथपर चढ़नेकी शक्ति कैसे भग्नहोगई ५ इसदुःखकी चिन्तना राजा करीरहेथे कि वहां नारदमुनि आये व राजासे पूँछा कि राजन् उदासीन व दुःखित क्यों हो ६ यह सुनकर शन्तनुजी बोले कि हे नारदजी हम यह अपनी गतिभंग होजानेका कारण नहीं जानते जब ऐसा सुना तो ध्यानकरके व सब कारण जानके फिर ७ विनयपूर्व्वक खड़ेहुये राजा शन्तनुजी से बोले किहे राजन् कहीं तुमने नरसिंहजीकी निर्म्माल्य नांघीहै इससे रथके ऊपर चढ़नेकी गति ८ तुम्हारी जातीरहीहै हे महाराज इसविषयका कारण हमसेसुनो हे राजन् अन्तर्वेदीमेंपूर्व्वकाल में बड़ाबुद्धिमान्९रविनाम एकमाली रहताथा उसने अपने यहां

एक वृन्दावन बनाया उसने उसमें पुष्पोंके लिये विविधप्रकारके
वन लगाये १० उनमें मल्लिका मालती जाही जूही मौलश्री आदि
बहुतसे वृक्षलगाये उसकी दीवार उसनेबड़ीऊँचीव चौड़ीबनाई
११ यहांतक कि सबओरसे अलंघ्य व अप्रवेश्य उसने वह वृ-
न्दावन व अपनागृहभी बनाया व यहभी कि प्रथम उसकेघर
में जायतो फिर उसबनमेंजाय अन्यत्रहोकर कोई मार्ग्ग नहीं
था १२ इसप्रकार वनबनाकर बसतेहुये उसबुद्धिमान् मालीका
वह वन फूला व उसकी सुगन्ध सब दिशाओं में फैलगई १३
वह अपनी स्त्री को संगलेकर उसमेंजाकर प्रतिदिन पुष्प तोड़
तोड़ कर नरसिंहजीकेलिये मालाबनावे १४ व जाकर प्रेमसे
चढ़ावे व बहुतसीमाला ब्राह्मणोंकोदेदे व बहुतसी बेंचकर अ-
पनी जीविकाकरे उसीसे अपनी भार्य्या पुत्रादि की व अपनी
भी जीविकाकरे १५ परन्तु स्वर्गसे आकर इन्द्रका पुत्ररथपर
चढ़कर रात्रिमें आवे व अपने संग बहुतसी अप्सराओं को
ले आकर पुष्पतोड़लेजायाकरे १६ उसके सुगन्धकी इच्छाकिये
हुआ वह ढूँढ़ २ कर सब पुष्प तोड़लेजायाकरनेलगा जब दिन
दिन पुष्प तोड़जानेलगे तो मालीनेभी चिन्ताकी १७ कि इस
वनमें जानेकेलिये और कोई तो द्वारनहीं व दीवार इसकी ऐसी
ऊँचीहै कि उसे कोई नांघकर आयहीनहींसक्ता फिर सब पुष्पों
के हरलेजाने की शक्ति तो मैं मनुष्यों की तो देखतानहीं १८
फिर मैं अब इसकी परीक्षा कैसेलूँ नहीं जानता यह क्या बात
है यह विचारकरके वहबुद्धिमान् रात्रिमें वहीं जागताहुआ बस
रहा १९ पर उसीप्रकार वह पुरुषआया व पुष्प सब लेकर च-
लागया उसे देखकर वह माली उसबनमें बहुत दुःखीहुआ २०
व सोरहा स्वप्नमें उसने नरसिंहजीको देखा व उनके वचनभी
ऐसे सुने कि हे पुत्रक हमारा निर्म्माल्य २१ लेकर इनसब वृक्षों
के ऊपरछिड़कदे व बाटिकाकीचारोंओर भी छिड़कदे बस इस

को छोड़ दुष्टइन्द्रपुत्र का निवारण और किसी रीतिसे न होगा २२ श्रीहरिका ऐसा वचन सुनकर व जानकर भगवान्की निर्माल्यलाकर वैसाही किया जैसा कि नरसिंहजीने स्वप्नमें कहा था २३ व इन्द्रपुत्रभी जैसे प्रतिदिन आताथा वैसेही गुप्तरथ पर चढ़कर आया व रथसे उतरकर पुष्प तोड़ताहुआ भूमि पर आया २४ व वह नरसिंहजी की निर्माल्य नांघगया फिर जो पुष्पलेकर रथपर चढ़नाचाहा कि रथपर चढ़ने की शक्तिही न रही क्योंकर चढ़े २५ फिर सारथि ने कहा कि बस अब रथपर तुम नहीं चढ़सक्ते क्योंकि नृसिंहजी की निर्माल्य नांघकर तुमको इस रथपर चढ़ने की योग्यता नहीं है २६ हम स्वर्गकोजातेहैं तुम अब भूमिहीपररहो नचढ़ो जब उसने ऐसाकहा तो बुद्धिमान् वह इन्द्रका पुत्र सारथिसे बोला २७ कि जिसकर्म्म के करनेसे इसपापका मोचनहो वह हमसे कहकर फिर तुम स्वर्गको शीघ्र चलेजाओ २८ यह सुनकर सारथि बोला कि कुरुक्षेत्रमें जहां परशुरामजीने यज्ञकियाहै वहांबारह बर्षतक नित्य ब्राह्मणोंका जूँठ तुम बुहारा झाड़ाकरो तो शुद्ध होओगे २९ इतना कहकर सारथितो देवताओंसे सेवित स्वर्गलोक को चलागया व इन्द्रका पुत्र सरस्वतीकेतीर कुरुक्षेत्र स्थानमें पहुँचा ३० व वहां ब्राह्मणों का उच्छिष्ट झाड़ने बहारनेलगा जब बारहवर्ष पूर्णहोगये तो शंकितचित्तहोकर ब्राह्मण लोग बोले ३१ कि हे महाभाग तुम कौनहो जो नित्य हमलोगोंका जूँठ झाड़तेरहतेहो व हमारे यहां भोजन नहींकरते इस विषयमें हमलोगोंको बड़ीशंकाहै ३२ जब इसप्रकार ब्राह्मणों से कहागया तो यथाक्रम सबवृत्तान्त कहकर रथपर चढ़के इंद्रजीका पुत्र स्वर्गको चलागया ३३ इससे हे राजन् तुम भी परशुरामजीके क्षेत्र कुरुक्षेत्रमें बारहवर्ष तक ब्राह्मणोंका उच्छिष्ट मार्ज्जनकरो ३४ क्योंकि सब पाप हरनेके लिये ब्राह्मणोंसे पर

कोई नहीं है जब ऐसा करोगे तो देवताके दियेहुये रथपर चढ़ने की शक्ति होगी नहीं तो नहीं ३५ हेराजन् जबयह प्रायश्चित्त करोगे तभीगति होगी व आजसे नरसिंहजी का निर्म्माल्य कभी न नांघो हे महामतिवाले ३६ सोनरसिंहही कीनहीं और भी किसी देवता के ऊपरकी चढ़ीचढ़ाई वस्तु कभी न नांघो इसी को तो निर्म्माल्य कहतेही हैं जब इसप्रकार नारदजी ने कहा तो राजा शन्तनुजी ब्राह्मणोंका जूंठ भाड़ने के लिये ३७ जाकर बारहवर्ष कुरुक्षेत्रमें रहे व वहकार्य्य करके फिर आकर रथपरचढ़े बस इस रीतिसे शन्तनु को प्रथम रथपर चढ़ने में अशक्ति हुई ३८ फिर हे विप्रेन्द्र पीछे से शक्तिहुई हे ब्राह्मण देवताओंके निर्म्माल्यके लंघनकरनेका दोष हमने इसप्रकारसे कहा व ब्राह्मणोंके उच्छिष्टके मार्ज्जनकरनेकीपुण्यकही ३९॥

चौपै० द्विजजूँठनमार्ज्जनयुतनिजभार्य्यनकरतनित्यजोप्राणी।
करिकैमनपूता अरुमजबूता निजमनकृति अरुबाणी॥
सबपाप विहायी शुभ सुखपायी फलपायी गोदायी।
बसिकैसुरगेहासहितसनेहालहै भक्ति चितचायी ११४०

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेशन्तनुचरितेऽष्टाविंशोऽध्यायः २८॥

उन्तीसवां अध्याय॥

दो० शन्तनुसे क्षेमक तलक जो नृपभे सब केरि॥
उन्तिसयें महँ है कथा पाण्डव केरि घनेरि १

राजा शन्तनुसे योजनगंधा में विचित्रबीर्य्य नाम पुत्र हुये वे हस्तिनापुरमें रहकर राजधर्म्म से प्रजाओंका पालन करते हुये व यज्ञोंसे देवताओंको तृप्तकराते व पितरोंको श्राद्धोंसे तृप्त करते करते पुत्र होनेपर स्वर्गको चलेगये १ विचित्रबीर्य्यकी अम्बिका नाम स्त्रीमें पाण्डुनाम पुत्रहुये येभी धर्म्मसे राज्यकरके मृगके शापसे शरीर छोड़कर देवलोकको चलेगये इनपाण्डु जीकी कुन्तीनाम भार्य्यामें अर्ज्जुनजी हुये २ वे बड़ेतपसे शंकर

जीको सन्तुष्टकरके पाशुपतास्त्र पाकर इन्द्रके शत्रु निवातकवच नाम दानवोंको मार खाण्डववन रुचिपूर्व्वक अग्निको दे तृप्त अग्नि से दिव्यवर पाय दुर्य्योधनसे हतराज्य होकर युधिष्ठिर भीमसेन नकुल सहदेव द्रौपदी सहित विराट्केनगरमें अज्ञातवास एकवर्ष रह वहीं गोहरणमें भीष्म द्रोण कृपाचार्य्य दुर्य्योधन कर्णादिकोंको जीतकर सब गोमण्डल लौटा लेजाकर अपने भाइयों समेत विराट् राजासे पूजापाकर कृष्णचन्द्र सहित कुरुक्षेत्रमें धृतराष्ट्रके पुत्रादिकोंसे बड़ाभारी युद्धकर भीष्मपितामह द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य शल्य कर्णादि बहुत पराक्रमवालों से व नाना देशोंसे आयेहुये अनेक क्षत्रियों व राजपुत्रों सहित दुर्य्योधनादि धृतराष्ट्रके पुत्रों को मारकर अपना राज्य पाकर धर्म्मसे राज्यका पालन करके आनन्दित होकर अपने भाइयों समेत स्वर्ग्गको चलेगये ३ अर्ज्जुनके सुभद्रामें अभिमन्युहुये जिन्होंने भारतके युद्धमें चक्रव्यूहमें प्रवेशकरके अनेक राजाओं का वधकिया ४ अभिमन्यु के उत्तरामें परीक्षितजी हुये इनको बनजानेके समय युधिष्ठिरजी ने राज्याभिषिक्त कियाथा बहुत दिनों तक राज्य करके ये स्वर्ग्गमें जाय क्रीड़ा करनेलगे ५ परीक्षितके मातृमतीमें जनमेजयहुये जिन्होंने ब्रह्महत्या मिटाने के लिये व्यासके शिष्य वैशम्पायनसे आद्यन्त सब महाभारत श्रवण किया ६ व धर्म्मसे राज्य करके जो स्वर्ग्ग को चलेगये जनमेजयके पुष्पवतीमें शतानीक हुये ७ वे धर्म्मसे राज्य करते हुये संसार दुःखसे विरक्त होकर शौनकके उपदेशसे क्रिया योग करके सकल लोकनाथ श्रीविष्णुजी की आराधना करके निष्कामहो वैष्णवपदको प्राप्तहुये शतानीकके फलवतीमें सहस्रानीकहुये ८ वे बाल्यावस्थाहीमें राजाहुये पर नरसिंहजीके अत्यंत भक्तिमानहुये इनका चरित पीछेसे कहेंगे ९ सहस्रानीकके मृगवतीमें उदयन हुये वेभी धर्म्मसे राज्यकरके नारायणकी आरा-

धनाकर उनके पुरकोगये १० उदयनके वासवदत्तामें नरबाहन हुये वे न्यायपूर्व्वक राज्य करके स्वर्गकोगये नरवाहनके अश्वमेधदत्तामें क्षेमकहुये ११ वे राज्यमें टिकेहुये प्रजाओंका परिपालन करके जगत् म्लेच्छप्राय होजानेपर ज्ञानके बलसे कलापग्राममें जाकर स्थित हुये १२॥

चौपै० जो श्रद्धाकरिकै निजचित धरिकै सुनै चरित्र अनूपा।
हरिमें रतिपावै निज मन भावै बहुरि होय नर भूपा॥
सन्तति सुखहोई सब दुख खोई सबशुभकर्म्मसँवारै।
पुनिस्वर्गनिवासीसबसुखरासी कैकैपापसँघारै १।१३॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेसोमवंशानुकीर्त्तनन्नामैकोनत्रिंशोऽध्यायः २९॥

वंशानुचरितंसमाप्तम्॥

तीसवां अध्याय॥

दो० तिसयें महँ भूगोल की गाथा कही विशेख॥
जाहि लखे सब सत्यही सुझें पुराने लेख १॥

सूतजी बोले कि हे द्विजसत्तम इसके पीछे अब हम भूगोल का वर्णन करतेहैं जोकि नदी व पर्व्वतों से आकीर्णहै परन्तु हम संक्षेपरीतिहीसे कहेंगे १ जम्बू प्लक्ष शाल्मलि कुश क्रौञ्च शाक व पुष्करनामोंसे प्रसिद्ध सातद्वीप हैं उनमें जम्बूद्वीप लक्षयोजनका है इससे दूनाप्लक्ष व उसका दूनाशाल्मलि ऐसेही और भी यथाक्रम दूने २ अधिक हैं लवण सुरा घृत दधि दुग्ध स्वच्छोदक नाम परस्पर दूने दूनेसात समुद्रों से वेढीपघिरेहुये हैं २ जो मनुकेपुत्र महाराज प्रियव्रतनामहुये हैं वे सप्तद्वीपवती पृथ्वीके अधिपतिहुयेहैं उनके अग्नीध्रादिक दशपुत्रहुये थे ३ उनमें तीन संन्यासीहोगये शेषसातोंको सातोद्वीप उनके पिता

ने देदिये उनमें जम्बूद्वीपके स्वामी अग्नीध्र के नव पुत्र हुये ४
उनके नाभि किम्पुरुष हरिवर्ष इलावृत रम्य हिरण्यक कुरुभद्र
व केतुमान् नवपुत्र हुये जब उनके पिता वनको जानेलगे तो
अपने नवपुत्रोंको नवखण्डदेगये अग्नीध्रके पुत्रनाभि इसहि-
मालयके दक्षिणवाले खण्डकेस्वामीहुये इननाभिके ऋषभदेव
नामपुत्रहुये ५ ऋषभदेवके भरत भरतने इसे बहुतदिनोंतकपाल-
नकिया इससे इसखण्डका भारतनामहुआ इलावृतखण्डकेबीच
में सुवर्णमय मेरुनामपर्व्वतहै यह चौरासी सहस्रयोजन ऊँचाहै
व सोलहसहस्र योजन पृथ्वीमें गड़ाहुआहै व बत्तीससहस्रयो-
जन ऊपर चौड़ाहै ६ इसके ऊपर मध्यमें ब्रह्माजीकी पुरी है व
पूर्व्वदिशामें इन्द्रकी अमरावतीपुरी हैं आग्नेयकोणमें अग्नि
की तेजोवतीपुरीहै दक्षिणमेंयमराजकी सँय्यमनीपुरी नैर्ऋतिमें
निर्ऋतिकी भयंकरीपुरी पश्चिममें वरुणकी विश्वावती वायव्यमें
वायुकी गन्धवती उत्तरमें सोमकी बिभावरी व यह नवखण्डोंस-
हित जम्बूद्वीप पुण्यपर्व्वत व पुण्यनदियोंसे संय्युक्तहै ७ किम्पु-
रुषादि आठखण्डपुण्यवानोंके भोगकरनेके स्थान हैं साक्षात् यह
भारतवर्ष कर्म्मभूमि हैं व इसीमें चारवर्णोंके लोगबसते हैं ८
इसीमें कर्म्म करने से मनुष्य स्वर्गपातेहैं व पावेंगे व मुक्तिभी
निष्काम कर्म्म करने से इसीखण्डवालेपातेहैं जोकि ज्ञान कर्म्म
करते हैं ९ व पापकरनेवाले यहां से नरकको भीजातेहैं जो पाप
कारीहैं वे जानो कि कोटिशः बर्षतक भूमिकेनीचे नरकमेंरहतेहैं
१० अब सातकुल पर्व्वत कहतेहैं महेन्द्र मलय शुक्तिमान् ऋ-
ष्यमूक सह्यपर्व्वत बिन्ध्य पारियात्र ये इतने भारतवर्षमें कुल
पर्वत हैं ११ व नर्म्मदा सुरसा ऋषिकुल्या भीमरथी कृष्णा
वेणी चन्द्रभागा ताम्रपर्णी ये सातनदियां गंगा यमुना गोदा-
वरी तुंगभद्रा कावेरी सरयू ये महानदियां हैं इससे सब पापों
को मिटातीहैं १२ जम्बुके नामसे यह जम्बूद्वीप विख्यात है व

लक्षयोजनका है उसमें यह भारतखण्ड सबसे श्रेष्ठ है १३ प्लक्षद्वीपादि पुण्य देशहैं उनमें जो निष्काम होकर अपने धर्म्म सें नरसिंहजीकी पूजाकरते हैं वे वहां बसते हैं व अधिकार क्षयहोने पर मुक्तिकोपातेहैं १४ जम्बूद्वीपसे लेकर स्वादुजलवाले सातवें समुद्रकेबीचमें जितनीभूमिहै उतनी ऐसी है शेषसुवर्णमयीहै उसके आगे लोकालोक पर्व्वतहै बस यही भूर्लोक कहाताहै १५।१६ अब महापुण्यदायक स्वर्गस्थान हम कहते हैं सुनो वह भारतमें पुण्यकियेहुये लोगोंकेलिये है व देवताओंके लियेभी १७ व पृथ्वीके मध्यमें सब पर्व्वतोंका राजा अतिप्रकाशित सुवर्णका सुमेरु पर्व्वतहै यह चौरासी सहस्रयोजनऊंचाहै १८ व सोलहसहस्रयोजन यहपर्व्वत पृथ्वीकेभीतर प्रविष्टहै व उसके सबओर सोलह २ सहस्रयोजन पृथ्वीहै १९ इसपर्व्वतके तीनशृंग हैं उन्हींकेऊपर स्वर्गटिका है नानाप्रकारके वृक्ष व लताओंसे युक्त व नानाप्रकारके पुष्पोंसे शोभित २० मध्यम पश्चिम व पूर्व्व मेरुकेतीनों शृंगहैं मध्यका शृंग स्फटिकमणि व वैदूर्य्यमणिकाहै २१ व पूर्व्ववाला इन्द्रनीलमणिका पश्चिमवाला माणिक्यकाहै बीचवालाशृंग चौदहलक्ष एकसहस्रयोजन ऊंचाहै २२ ब्रह्म ठीक २ स्वर्ग इसी पर प्रतिष्ठितहै यह शृंग प्रकाशित नहीं है क्योंकि इसीके ऊपर छत्राकार स्वर्ग है २३ इससे पूर्व्व उत्तर आदि दिशाओंके शृंगोंसे मध्यवालेमें अन्तर है वे स्वर्ग में इन्द्रादिक देवगण और अप्सरा रहती हैं २४ स्वर्गके मध्यवाले शृंगपर आनन्द व प्रमोद रहते हैं व श्वेत वर्ण पुष्टिकरनेवाला स्थान व उपशोभन और काम २५ आह्लाद स्वर्गकेराजा इन्द्र ये सब पश्चिमवाले शृंगपर रहते हैं व निर्म्मम निरहंकार सौभाग्य अतिनिर्म्मल २६ व स्वर्गभी है द्विजश्रेष्ठ ये सब पूर्व्ववाले शृंगपर रहतेहैं इक्कीसस्वर्ग सुमेरुके ऊपर टिकेरहते हैं २७ अहिंसा व दानकरनेवाले यज्ञों व तपोंके

करनेहारे ये सब लोग स्वर्गों में रहते हैं तथा जो लोगक्रोध रहित होतेहैं वेभी २८ व जोलोग जलमें प्रवेशकरनेमें आनन्द समझते हैं व अग्नितापने में अति हर्षितहोते हैं पर्वतपरसे गिरनेमें सुखसमझते व समरको निर्म्मल स्थान समझते २९ मरणके बहुतदिन प्रथम जो संन्यासधारण करतेहैं ये सब मरने पर स्वर्गहीकोजातेहैं उनमें यज्ञकरनेवाला नाकपृष्ठको जाता व अग्निहोत्र करनेवाला वहां जाता जहां से फिर नहीं फिरता ३० तड़ागखुदानेवाला व कूप खुदानेवाला पौष्टिक स्थान में बसता है सुवर्णदेनेवाला सौभाग्यपाता है व तपवाला स्वर्ग पाताहै ३१ शीतकालमें जो पुरुष सब प्राणियों के हितकेलिये बहुत अग्निका ढेर अर्थात् अलावलगादेताहै वह आप्सरस स्वर्गकोपाताहै ३२ सुवर्ण व गोदानकरनेवाला निरहंकारनाम स्वर्गकोजाताहै व शुद्धभूमि दानकरनेसे शान्तिकनाम स्थानको जातेहैं ३३ चांदीदेनेसे मनुष्य निर्म्मलनाम स्वर्गकोजाता है अश्वदानकरनेसे पुण्याहनाम स्वर्गको जाता है व कन्यादान करने से मंगलनाम स्वर्गकोजाता ३४ व जो ब्राह्मणों को प्रथम भोजन से तृप्तकराके फिर वस्त्रदानकरताहै वह श्वेतनाम स्वर्गको जाताहै जहां जाकर फिर कभी शोचनहीं करता ३५ कपिला गोदानकरनेसे परमार्थनाम स्वर्गमेंजाकर पूजितहोताहै बैलदानकरने से मन्मथनामस्वर्गको पाताहै ३६ व जो माघमासमें नियमसे किसी नदीमें स्नानकरता है व तिलधेनु दानकरता है छाता व जूतादानकरता है वह उपशोभननाम स्वर्ग को जाताहै ३७ जो पुरुष देवमन्दिरबनवाता व जो ब्राह्मणोंकी सेवाकरता है तथा जो तीर्थयात्रा कियाकरता है वह स्वर्गराजमें जाकर पूजितहोताहै ३८ व जो मनुष्य सदाएकही अन्नभोजन करता है वा नित्यरात्रिही में भोजन करता है वा त्रिरात्रादि व्रतकरता है पर शान्तचित्त रहता है व्याकुल नहीं

होजाता वह शुभनाम स्वर्ग्गकोजाता है ३९ व जो नित्य नदी हीमें स्नानकरता जो सदा क्रोधको जीतेरहताहै जो ब्रह्मचर्य्य को धारणकिये दृढ़व्रतरहता वह निर्म्मलनाम स्वर्ग्गकोजाता है व जो सदा प्राणियोंका हितही किया करताहै वह भी ४० विद्यादानकरने से मेधावीपुरुष निरहंकारनाम स्वर्ग्गकोजाताहै व जिस २ अभिप्रायसे जो २ दानदेताहै ४१ उसी २ स्वर्ग्गको जाताहै मनुष्य जिस २ की इच्छा करताहै संसारमें चार अति दान हैं कन्यादान गोदान भूमिदान व विद्यादान ४२ ये सब दाननरकसे उद्धारकरते हैं व सरस्वती जपनेसे धेनुदुहनेसे व पृथ्वी आरोहण करने से भी नरकसे उद्धारती है जो कोई सब दान ब्राह्मणोंको देतेहैं ४३ वे अनामय शांतनामस्वर्ग्गको पाकर फिर कभी वहां से निवृत्त नहीं होते पश्चिमवाले शृंगपर ब्रह्माजी सदा स्थिर रहते हैं ४४ व पूर्व्ववाले शृंग पर श्रीविष्णुभगवान् आप टिकेरहते हैं व बीचवाले शृंगपर महादेव जी है द्विजेन्द्र इसके पीछे अब स्वर्ग्गकामार्ग्ग बताते हैं सुनो ४५ सब मार्ग्ग विमल विपुल शुद्ध आदिके नामोंसे प्रसिद्ध हैं व एक दूसरेकेऊपर२ हैं प्रथममार्ग्गमें सनत्कुमार दूसरेमें माता ४६ तीसरेमें सिद्ध व गन्धर्व्वलोग चौथेमें विद्याधर पांचयेंमें नागराज छठें में गरुड़जी ४७ सातयें में दिव्यपितर आठयें में धर्मराज नवयेंमेंदक्ष दशयेंमें सूर्य४८ इस भूलोकसे लक्षयोजन पर तक सूर्य्यदेव तपतेरहतेहैं व दो सहस्रयोजनका सूर्य्यकारथ है ४९ व सूर्य्यका जितना विम्बहै उससे तीनगुना परिणाह अर्थात् उसके बांधनेकीरस्सी है व जब सूर्य्य अर्द्धसत्रके मध्याह्नमें सोमकी विभावरीमें पहुँचतेहैं ५० तो महेन्द्रकी अमरावतीपुरीमें भी टिकेरहतेहैं व जब मध्याह्नकेसमय अमरावती में भास्कररहते हैं तब यमराजकी संयमनी में उदित दिखाई देतेहैं ५१ व जब सूर्य्यसुमेरुकी प्रदक्षिणाकरतेहुये शोभितहोतेहैं

तो ध्रुवकेनीचे रहकर बालखिल्यादिकोंसे स्तुतिकियेजातेहैं ५२

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेभूगोलकथनेत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

दो० इकतिसयेंमहँ ध्रुवचरित सूतकह्योसविधान ॥
जासुसुने हरिजननके होत सकलकल्यान १

इतनावृत्तांत सुनकर भरद्वाजजीने प्रश्नकिया कि ध्रुवकौन हैं व किसके पुत्रहैं व सूर्य्यकेभी आधार कैसेहुये इसबातको बहुत विचार करके तो कहिये हे सूत तुम सौवर्षजीवो सूतजी कहनेलगे कि स्वायम्भुवमनुके उत्तानपादनाम पुत्रहुये हे द्विज उनके दो पुत्रहुये१सुरुचिनामस्त्री में श्रेष्ठउत्तम नामपुत्रहुआ २ सुनीतिमें छोटेध्रुवजीहुये एकसमय राजाउत्तानपाद सभाके मध्यमें बैठेथे २ सुनीतिने अपने पुत्रध्रुवको अलंकृतकरके राजाकीसेवा करनेको भेजा तब ध्रुवजी ने राजकुमारोंके खेलाने व दूधपिलानेवालियों के पुत्रोंकेसाथ ३ जाकर महाराज उत्तानपादजीके प्रणामकिया देखा तो पिताकी गोदमें उत्तमजी सुरुचिकेपुत्र बैठेथे ४ ध्रुवनेभी बाल्यावस्थाकी चपलतासे चाहा कि सिंहासनपर चढ़के हम भी महाराजकी गोदमें बैठें उनको ऐसा देख सुरुचिध्रुवजीसे बोली ५ कि हे दुर्भगाकेपुत्र क्यों राजा के गोदमें बैठनाचाहता है तू अभीबालक है इससे अनरपनके कारणनहीं जानता कि मैं अभाग्यवतीकेपेटसे उत्पन्न हूँ ६ इससिंहासनपर बैठनेकेलिये तूने कौनसापुण्य का कर्म्म किया ७ यदि कुछ पुण्य कर्म्म कियाहोता तो क्यों दुर्भगा के उदरसे उत्पन्नहोता इसअनुमानसे अपनी स्वल्पपुण्यता को जान ८ यद्यपि तू राजकुमार हुआ पर हमारे उदरसे क्यों न हुआ अयेसुन्दरीकोखिसे उत्पन्न इनउत्तमको देख जोकि राजाकीजानुओंपर बैठे मानसेबढ़रहेहैं ९ सूतजी बोले कि राजसभाकेबीचमें सुरुचिने ध्रुवजीको इसप्रकार तिरस्कृत किया १०

नेत्रों से अश्रुपात तो होनेलगे पर धैर्य्य से ध्रुवजी ने कुछ न कहा व राजाने भी उचित अनुचित कुछ न कहा ११ क्योंकि राजा अपनी सुनीति नाम अति सौभाग्यवती स्त्री के गौरव से बँधाथा व इसीसे सब सभाके लोगों ने भी ध्रुव का विसर्ज्जनही किया पर वे अपने बालपनसे शोक को छोड़कर १२ वे महाराज कुमार महाराजके प्रणाम करके अपने मन्दिर को चलेगये व नीतिके स्थान अपने बालक ध्रुवजीको देख सुनीति ने १३ मुखका चिह्नही देखकर जान लिया कि राजाने ध्रुवका अपमान कियाहै व ध्रुवजी भी एकान्तमें बैठीहुई अपनी माता सुनीतिको देखकर १४ बड़ी ऊँची सांसभरके व लपटकर बड़े ऊँचे स्वरसे रोदन करनेलगे तब समझाकर व वस्त्रसे मुखपोंछ कर सुनीति १५ अपने अञ्चल से पवन संचारकर व कोमल हाथसे भी सुहुराकर पुत्रसे पूँछनेलगी कि पुत्र रोदन करने का कारण बताओ १६ राजाकी विद्यमानतामें प्राणप्रिय तुम्हारा अपमान किसने किया ध्रुवजी बोले कि हे मातः हम तुमसे पूँछते हैं कि हमारे आगे अच्छीतरहकहो १७ पुरुषोंका स्त्रियोंमें तो सामान्य सम्बन्ध होताहै फिर सुरुचि राजाको क्यों अधिक प्रियाहै व आप राजा को कैसे प्रिय नहीं हैं १८ सुरुचिका पुत्र उत्तम कैसे उत्तमताको प्राप्तहुआ कुमारतामें भी सामान्यताही होती फिर हम कैसे उत्तम नहीं हैं १९ व तुम कैसे मन्दभाग्या हो और सुरुचिकी कोखि कैसे सुन्दरी ठहरी राजसिंहासन कैसे तो उत्तमके योग्य ठहरा व कैसे हमारे योग्य नहीं है २० हमारा पुण्यकर्म्म तुच्छ कैसे है व उत्तमका कैसे उत्तमहै यह नीतियुक्त वचन अपने पुत्रका सुनकर सुनीति २१ कुछ ऊर्ध्वसांस भरके फिर बालकके शोककी शान्तिके लिये धीरेसे स्वभावसेही मधुर बाणीथी पर औरभी मधुर बाणीसे कहनेको उद्यतहुई २२ सुनीति बोली अयि तात हे महाबुद्धे विशुद्ध अन्तःकरणसे कहती

हूँ सुनो अपमानकी ओर मति न करो २३ उसने जो कहा है सब सत्यहै मिथ्या कुछभी नहीं है जो वही रानी सब रानियों में राजाको अधिक प्रियहै तो २४ महासुकृतके सम्भारोंसे उत्तम उदरमें उत्पन्न होनेसे उत्तम उत्तम है व पुण्यवतीके पेटसे उत्पन्न होनेही के कारण राजसिंहासनके योग्यभी वही है २५ परन्तु चन्द्रके समान श्वेतछत्र व सुन्दर दो चामर व उच्चभद्रासन मतवाले हाथी २६ शीघ्रगामी तुरंग आधि व्याधिरहित जीवन शत्रुरहित सुन्दरराज्य ये सब पदार्थ श्रीविष्णुजीके प्रसादसे मिलते हैं २७ सूतजी बोले कि सुनीति अपनी माताका ऐसा निन्दारहित वचन सुनकर सुनीतिके पुत्र ध्रुवजी उत्तरदेने लगे २८ ध्रुवजी बोले हे उत्पन्न करनेवाली सुनीतिजी हमारा सुस्थिर वचन सुनो हम जानते थे कि बस अब उत्तानपादसे और कोई कहीं नहीं है २९ परन्तु हे मातः जो और भी कोई इच्छा पूरी करनेवालाहै तो हम सिद्धहुये अब क्याहै आजही सबके आराधना करनेके योग्य उन जगत्पतिकी आराधना करके ३० जो औरों को बड़े दुःखसे भी मिलनेके योग्य नहीं है वह पद जानों हमको प्राप्तही मानों पर हे अम्ब एक हमारा सहाय करो ३१ अब हमको आज्ञादो जिसमें हम श्रीविष्णु भगवान्की आराधना करें सुनीति बोली कि हेपुत्र हम तुमको आज्ञा नहीं देसक्तीं ३२ क्योंकि अभी तुम सातही आठवर्षकेहौ इससे क्रीड़ा करनेहीके योग्यहो व तुम्हीं अकेले हमारे तनयहो इससे हमारा जीवन तुम्हारेही अधीनहै ३३ बड़े २ कष्टोंसे बहुत देवताओंकी आराधनासे तुमको हमने पाया है इससे जब २ तुम तीन चार पैर चलकर भी खेलने जातेहो ३४ तब २ हे तात हमारे प्राण तुम्हारे पीछेही पीछे जाते हैं ध्रुवजी बोले कि आज तक तो तुम हमारी माता थीं व पिता महाराज उत्तानपादजी पर अब आजसे हमारे माता पिता श्रीविष्णु भगवान्हैं इसमें

संदेह नहीं है ३५ सुनीति बोलीं कि हेपुत्र विष्णुकी आराधना करनेके विषयमें हम तुमको नहीं रोकतीं क्योंकि जो हम तुमको रोकें तो हमारी जिह्वाके सौखण्ड होजायँ ३६ इसवचनको आज्ञाहीके समान मानों पाकर व माताके चरणाम्बुजों में प्रणाम कर व परिक्रमण करके ध्रुवजी तप करनेके लिये चलेगये ३७ व उन सुनीतिजीने भी धैर्य्यके सूत्रसे गुंफित करके कमलकी माला ध्रुवके लिये उपायन अर्थात् भेंटसी करदी ३८ व माता ने उनके मार्गकी रक्षाके लिये पुरवासियों व आचार्य्योंके आशीर्वादोंके सैकड़े पीछे करादिये ३९ व अपने मुखसे यह कहा कि हे पुत्र शंख चक्र गदाधारी जगद्व्यापी करुणावरुणालयप्रभु श्रीनारायण सब कहीं तुम्हारी रक्षाकरें ४० सूतजी बोले कि अपने राज अवरहरसे निकलकर बल पराक्रमी बालक ध्रुवजी अनुकूल पवनसे मार्ग दिखायेहुये वनको चल दिये ४१ परन्तु अभी बहुत छोटे होनेके कारण माताही उनकी देवताऽही उसी के बताये मार्ग जानते थे इससे जहां तक राजमार्ग था वह तो उनका जानाहीथा जब आगे चले वनकामार्ग उनको जान पड़ा इससे महाराजकुमारने एक क्षणमात्र ध्यान किया ४२ व नगरकी फुलवाड़ीके निकट जाकर चिन्तना करनेलगे कि क्या करें कहां जायँ व कौन हमारा सहायकहो ४३ इस प्रकार नेत्र खोलकर जब देखा तो ध्रुवजीको अतर्कित गति सप्तर्षि लोग वनके निकट दिखाईदिये ४४ फिर सातसूर्य्योंके समान तेजस्वी सप्तर्षियोंको देखकर जो कि मानों ध्रुवजीके भाग्यके सूत्रसेही खिंचेहुये आगयेथे इससे ध्रुवजी परमानन्दितहुये ४५ वे लोग मस्तकोंमें तो तिलक लगाये हाथोंकी अँगुलियोंमें कुशोंकी पवित्री धारण कियेहुये मृगचर्म्म ओढ़े यज्ञोपवीतोंसे शोभितथे ४६ ऐसे ऋषियोंको देख उनके निकट जाय कन्धाभुकाय हाथ जोड़ प्रणामकर ध्रुवजी ने ललित वचन कहकर विज्ञापित कि-

था४७ ध्रुव बोले कि हे मुनिवरो आप लोग हमको सुनीति के उदरसेउत्पन्न राजाउत्तानपादके ध्रुवनाम पुत्र जानो व हम गृह से उदासीन मन होकर आये हैं ४८ सूतजी भरद्वाजादिकों से बोले कि बलवान् स्वभावसे मधुर आकृति बहुमूल्य शिरोभूषणादि धारण किये कोमल व गम्भीर बोलते हुये उन बालक ध्रुवको देखकर ४९ व अपने समीप बैठाकर सब मुनिलोग विस्मित होकर उनसे बोले कि हे वत्स इसी अवस्था में गृह से उदासीन होनेका तुम्हारा कारण हम लोग नहीं जानते कि क्या है ५० बहुधा बिन अभिलाष पायेहुये मनुष्योंको गृहसे उदासीनता होजाती है सो तुम सप्तद्वीपवती पृथ्वीके महाराज के पुत्रहो इससे सब पदार्थ भोगनेको विद्यमान होंगे फिर गृहसे उदासीनता कैसे ५१ हम लोगोंको क्या करना चाहिये व तुम्हारा मनोरथ क्याहै ध्रुवजी बोले कि हे मुनिलोगो हमारा जो उत्तम नाम उत्तम भाई है ५२ पिताजीने राजसिंहासन उसको दियाहै सो उसके विषयमें नहीं आप लोगों से हम यह साहाय्य चाहते हैं ५३ कि जिसको कभी और राजाने न भोग कियाहो व अन्य सबोंसे ऊँचा स्थानहो व मनुष्योंको कौनकहै इन्द्रादि देवताओंको भी दुर्लभहो वह पद कैसे मिले ५४ इस प्रकार के बालकके वचन सुनकर मरीच्यादि मुनिलोग यथार्थ ध्रुवजी से बोले ५५ उनमें मरीचिजी बोले कि बिना गोविन्दजीके चरण कमलकी धूलिका रसलिये पुरुष अपने मनोरथके अनुकूल धनधान्यादि समन्वित फल नहीं पासक्ता ५६ फिर अत्रि जी बोले कि बिना अच्युत भगवान्के चरणोंकी पूजा कियेहुये इन्द्रादिकोंको भी दुर्लभ व मनुष्योंको अप्राप्यस्थान किसीको कैसे मिलसक्ताहै ५७ अंगिरसजी बोले कि जो पुरुष लक्ष्मीपति के मनोहर चरणोंकी सेवा करताहै उसको सब सम्पदाओंका भी पद दूर नहींहै ५८ पुलस्त्यजी बोले कि जिसके स्मरणमात्र

से महापातकों की पंक्ति परमनाश को प्राप्त होती है हे ध्रुव वे विष्णु सब कुछ देसक्ते हैं ५९ पुलहजी बोले कि जिसको परब्रह्म कहते हैं व प्रधान पुरुषसेभी पर कहते हैं व जिसकीमाया से यह सब किया हुआहै कीर्त्तन करनेपर वे श्रीविष्णु अर्थको देही देते हैं ६० क्रतुजी बोले कि जो वेदोंके जाननेके योग्य जनार्दन यज्ञपुरुष विष्णुजी हैं व इस जगत् के अन्तरात्मा हैं वे सन्तुष्ट होनेपर क्या नहीं देते हैं ६१ वसिष्ठजी बोले कि हे राजपुत्र जिसकी भृकुटीके घूमनेके वशीभूत अणिमादि आठो सिद्धियाँ हैं उन हृषीकेशकी आराधना करनेसे अर्थ धर्म्म काम व मोक्ष चारों पदार्थ दुर्लभ व दूर नहीं हैं ६२ ध्रुवजी बोले कि हे द्विजेंद्रो आप लोगोंने विष्णुके आराधन के लिये सत्य कहा उन भगवान्का आराधन कैसे कियाजाताहै उसकी विधि कहिये ६३ यह हम जानते हैं कि जो बहुत कुछ देताहै वह दुराराध्यभीहोताहै पर एक तो बालक दूसरे राजकुमार इससेदुःख हमनहींसहसक्ते ६४ मुनिलोगबोले कि स्थिर चलते सोते जागते लेटेहुये उठकर बैठेहुये पुरुष सदा नारायणको जानसक्ते हैं ६५ वासुदेव भगवान्को जपताहुआ पुरुष पुत्र स्त्री मित्र राज्य स्वर्ग व मोक्ष सब कुछ पाताहै इसमें संशयनहीं है ६६ वासुदेवजीके द्वादशाक्षर मन्त्रसे चतुर्भुज विष्णुका ध्यान करताहुआ पुरुष कौनसिद्धिको नहींप्राप्तहुआ ६७ राज्यकी कामनासे इसमन्त्र कीउपासना ब्रह्माजीने व परम वैष्णव स्वायंभू मनुजीनेभी कीहै ६८ इससे तुमभी इसीमन्त्रको जपतेहुये वासुदेवमें तत्पर होओ तौ मनोवांछितसिद्धि शीघ्रहीपाओगे ६९ इतना कहकर सब महात्मा मुनीश्वरलोग तो अन्तर्द्धानहुये व वासुदेवमें मन लगाकर ध्रुवभी तपकरनेको वनको चलेगये ७० सूतजीबोले कि ध्रुवजी सब अर्थदेनेवाले उसमन्त्रको जपतेहुये यमुनाजीके तीरपर मधुबनमें मुनियोंकेबतायेहुये मार्ग्गसे तपकरनेलगे ७१

व श्रद्धा से जपकरने से व तपके प्रभाव से दिव्यआकृति कियेहुये कमलनयन व हृदयके स्वामी श्रीविष्णु भगवान्को राजकुमारनेदेखा तबमारे हर्षके फिर उसीमन्त्रको जपा ७२ क्षुधा पिपासा मेघ पवन व उष्णताआदि शरीरके दुःखोंके समूह कुछ भी तपकरनेके समय राजकुमारने नहीं जाना व शरीरकी भी वार्त्ता नहीं जानी क्योंकि उपमारहित सुखसागर में उनकामन मग्नहोगयाथा ७३ व शंकितचित्त देवताओं के उत्पन्न कियेहुये विघ्नभी तीव्रतपकरतेहुये बालक ध्रुवके सामने विफलहुये जैसे कि शीतआतपादि जो प्रसंगसे होतेहैं पर विष्णुमय मुनिको नहीं धर्षितकरसके ७४ फिर भक्तजनों के प्रिय प्रभु विष्णुजी जब ध्यानके बलसे उसशिशुसे सन्तोषितहुये तो वरदेनेवाले श्रीविष्णुजी गरुड़पर आरूढ़होकर भक्तके देखनेको आये ७५ व मणियोंसे जटित मुकुटसे शोभित व विलसित रत्नसमूहोंकी छबिसे बिराजतेहुये कैसे शोभितहुयेथे जैसे उदयाचलके अहंकारसे प्रातःकालके सूर्य्यको धारणकरके हिमालयपर्व्वत शोभितहोताहै ७६ व वे तपसे स्थित राजकुमारसे निश्चल व स्निग्धदृष्टिसे देखतेहुयेबोले मानों अपने दांतों की चमकसे ध्रुवके अंगोंकी धूलिकोधोतेहीसे प्रसन्नहोकरबोले ७७ कि हेवत्स जो तुम्हारेमनमेंहो श्रेष्ठवरमांगो हम तुम्हारे तपसे सन्तुष्टहैं व इन्द्रियों को जीतकर तुम्हारे ध्यानसे प्रसन्नहुये व दुःष्करमनके रोकनेसेभी प्रसन्नहैं ७८ ऐसागम्भीर वचन सुनतेहुये ध्रुवजीने जैसेही नेत्र खोलेहैं कि एकाएकी भगवान्कोदेखा व बिचारने लगे कि इसीरूपकी चिन्तना हमकरते थे वहीचतुर्भुजी ये हैं ७९ भगवान्को देखकर महाराजकुमार बिचारनेलगे कि तीनों वेदोंकेईशको राजकुमारबाल हम कैसे वर्णनकरें व क्याकरें ऐसा बिचारकर न तो कुछबोले न कुछकिया केवल मारेहर्षके आंशु बहातेहुये हे त्रिलोकिनाथ हम क्याकरें यह कहकरसहराये व दण्ड-

प्रणामकरनेकेलियेहरिकेआगेभूमिपर गिरपड़े ८० व फिरदंडवत्
प्रणामकरके व सबओरलोटकर उनजगत् गुरुकोदेखकर रोद-
नकरनेलगे देखा तो नारद सनक सनन्दन सब स्तुतिकररहेथे
व और भी सनत्कुमारादि योगीयोगियोंके स्वामी हरिकीस्तुति
करतेथे ८१ तब उन करुणासागर श्रीविष्णु भगवान्जीने अ-
पने करकमलसे ध्रुवको उठाया ८२ श्रीहरिने फिर धूलिलगाये
हुये अंगके ध्रुवजीको अपने दोनोंहाथोंसे स्पर्शकिया व छाती
में लपटाकर बोले ८३ हे बालक जो तेरेमनमेंहो वरमांग वही
हमदेंगे इसमें संदेह नहीं है क्योंकि तुझे कुछभी अदेय नहीं है
८४ तब राजकुमार ने वर मांगा कि प्रथम तो आपकी स्तुति
करनेकी हमको शक्तिहो तब ध्रुवके मुखमें श्रीभगवान्जीने शंख
से स्पर्शकरदिया ८५ शंखके मुखमें लगतेही सुर मुनिके दिये
हुये ज्ञानचन्द्रके समान ध्रुवकाचित्त ज्ञानसे पूर्णहोगया क्योंकि
त्रिभुवनके गुरु श्रीभगवान्के शंखका स्पर्शहुआ बस हृदयप्र-
फुल्लितहो आया श्रीहरिकी स्तुतिकरनेलगे ८६ (ध्रुवजीबोले)
सम्पूर्णमुनिजन समूहोंसे नमित चरण खरकेनाशक चपलच-
रित्त देवताओंसे आराधित पादकमल सजल जलधर श्याम
समान सौभपतिके मालाओंके धाम अतिमनोहरस्त्रियोंकी अ-
तिविनयसे कियेहुये नवरसोंके रससे अपहृत इन्द्रिय देवता-
ओंकी स्त्रियोंसेविहित अन्तःकरणके आनन्दवाले आदि अन्त
रहित धनरहित अपने द्विजमित्रोंके उद्धार करनेमें धीर देवराज
के तिरस्कार करनेवाले दैत्य राक्षसादि शत्रुओंके पक्षनाशक
ऋक्षराजके बिलमें प्रवेशकरके स्यमन्तक मणिलाकर निजअप-
वादके पापमिटानेसे तीनोंलोकोंके भारहरनेवाले द्वारकामेंबास
करनेमें निरत मधुर मध्यम स्वरसहित बंशीबजानेसे श्रवणोंमें
अतीन्द्रियज्ञान प्रकटकरनेवाले यमुनाके तटपर विचरते हुये
आप मृग पशु पक्ष्यादिकोंके आहारछुड़ानेवाले संसार दुस्तर

सागरके तारनेकेलिये, चरणकमल जहाजवाले अपने प्रतापाग्निमें कालका वेगहवनकरनेवाले श्रेष्ठबनमाला धारी व मणिजटित कुण्डलों से कर्णोंको भूषित किये व नाना प्रसिद्धनामोंवाले वेददेव मुनिजनके वचनमनमें चलनेवाले पीताम्बररेशमी वस्त्र धारण करनेवाले भृगुपद कौस्तुभमणिसे भूषित वक्षस्स्थलवाले अपनेप्रिय अक्रूर निजजननी गोकुलपालकहोनेकेलिये चतुर्भुजोंमें शंख चक्र गदा पद्म तुलसी नवदलदामयुक्तहार केयूर कटक कंकण मुकुटादिकोंसेअलंकृत सुनन्दनादि भागवतोंसे उपासित विश्वरूप पुराण पुरुषोत्तम उत्तमश्लोक लोकोंके आवासवासुदेव श्रीदेवकी जठर सम्भूत सब प्राणियोंकेपति ब्रह्मासे भी नमस्कार करानेवाले चरणवाले वृन्दावनमें क्रीडाकरनेसे गोपिकाओंके श्रमकेनाशनेवाले निरन्तर सुजनोंके कामसिद्ध करनेवाले कुन्दसमश्वेत शंख धारण करनेवाले चन्द्रसम मुखवाले सुन्दर सुदर्शनवाले उदारतरहासवाले विद्वज्जनोंसे बन्दित यहरूप तुम्हारा अतिमनोहरहै हेअखिलेश्वर तुम्हारे नमस्कारहै हे भगवन् अच्छा स्थानपाने की इच्छासे मैं तपकरनेमें स्थितहुआ उससे साधुमुनीन्द्रोंकोभी गुह्यआपके दर्शनहुये यह वैसीहीबातहुई जैसे कोई कालढूंढनेजाय व मणि पाजाय हे स्वामिन् बस मैं कृतार्थहोगया और कुछभी वरनहीं मांगता ८७ हेनाथ मैंने अपूर्व्व आपके चरणकमलदेखे व देखकर अब नहीं छोड़सक्ता इसीसे कुछकामोंकीभी इच्छा नहींकरता क्योंकि ऐसा कौनमूढ़है जो कल्पवृक्षसे भूसीमांगे ८८ अब मोक्षके बीज आपके शरणमें आकर बाहरके सुख नहीं भोगसक्ता क्योंकि हेनाथ जिसका नाथरत्नोंकी खानिहो उसकोकाचके भूषण धारणकरना उचित नहीं है ८९ इससे हेईश अब अन्यवर नहींमांगता केवल निरन्तर आपके चरणारबिंदोंकी भक्तिहो बसयही वरदीजिये बार २ यही आपसे मांगताहूं ९०

सूतजी बोले कि इसप्रकार अपने दर्शन से दिव्यज्ञान पाये हुये ध्रुवजीसे ऐसाकहतेहुये श्रीभगवान्‌बोले कि ९१ विष्णुकी आराधना करकेभी इसने क्यापाया जनोंमें भी यह वादनहो इससे पर उत्कृष्टस्थान कि जिसकेलिये तुमने तप कियाथा उसे प्राप्तहोओ व समयपाकर शुद्धभावसे हमको प्राप्तहोओगे ९२ तुम सबसूर्य्यादि ग्रहोंके आधारभूतरहोगे व कल्पद्रुमरूप सब जनोंके वन्दनाकरनेके योग्यहोओ व तुम्हारी मातासुनीतिभी हमारेप्रसादसे हमारे निकटजाकर वसेगी ९३ सूतजीबोले कि इसप्रकार ध्रुवको वरदानदेकर भगवान् मुकुन्दजी अपने धाम को चलेगये व बार २ अपने भक्तको फिर २ देखते जातेथे ९४ तबतक देवताओं व मुनियों सिद्धोंके समूहने श्रीविष्णु व उन के भक्तके समागमको देख पुष्पोंकी वर्षाकी व मारेहर्षके ध्रुवकी स्तुतिकी ९५ व सब कहनेलगे कि यह सुनीतिका पुत्र सबशोभाओं व लक्ष्मीसेयुक्तहुआ व हमलोग देवताओंसेभी वन्दित हुआ जो कि कीर्त्तनकरने व दर्शनकरनेसे मनुष्योंके यश व आयुर्दायको वढ़ावेगा ९६ इसतरह ध्रुवजीने दुरापहरिका पदपाया यह कुछ आश्चर्य्यकी बातनहीं है क्योंकि जब वे देवता व ब्राह्मणोंके ऊपर कृपाकरनेवाले प्रसन्नहोजाते हैं तो कुछभी दुर्लभ नहीं रहता ९७ सूर्य्यके मण्डलके प्रमाणसे दूना चन्द्रमण्डल है व चन्द्रमण्डलसे दो लक्ष योजनपर नक्षत्र मण्डल है ९८ व नक्षत्र मण्डलसे दोलक्षयोजनऊंचे बुधका स्थानहै व बुधसे दो लक्षयोजनपर शुक्राचार्य्यका स्थानहै ९९ व शुक्रसे दोलक्षयोजनऊंचे मंगलका स्थानहै व मंगलसे दो लक्षयोजनपर वृहस्पतिजीका व वृहस्पतिसे दोहीलक्षयोजनऊंचे शनैश्चरका स्थानहै १०० व उसशनैश्चरके स्थान से लक्षयोजनपर सप्तर्षियोंका स्थानहै व सप्तर्षियोंसे एकलक्षयोजनऊंचे ध्रुवजी का स्थानहै १०१ ये ध्रुवजी सब ज्योतिश्चक्रके मेढीभूतहैं अर्थात्

मध्यमें सबसे ऊपर थे हैं व सूर्य्यादिग्रह सब इनकी प्रदक्षिणा करतेहैं व अपने स्वभावहीसे प्रकाशितरहते हैं व तीनोंलोकों के कालकी संख्या प्रत्येक युगमेंकिया करतेहैं १०२ जन तप सत्य इनतीन लोकोंमें प्रकाश ब्रह्माजीकी आज्ञासे ध्रुवजीकिया करते हैं १०३ व इनकेनीचेवाले भूर्लोकतकके चारलोकोंमें सूर्य्य अपने किरणोंसे प्रकाशकरतेहैं क्योंकि विष्णु भक्तिसे विहीनहोनेके कारण इनका प्रकाश जनादि लोकोंसे नहीं होता १०४ येतोसूर्य्य तीनोंलोकोंके कर्त्ता हैं व छत्रवत् सबमंडलों के ऊपर दिखाई देतेहैं १०५ आदित्यके मण्डलके नीचे भुवर्लोक प्रतिष्ठितहै व तीनोंलोकोंकी ईश्वरता श्रीविष्णुजीकीदी हुई इन्द्रको मिलीहै १०६ इससे सबलोकपालोंके साथ धर्म्म पूर्व्वक लोकोंकी इन्द्ररक्षाकरतेहैं व स्वर्गलोकमें बसेरहते हैं १०७ हे मुनिसत्तम इसभूर्लोकके नीचे पाताललोकहै वहां न सूर्य्यतपते न रात्रिहोती न चन्द्रोदय होताहै १०८ दिव्यस्वरूप से टिककर सबजन अपने आप तपते हैं इससे जितने पातालस्थहैं वे सब अपनेहीतेजसे प्रकाशितरहते हैं १०९ व स्वर्लोकसे महल्लोक कोटियोजनऊंचे बिराजमानहै व महल्लोक से उतनीहीदूर ऊपर दूनेमण्डलसे जनलोक शोभायमानहै यह पांचवांलोकहै ११० इससे ऊपर चारकिरोड़ योजनपर तपोलोकहै व स्वर्ल्लोकसे आठकिरोड़ योजनऊंचे सत्यलोक बिराजमानहै १११ सबछत्रके आकारकेहैं व सब एक दूसरेके ऊपर स्थित हैं इसी सत्य लोकही को ब्रह्माका लोक कहते हैं ११२ ब्रह्माकेलोकसे श्रीविष्णुलोक प्रमाणमेंभी दूनाहै व जितनीदूर पर यहां से ब्रह्माकालोकहै उतनीदूर और ऊंचे वहांसे श्रीविष्णुलोकहै ११३ इसबराहकल्पमें उसका सर्व्वोपरि माहात्म्य है उसविष्णुलोक के ऊपर परमपुरुष रहता है ११४ यह परम पुराणपुरुषब्रह्माण्डसे निर्ल्लेपहै क्योंकि वह तपोज्ञान समन्वित

रहनेकेकारण इन सब संसाररूप पशुपाशों से विमुक्तरहता है ११५ हेपापरहित भूगोलकी संस्थिति यह हमने तुमसे कहीजो कोई अच्छेप्रकार इसेजानताहै वह परमगतिकोजाताहै ११६॥

चौपै० नरदेवन पूजित अतसर्व दूषित लोकस्थापन कारी।
नरसिंहसहाना हरिभगवाना अप्रमेय श्रुतिधारी॥
सब युग युग माहीं मूर्त्तिधराहीं विष्णुअनादि अनन्ता।
विश्वम्भरहैकैजनभयखैकैपालतजगभगवन्ता॥११७

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेएकत्रिंशोऽध्यायः ३१॥
भूगोलस्समासः॥

बत्तीसवां अध्याय॥

दो० बत्तिसयें अध्याय महँ सहस्रानीक चरित्र॥
सूतकह्यो मुनिजननसों जो सबभांतिविचित्र १

इतनीकथा सुनकर भरद्वाजमुनिने सूतजीसे फिर प्रश्नकिया कि शार्ङ्गीश्रीहरिके अवतार सहस्रानीकजीका चरित्र इससमय हम श्रवण किया चाहते हैं हे महामतिवाले वह हम से कहो १ सूतजी बोले कि हम तुमसे हरिके अवतार धीमान् सहस्रानीक का चरित्र कहतेहैं हम से सुनो २ जब ब्राह्मणोत्तमोंने सहस्रानीक जीको उनकेपिताके राज्यपर अभिषिक्त किया तो उनराजकुमार ने अपना राज्य बड़े धर्म्मसेपाला ३ वे धीमान् राजपुत्र जब धर्म्मसे राज्यकरनेलगे तो उनकीभक्ति देव देवेश सुरोंसे उत्तम नरसिंहजीमेंहुई ४ उन विष्णुकेभक्तराजाके देखने के अर्थएक समय ब्रह्मपुत्र भृगुमुनि आये राजा अर्घ्यपाद्याचमनीयादि- कोंसे उनकी पूजाकरके यह वचन मुनिसे बोले ५ कि हे मुनि श्रेष्ठ हम इससमय तुम्हारे दर्शनसे पवित्रहुये क्योंकि इसकलि- युगमें तुम्हारे दर्शन मनुष्यों को दुर्लभ हैं ६ हम देव देव स- नातन नरसिंहजीकी स्थापना करके आराधना किया चाहते हैं

उसका बिधानहमसे कहो ७ व देव देव श्रीविष्णु भगवान्जीके सबअवतारभी सुनाचाहते हैं वे सबपुण्यअवतार हमसेकहो ८ भृगुजी बोले कि हे राजपुत्र सुनो इस कलियुग में अति भक्तिमान् होकर कोई पुरुष नृसिंहहरिजीमें भक्तिनहीं करता ९ पर जिसकी स्वभावहीसे सुरोंमें उत्तम नरसिंहजीमें भक्तिहोती है उसकेशत्रु नष्टहोजाते हैं व सबकार्य्योंकी सिद्धिहोती है १० तुम पाण्डुकेबंशमें अतीव हरिकेभक्तहो इससे तुमसे सब कहते हैं एकाग्र मनहोकर सुनिये ११ जो भक्तिमान् पुरुष नरसिंहजी का मन्दिर बनवाता है वह सब पापोंसे निर्म्मुक्त होकर श्रीविष्णुलोककोजाता है १२ व जो सब लक्षणयुक्त नृसिंहजीकी प्रतिमाबनवाता है वह सर्व्वपापों से निर्म्मुक्त होकर विष्णुलोक कोजाताहै १३ व जो नरसिंहजीकी मूर्त्तिकीप्रतिष्ठा वेद विधान से करताहै उससेभी निष्कामहोकर वह प्राणी देवताओंकीभी बाधासेछूटजाताहै १४ व नरसिंहजीकी प्रतिष्ठाकरके जो मनुष्य पूजाकरता है उसके सब मनोरथ सिद्धहोते हैं व परमपदको पाताहै १५ ब्रह्मादि देवगण पूर्व्वकालमें विष्णुहीकी आराधना करके अपने २ पदको प्राप्तहुये हैं सो केशवजीहीके प्रसादसे १६ हे राजन् व जो २ मान्धाता आदि नृपश्रेष्ठहुये हैं वे सब विष्णुहीकी आराधना करके यहां से विष्णुलोककोगये हैं १७

चौ० सुरईश्वरनरसिंहमुरारी। जोपूजतनितहितचितधारी॥
स्वर्गमोक्षपावतसोप्रानी। नहिंसंशययामहँहमजानी १। १८
तासोंजबलगजिअहुभुआला। एकचित्तकैगतसबजाला॥ नरहरिपूजनकरहुसनेमा। पैहहुमनबाञ्छितयुतप्रेमा २। १९ जो करिमूर्त्तिवेदबिधिथापै। श्रीहरिकहँनिजमनमहँजापै॥ हरिपुर सोंपुनिगमननतासू। होतयहांअरुनहिंयमत्रासू ३। २०॥

हरिगीतिका॥

नरसिंह देव अदेव बन्दित चरणकमल अनन्तकी।

प्रतिमावनाग्र मनायथापि विभुन विभु भगवन्त की ॥
सो जातनर हरि लोक सुन्दर पुनि न फिरत बसैवहीं ।
भूपालमणि विधिकहातुमसन हैसहीनमृषाकहीं ४। २१
इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेसहस्रानीकचरित्रेद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

तैंतीसवां अध्याय ॥

दो० त्यैंतिसयेंमहँ नृहरिकी पूजा विधि फलतासु ॥
बहुतभांतिकहि भृगुबहुरि मार्कण्डेय प्रकासु १

इतनी बातसुनकर राजा सहस्रानीकजीने फिर भृगुमुनि से प्रश्नकिया कि हे भगवन् हम आपके प्रसादसे श्रीहरिके पूजन का अति पुण्य विधान श्रवण कियाचाहते हैं इससे आप हम से कहें १ व जो नरसिंहजी के मन्दिर में सम्मार्ज्जन करता है तथा जो लेपनकरता है ये दोनों जो फलपातेहों वह भी कहिये २ फिर जो पुण्यकेशवको शुद्धजलसे स्नान कराने से होती है व दुग्धसे स्नान करानेसे होती दधिसे वा मधुसे वा घृतसे अथवा पञ्चगव्यसे स्नानकरानेसे होतीहै ३ व उष्णजलसे शीतकालमें प्रक्षालनकरानेसे होतीहै वा कपूर अगर मिश्रितजल से स्नान कराने से जो पुण्य होतीहै ४ अर्घ्यदानसे जो पुण्य पाद्य आचमनीय से जो पुण्य मन्त्रपढ़कर स्नानकराने से जो पुण्य व वस्त्रदान करनेसे जो पुण्यहोतीहो ५ चन्दन व कुंकुम से पूजन करने से जो फलहोताहो पुष्पोंसे पूजाकरनेसे जो फल व धूप दीपकरनेसे जो फल ६ नैवेद्यदेनेसे जो फल प्रदक्षिणा करने से जो फल नमस्कार करने स्तोत्रपढ़ने व गीतगाने से जो फल होताहो ७ ताल आदिके बेनोंसे व चामरोंसे जो फल होताहो ध्वजारोपण करने व शंखमें जलकरके स्नान कराने से जो फल होताहो ८ हे ब्रह्मन् यह व और जो कुछ हमने अज्ञान से न पूँछाहो सब केशवके भक्तहमसे कहो ९ सूतजी बोले कि इसप्रकार जब राजाने भृगुमुनिसे पूँछा तो वे मार्कण्डेयजी को

उत्तरदेनेकेलिये नियतकरके आपचलेगये १० वेभी हरिकेभक्त तो थेही भृगुकी प्रेरणा से बहुत प्रसन्नहुये व राजासे कहनेका प्रारम्भ उन्हों ने किया ११ मार्कण्डेयजी बोले कि हे राजपुत्र हरिके पूजनका विधानक्रमसे सुनो हे पाण्डुवंशज तुम विष्णु के भक्तहो इससे हम सब तुमसे कहेंगे १२ जो पुरुष नरसिंहके मन्दिरका मार्ज्जन करता है वह सब पापोंसे विनिर्म्मुक्त होकर विष्णुलोकमें हर्षित होताहै १३ गोवर वा मिट्टीसे पानीकेसाथ जो कोई भगवान्के मन्दिरको लीपता पोतताहै वहअक्षयफल पाकर विष्णुके लोकमें जाकर पूजितहोता है १४ इस विषयमें एक पूर्व्वकालका वृत्तान्तहै जिसके सुननेसे सबपापोंसे प्राणी विनिर्म्मुक्त होजाताहै १५ पूर्व्वकालकी वार्त्ताहै कि राजायुधिष्ठिरपांचोभाई व अपनी द्रौपदीरानी समेत वनमें विचरतेथे १६ सर्व पांचोंपाण्डवलोग शूलकण्टकादिकोंसे उसवनमें व्याकुल थे व नारदमुनिभी तीर्थकरनेको आयेथे तीर्थ सेवाकरके स्वर्गको चलेगयेथे १७फिर राजायुधिष्ठिरजी उसीउत्तम तीर्थमें आये व तीर्थकरनेवाले मुनिमुख्यके दर्शनकिये १८ व क्रोध चुगुलीआदिसे रहित धर्म्मात्मा युधिष्ठिरजी वहां जाकर चिंतनाकरनेलगे इतने में बहुरोमा दानव व स्थूलशिरदानव १९ वहां आये देखा तो युधिष्ठिर क्याकोई भी पाण्डव वहां न था इससे उसने द्रौपदीके हरनेका विचारकिया २० मार्ग्गमें कुश के ऊपर बैठकर ध्यानकरनेलगा पास एककमण्डलुभीरखलिया व कुशकीकूंची एकहाथमें धारणकिया२१ कमलाक्षकीमाला लिये मन्त्रजपता व अपनी नासिकाका अग्रभाग देखतापांडवलोगभी घूमते२ वहीं आये जहांवहनर्म्मदाके बनमेंबैठाथा २२ तब भाइयों सहित राजा युधिष्ठिरजी उसके प्रणाम करकेबोले कि बड़े भाग्यसे आप दिखाई दिये २३ अब इस नर्म्मदानदी केजोगुप्तभी तीर्थहों हमसें बताइये क्योंकि हे नाथ हमने सुना

है कि मुनियोंका दर्शन धर्म्मके उपदेशहीके लिये होताहै २४ जबतक मुनिरूपधारी उस दैत्यसे युधिष्ठिरजी वार्त्ताहीकररहे थे कि तबतक मुनिका वेषधारणकिये स्थूलशिरा दैत्यभी आया २५ व बकनेलगा कि कोई हमारा रक्षक यहां नहीं है देखो जो मनुष्य भयसे आतुर पुरुषकी रक्षा करताहै २६ उसको अनंत फल मिलते हैं फिर मुझ दीन ब्राह्मणोत्तमकी रक्षाकरे तो उस को क्या कहना एकओर पर्व्वतादि सहित पृथ्वीका दान २७ व एक ओर दुःखित जीवोंके प्राणोंका बचाना दोनों समानहैं व जो कोई ब्राह्मण धेनु स्त्री बालक जो दुष्टों से पीड़ितहों २८ व उनकी उपेक्षा करताहै वह रौरव नरकको जाताहै अब सब धन हरगये हुये प्राण त्याग करनेमें परायण मुझको २९ कौन बीर पुरुष बचाताहै क्योंकि मैं दानवों से बहुत पीड़ितहूं मेरी कमलकी माला व कमण्डलु छीनलिया ३० व मुझे चटकनोंसे पीटडाला व मेरे वस्त्रभी छीनलिये कहांतक कहूं जो कुछ मेरेपास था एक दुष्टात्मा दानवने सब छीनलिया ३१ ऐसे छीव वचन उसके सुनकर पाण्डवोंको बड़ा क्रोध हुआ व सबों के रोम खड़े होगये तब उसी स्थानपर अपना अग्नि स्थापितकर उस मुनि वेषधारी दैत्यको सौंप ३२ व उसी महात्मामुनिके पास द्रौपदी जीको भी बैठाकर सब पाण्डव मारे क्रोधके बहुत दूरतक दौड़े गये ३३ तब युधिष्ठिरजीबोले कि कोईभी तो यहां नहीं दिखाई देता उसके वस्त्रादि किसने हरे कुछ नहीं अर्ज्जुन तुम द्रौपदी की रक्षाके लिये शीघ्र लौटो इसमें कुछ सन्देह पायाजाता है ३४ तब भाईके वचनसे प्रेरित अर्ज्जुनजी लौट आये व राजा युधिष्ठिरजीने सत्यवाणीकी कल्पनाकी ३५ व उस वनमें सूर्य्य के मण्डलकी ओर देखकर कहा कि हमारे बलसे व पुण्यसे व धर्म्मके सम्भाषणसे ३६ हे देवताओ संशययुक्त हमसे सत्य कहो यह सुनकर आकाशवाणी हुई ३७ कि हे महाराज मुनि

का वेष धारणकिये यह स्थूलशिरा दानवहै इसको किसीने कष्ट नहीं दिया यह केवल इस दुष्टात्माकी माया है ३८ यह सुनकर जैसेही वह भागनेलगाहै कि कोप करके भीमसेनजी ने उसके शिरमें बड़े जोरसे मारा ३९ व उसने भी अपना भयानक रूप धारण करके भीमसेनजीको मारा व भीमसेन और उस दानव का दारुण युद्ध होनेलगा ४० यहां तक कि उस बनमें भीमसेन जीने बड़े कष्टसे उसका बड़ा भारी शिर तोड़पाया व अर्ज्जुनभी जो वहां पहुँचे तो उस मुनिको न देखपाया ४१ व महापतिव्रता अपनी कान्ता प्राणोंसे भी अधिक प्रिय द्रौपदीको भी वहां न देखा तो एक वृक्षपर चढ़कर अर्ज्जुनजी ने देखा तो ४२ वह दानव अपने कंधेपर द्रौपदीको चढ़ाये अतिशीघ्र दौड़ाचला जाताथा व उसदुष्टकी बँधोईमें कुररीके समान रोतीहुई द्रौपदीजी चलीजातीथीं ४३ हेभीम हेधर्म्मपुत्र कहांगये इसतरह रोदन करतीहुई जातीथीं पर जैसेही द्रौपदीको देखाकि बीर शब्दसे सब दिशाओंको नादित करातेहुये अर्ज्जुनजी अति वेगसे दौड़े ४४ यहां तक कि उनके पादोंके बड़ेभारी व शीघ्रताके वेग से बहुत से वृक्षमार्ग में उखड़गये तब वह दैत्यभी द्रौपदीजीको छोड़ आप बड़े वेगसेभागा ४५ परन्तु इसदशापर भी अर्ज्जुनजीने उसका पीछा न छोड़ा पर वह द्रौपदीको छोड़ भागताही चलागया ४६ जब अर्ज्जुन बनाय निकट पहुँच गये तो पृथ्वीपर वह चतुर्भुजीमूर्त्ति धारण करके गिरपड़ा दोपीत वस्त्र धारणकिये व शंख चक्र गदादि आयुध ४७ तब तो अर्ज्जुन बड़े विस्मयको प्राप्त होकर प्रणाम कर यह वचन बोले कि हे भगवन् आपने यह वैष्णवी माया क्योंकी ४८ हे नाथ मैंनेभी बड़ा अपकार किया उसे क्षमाकीजिये आपके नमस्कार है यहनिश्चयहै कि अज्ञानभावसे मैंने यह दारुणकर्म्मकिया ४९ हे जगन्नाथ वह आपक्षमाकरें क्योंकि मनुष्यमें चैतन्यकहाँ है

जो आपकोजाने यह सुनकर वह चतुर्भुजीमूर्त्ति धारणकिये हुआ पुरुषबोला कि हे महाबाहो मैं कृष्णचन्द्र नहींहूं किन्तु बहुरोमा दानवहूं ५० व पूर्व्व जन्मके कर्म्मके प्रभावसे मैंनेहरिका देहपाया है यह सुनकर अर्ज्जुनजीबोले कि हे बहुरोमन् अपने पूर्वजन्मके कर्म्म निश्चय करके हमसे कहो ५१ किस कर्म्मके विपाकसे हरिकी सारूप्य तुमनेपाई चतुर्भुज बोला कि हे महाभाग अर्ज्जुन अपने भाइयों सहित मेरे पूर्व्वजन्मका चरित सुनो ५२ वह मेरा चरित अत्यन्त आश्चर्य्यरूप है व सुननेवालोंको हर्षबढ़ाताहै मैं पूर्वजन्ममें सोमवंशीराजाथा ५३ जयध्वज तो मेरानामथा व नारायणमें परायणरहताथा व विष्णुके देवालयमें नित्यसम्मार्ज्जन कियाकरताथा ५४ उसेलीपता पोतताथा व प्रतिदिन दीपकभी जलाताथा व मेरेपुरोहित का बीतिहोत्र नामथा ५५ वह ब्राह्मणमेरे उसचरितको देखकर बहुत विस्मितहुआ मार्कंडेयजी सहस्रानीक राजासेबोले कि एकसमय बैठेहुये विष्णुमें तत्पर उसराजासे ५६ वेदवेदांगपारगामी बीतिहोत्र ब्राह्मणने पूंछा कि हे राजन् तुम तो परम धर्म्मज्ञ व हरिभक्तिमें परायणहो ५७ व विष्णुकी भक्तिकरनेवालों में श्रेष्ठहो व सब अन्य पुरुषोंमेंभी श्रेष्ठहो क्योंकि प्रतिदिन हरि मन्दिरके झाड़ने बटोरनेमें व लीपनेमें तत्पररहते हो ५८ सो हे महाभाग हमसे आपबतावें कि आपने इसका क्याफलजानाहै क्योंकि औरभी विष्णुके प्रियकरनेवाले बहुतसे कर्म्म हैं ५९ तथापि हे महाभाग तुम यही दोकर्म्म कियाकरतेहो इस से जननाथ हम जानतेहैं कि इनकर्म्मोंके करनेका कोई विशेष फल आपका जानाहुआहै ६० सो वह कहो जोगुप्तनहो व हमारे विषयमें आपकी प्रीतिहो यह सुन जयध्वज राजाबोले कि हे विप्रशार्दूल हमारा पूर्व्व जन्मका चरितसुनो ६१ हम जातिस्मरहोनेके कारण जानतेहैं पर सुननेवालोंको वह चरित बहुत

विस्मित करताहै हे विप्रेन्द्र पूर्व्व जन्ममें मैं रैवतनाम ब्राह्म-
णथा ६२ सदा जिनको यज्ञ न कराना चाहिये उन्हींको कराता
था क्योंकि गवईगांवका पुरोहितथा चुगलभी बड़ाभारीथा व
निष्ठुरचित्त व जो पदार्त्थ तेल लोनआदि बेचनेके योग्य न थे
उनकोभी बेचाकरताथा ६३ ऐसे २ निषिद्धकर्म्मोंके करनेसे
भाई बन्धुओंने मुझे छोड़दिया क्योंकि मैं महापापोंके करनेमें
रतरहताथा व ब्राह्मणोंसे सदा बैररखताथा ६४ परस्त्री परधन
केलेनेमें बड़ा लोलुपथा व जन्तुओंकी हिंसा सदाकियाकरता
था मदिरापान नित्यनियमसेकरता व वेद व ब्राह्मणोंसे अप्री-
तिरखता ६५ इसीरीतिसे नित्यपापोंमें रतरहताहीथा वहुतों
की गलियांरूँधदेताथा एकसमयकी वार्त्ताहै कि मैं महाकामीतो
थाही ब्राह्मणोंकी दो चार स्त्रियोंकोलेकर ६६ एक विष्णुके म-
न्दिरमें रात्रिकोगया जिसमें कि पूजाआदि तो होताही नहींथा
इससे वह शून्यपड़ाहुआथा तो हमने अपने वस्त्रसे कुछदूर
तक उसमन्दिरको झाड़ा ६७ व उनस्त्रियोंके संग भोगकरनेके
लिये दीपकभी जलाया बस इन्हीं दोनों कर्म्मोंके करनेसे मेरे
जितने दुष्कर्म्मथे सबके सब नष्टहोगये ६८ इसप्रकारमें दीपक
जलायेहुआ भोग करीरहाथा कि दीपक की उजियाली देख
कर नगरकी रक्षाकरनेवाले चौकीदार वहां आगये ६९ व कहा
कि चोरीकरनेकेलिये इसने दीपक जलायाहै क्योंकि यह किसी
और लोगोंका दूतहै जिसमें वे आकर चोरीकरें इतना कहकर
बड़ी तीक्ष्णधारवाले खड्गसे मेरा शिरकाटकर वे सब चलेगये
७० पर उसीसमय श्रीविष्णुजीके दूतोंसमेत एक दिव्य विमान
वहां आया उसपर चढ़कर गन्धर्व्वोंसे यशगवाताहुआ मैंस्व-
र्गलोकको चलागया ७१ चतुर्भुज अर्ज्जुनजीसेबोला कि वहां
मैं ब्रह्माजीके सौकल्पसे कुछ अधिक कालतकरहा व नानाप्र-
कारके दिव्यपदार्त्थ दिव्यरूप धारणकिये भोगतारहा ७२ फिर

बहुतकालके पीछे उसीपुण्यके योगसे सोमवंशमें कमल तुल्य नेत्रवाला जयध्वजनाम राजाहुआ ७३ वहांभी कालके वशसे मरकर स्वर्गको गया फिर इन्द्रलोककोजाकर वहांसे रुद्रलोकको गया ७४ रुद्रलोकसे ब्रह्मलोकको जाताथा कि मार्ग में नारद मुनिको देखा पर मारे गर्व्वके नमस्कार न किया व उन को हँसाभी इससे कोपकरके उन्होंने मुझेशापदिया कि राजन् जाकर तुम राक्षसहोओ ७५ इसप्रकार उनदेवर्षिजीका दिया हुआ शापसुनकर मैंने उनको बहुत प्रसन्नकिया इससे उनमुनिने मेरे ऊपर अपना प्रसादकिया ७६ व कहा कि जब नर्म्मदाके तीरके मठमें श्रीमान् धर्म्मके पुत्र युधिष्ठिरजीकी भार्य्या द्रौपदीको हरलेकर भागेगा तब इसशापसे तेरीमुक्तिहोगी ७७ सो हे अर्ज्जुन व हे भूपाल धर्म्म पुत्र युधिष्ठिरजी इसीकारणसे मुझको श्रीविष्णुकी सारूप्यमोक्ष मिलीहै अबमें इसी चतुर्भुजीमूर्त्तिसे बैकुण्ठको जाताहूं ७८ मार्कंडेयजी सहस्रानीकजीसे बोले कि इतना कह गरुडपर आरूढ़होकर राजायुधिष्ठिरजी के देखतेही देखते विष्णु भगवान् के लोकको वह चलागया जहां श्रीविष्णु लक्ष्मीसहित निवासकिया करते हैं ७९ यहसम्मार्ज्जन व उपलेपनकरनेका माहात्म्य वर्णनकिया कि अवश होकर भोगकरनेकेलिये उसने मन्दिरकाकुछभाग झाड़ाबहारा था व उपलेपन कियाथा तौभी श्रीविष्णुकी सारूप्य उसनेपाई ८० व जोलोग भक्तिमानहोकर प्रशान्तचित्तसे अच्छेप्रकार प्रेम से हरिमन्दिरका मार्जनकरते हैं उनको क्याकहनाहै वेतो जीवन्मुक्तहीहैं सूतजी भरद्वाजादिकोंसे बोले कि मार्कंडेयके वचन सुनकर पाण्डुवंशमें उत्पन्न ८१ सहस्रानीक भूपाल श्रीहरिके पूजनमेंनिरतहुआ इससे हेविप्रेन्द्रोसुनो देवनारायण अव्यय ८२ ज्ञानसे व अज्ञानसेभी पूजाकरनेवालों को विमुक्तिदेतेहैं इससे हम बार२ कहतेहैं कि आपलोग जगन्नाथजीकी पूजाकरें ८३॥

चौ० तरणचहहु दुस्तर भवसागर। तो द्विजवरहु भजहु प्रभुनागर॥ पूजतही अघओघ नशावत। पुनिनिजपददेअभय बसावत॥८४ प्रणतारति हरहरिकहँ जोई। पूजनकरत भक्तजन कोई॥ वन्दित अरुपूजित सोहोई। बहुरिनमस्यहोत नहिंगोई २।८५॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेसहस्रानीकचरितेमार्कण्डेयोपदिष्टे सम्मार्ज्जनफलन्नामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३॥

चौंतीसवां अध्याय॥

दो० चौंतिसयेंमहँ विविधविधि हरिपूजन फलपुण्य॥
सूतकह्यो मुनिवरन सों नृप इतिहास सुगुण्य १

इतनी कथा श्रवण करके सहस्रानीकजीने मार्कण्डेयजी से फिर प्रश्न किया कि हे महामति मार्कण्डेयजी फिर विष्णुके निर्म्माल्यके दूर करनेकी जो पुण्यहो हमसे कहो १ मार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन् नरसिंहका रूप धारण कियेहुये केशव भगवान्के ऊपरसे तुलसी पुष्प मालादि निर्म्माल्य उतारकर जो जलसे स्नान करताहै वह सब पापों से छूटजाता है २ व सब तीर्त्थोंका फल पाकर विमानपर चढ़कर स्वर्गको जाताहै वहां से फिर श्रीविष्णुजीके स्थानमें पहुँचकर अक्षयकालतकमोदित होताहै ३ हे राजेंद्र जो कोई इतनाभी कहताहै कि नरसिंह आगच्छ आओ व फिर पुष्पाक्षतादिकोंसे पूजाकरताहै वहभी सब पापोंसे छूटजाताहै ४ व देवोंके देव श्रीहरिको आसन अर्घ्य पाद्य आचमनीय विधिपूर्व्वक देनेसे सब पापोंसे छूटजाताहै ५ व हे नराधिप जलसे भक्तिपूर्व्वक नरसिंहजीके स्नानकरानेसे सब पापोंसे छूटकर विष्णुलोकमें पूजित होता है ६ व एकबार भी दधिसे स्नान कराकर निर्म्मल व प्रियदर्शन होकर व उत्तम देवताओंसे पूजित होकर विष्णुलोक को प्राप्त होता है ७ जो पुरुष मधुसे स्नान कराकर श्रीहरिकी पूजा करताहै वह प्रथम

अग्निलोकमें हर्षित होकर फिर विष्णुजीके पुरमें वसता है ८ व जो कोई नरसिंहजीकी मूर्त्तिमें घृत लगाताहै उसमेंभी स्नान के कालमें विशेषतासे लगाता है व शंख नगारे आदि पूजाके समय बजवाताहै९ वह सर्प्पकी केंचुलके समान पापका जामा अंगोंसे उतारकर दिव्य विमानपर चढ़के श्रीविष्णुलोकमें जाकर पूजित होताहै १० हे महाराज जो पंचगव्यसे भक्ति सहित मंत्र पढ़कर देवदेवका स्नान कराता है उसको अनन्त पुण्य मिलती है ११ जो भगवान्की मूर्त्तिमें गेहूंका आटा लगाकर खूब मर्दित करके फिर उष्ण जलसे अच्छे प्रकार प्रक्षालित करता है वह वरुणलोकको जाताहै १२ व जो भगवान्के पादपीठ विल्वपत्रसे धीरे २ रगड़कर उष्ण जलसे धोताहै वहभी सबपापों से छूटजाताहै १३ व कुशयुक्त पुष्प मिलाये हुये जलसे स्नान करानेसे ब्रह्मलोकको जाताहै व रत्न मिश्रित जलसे स्नान करानेसे सूर्य्यलोकको जाताहै तथा सुवर्ण मिश्रित जलसे कुबेर के लोकको व कर्पूर अगरयुक्त जलसे जो नरसिंहजीको स्नापित कराता है १४ वह इन्द्रलोकमें मोदित होकर पीछे विष्णु लोकको जाताहै व पुष्प मिश्रित जलसे भक्तिपूर्व्वक श्रीविष्णु को स्नान कराकर मनुष्योंमें उत्तम वह १५ सूर्य्यलोकमें जाकर फिर विष्णुलोकमें जाकर पूजित होता है व जो दो वस्त्र धारण कराकर भक्ति से हरि की पूजा करता है १६ वह चन्द्रलोक में क्रीड़ा करके फिर विष्णुलोकको जाताहै व वहां पूजित होताहै व कुंकुम अगरु चन्दनसे अच्युतकी मूर्त्तिको १७ भक्तिसे आलेपित करके कोटिकल्प पर्य्यन्त स्वर्ग्ग में बसता है व मल्लिका मालती जाही जूही केतकी अशोक व चम्पाके फूलोंसे १८ व पुन्नाग बकुल कमलकी बहुत जातियों से तुलसी कँदैल पलाशादि १९ व और भी नानाप्रकारके पुष्पोंसे अच्युत भगवान् की पूजा करके एकसौसाठ माशे सुवर्ण चढ़ाने का फल पूजक

पाताहै२० व इनमेंसे जितने मिलें उनकी माला बनाकर जो श्रीविष्णुजीकी पूजा करताहै वह कल्प कोटिसहस्र व कल्पकोटि शतवर्ष तक २१ दिव्य विमानपर स्थित होकर विष्णुलोक में पूजित होताहै व जो कोई भक्तिसे नरसिंहजीकी पूजा अखंडित विल्वपत्रोंसे करताहै २२ पर उनके संग तुलसीदल भी मिला लेताहै वह सब पापोंसे विनिर्म्मुक्त होकर व सब भूषणों से भूषितहो २३ सुवर्ण के विमान पर चढ़कर विष्णुलोकमें जाकर पूजित होताहै व घृत शर्करा मिलाकर गुग्गुल २४ भक्तिसे जो कोई नरसिंहजीको धूप देताहै व सब दिशाओंमें धूपित करता है वह सब पापोंसे रहित होकर २५ अप्सराओंसे आकीर्ण विमानपर चढ़कर वायुलोकमें हर्षकरके पीछे विष्णुलोकको जाता है २६ व जो घृतसे वा तैलसे दीपक प्रज्वालित करताहै व विधि से श्रीविष्णुके समर्पण करताहै उसकी पुण्यका फलसुनो २७ सब पाप समूहको छोड़ सहस्र सूर्य्योंके समान प्रकाशित होकर बड़े प्रकाशित विमानपर चढ़कर विष्णुलोकको जाताहै २८ व जो हवि जड़हनके चावलोंका भात घृत व शक्कर मिलाकर व यवकी खीर नरसिंहजीको निवेदित करताहै २९ जितने तंडुल उसमें होते हैं उतने वर्ष पर्य्यन्त महाभोगोंको भोगताहुआ वह वैष्णव विष्णुलोकमें बसताहै ३० व उस बली वैष्णवके साथ सब देवगण तृप्तहोकर उसको शान्ति आरोग्य व लक्ष्मी देते हैं ३१ हे नृपात्मज भक्तिसे देवदेव श्रीविष्णुजीकी एकभी प्रदक्षिणा करनेसे जो फल मनुष्योंको होताहै वह हमसे सुनो ३२ पृथ्वीभरकी प्रदक्षिणाका फल पाकर श्रीविष्णुजी के पुरमें बसताहै व जो भक्तिसे माधवजीके नमस्कार करताहै ३३ वह धर्म्म अर्थ काम व मोक्ष विना परिश्रमके पाताहै व गीतवाद्यादि व नर्त्तन व शंखतूर्य्यादिकोंका शब्द जो कराताहै ३४ वह मनुष्य विष्णुजीके मन्दिरको जाताहै व सब कालोंमें यथेष्ट रूपधारण

करके यथेच्छ विमानपर चढ़ा हुआ विचरता है ३५ व अच्छे प्रकारका गान जानती हुई अप्सराओंके गणोंसे सेवित बहुमूल्य मणियोंसे चित्र विचित्र विमानपर चढ़कर ३६ इस स्वर्ग से उस स्वर्ग में होता हुआ विष्णुलोकमें जाकर पूजित होता है व जो गरुड़की मूर्तिसे चिह्नित ध्वज विष्णुजीके अर्प्पण करताहै ३७ वह भी ध्वजयुक्त विमानपर विराजमान होकर अप्सराओंसे सेवित श्रीविष्णुलोकको पाताहै ३८ व हे नृप दिव्य सुवर्णके हार केयूर कुण्डलादि व मुकुटादि भूषणोंसे जो विष्णु भगवान् की पूजा करता है ३९ वह सब पापों से विनिर्मुक्त होकर व सब भूषणों से भूषित होकर इन्द्रलोक में तब तक बसता है कि जब तक चौदह इन्द्र रहते हैं ४० व जो कोई लगाती हुई गऊ श्रीविष्णु भगवान् के समर्प्पण करता है व उनकी आराधना करके जो कुछ दूधहोता वह नरसिंहजीको देता है वह विष्णुलोक में जाकर पूजित होताहै ४१ व उसके पितर बहुत काल तक श्वेतद्वीप में मोदित होते हैं इसमें कुछ संशय नहीं है ४२ हे राजन् इसरीति से जो नरोत्तम नरसिंह जीको पूजता है उसको स्वर्ग व मोक्ष दोनों मिलतेहैं इसमें सन्देह नहीं है ४३ हे नृप जहां मनुष्य नरसिंहजीको इसरीति से पूजतेहैं वहां व्याधिअकाल राजा व चौरादिकोंसेभय नहीं होता ४४ नरसिंह माधवकी आराधना इसबिधिसे करके नानाप्रकार के सुखभोगके फिर किसीकापुत्र नहीं होताहै ४५ व जिसग्राम में नित्य तिल व घृतसे होमहुआ करताहै उसग्राममें कभी कुछ भय नहीं होता ४६ व अनावृष्टि महामारी व अग्न्यादिकके दोष भी वहां नहीं होते जहां कि वेदवादीलोग नरसिंहजीकी पूजा बिधानसे करतेहैं ४७ व जिसग्राममें लाखआहुतियां देकरब्राह्मणलोग होमकरते हैं वा ग्रामका स्वामी करता है उसग्राममें ऊपरके कहेहुये कोई भी भय नहीं आते ४८ व जबकभी महा-

मारी इत्यादिका बड़ाभारी उपद्रवदेखे कि प्रजाओंका मरणहु-आजाताहै वा अपनाही मरणदिखाईदेताहै तब जो पुरुष अ-च्छीतरह नरसिंहजीके मन्दिरमें आराधनाकरताहै४९व शंकर जीके मन्दिरमें कोटिआहुतियोंका होमकरताहै वा भोजनदक्षिणा देकर जितेंद्रियब्राह्मणोंसे कराताहै५० उसकेकरनेपर नरसिंहजी के प्रसादसे प्रजाओंका उपसर्गादि मरणतुरन्त शांत होजाता है५१व कोई घोरदुस्स्वप्न देखनेपर वा जबकभी अपनेको ग्रहों की पीड़ाहो तब होमकरनेव ब्राह्मणोंको भोजन करानेसे दोषकी शान्तिहोजातीहै५२ मकर व कर्ककी संक्रान्तिमें व तुला मेषकी संक्रान्तियोंमें वा चन्द्र सूर्य्य ग्रहणमें नरसिंहजीकी आराधना करके लक्षहोमकरावे ५३ तो हे राजेंद्र वहांके सब निवासियों की शान्तिहो इत्यादि बहुतसेफलों से नरसिंहका पूजनयुक्त है ५४ सो हे राजपुत्र जो अपनी सद्गतिचाहतेहो तो तुम भी पूजा करो क्योंकि स्वर्ग व मोक्षकाफल देनेवाला इससे श्रेष्ठतर और कुछ नहीं है ५५ राजाओंको देवदेव नरसिंह की पूजा सुकरहै व औरोंको भी सुकरहीहै क्योंकि बनमें पुष्पफल लगेहीहोतेहैं व बिनादामोंसे मिलतेहैं५६ व नदी तड़ागादिकोंमें जल भराही होताहै देवता भी नृसिंहजी साधारणही हैं केवल एक विवास करने बंधन त्यागनेसे मनको संयमयुक्त करना चाहिये क्योंकि जिसने अपने मनको नियमित किया मुक्ति मानों उसके हाथों में धरी है ५७ मार्कण्डेयजी बोले कि॥

चौ० इमिभृगुमुनि प्रेरित हमगावा। अच्युत पूजन तुम्हें सुनावा॥ प्रतिदिन करहु भूप हरिपूजन। अपर कहहु का क-हिय भक्तजन॥१॥५८॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः॥३४॥

पैंतिसवां अध्याय॥

दो० पैंतिसयें अध्याय महँ लक्षक होमबिधान॥

भार्गवकहनृपसोंकह्यो शौनक गुरुहिमहान १।

यह सुनकर राजासहस्रानीकजीने पूँछा कि आपने श्रीविष्णुजीके आराधनका महाफल कहा वे लोग अज्ञान से सोरहे हैं जो श्रीहरिकीपूजा नहींकरते १ आपके प्रसादसे यह नरसिंहजीके पूजनकाक्रम हमने सुना अब भक्तिसे उनका अर्चनकरेंगे अब आप कोटिहोमका फलकहें २ मार्कण्डेयजी बोले कि यह अर्थ वृहस्पतिने पूर्व्व समयमें शौनकसे पूँछाथा शौनकने जो उनसे कहाहै वह तुमसे कहते हैं ३ सुखपूर्व्वक बैठेहुये शौनकसे वृहस्पतिने पूँछा वृहस्पति बोले कि लक्षहोमकी जो भूमि व कोटि होमकी जो शुभ भूमि ४ हे विप्रेंद्र उसे हमसे कहो व होम करनेका विधान भी कहो मार्कण्डेयजी बोले कि इस प्रकार जब वृहस्पतिजीने लक्ष होमादिकका विधान पूँछा ५ तो हे नृप सत्तम शौनकजी यथावत्कहनेलगे शौनकबोले कि हे देवपुरोहित हम तुमसे यथावत् कहेंगे तुम सुनो६ लक्षहोम के लिये महाभूमि चाहिये व उसकी शुद्धि विशेष रीतिसे करनी चाहिये अब यज्ञकर्म्म करनेके लिये अच्छी भूमिका उत्तम लक्षण कहते हैं ७ प्रथम जो पृथ्वी समानहो खाली ऊँची न हो उसको झाड़ बहारकर साफ़करे प्रथमकी अपेक्षा बनाय ठीककरे फिर मोटी जंघाभर नीचेतक खोदडाले फिर उसका शोधनकरे हड्डीआदि अशुभ वस्तु जो दिखाई दें दूरफेंके ८ व फिर बाहरसे शुद्धमृत्तिका ले आकर उस मृत्तिकाको आच्छादित करदे जो प्रथम की खोदीहुईथी फिर उसे पीटपाटकर गोमयसे लेपनकरे उसमें दो हाथ गहिरा व लम्बा चौड़ा कुण्ड बनावें ९ कुण्ड लम्बाई चौड़ाईमें समान चौकोना होना चाहिये उसके ऊपर चारकोण की मेखला बनानी चाहिये १० वह मेखला सूत्रकी होतीहै जो कि चार अंगुलकी ऊँची बनानी चाहिये इस रीतिसे कुंड बनाकर फिर वेद पढ़ेहुये व ब्रह्मकर्म्म करनेमें निष्ठ ब्राह्मणोंका ११

यजमान विशेष रीतिसे आवाहनकरे वे ब्राह्मण तीन रात्रि प्रथमसे ब्रह्मचर्य्य व्रतकरें शय्या आदिपर शयन न करें १२ व एकदिन रात्रि व्रत करके दशसहस्र गायत्री मंत्रजपें फिर शुद्ध वस्त्र धारण करके स्नानकरें व फिर शुद्धही वस्त्र पहिनें व गंध पुष्प माला धारणकरें १३ व पवित्र रहकर निराहार सन्तुष्ट व जितेंद्रिय रहें फिर कुशके आसनोंपर बैठकर एकाग्र मन होकर १४ वे लोग निरालस होकर यत्नसे होमका आरम्भकरें भूमि को लिखित करके व जलसे सेक करके यत्नसे अग्नि स्थापन करें १५ यहां पंचभूसंस्कार व कुशकण्डिकादि कर्म्म सब करलें क्योंकि यत्नसे अग्नि स्थापन कहाहै गृह्यमें कहेहुये विधानसे होम करें आघार व आज्यभाग पूर्व्वमें हुने १६ तदनन्तर यव तण्डुल तिलोंसे मिलीहुई प्रथम आहुति गायत्रीसे दें सो भी एक चित्त होकर व स्वाहा पढ़कर १७ गायत्री सब छन्दों की माताहैं व ब्रह्मकी योनि होनेसे प्रतिष्ठित है उसके सविता तो देवहैं व विश्वामित्र ऋषि हैं १८ गायत्रीके पीछे भूर्भुवः आदि व्याहृतियोंसे हवन करे इसमें केवल तिलोंसेही हवन हो फिर जबतक लक्ष वा कोटि जितनी संख्याहो पूरी न हो १९ तबतक अच्युतकी पूजा प्रथम करके तिलोंसे होमकरतारहै व यजमान दीन अनाथादिकोंको तबतक भोजन देतारहै कि २० जबतक होम समाप्त न हो जब होमसमाप्तहोजाय तब श्रद्धासे ऋत्विजों को दक्षिणादे २१ सोभी जैसी दक्षिणा योग्यहो वैसी दे लोभसे न्यून न दे फिर शांतिपढ़तेहुये जलसे घामभरको अभिषेकितकरे उनमेंभी रोगियोंके ऊपर वह जल अवश्य छिड़के २२ हे महाभाग इसप्रकार होम करनेसे पुर नगर राज्य राजा व देश २३ सबकी सबबाधा नाश करनेवाली शान्ति सर्व्वदा होती है मार्कण्डेयजी बोले कि हे नृपनन्दन यह इतना शौनकका कहाहुआ होमविधान हमने कहा २४॥

चौ० लक्षहोम आदिक विधिनाना। राज्यमाहिं करुसहित विधाना॥ सकलशांतिदायक न सँदेहू। तुमसनकहा भूपकरि नेहू १।२५ ग्रामसदन पुरवाहर माहीं। विप्रकरें यहविधि विधिपाहीं॥ वहहुँशान्तिहोवत नरकेरी। गोसेवकयुत क्षितिप किफेरी २।२६॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेलक्षहोमविधिःपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५॥

छत्तीसवां अध्याय॥

दो० छत्तिसयें महँ मुनि कह्यो अवतारन की गाथ॥
ज्यहिसुनिमनगुनिहोत जन सवसवभांतिसनाथ १

मार्कण्डेयजी बोले कि हे महीपाल देवदेव श्रीविष्णुजी के पवित्र व पापनाशनेवाले अवतार हमकहते हैं उनको श्रवण कीजिये १ उनअवतारोंमें जैसेमत्स्यका अवतार धारण करके ब्रह्माजीको वेदआनकरदिये व उन्हींमहात्माने मधु व कैटभनाम दैत्योंको नष्टकिया२व जैसे श्रीविष्णुजी ने कूर्म्मावतारसे मन्दराचल धारण किया व जैसे उनमहात्मा ने बाराहावतारसे पृथ्वीका उद्धारकिया ३ व उन्हींने जैसे महाबलीदितिकेपुत्र हिरण्याक्षनाम दैत्यकोमारा जोकि महावीर्य्य व महातनुवालाथा ४व जैसे नृसिंहावतारसे देवताओंके महाशत्रु हिरण्यकशिपुको मृत्युको पहुँचाया ५ व जैसे बामनावतारधरके उनमहात्मा ने राजाबलिको बँधुआकिया व उन्हीं ने इन्द्रको तीनोंलोकों का स्वामीबनाया ६ व जैसे श्रीरामचन्द्रजीका अवतारलेकर रावणकोमारा व देवताओंके शत्रुगण सहित सब राक्षसोंकोमारा ७ व जैसे परशुरामावतार होकर पूर्व्वकालमें सब अब्रह्मण्य क्षत्रियोंकोमारा व जैसे श्रीकृष्णचन्द्रजीका अवतारलेकर कंसादिदैत्योंका संहारकिया ८व कलियुगमें जैसे नारायणजी बुद्धावतारलेतेहैं व कल्कीका अवतारधारणकरके म्लेच्छोंको मारतेहैं ९ यह कल्कीजीका अवतार जब बनायकलियुग समाप्त

होनेपर होताहै तब होताहै इन सब अवतारोंके चरित तुमसे फिर कहेंगे १०॥
चौपै० भगवान अनन्ता कमलाकन्ता हरिके चरित अपारा।
करिकै मनसुस्थिर जो नर पुष्टिर सुनिहै बहुत उदारा॥
जो तुमसनभाषाकरिअभिलाषा ताहिपढ़िहिपुनिजोई।
सोहरिपदजाइहिसबसुखपाइहिहैप्रत्यक्षन गोई॥११
इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेहरिप्रादुर्भावानुकथने षट्त्रिंशोऽध्यायः ३६॥

सैंतीसवां अध्याय॥

दो० सैंतिसयें महँ मत्स्यतनु हरिके सकल चरित्र॥
नृपसों कह अनुरूपिकै मार्कण्डेय विचित्र १

मार्कण्डेयमुनि राजा सहस्रानीकसे बोले कि महात्मा अच्युत भगवान्‌के नानाप्रकारके अवतारोंके होनेसे विस्तार सहित वर्णन नहीं होसक्ता इससे कुछ अवतारों की संक्षेप कथा तुमसे कहते हैं १ सृष्टि होनेके प्रथम जगत्‌के सिरजनेवाले पुरुषोत्तम श्रीनारायण भगवान् अनन्तनाग के शरीरको शय्या बनाकर उसपर शयन कररहेथे २ फिर सोते हुये देवताओं के देव श्री विष्णु भगवान्‌जीके दोनों कानोंसे जलमें दो पसीनेके बूँदगिरे ३ उनसे महाकाय महावीर्य्य व महाबल पराक्रमी मधु व कैटभ नामके दो दैत्य उत्पन्नहुये ४ व हे नृप श्रेष्ठ शयन कियेहुये श्री अच्युत भगवान्‌की नाभिसे एक बड़ाभारी कमल जामा उसी पर ब्रह्माजी उत्पन्न होआये ५ उनसे श्रीविष्णुजीने कहा कि हे महामते तुम प्रजाबनाओ तब जगन्नाथजीसे हांकहकर कमल से उत्पन्न ब्रह्माजी ६ वेद शास्त्रके बशसे जब तक प्रजाओं के बनानेमें उद्यतहुये कि तब तक मधु व कैटभ दोनों असुर वहां आगये७ व आकर वेदों व शास्त्रोंके अर्थोंका विज्ञान जो ब्रह्मा जी में था एकक्षणभरमें उसे हरलेजाकर बलसे दर्पित वे दोनों

घोर दानव चलेगये ८ हे राजन् तब एक क्षणमात्रहीमें ब्रह्मा जी ज्ञान हीन होगये व दुःखित होकर चिन्ता करने लगे कि अब हम कैसे प्रजाओंको बनावेंगे ९ व देवदेवने कहाथा कि तुम प्रजा बनाओ सो अब ज्ञानहीन होने के कारण हम कैसे प्रजा उत्पन्न करेंगे अहो बड़ा भारी कष्ट उपस्थित हुआ १० यह चिन्ता करके लोकके पितामह ब्रह्माजीने बड़ेयत्नसे दुःखित होकर वेदों व शास्त्रोंका स्मरणभी किया परन्तु उन्हें न देखा ११ तब उदासीन चित्त होकर उन्हीं देवदेव पुरुषोत्तम विष्णुजीकी स्तुति एकाग्र मन से शास्त्रद्वारा करने को प्रारम्भ किया १२ ब्रह्माजी बोले ॥

चौ० शास्त्र वेदनिधि तुम्हें नमामी। मैं नारायण तव अनुगामी ॥ नित्यकर्म्म विज्ञान निधाना। नमोनमो हम करत महाना १। १३ विद्याधर वागीश तुम्हारे। नमत देव हरु दुःख हमारे ॥ नमोऽचिन्त्य सर्व्वज्ञ मुरारी। प्रणतपाल हरु पीर हमारी २। १४ यज्ञमूर्त्ति परमूर्त्ति विहीना। महाभुजा धीक्षज्ञ परबीना ॥ साममूर्त्तिसवरूपनमामी। बार बार तवनामबदामी ३। १५ सर्व्व ज्ञानमय तुम भगवाना। अच्युत हृदय ज्ञानमय माना ॥ देवदेव ममबन महँ ज्ञाना। देहु नमत हम सहित विधाना ४। १६ ॥

मार्कण्डेयजी बोले कि जब ब्रह्माजीने इसप्रकारकी स्तुतिकी तो देवदेवेश शंख चक्र गदाके धारण करनेवाले श्रीभगवान्जी ब्रह्माजीसे बोले कि तुमको हम उत्तम ज्ञानदेंगे १७ ऐसा कह कर श्रीविष्णु भगवान् चिन्तना करने लगे कि किससे इनको नीति विज्ञान सिद्धकरें सो किस रूपसे १८ फिर जनार्द्दनजीने जाना कि यहसब मधुकैटभका कियाहुआहै इससे बहुत योजनों में फैला हुआ व बहुत योजनकी लम्बा सब ज्ञानमय मत्स्यका रूप बनाया १९ व तुरन्त जलमें प्रवेश करके श्रीहरिने उसको

चलायमान किया व जाते २ पातालमें पहुँचकर वहां मधु व कैटभ दोनोंको देखा २० व उन दोनोंको अत्यन्त मोहित करके वह ज्ञान ग्रहण करलिया व वेदशास्त्र मुनियोंसे स्तुति कियेहुये मधुसूदनजी २१ वह ज्ञानरूप वेदशास्त्र ब्रह्माजीको देकर मत्स्य का रूप छोड़ जगत्के हितके लिये श्रीहरि फिर शयन कररहे २२ व जब ये उनका वेद शास्त्ररूप ज्ञान हर लेकर चलेआये तो वे दोनों मधु व कैटभ जागे व आकर देखा तो देवदेव अव्यय श्रीविष्णुजी शयन कररहेथे २३ इससे वे दोनों आपसमें कहने लगे कि यह वह धूर्त्त पुरुषहै जो कि हम दोनोंको अपनी माया से मोहित करके वेद शास्त्र वहांसे लाकर ब्रह्माको दे साधुके समान सोरहाहै २४ यह कहकर महाघोर वे मधुकैटभ दोनों दानवोंने सोतेहुये केशवजीको जगादिया २५ व बोले कि हेमहामते हम दोनों तुम्हारे संगयुद्ध करनेके लिये आयेहैं इससे हम दोनों को संग्राम दो इस समय उठकर युद्धकरो २६ हे राजन् जब देवदेव श्रीहरिसे उनदोनोंने ऐसा कहा तो श्रीभगवान्जीने अच्छा कहकर अपने शार्ङ्ग नाम धन्वाको चढ़ाया २७ व प्रत्यञ्चा के शब्दसे तथा शंखके शब्दसे माधवजीने आकाश दिशा विदिशाओंको भरदिया २८ व हेराजन् उन दोनों महावीर्य्य पराक्रम वालोंने भी अपनी २ प्रत्यञ्चाओंका शब्द किया व दोनोंघोर मधु कैटभ श्रीहरिसे युद्ध करनेलगे २९ व जगतोंकेपति श्रीविष्णु भगवान् भी उनदोनोंके साथ लीलापूर्व्वक युद्ध करनेलगे यहां तक कि अस्त्र छोड़तेहुये उन तीनोंजनोंका बराबर युद्धहुआ ३० तब केशवजीने अपने शार्ङ्ग नाम चापसे चलाये हुये सर्पाकार बाणोंसे उन दोनोंके शस्त्रास्त्रोंको तिल २ खण्डन करदिया ३१ इस प्रकार वे दोनों मधु व कैटभ बहुतदिनों तक युद्धकरके शार्ङ्ग से छूटेहुये बाणोंकी द्वारा श्रीहरिसे मारडालेगये ३२ व हेराजन् उन्हीं दोनोंकी चर्बीसे श्रीविष्णु भगवान्जी ने यह सब पृथ्वी

वनाई व इसीसे इस पृथ्वीका एक मेदिनी भी नामहुआ क्योंकि चर्व्वीका मेदस नाम है ३३॥

चौ० इमिश्रीकृष्णप्रसादहिपाई। वेदलह्योविधिजगसुखदाई॥ रच्योप्रजाश्रुतिपथअनुसारा। सकलअदूषितकियेविचारा१।३४जोयहहरिअवतारकथानक।सुनतपढ़तनरकरिविहुमानक॥ चन्द्रसदनमहँवसिपुनिसोई। वेदवादिद्विजहोतनगोई २। ३५॥ हरिगीतिका॥

गिरिसमान महान भ्फपततु वेद विद्या मय महा।
जगहेतु करि हरि मीमरूप अरूपज्यहि श्रुतिहूकहा॥
स्तुतितासु सवजनलोकवासी कीनजिमि वेदनभना।
नृपभजहुताहिसराहिसबविधिहोयकैअवयकमना॥३६

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेमत्स्यावतारचरिते सप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७॥

अरतीसवां अध्याय॥

दो० अरतिसयें महँ कूर्मतनु हरिकी कथा पवित्र॥
मुनिवर्णी क्षितिपालसों जो सबभांति विचित्र॥१

मार्कण्डेयजी बोले कि पूर्व्वकालमें जब देवासुर संग्रामहुआ था तब सब देव दैत्यों से पराजितहुये इससे वे सब क्षीरसागरकी कन्या लक्ष्मीजीके पति श्रीविष्णुजीके शरणमेंगये १ व सब ब्रह्मादि देवतागण जगत्पति का ध्यान करके हाथजोड़ स्तोत्रपढ़कर उनको सन्तुष्ट करनेलगे २ देवगण बोले॥

चौ० देवदेवजगन्नाथतुम्हारे। नमोनमोहमकरतपुकारे॥ पद्मनाभ शार्ङ्गी जनपाला। लेहुप्रणति दुखहरहुकृपाला१।३ सर्व्वदुःखहारी कजनाभा। करत प्रणाम दिखावहु आभा॥ विश्वरूप सब सुरमय देवा। लखहुहमें करते तव सेवा२।४ मधुकैटभ नाशन भगवन्ता। केशव कृष्ण अनादि अनन्ता॥ नमोनमोहम करत दुखारी। काटहु संकटजन हितकारी ३।५

अति बलवान दैत्यगणसारे। कीन्हपराजित हमकहँ मारे॥
तिनसों जीतनकेर उपाऊ। करुणाकर अबहमें बताऊ ४। ६॥
मार्कंडेयमुनिबोले कि जब देवताओंने देवदेव जनार्दनजी की ऐसीस्तुतिकी तो श्रीहरि उनके आगे खड़ेहोकर उनसे यह बोले कि ७ हे देवताओ अब तुम लोग वहां जाकर दानवोंसे मिलापकरो व दोनों मिलकर मन्दराचल को मथानीबनाय व वासुकि नागराजको मथानीमें बांधनेकी रस्सीबनाकर ८ सब औषधियांलाकर समुद्रमें शीघ्रछोड़कर दानवोंकेसंग क्षीरसागरकोमथो ९ व हम वहां सहायताकरेंगे उसक्षीरसागरसे अमृत निकलेगा उसके पीनेसे १० एक क्षणभरमें देवगण बलवत्तरहोंगे क्योंकि अमृतका ऐसाही प्रभाव है हे महाभागो तुम सब अमृतपीनेसे बड़ेतेजस्वी व रणमें विक्रमकरनेवाले होजाओगे ११ अमृतपाकर सब इन्द्रादि देवगणोंका बड़ा उत्साह होगा इससे दानवोंकेजीतनेमें समर्थहोजायँगे इसमें कुछसंशय नहीं है १२ जब देवदेव श्रीहरिने देवताओंसे ऐसा कहा तो वे सबजगत्पति श्रीविष्णुजीके प्रणामकरके अपने स्थानपर आये व फिर दैत्योंसे मिलापकरके १३ क्षीरसागरके मथनेमें सबोंने उत्तम उद्योगकिया व दैत्योंके राजाबलिने जाकर मन्दराचल को उखाड़लिया १४ व उसीअकेले महाबलीने समुद्रमें लेकर डालभीदिया फिर देवता व दैत्यों ने सब औषधियांभी समुद्र मेंडालीं १५ व हे राजन् श्रीनारायणजी की आज्ञासे वासुकि नागराजभी वहांआये व सब देवताओं के हितकेलिये विष्णु भगवान् आप वहां आये १६ वहां विष्णु भगवान्केपास आकर सब दैत्य व देवता मित्रताके भावसे क्षीरसागरके तीरपर स्थितहुये १७ व मन्दराचलको मथानी तथा वासुकिको मथानीकी रस्सीबनाकर सबकेसब अमृतकेलिये शीघ्रतासे मथनेलगे १८ वहां श्रीविष्णुजी ने युक्तिसे दैत्यों को मुखकी ओर

लगाया व देवताओंको पूंछकीओर१९हे राजन् जब इसरीति से सब मथनेलगे तो आधारके न होनेसे मन्दराचल जलमें घुसा इसकोदेख श्रीहरिने बड़ी शीघ्रताकेसाथ २० सबलोगों के हितकेलिये कच्छपकारूप धारणकिया व उसरूपको मन्दर के नीचेकिया २१ व जाकर मन्दराचलको नीचेसे उठालिया व दूसरेरूपसे उसपर्वत को ऊपरसेदबायेरहे जिसमें बहुत न हिले २२ व देवताओंके संग अपने हाथोंसे जनार्दनजीने भी नागराज वासुकिको खींचा व देवताओंसेयुत एकरूप दैत्योंके मध्यमें श्रीहरिनेकिया२३ तब वे सब वेगसे क्षीरसागरको मथ-नेलगे सब बलवान् तो थेही अपनीशक्तिसे मथतेरहे मथेहुये समुद्रसे प्रथम२४ कालकूटनाम अत्यन्त दुःखदेनेवाला विष निकला उसेप्रथम सब नागोंने ग्रहणकिया जो कुछ उनसेबचा उसेशंकरजीने ग्रहणकिया २५ नारायणकी आज्ञासेही महा-देवजीने ग्रहणकिया इससे उनकागला श्यामहोगया इसीसे उन कानामभी तबसे नीलकण्ठहुआ फिर ऐरावतहाथी निकला व फिर उच्चैश्श्रवानामक घोड़ा निकला २६ ये दोनों दूसरीबारके मथनेपर निकलेहैं यहबात हमने सुनीहै व तीसरीबार मथनेसे सुन्दरी अप्सरायें निकलीं व चौथीवार पारिजातनामे महावृक्ष निकला,इसीको कल्पवृक्षभी कहतेहैं २७ व पांचवींबार मथ-नेसे क्षीरसागरमेंसे चन्द्रमानिकला उसको महादेवजीने अपने मस्तकमें धारणकरलिया जैसेस्त्री अपने माथेमें स्वस्तिक अ-र्थात् बेंदीधारण करतीहै २८ फिर क्षीरसागरसे नाना प्रकार के दिव्य आभरण व रत्ननिकले व सहस्रों गन्धर्वभी निकले २९ इन सबोंको समुद्रसे निकलेहुये देखकर सबदेवता व दैत्य आश्चर्य युक्तहोकर फिर हर्षितहुये३० व श्रीभगवान्की आ-ज्ञासे देवताओंकीओर धीरे२मेघभी बरसतेजातेथे व पवनभी मन्द २ चलताथा३१ व दैत्यलोग मुखकीओर तो थेही वासु-

किके मुखसे विषयुक्त इवास निकलतेथे उनके लगने से बहुत दैत्य तो मृतकहीहोगये नहीं तो निस्तेज व निर्व्वीर्य्य तो सबके सब होगये३२ हे राजेन्द्र उसके पीछे क्षीरसागरसे कमलहाथ मेंलिये व अपने तेजसे सब दिशाओंको प्रकाशित करातीहुई लक्ष्मीजीनिकलीं३३ व निकलतेही तीर्त्थोंकेजलसे स्नानकरके व दिव्यवस्त्र अलंकार धारणकर दिव्य चन्दनादि सुगन्धित पदार्त्थलगाये पुष्पोंसे भूषित ३४ लक्ष्मीजी देवताओंकी ओर आकर एकक्षणमात्र खड़ीहुईं फिरजाकर श्रीविष्णु भगवान्‌के वक्षस्स्थलमें प्राप्तहुईं ३५ इसके पीछे क्षीरसागरसे अमृतसे पूर्णसुवर्णका कलशलियेहुये धन्वन्तरिजी निकले उनको देखकर देवतालोग बहुत प्रसन्नहुये ३६ व दैत्यलोग लक्ष्मी से परित्यक्तहोनेकेहेतु दुःखितहुये पर उन्होंने धन्वन्तरिके हाथसे अमृतका पात्रछीनकर सुखपूर्व्वक अपना मार्ग्गलिया ३७ तब श्रीविष्णुजीने देवताओंके हितकेलिये स्त्रीकारूप धारण किया जो कि सब उत्तमस्त्रियों के लक्षणसे संयुक्तथा व भूषणभी सब अंगों में वहरूप धारणकियेथा ३८ फिर स्त्रीरूप धारणकिये भगवान् दैत्योंके निकटगये व दिव्यरूप अपूर्व्व उनस्त्रीरूप हरिको देखतेही असुरलोग मोहितहोगये ३९ व अमृतसे भरे हुये उस सुवर्णके घड़ेकोमारे मोहके भूमिपर धरके तत्क्षणकाम बाणसे पीड़ितहुये ४० बस इसप्रकार असुरोंको मोहितकरके श्रीहरिने अमृतघट उठाकर आय देवताओंको पिलादिया४१ उसको पीकर हरिकेप्रसादसे बलवान् व महावीर्य्यवाले होकर सब देवगण युद्धकरनेकेलिये दैत्योंके निकटगये ४२ व दैत्यों को रणमें जीतकर अपना २ राज्यकरनेलगे हेराजन् यह हमने श्रीहरिके अवतारकी कथा आपसे कही ४३ यह कूर्म्मजीका अवतारपढ़ते व सुनतेहुये लोगोंको पुण्यदेता है इससे तुमभी इसको पढ़ते सुनतेरहो ४४॥

चौ० अतुलदीप्ति कच्छप तनुयेहू। नारायण सुरहित किय देहू॥ पावन परम सकल अघहारी। रूपमनोहर जपत पुरारी १४५॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेकूर्म्मावतारचरितेऽष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८॥

उन्तालीसवां अध्याय॥

दो० उन्तालिसयें महँ कह्यो शूकरतनु प्रभुकेर॥
सकल विचित्र चरित्र सुखदेत उन्हें जोटेर १

मार्कण्डेयजी बोले कि हे नराधिप इसके पीछे अब श्रीहरि के अतिपुण्य वाराहअवतारकी कथा कहतेहैं उसेआप एकाग्र मनहोकर सुनें १ जब ब्रह्माकादिन बीतता है व तीन लोक प्रलयको प्राप्तहोजाते हैं तो भूर्भुवःस्वः इनतीनों लोकोंमें केवल जलही जलहोजाताहै२ व तीनोंलोकोंके सब प्राणियोंको अपने में मिलाकर श्रीविष्णु भगवान् उसी एकार्णव जलमें सोरहते हैं ३ शय्या वहां अनन्तनागके शरीरकी करतेहैं यह शरीर सहस्रफणों से शोभित रहता है यह रात्रिसहस्र चतुर्य्युगियोंकी होतीहै उसमें ब्रह्मरूपी जगत्पति शयन करतेहैं४व हमने सुना है कि दितिमें कश्यपजीसे महाबलपराक्रमी एकहिरण्याक्षनाम दैत्य उत्पन्नहुआ ५ वह पातालमें सदावसारहताथा व देवताओं को रोंकताथा बेचारे कहीं आनेजानें नहीं पातेथे व यज्ञकरनेवालोंके अपकारकेलिये कभी२भूतलमेंभीआकर यत्नकरता था ६ क्योंकि भूमिके ऊपर स्थितहोकर मनुष्यलोग देवताओं की पूजा करेंगे इसबातको जानताथा व उसी यज्ञके करनें से उन मनुष्योंकाबल वीर्य्य व तेजहोगा७यह मानकर हिरण्याक्ष ने विचारा कि जब ब्रह्मासृष्टिकरेंगे तो ऐसा होगा इससे वह पृथ्वीकी धारणा शक्तिलेकर८ महाप्रतापी असुरजलके मध्यमें होकर रसातलकोचलागया व बिनाशक्तिकी पृथ्वीकोभी रसातलहीमें जाकर स्थापित किया ९ जब निद्राबीती तब सर्व्वा-

त्मापरमेश्वरने विचारा कि हमारी पृथ्वी कहांगई फिर योगा-
भ्याससे जो चिन्तनाकी तो विदितहुआ कि भूमितो रसातलमें
है१०इसलिये वेदमय बाराहरूपको धारणकिया इसरूपके वेद
तो चारोचरण हैं व यज्ञस्तम्भ चौहड़ीहैं यज्ञकी पताकामुखहै
११ बड़ी चौड़ीतो उसरूपकीछातीथी महालम्बायमान बाहुथे
व बड़ाभारी मुखथा अग्नि उसकीजिह्वा व श्रुव श्रुथुन व चन्द्र
व सूर्य्यनयन १२ तड़ागवापी कूपादिका बनवाना व अन्य ना-
नाप्रकारके धर्म्म व हरिमन्दिरादि निर्म्माण कराना उसके श्र-
वण हैं व उसकाशब्द सामवेदकागान है १३ काय प्राग्वंश है
नासिका हवि कुश सब देहकेरोम व सर्व्व वेदमय पुण्य सूक्त
उसके कन्धेपरके केशहैं१४नक्षत्रमण्डल व तारागणहारहैं यह
रूपप्रलयकेसमुद्रका भूषणरूपहुआ इसप्रकारका वाराहरूपधा-
रणकर श्रीनारायण भगवान्१५रसातलमेंपैठे सनकादि स्तुति
करतेहुये चलेजातेथे वहां जाकर हिरण्याक्षको युद्धमें जीतकर
१६ श्रीभगवान् दांतोंकेऊपर पृथ्वीकोलेकर रसातलसे जलके
ऊपर पूर्व्ववत् फिर स्थापितकरदिया देवगणोंने उससमयबड़ी
स्तुतिकी १७ पृथ्वीको स्थापितकरके उसके ऊपर सब पर्व्वतों
को यथा स्थानकल्पित करदिया क्योंकि पृथ्वीकीधारणा शक्ति
हरजानेपर जहां तहां सिकिलगये थे फिर काकनाम तीर्थमें
वह बाराहरूप छोड़कर १८ बैष्णवोंके हितकेलिये वह उत्तम
तीर्थ बनादिया व फिर उन्हीं बाराहजी ने ब्रह्मा का रूप धा-
रण करके सृष्टिकी १९ बस इसप्रकार सब युगोंमें ब्रह्मारूप
धारणकरके उत्पन्नकरते व विष्णुरूपसे पालनकरतेहैं व अन्त
में रुद्ररूपीजनार्द्दन भगवान् इसविश्वका नाशकरतेहैं २० ॥

कुं० गाथा पुरुष पुराण वर वेद वेद्यकी येहु ।
सुनैपढ़ै जो पुरुष तुम ताके पुण्य सुनेहु ॥
ताके पुण्य सुनेहु नेहु करि कैसो प्राणी ।

जातचलो हरिलोक जपतहरिगुणनिजबाणी॥
बाणीपति प्रभुरूप धरेविचरत त्यहि साथा।
सकलपापतजियहांश्रहोअद्भुतयहगाथा॥१२१॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेवाराहावतारचरित्रे एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९॥

चालीसवां अध्याय॥

दो० चालिसयें महँ नृहरि अवतार कथा विस्तार॥
मुनिभाष्यो महिपालसों करिकै बहुतविचार १

मार्कण्डेयजी सहस्रानीकजीसे बोले कि हमने तुमसे वाराहावतारकी कथा कही अब नरसिंहावतारकी कथा यथामतिकहतेहैं सुनो १ दितिके हिरण्यकशिपु नामपुत्र पूर्व्वकालमेंहुआ उसने निराहारकई सहस्रवर्ष पर्य्यन्त तपकिया २ उसके तप करने से सन्तुष्ट होकर ब्रह्माजी वहां आकर उसदानवसे बोले कि हे दैत्येन्द्र जो तुम्हारे मनमें हो वह वरमांगो ३ जब इसप्रकार ब्रह्माजीने उस दैत्यराजसे कहा तो वह हिरण्यकशिपु देवेश ब्रह्माजी के प्रणाम करके उनसेबोला४ कि हे भगवन् यदि आप हमको वरदेनेकेलिये आयेहैं तो जो २ हम तुमसे मांगें वह सब आपदेनेके योग्यहैं ५ न तो हम शुष्कपदार्थसे मरें न गीले से न जलसे न अग्निसे न काष्ठसे न कीड़ेसे न पत्थर से न पवनसे ६ न किसी आयुधसे न शूल उठनेसे न पर्व्वतपर से गिरनेसे न मनुष्योंसे न देवताओंसे न दैत्योंसे न गन्धर्व्वों से न राक्षसोंसे७न किन्नरोंसे न यक्षोंसे न विद्याधरोंसे न सर्प्पोंसे न वानरोंसे न मृगोंसे न मातृगणोंसे८न घरकेभीतर न बाहर न और किसीमरणकेहेतुओंसे न दिनमें न रात्रिमें बहुत कौन कहे न आपसे न आपकी सृष्टिभरसे आपके प्रसादसे मरें ९ हे देव देवेश बस यही वर आपसे मांगते हैं और कुछ नहीं मार्कण्डेयजी बोले कि जब दैत्यराजने ऐसा कहा तो ब्रह्माजी

उससे बोले १० कि हे दैत्येन्द्र हम तुम्हारे बड़े तपसे सन्तुष्ट हुये इससे दुर्ल्लभभी परमअद्भुत ये सब बर तुमको देते हैं ११ औरों को न हमने ऐसा कभी वरदानहीदिया न और किसी ने ऐसा तपही किया इससे हे दैत्यराज हमने तुम्हारे सब मांगेहुये वरदिये वैसेहीहों जैसे तुम चाहते हो १२ हे महाबाहो जाओ व तपसे बढ़ाहुआ फलभोगो इस रीतिसे दैत्यराज हिरण्यकशिपु को वरदेकर १३ ब्रह्माजी अपने उत्तम ब्रह्मलोकको चलेगये वह दैत्यभी वरपाकर और भी बलवान् होजानेसे मारे बलके अहंकारी होगया १४ व समरमें सब देवताओंको जीतकर स्वर्ग्ग से पूर्व्व दिशाकी ओर पृथ्वीपर कर दिया व आप सर्व्वशक्ति युक्त स्वर्गका राज्य करनेलगा १५ व उसके भयसे रुद्रादि सब देव गण व ऋषिलोग भी मनुष्योंके शरीर धारण कियेहुये पृथ्वीपर बिचरनेलगे १६ जब हिरण्यकशिपुने इतना बड़ा त्रिलोकी का राज्य पाया तो सब प्रजाओंको बुलाकर उनसे यह वाक्य बोला १७ कि तुम लोग न किसी देवताके लिये यज्ञकरो न होम करो न कुछ दानदो क्योंकि तुम लोगोंके हमीं पति हैं क्योंकि तीनों लोकोंके स्वामी हैं व तुम हमारी प्रजा हो १८ इससे हमारीही पूजा यज्ञ दानादि कर्म्मसे करो यह सुनकर दैत्येंद्रके भयसे सब प्रजा वैसाही करनेलगीं १९ तब वहां ऐसा करनेसे हे नृपसत्तम सब चराचर तीनोंलोक अधर्म्मयुक्त होगये २० स्वधर्म्मके लोप से सबोंकी पापमें मति उत्पन्न हुई इस प्रकार जब बहुत काल बीतगया तो इन्द्रादि सब देवगण २१ नीतिशास्त्र जाननेवाले व सब धर्म्मशास्त्रोंके वेत्ता बृहस्पतिजीसे विनययुक्त होकर बोले कि हे मुनिसत्तम तीनोंलोकोंके हरनेवाले इस हिरण्यकशिपुके बधका उपाय बहुत शीघ्र हम लोगोंसे कहिये २२ यह सुनकर बृहस्पतिजी बोले कि हे देवताओ अपने पदके पाने के लिये हमारे वाक्योंको सुनो २३ बहुधा महासुर हिरण्यकशिपु अब

क्षीणभाग्य होगयाहै क्योंकि शोक बुद्धिको नाश करताहै व शोक पढ़े लिखेहुये वेद शास्त्रका नाश करताहै २४ शोक मतिको नशाताहै इससे शोकके समान कोई शत्रु नहीं है अग्निका सम्बंध सहनेके योग्यहै व दारुण शस्त्रोंका स्पर्शभी पुरुष सहसक्ताहै २५ पर शोकसे उत्पन्न दुःख नहीं सहसक्ता हम लोग कालके निमित्तसे उसका नाशलक्षित करते हैं क्योंकि उसे शोक आजकल है २६ व इसके सिवा सवपण्डित लोग सवकहीं स्थितहुये यही कहते हैं कि बहुतही शीघ्र यह दुष्ट नाश हुआही चाहताहै २७ व आजकलके शकुनभी हमसे यही कहते हैं कि देवताओं की परम समृद्धि हुआ चाहतीहै व वे अपना पदपाया चाहते हैं और हिरण्यकशिपुका नाश हुआ चाहताहै २८ जिससे कि ऐसा है इससे तुम सब विलम्ब न करो शीघ्रही जहां श्रीनारायण भगवान् शयन करते हैं उसी क्षीरसागर के उत्तरवाले किनारे पर जाओ २९ तुम लोग जैसे जाकर स्तुति करोगे उसी क्षणमें परमेश्वर प्रसन्न होंगे व जब वे प्रसन्न होंगे तो उस दैत्यके बधका उपाय बतावेंगे ३० जब बृहस्पतिजीने ऐसा कहा तो सब देवगण साधु २ कहकर बोले व बड़ी प्रीति व भक्तिसे सबों ने वहां जानेमें बड़ाउद्योग किया ३१ पुण्य किसी यात्रावाली तिथिमें व शुभलग्नमें पुण्याहवाचन व स्वस्तिवाचन मुनिवरों से कराकर सब देवताओंने यात्राकी ३२ कि जिसमें उस दुष्ट दैत्यका नाश हो व अपना ऐश्वर्य्य बढ़े चलनेके समय सबोंने महादेवजी को आगे करलिया व क्षीरसागरके उत्तरवाले तीरपर पहुँचे ३३ व वहां पहुँचतेही सब देवता विष्णु जिष्णु जनार्दनकी स्तोत्रों से स्तुति करतेहुये व पूजा करतेहुये स्थितहुये ३४ फिर भगवान् महादेवजीभी पार्व्वतीसहित भगवान् जनार्दनजीकीस्तुति उनके नामोंसे एकाग्रमनहोकर करनेलगे ३५ श्रीमहादेवजीबोले॥
चौ० विष्णु जिष्णु विभुदेव मखेशा। यज्ञपाल प्रभु विष्णु

सुरेशा॥लोकात्साग्र सिष्णुजन पालक। कीजेकृपा शत्रुकुल घालक१।३६ केशवकल्पकेशिहास्वामी। सब कारण कारण खगगामी॥ कर्म्मकारि बासता अधीशा। वासुदेव पुरुसंस्तुतईशा२।३७ माधव मधुसूदन वाराहा। आदिकर्त्तृ नारायणकाहा॥ नरअरु हंसहुताशन नामा। विष्णुसेन सब पूरण कामा ३।३८ ज्योतिष्मान् द्युतिमान् श्रीमाना। आयुष्मान् पुरुषोत्तमभाना॥ कमलनयन बैकुण्ठ सुरार्च्चित। कृष्णसूर्य्य भवभव भयभञ्जित ४।३९ नरहरि महाभीम नख आयुध। वज्रदंष्ट्रजग कर्त्तावर बुध॥ आदिदेव यज्ञेश मुरारी। गरुडध्वज पावन असुरारी ५।४० गोपति गोखाभूपति गोविंद। भुवनेश्वर कजनाभन सितइंद॥ हृषीकेश दामोदर बिभुहरि। पालहु सदा कृपाअप नीकरि ६।४१ बामन दुष्ट दमन ब्रह्मेशा। गोपवलभ गोविंदरमेशा॥ प्रीतिवर्द्ध त्रैविक्रमदेवा। करौंत्रिलोकप तुम्हरी सेवा ७।४२ भक्तिप्रिय अच्युत शुचिव्यासा। सत्य सत्यकीरति भवबासा॥ ध्रुवकारुण्य पापहर कारुण। शान्ति विवर्द्धन पूजित सारुण ८।४३ संन्यासी बदरीबन बासी। शान्ततपस्वी शास्त्रप्रकाशी॥ मन्दरगिरिके तनचपलाप्रभ। करहु कृपाहम परश्रीवल्लभ ९।४४ भूतावासरु रमानिवासा। गुहावास श्रीपति भयनासा॥ तपोबासदम बाससनातन। सत्यबास मम हरहु दुरितगन १०।४५ पुरुष पुण्य पुष्कल कमलेक्षण। पूर्ण महेश्वर पूर्त्तिविचक्षण॥ पुण्यविवर्द्धनविज्ञपुराणा। सब पुण्यज्ञ तुम्हें श्रुतिभाणा ११।४६ शंखीचक्री गदीहलीशा। मुशलीहारी ध्वजी कवीशा॥ शार्ङ्गीकवची लांगलधारी। मुकुटी कुंडलि मेखलि भारी १२।४७ जेता जिष्णु महावीरेशा। शत्रुशत्रुतापन देवेशा॥ शान्तिकरण शत्रुघ्न सुशास्ता। शंकरशंतनुनत विख्याता १३।४८ सारथि सात्विक स्वामीप्रियसम। सामवेद सावनसमद्धिसम॥ सम्पूर्णांश साहसी बलकर। रमा-

निवास हरहु सुरवरदर १४। ४९ स्वर्ग्गद कामद कीर्त्तिद श्री प्रद। मोक्षद कीर्त्ति विनाशन गतमद ॥ पुंडरीक लोचन भव मोचन। क्षीरजलधिकृत केतन शोचन १५। ५० सुरासुरस्तुत ईशरु प्रेरक। पाप विनाशन शुभगुण हेरक॥ यज्ञवषट्कृत तुम ॐकारा। तुमही अग्नि विदित संसारा १६। ५१ स्वाहा स्वधा देव पुरुषोत्तम। तुमही सबनहिं अपर महत्तम॥ देवदेवशाश्वत भगवन्ता। विष्णु नमत तव चरण अनन्ता १७। ५२ अप्रमेय नहिं अन्त तुम्हारा। यासों प्रणमत देव उदारा॥ इतने नाम उदार बखानी। विनती कीन महेशभवानी १८। ५३॥

जब देवताओंके संग महादेव व पार्व्वतीजीने इतनी स्तुति की तो भगवान्‌जी प्रकट होकर सब देवताओंसे यह बोले कि हे देवताओ तुम लोगोंने केवल नामोंसे हमारी स्तुतिकीहै ५४ इससे हम बहुत प्रसन्नहुये बताओ तुम लोगोंका कौन अर्थ सिद्ध करें देवगण बोले कि हे देवदेव हृषीकेश पुंडरीकाक्ष व हे माधव ५५ आपही सब जानतेहो फिर क्यों पूँछतेहो श्रीभगवान् बोले कि हे असुरों के नाश करनेवालो तुम्हारे आगमन का कारण सत्य २ हम सब जानते हैं ५६ कि हमारे पुण्य १०० नामोंसे तुम लोगोंकी ओरसे शंकरजीने स्तुति हिरण्यकशिपु के नाशनेके लिये कीहै ५७ हेमहामते इस तुम्हारे कहेहुये शत नामसे नित्य जो हमारी स्तुति करेगा वह जानो नित्य हमारी पूजा करेगा जैसे कि तुमनें कीहै ५८ हेदेव हम प्रसन्न हुये अर्थ तुम अपने कैलासके शुभ शिखरपर जाओ हे भव अब तुमसे स्तुतिकियेगयेहमहिरण्यकशिपुकोमारडालेंगे ५९ व देवताओ तुमभी जाओ और कुछ कालतक रास्ता परखो इसके पुत्रका प्रह्लाद नामहै वह बड़ा बुद्धिमान् और परमवैष्णवहै ६० देवताओ जब दैत्यलोग उससे द्रोहकरेंगे तो यद्यपि उसने वरमांग लियाहै कि देवता दैत्यादिकोंके मारे हम न मरें पर हम मारीही

डालेंगे जब विष्णुजीने देवताओंसे ऐसा कहा तो वे लोग श्री नारायणजीको नमस्कार करके चलेगये ६१॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेविष्णुवचनामस्तोत्रकीर्त्तनन्नामचत्वारिंशोऽध्यायः॥

इकतालीसवां अध्याय॥

दो॰ इकतालिसयें महँ कनक कशिपुतनय प्रह्लाद॥
पठन पिता सुतबतकही युत बहुवाद विवाद १॥

इतनी कथा सुनकर सहस्रानीकजी मार्कण्डेयजीसे बोले कि हे सर्व्वशास्त्र विशारद महाप्राज्ञ मार्कण्डेयजी अब विधिपूर्व्वक नृसिंहजीके जन्मकी कथा हमसे कहो १ व हे पापरहित प्रह्लाद जीका भी चरित्र विस्तार सहित कहो हे महायोगिन् महामुने हम लोग धन्यहैं जो तुम्हारे प्रसादसे २ श्रीहरि कथारूप दुर्लभ अमृत पीते हैं मार्कण्डेयजी बोले कि जब हिरण्यकशिपु तप करनेके लिये बनको चलाथा ३ तब सब दिशा जल उठीं थीं व भूमिकम्प हुआथा तब उसके भाई बन्धु हितकारी सेवक मित्रादिकों ने रोंका कि ४ हे राजन् ये अगुणकारी शकुन हुये इससे इस कार्य्यमें अच्छा नहीं है इसके सिवाय तुम तीनों लोकों के स्वामीहो देवताओंको तुमने पराजित करलियाहै ५ फिर अब तुमको कहींसे भय नहीं है तो किसलिये तप करनेको जातेहो हम लोग जो बुद्धिसे विचारते हैं तो इस तप करनेका कुछ प्रयोजन नहीं देखते ६ क्योंकि जो इस संसारमें पूर्णकाम होता है वह तप नहीं करता इस रीतिसे रोंकाभी गया परन्तु दुर्म्मद होनेके कारण मोहित तो थाही ७ अपने दो तीन मित्रोंको संग लेकर कैलास पर्व्वतके शिखरपरको चलागया व तप करनेलगा जब उसने परमदुष्कर तप किया तो ८ कमलसे उत्पन्न ब्रह्मा जीके बड़ीभारी चिन्ता उत्पन्नहुई व विचारनेलगे कि हम क्या करें यह दैत्य तपसे कैसे निवृत्तहो ९ इसप्रकार चिन्तासे व्याकुल ब्रह्माजी से उनके अंगसे उत्पन्न नारदमुनि प्रणाम करके

बोले हे भूपाल १० नारदजीने कहा कि हे तात हे नारायणप्र-
रायण आप किसलिये खेद करतेहैं क्योंकि जिनके मनमें गो-
विन्द रहतेहैं वे शोच करनेके योग्य नहीं होते ११ हम तप करते
हुये उस दितिके पुत्रको रोंक देंगे क्योंकि जगत्स्वामी नारायण
जी हमको मति देंगे १२ मार्कण्डेयजी सहस्रानीक राजासे बोले
कि यह कह व पिताके प्रणाम करके व वासुदेव भगवान्‌को मन
में स्मरण करतेहुये मुनियोंमें श्रेष्ठ नारदजी पर्व्वतमुनिके संग
चले १३ चलनेके समय दोनों मुनि कलविंकपक्षी बनकर प-
र्व्वतोंमें उत्तम कैलास परको गये जहां कि श्रेष्ठ हिरण्यकशिपु
अपने दो तीन मित्रों सहित तप करताथा १४ मुनिजी स्नान
करके वहीं एकवृक्षकी डालीपर बैठकर उस दैत्यको सुनातेहुये
गम्भीर वाणीसे बोले १५ नमोनारायणाय इसको तीनबार जप
कर वे उदार मतिवाले नारदजी फिर चुपहोगये १६ उस कल-
विंकका वह वचन सुनकर हिरण्यकशिपु दैत्यने बड़ा कोधकरके
धन्वा उठाया १७ व जबतक धन्वापर बाण चढ़ाकर उन दोनों
पक्षिरूप मुनियोंपर चलाया चाहे कि तबतक नारद व पर्व्वत
दोनों वहांसे उड़गये १८ व महाकोपके युक्त होकर वह हिरण्य-
कशिपु भी उस आश्रमको छोड़कर अपने गृहको चलाआया
१९ उसकी स्त्रीका कयाधू नामथा इसका पश्चाद्भाग बहुत सु-
न्दरथा वह रजस्वला होकर दैवयोगसे उस दिन स्नानकर रही
थी २० जब रात्रिहुई तब वह अपने पतिके निकटगई व एकांत
में उससे पूछा कि हे स्वामिन् जब तुम तप करनेको गयेथे २१
तब तुमने कहाथा कि हम दशसहस्रवर्ष तक तप करेंगे सो हे
महाराज अभी थोड़ेही दिनोंमें आपने कैसे व्रतको छोड़दिया
२२ हेनाथ हमसे सत्यही कहिये क्योंकि हम स्नेहसे पूछती हैं
यह सुनकर हिरण्यकशिपु बोला कि हेसुन्दरि क्रतिविनाश करने
वाली हमारी वाणी सत्य २ सुनो २३ वह कोधके उत्पन्न करने

वाली व देवताओं को हर्ष बढ़ानेवाली है हे देवि महाआनन्द देनेवाले कैलास के शिखर पर २४ नमोनारायणाय इस शुभ बाणीको दो तीनबार कहतेहुये दो पक्षियोंको हमने देखा २५ हे बराननें उससे हमारे मनमें अतीव क्रोध उत्पन्नहुआ इससे जबतक धन्वापर बाण चढ़ाकर हम छोड़ना चाहें कि हेभामिनि २६ तबतक वे दोनों पक्षी डरकर देशान्तरको चलेगये व हम होनेवाले कार्य्यके बलसे व्रतत्यागकर चलेआये २७ मार्कण्डेय जी बोले कि जैसेही उसने ऐसा कहाहै कि उसका वीर्य्य पतित होनेको हुआ व भार्य्या जानों ऋतुस्नान करीचुकी थी इससे उसके गर्भाधानकी विधिसे गर्भ स्थित होगया २८ इसप्रकार गर्भाधानकी रीतिसे जो गर्भ धारण हुआ तो उस गर्भ से नारदजीके उपदेशसे परमवैष्णव पुत्र उत्पन्न हुआ २९ उसकी कथा आगे कहेंगे राजन् श्रद्धामें तत्पर होओ उस दैत्यका पुत्र जन्महीसे वैष्णव प्रह्लाद नाम हुआ ३० वह निर्म्मल पुत्र उस मलिन आश्रयवाले असुरकुलमें बढ़ा जैसे कि पाशरूप संसार से छुड़ाने वाली हरिकी भक्ति इस मलिन कलियुग में उत्पन्न होती है ३१ वह बालक तीनों वेदों के स्वामी श्रीविष्णुजी की भक्तिसे बढ़ताहुआ शोभितहुआ यद्यपि बालकहीथा पर ऐसा महात्माथा कि जब बहुतही छोटाथा तभी से श्रीविष्णुजी की भक्तिको फैलाता हुआ शोभित होता था ३२ उसका उस कुल में ऐसा होना ऐसाथा कि जैसे चौथेयुग कलियुगमें धर्म्म अर्थ काम व मोक्ष किसीको कीर्त्तिदे वह बाललीलाओं के खेलों में भी कृष्णचन्द्रहीकी कथाकी कहानी बनाकर बुझाताथा व सब लड़कोंको समझाता ३३ व कथाओंके प्रसंगोंमें भी कृष्णहीके चरित कहता क्योंकि उसका स्वभावही वैसाथा इससे बालपन में भी विचित्र कर्म्म करता हुआ परमेश्वर स्मरणरूप अमृत पान करताहुआ बढ़ा ३४ कमलके समान कोमल मुखवाले व

विशाल नेत्रवाले उस बालकको गुरूके गृहसे पढ़ेआते हुये को स्त्रियोंके बीचमें बैठेहुये उस खल दैत्येंद्रने देखा ३५ तो वह एक हाथमें तो मिट्टी भरीहुई दवायत लिये व एकमें मुठियापर बड़े आदरसे कृष्णनाम लिखीहुई पाटी लियेथा ३६ उसको बुलाकर लाड़ करताहुआ परमानन्दित दैत्यराज पुत्रसे बोला कि हे पुत्र तेरी माता हमसे नित्य कहा करती है कि हमारा पुत्र बड़ा बुद्धिमान्है ३७ सो जो कुछ तुमने गुरू के घरमें सीखाहो वह कहो उसमें भी जो अति आनन्द उत्पन्न करानेवाला तुमको अच्छीतरह आताहो बनाय विचार करके कहो ३८ तब जन्म के वैष्णव प्रह्लादजी बड़ेहर्षसे अपने पितासे बोले कि अच्छा तीनों लोकोंसे बन्दित गोविन्दजीके प्रणाम करके तुमसे कहते हैं ३९ इस प्रकार पुत्रकी कही हुई अपने शत्रु विष्णुकी स्तुति सुनकर क्रुद्धभी हुआ परन्तु उसको धोखा देनेके लिये स्त्रियोंके बीचमें बैठाहुआ वह खल बड़ेजोरसे हँसा मानों बड़े हर्षमें पड़ा था ४० व बालकको गोदमें बैठाकर अच्छीतरहं छातीमें झपटा कर बोला कि हे पुत्र हित वचनसुनो राम गोविन्द कृष्ण विष्णु माधव श्रीपति ४१ ऐसा जो कोई कहते हैं वे सब हमारे बैरी हैं हे पुत्र यह बात हमने सबको सिखादी है कोई भी यहां ऐसा नहीं कहता बताओ पुत्र तुमने यह वचन कहां सुना ४२ पिता का वचन सुनकर धीमान् प्रह्लादजी अभय होकर बोले कि हे आर्य्य कभी ऐसा न कहना ४३ क्योंकि सब ऐश्वर्य्योंका स्थान व मंत्र धर्मादिकोंके बढ़ानेवाला कृष्ण ऐसा नाम जो मनुष्य कहताहै वह अभय पदको प्राप्त होताहै ४४ व कृष्णकी निंदा से उठेहुये पापका अन्त नहीं होता इससे अपने शुद्ध होने के लिये भक्तिसे राम माधव व कृष्ण ऐसा स्मरणकरो क्योंकि तुमने अभी कृष्णकी निन्दाकीहै ४५ यह बात हम गुरूजीसेभी कहेंगे क्योंकि यह सबकी हितकारिणी है इससे सबके ईश सब

पाप क्षय करनेवाले श्रीकृष्णजीके शरणको जाओ ४६ तब तो
क्रोध प्रकट करके हिरण्यकशिपु पुत्रको अपकार वचन कहता
हुआ बोला कि किसने इस बालकको इस कुदशाको पहुँचाया
४७ धिक्२ हाहा हे दुष्टपुत्र हमने क्या पापकिया जो ऐसा पुत्र
हुआ हे दुराचार पापिष्ठ अधम पुरुष जा२ यह कहकर चारों
ओर देखकर बोला कि इस लड़केके पढ़ानेवालेको ४८ क्रूरप-
राक्रम करनेवाले क्रूर स्वभावके दैत्योंसे बँधुआ कराकर यहां
लाओ यह सुनकर दैत्यों ने उसी तरह गुरुको लेआकर दैत्य-
राजके निकट पहुँचादिया तब वे बुद्धिमान् गुरूजी इस खलसे
बोले कि हे देवताओंके नाशक महाराज परखिये तो ४९ हेदेव
तुमने एक खेलके साथ सम्पूर्ण तीनोंलोक जीत लिये सो भी
कईबार सोभी बिना क्रोध कियेहुये फिर मुझ अल्प छोटे पुरुष
पर क्रोधकरनेसेक्या है ५० यहब्राह्मणका साम्ययुक्तवचनसुनकर
दैत्योंका राजा बोला कि हेपाप हमारे बालक पुत्रको तुमने विष्णु
की स्तुति पढ़ादी ५१ यह कहकर फिर राजा अपने पुत्रसे बोला
कि हमारे पुत्र तुमको इन ब्राह्मणोंने कौन जड़ता समझादी कि
तुमको ऐसा करडाला ५२ इससे अब विष्णुके पक्षवाले इनधूर्त्त
ब्राह्मणोंके निकट एकान्तमें नित्यका बैठना छोड़दो व इन गुरु
पुत्रादिकोंको क्या ब्राह्मण मात्रका संग छोड़दो क्योंकि इनका
संग अच्छानहींहै ५३ क्योंकि इन ब्राह्मणोंने हमारे कुलके उ-
चित तेजको लुप्त करदिया सो क्यों नहो जिस पुरुषको जिसकी
संगति होती है उसका वैसाही गुण होजाता है जैसे कि मणि
का गुण होताहै कि वही हाथीके मस्तकवाला और गुणकरता
है व सर्पवाला और मछलीवाला और ५४ इससे बुद्धिमान्
को चाहिये कि अपने कुलके ऐश्वर्य्यके लिये अपने कुलवालों
केही संग उठना बैठना बोलना चालनारक्खे विष्णुके पक्षवालों
का नाशकरना हमारेपुत्रको उचितहै सो उसे छोड़ ५५ आपही

विष्णुका भजन करताहुआ मूढ़ तू क्यों नहीं लजाता अरे सब विश्वभरके नाथ हमारा पुत्रहोकर तू औरको नाथ बनाना चाहता है ५६ हे पुत्र तुम जगत्का निश्चय सुनो इसमें अपना प्रभु कोई नहीं है किन्तु जो शूरवीर होता है वही राजश्री को भोगताहै व वही प्रभु होताहै व वही महाईश्वर होताहै ५७ व वही देव कहाताहै जैसे कि हमने तीनोंलोकोंको जीतलिया है अब हमीं सबोंके अध्यक्ष हैं इससे जड़ता को छोड़ो व अपने कुलके उचित कर्म्म को भजो ५८ नहीं तो अन्यलोगभी तुम को मारडालेंगे व यह कहेंगे कि यह असुरहै पर सुरोंकी स्तुति करताहै जैसे कि मार्जार मूषकोंकी स्तुति करताहै तो उसको कोई नहीं डरते ५९ व जब अपने वैरी सर्पों के शरणमें मोर जाय तो उसको दुर्निमित्त समझना चाहिये ऐसा करनेपर बड़े भारी ऐश्वर्य्यको पाकरभी बुद्धिरहित लोग लघुताको प्राप्तहोते हैं ६० जैसे कि स्तुति करनेके योग्य हमारा यह पुत्र देवताओं की स्तुति करता है जो कि सदा हम लोगोंकीही स्तुति किया करते हैं अरे मूढ़ हमारे ऐसे ऐश्वर्य्यको देखकर भी तू हमारे आगे हरिका नाम लेता है ६१ अरे जो कि अपनी बराबर के नहीं हैं उने हरिकी स्तुति करनी बड़ी विडम्बनाकी बात है हे राजेन्द्र पुत्रसे यह कहकर बड़े क्रोधसे भयानकहो ६२ टेढ़ीदृष्टि से देख रोषके मारे कांपताहुआ वह अपने पुत्रके गुरूसे बोला कि अरे पशुरूप ब्राह्मण जा २ अब अच्छी शिक्षा हमारे पुत्रको दे ऐसा न हो कि फिरभी ऐसाही पढ़ावे ६३ यह सुनकर आप की बड़ी कृपाहुई जो मेरे ऊपर प्रसन्नहुये ऐसा कहताहुआ दुष्ट राजाकी सेवक वह ब्राह्मण अपने घरको चलागया व विष्णुको छोड़कर दैत्यके कहनेपर चलनेलगा सो क्यों न ऐसा करता क्योंकि जो अपने पालन पोषणके लोभी होतेहैं वे क्या नहींकरते ६४॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१॥

बयालीसवां अध्याय॥

दो० बयालिसेहूँ महँ कनककशिपु और प्रह्लाद॥
राजनीति हरिभक्तिकह क्रमसों रहित विषाद १

मार्कण्डेयजी राजासहस्रानीकजी से बोले कि हरिकी भक्तिसे भूषित वे प्रह्लादजी जब दैत्योंसे गुरूके गृहमें पहुँचायेगये तो बहुतहीशीघ्र सम्पूर्ण विद्याओंको पढ़तेहुये वे योगीकाल बिताते २ कौमारअवस्था को पहुँचे १ व बहुधा कौमार अवस्था को पाकरलोग नास्तिकता व दुष्टचालको पुष्टकरतेहैं परन्तुउसी अवस्थामें इनप्रह्लादको बाहरके सब पदार्थोंमें विरक्ति व हरिमें भक्तिहुई यह बड़े आश्चर्य्यकीबातहै २ फिर एकदिन जब सम्पूर्ण विद्यापढ़चुके तब हिरण्यकशिपु ईश्वरको अच्छी रीतिसे जाननेवाले प्रह्लादको बुलवाकर प्रणामकरतेहुये उनसे बोला कि ३ हे देवताओंके नाशक अज्ञानकीखानि बाल्यावस्था से छूटगये यह अच्छीबातहुई इसीसे अब बहुत शोभितहोतेहो जैसे कि अन्धकारसे निकलने से सूर्य्य शोभित होतेहैं ४ बाल्यावस्थामें तुम्हारीहीनाई हमकोभी ब्राह्मणोंने जड़तामेंडालकर मोहित कियाथापर जबअवस्थाबढ़ी तब इसप्रकारसे हमने सीखा हे पुत्र ५ सो अब राज्यभार उठानेवाले तुमपुत्रको निष्कण्टक राजभार सौंपकर तुम्हारी राजलक्ष्मी को देखतेहुये सुखीहोंगे क्योंकि बहुतदिनों से यह भार हमारेऊपर लदाथा ६ जब २ पिता पुत्रकी निपुणता देखताहै तब २ मनकी व्यथा को छोड़कर बड़े सुखकोपाताहै ७ तुम्हारे गुरूनेभी हमारेआगे तुम्हारी निपुणताका वर्णन किया सो उसके सुननेकी इच्छा जो हमारे कालकरते हैं तो कुछ आश्चर्य्यकी बातनहीं है ८ क्योंकि सब काचित्त चाहता है कि नेत्रोंसे शत्रुकी दरिद्रता देखे व कानोंसे पुत्रके सुन्दर वचन सुनें व मायाकरनेवालोंके अंगों में युद्धमें लगेहुये घावदेखें क्योंकि ये कार्य्य महोत्सवके हैं ९ इसतरहके

दैत्यराजके सयुक्तिकवचन सुनकर महायोगी प्रह्लादजी निश्शं-
कहोकर व प्रणामकरके पितासे बोले १० हे महाराज सत्यही
पुत्रके सुन्दर वचनकानोंके महोत्सवहोतेहैं परन्तु वे वचन जो
विष्णुभगवान् के सम्बन्धीहों तो अन्य नहीं महोत्सव होते ११
क्योंकि जिसवचनमें संसारके दुःखसमूह सूखे इन्धनकेजला-
नेकेलिये अग्निरूप श्रीहरिगायेजातेहैं वही नीतिहै व वही सु-
न्दर वचन वही कथा वही श्रवण करनेकेयोग्य व वही सुनने
लायककाव्यहै १२ बस जिसशास्त्रमें भक्तोंकेवाञ्छित देनेवाले
अचिन्त्यश्रीहरि की स्तुतिकीजातीहै उसीका शास्त्रनामहै और
जिसमें संसारी दुःखोंके समूहभरेहैं हे तात उसअर्थ शास्त्रसे
क्याहै १३ हे तात उसशास्त्रमें श्रमकरने सें क्या है जिसमें कि
आत्माही माराजाता है इससे वैष्णवशास्त्र सुनने व सेवाकरने
के योग्य सदा है १४ बस जिनको संसारके क्लेशोंसे छूटने की
इच्छाहो वे इसी वैष्णव शास्त्रको सुनें क्योंकि विना इसके सुने
जीव सुखी नहीं होता इसप्रकारके पुत्रके वचन सुनताहुआ हि-
रण्यकशिपु १५ दैत्योंकाराजा जलउठा जैसे तपायेहुये घीमें तु-
रन्तजल पड़नेसे वह अधिकजल उठताहै जनोंकेसंसारी दुःख
नाशनेवाली पुण्यप्रह्लादकीवाणी १६ क्षुद्र वह दैत्य न सहसका
जैसे उल्लूपक्षी सूर्य्यकी प्रभाको नहीं सहसक्ता चारोंओर देख
कर क्रुद्धहोकर दैत्यवीरोंसे बोला कि १७ इसकुटिलको अति
भयंकर शस्त्रोंके चलानेसे मारडालो सो यों नहीं सब सुकुमार
अंगोंको प्रथम काट २ छेद २ कर अलगकरदो फिरमारो देखें
तो अपने आप से हरिइसकी रक्षाकरे १८ जिसमें इसीसमय
यह हरिकीस्तुतिसे उत्पन्न फलदेखे इसकेसब अंग काकचील्ह
गृध्रआदि पक्षियोंको काट २ कर बांटदो १९ बस अपने स्वामी
की आज्ञासे अस्त्र शस्त्र उठाकर अपने बीरशब्दों से डरवाते
हुये दैत्यलोग अच्युत भगवान् के परमप्रिय भक्त प्रह्लादजी

को मारनेलगे २० प्रह्लादजीनेभी अपने स्वामीका ध्यानकरके ध्यान बज्र ग्रहणकिया व सत्यरससे भीगेहुये इसप्रकार ध्यान में निश्चलभक्त प्रह्लादजीकी भक्तकादुःखन सहकर श्रीविष्णुजी ने रक्षाकरली इससे दैत्यराक्षसोंके सब शस्त्रोंको प्रह्लादजी के अंगोंमें लगनेका कहीं स्थानही न मिला २१। २२ नीलकमल के खण्डोंके समान एक २ के अनेक खण्डहोकर पृथ्वीपर सब शस्त्रगिरपड़े भलाप्राकृत शस्त्र श्रीहरिके प्रियको क्याकरसकेंगे २३ क्योंकि दैहिक दैविक व भौतिक महाअस्त्र शस्त्रोंके तापोंका समूह जिस भगवद्भक्त से डरता है व व्याधि राक्षस ग्रहादिक तभी तक जनों को पीड़ित करते हैं २४ कि जबतक गुहाशय श्री विष्णुजी को चित्त थोड़ा भी स्मरण नहीं करता व प्रह्लाद जी के शरीर में लगकर खण्ड२हुये उनशस्त्रों से जो कि उलटे उछलेथे २५ हन्यमान होकर वे मारनेवाले दैत्य राक्षस भाग खड़ेहुये उनअस्त्रों के खण्डों ने मानों तुरन्तही उनदुष्टों की दुष्टताकाफल देदिया इसबातमें जाननेवालों को तो कुछ आश्चर्य्यही नहीं हां मूर्खों को तो विस्मय हुआहीहोगा २६ व इस प्रकारका वैष्णव बलदेखकर राजाहिरण्यकशिपु भयभीतहुआ व फिर उनके बधका उपाय विचारतेहुये उसदुष्टमतिने २७ बड़े बड़े बिषधरसर्पोंको बुलवाकर जो उसकेभयकेमारे बिनाउसकी आज्ञा किसीको काटनहींसक्ते थे उनको आज्ञादी व कहा कि इसने हरिको सन्तुष्टकिया है इससे अशस्त्रसे बधकरनेके योग्य है २८ इससे आपलोग इसेबिषरूप आयुधोंसे अभीमारडालें हिरण्यकशिपुकी आज्ञासुनकर नागलोगों ने उसकी आज्ञाको शिरसे ग्रहणकिया क्योंकि वे तो बेचारे आज्ञाकारीहीं थे २९ इसलिये बिषकेमारे जलतेहुये दांतों व करालचौहड़ीवाले व चमकतेहुये दशहजारसर्प जोकि किसी के खींचनेके योग्य न थे पर हरिकी महिमासे युक्त प्रह्लाद के खींचनेकेलिये नियुक्तहुये

इससे वे मारेरोषके श्रीहरिके प्रियके ऊपरजा कूदे ३० यद्यपि उनके विषही आयुधथा पर श्रीहरिके बलके स्मरणसे बड़े दुःख से न कटने फूटनेवाले प्रह्लादजीके शरीरमेंकी थोड़ीसीभी खाल काटनेको न समर्थहुये किन्तु हरिके पालित देहमें काटकर वे वेचारे विनादांतोंके होगये ३१ तब रुधिरबहनेके कारण उदासीनमूर्त्ति व फटेहुये मस्तकोंवाले विनादांतोंके भुजंगम पहुँचकर उन्होंने दैत्यराजसे विज्ञापनकिया उससमय सब ऊधीसांसेलेते व फनमारेपीड़ा के थर २ कँपातेथे ३२ हे प्रभो हमलोगोंने पर्व्वतों को भी जब कभीकाटा है तो केवल उनकी भस्मही शेष रहगईहै और कुछभी नहीं परन्तु अबकी जिसकाममें नियुक्तहुये उसकार्य्यके करनेमें असमर्थ हुये वरन महानुभाव तुम्हारे इस पुत्रके वधकेलिये नियुक्त होनेसे विना दांतोंके होगये ३३ इस प्रकार सब नाग बड़ी कठिनताके वृत्तांत कहकर स्वामीकी आज्ञापाकर कृतार्थ होकरचलेगये व प्रह्लादकी ऐसी सामर्थ्यका कारण विचारतेरहे कि क्या है ३४ मार्कण्डेयजी बोले कि जब ऐसाहुआ तो असुरोंकाराजा मन्त्रियोंसे विचारकरवाकर व निश्चयकरके कि यह पुत्र दण्डदेनेसे साध्यनहींहै इससे अदण्ड से साधनकरना चाहिये इसलिये समभावुभाकर अपनेपास बुलाकर प्रणामकरतेहुये निर्म्मल चित्तवाले उनप्रह्लादसे बोला ३५ कि हे प्रह्लाद जो अपने अंगसे उत्पन्नहुआहै अर्थात् पुत्र जो दुष्टभी हो तो भी बधकरडालनेकेयोग्य नहीं होता इसीहेतु से आजहमारे कृपाउत्पन्नहुई इससे तुमको मारनहींडाला ३६ इसबातोंको सुनकर बड़ी शीघ्रतासे वहां आकर राजाके पुरोहित लोग सब शास्त्रोंमें विशारद ब्राह्मणलोग जो थे सब हाथ जोड़कर बोले कि हे देव अब रोष न कीजिये आपदयाही करने के योग्यहैं ३७ क्योंकि जैसेही तुम इच्छा करतेहो तीनोंलोक कांपने लगतेहैं फिर इसकेऊपर कोपकरनेसेक्याहै पुत्रचाहे कु-

पुत्रहोजाय पर कुमाता व कुपिता नहींहोते३८ कुटिलमतिवाले उसदैत्यसे ऐसाकहकर वे दैत्य पुरोहितलोग बुद्धिधनवाले उन प्रह्लादजीको दैत्यराजकी आज्ञासे लेकर चलेगये ३९॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२॥

तैंतालीसवां अध्याय॥

दो० त्यैंतालिसयें महँ पिता सुतहि जलहि महँ बोर॥
अपर अनल दाहन प्रमुख किय अभिचार कठोर १॥
असुर सुतन हरिभजनशिष दीन्हीं राजकुमार॥
पूर्व्व जन्मकी निजकथा कही सहित विस्तार २॥

मार्कंडेयजीबोले कि सब कुछ जाननेवाले व अच्युतमें चित्तलगायेहुये प्रह्लादजी गुरुके गृहमेंभी रहतेथे तो इसजगत्को अनन्तमय देखतेहुये बाहरके कार्यों के विषयमें जड़ पुरुषके समान विचरतेथे१एक दिन साथके पढ़नेवाले दैत्योंके बालक जो कि वेदके पढ़ने में निरतरहतेथे सबइकट्ठेहोकर प्रह्लादजी से बोले कि हे धरणीनाथ पुत्र तुम्हारा चरित अति विचित्रहै क्योंकि तुम भोगके लोभी नहींहो २ व तुम अपनेमनमें क्या विचारांशकरके कभी २ शरीरके रोमखड़े करलेते व हर्षितहोजातेहो हे प्रिय यदि यहबात गुप्तरखनेके योग्य न हो तो हम लोगोंसेभी कहो ऐसा कहतेहुये मन्त्रियोंके पुत्रोंसे सबके ऊपर कृपाकरनेके कारण प्रह्लादजी यहबोले कि३ हेदैत्यपुत्रो अच्छा मनकरके सुनो जो हम अनन्य प्रीतिहोकर तुम लोगोंके पूंछने पर कहतेहैं धन जन स्त्री बिलासादिकोंसे मनोहर संसारका जो यह बिभव शोभितहोताहै इसको ४ बिचारो तो भला यहभच्छे ज्ञानियोंके सेवाकरनेके योग्यहै अथवा दूरसे त्याग करने केही योग्यहै उसमें प्रथम तो यह विचारना चाहिये जो कि माताके गर्भमें बसेहुये पुरुष बड़े २ दुःखोंका अनुभव करतेहैं ५ जो कि बनायटेढ़े अंगहोजातेहैं व गर्भकेअग्निसे जलेजा-

तेहैं व अपने विविधप्रकारके पूर्व्वके जन्मोंका स्मरणकरते हैं बस उसका विचार करनाचाहिये६हमने तो इसका विचारकर लियाहै कि जैसें बन्दीगृहमें चोर पकड़ा रहताहै वैसेही हमभी एक प्रकारके चर्म्मसे बँधेथे जिसेजरायु व देशमें ओझरीकहतेहैं सो इसतरह विष्ठा कृमि मूत्रके घरमें पड़ेथे परन्तु गर्भमें भी मुकुन्द भगवान्के चरण कमलोंके स्मरणसे एकही वारका कष्टहमने देखाहै अब न देखेंगे ७इससे गर्भवास करनेवाले को सुखकभी नहीं है व वैसें बाल्यावस्थामें व युवावस्थामें भी नहीं है न वृद्धावस्थामेंही है इसरीतिसे जन्महोना सदा दुःखमयहै सो हे दैत्य पुत्रो भलाज्ञानियोंके सेवाकरने लायक यह कबहै इससे इससंसारमें विचारकरने से हमने देखा तो कहीं सुखके अंशकालेशभी नहीं है ८ जैसे २ अच्छीतरह विचारते हैं वैसे २ अतिशय दुःख समझते हैं इससे देखनेमें तो बहुत सुन्दरपर दुःखोंकी खानिरूप इससंसारमें पण्डितलोग नहीं गिरते ९ किन्तु जो मूढ़तत्व नहीं जानते वेहीनीचे गिरते हैं जैसे देखनेके योग्य लपकें उठतेहुये अग्निमें पतंग गिरते हैं जो सुखकेलिये अन्यशरण न हो तो सुखके समान प्रकाशित संसारमें गिरनायोग्यहै १० क्योंकि जिनको अन्न नहीं मिलता दुर्व्बलहोजाते हैं उनको खरी व बूसीका खानाभी योग्यहै सो क्यों ऐसाकरे श्रीपतिके युगल चरणारबिंदोंके पूजनसे अनन्त आदि अजका मिलना सब सुखोंकामूल तो है ११ सो बिना क्लेशकियेहुये मिलनेके योग्य इसको छोड़कर जो अन्य सुखों को महासुख समझके चाहताहै वहमूढ़ अपने हाथपर धरेहुये राज्यको छोड़कर दीनमन होकर मानोंभिक्षामांगता फिरताहै १२ इससे मनुष्यको चाहिये कि श्रीपतिजीके युगलचरणारबिन्दोंकीपूजाकरे वस्त्र धन व श्रमोंसे अनन्यचित्तपुरुषको क्या है केवल केशव माधवादिनाम उच्चारणकरे १३ इसप्रकार सं-

सारको दुःखमय जानकर हेदैत्य पुत्रो अच्छीतरह हरिको भजो क्योंकि ऐसाकरनेसे नरजन्मका फलपाता है नहीं तो भवसागरमें गिरकर अधोगतिको जाताहै १४ इससे इससंसारमें अपने मनमें शंख चक्र गदा धारणकियें अनन्तदेव स्तुतिकरनेके योग्य नित्य वरदायक मुकुन्दजी का स्मरणकरतेहुये सब अन्य कामों को छोड़ो १५ अये भवसागर में डूबनेवालो हम आपलोगोंसे यह गुप्त पदार्थ कृपासे कहते हैं व अनास्तिकतासे इससे तुमलोग सब प्राणियोंमें मित्र भावकरो क्योंकि ये विष्णु भगवान् सब प्राणियोंमें प्राप्त हैं १६ दैत्योंके पुत्रबोले कि हे प्रह्लाद तुम व हम सब बालभावसे सण्डामर्कको छोड़ अन्य मित्र वा गुरूको नहीं जानते १७ फिर तुमने यह ज्ञान किससे सीखा हमसे सत्य व सारांश कहो प्रह्लादजी बोले कि जब हमारेपिताजी तपकरनेकेलिये बड़ेबनको चलेगये तो १८ इन्द्रने दैत्येन्द्र हिरण्यकशिपुको मृतकजानकर यहां आय उन के पुरको घेरलिया १९ व कामातुर होकर इन्द्र हमारी माता को पकड़कर चलदिये जब इसतरह हमारी माताकोलिये चले जातेथे २० तब हमको गर्भकेभीतरजान देवदर्शन नारदजीने आकर इन्द्रसे बड़े जोरसे कहा कि हे मूढ़ इसपतिव्रताको छोड़दे २१ क्योंकि इसके गर्भमें जो स्थित है वह भागवतों में उत्तम है नारदजी का वहवचन सुनके हमारी माताके प्रणाम करके २२ विष्णुकी भक्तिसे छोड़कर इन्द्र अपने लोकको चले गये व नारदजी हमारी माताको अपने आश्रमपर लिवालाये २३ व हे महाभागो हमारे उद्देशसे हमारी माता को सुनाकर उन्होंने यह सब ज्ञान सिखाया परन्तु बालावस्थामें अभ्यास करनेके कारण हे दानवो हमको अबभी नहींभूला २४ व विष्णुजी के अनुग्रहसे व नारदजीके अपूर्व उपदेशसे किञ्चिन्मात्रभी बिस्मरण नहींहुआ मार्कंडेयजी राजा सहस्रानीकसे

बोले कि एक दिन राक्षस व दैत्योंका स्वामी किसीनष्ट वस्तुके ढूंढ़नेकेलिये गया २५ तो रात्रिमें सुना कि नगरमें सब अपने२ घरमें जयराम इस परम मन्त्रका कीर्त्तन कररहे हैं इसको विचारकरके जाना कि सब हमारे पुत्रका कियाहुआहै वहदानवेश्वर बलवान् तोथाही २६ अपने पुरोहितोंको बुलाकर क्रोधसे अन्धहो दैत्येन्द्रबोला कि रेरेक्षुद्र ब्राह्मणों तुम सब बुद्धि के जाननेवाले होकर अब मूर्खताको प्राप्तहोगये २७ क्योंकि यह प्रह्लाद मिथ्याआलाप करताहै व औरोंकोभी पतितकराताहै इसतरह उनको बहुत अपकार वचन कह राजा घरको चलागया २८ व अपने बधकरानेवाली पुत्रके बधकी चिन्ता उसने न छोड़ी बनाय आसन्नमरण होचुकाथा इससे उसने एककार्य्य करना विचारा २९ जो करनेके योग्य न था उसीके करनेको एकांतमें बुलाकर दैत्यादिकों को आज्ञादी कि आज रात्रिमें सोतेहुये दुष्ट प्रह्लादको बड़े उल्वण ३० नागपाशों से बांधजाकर समुद्रके बीचमें फेंकदो उसकी आज्ञाशिरपर रख उनके निकट जाकर उन्हें देखा ३१ तो उनको रात्रि तो बहुत प्रियथीही इससे एकाग्रचित्त लगाये श्रीविष्णुका ध्यानकरते थे थे जागते परन्तु सोतेहुये के समान स्थित थे व जिन्हों ने राग लोभादि महाबन्धनों को काटडाला था उनको ३२ उन दुष्टराक्षसादिकों ने जाकर छोटे २ सर्प्परूप रस्सों से बांधा व ऐसे बुद्धिहीनथे कि गरुड़ध्वज भगवान्के भक्तप्रह्लादजीको सर्प्पबन्धनोंसे बांध ३३ उन जलशायी श्रीहरिके प्रियको लेजाकर समुद्रमें छोड़दिया व बलवान् तो वे दुष्टदैत्यथेही इसलिये बहुत से पर्व्वत लाकर ऊपर से दबादिये ३४ व आकर यह प्रिय सन्देश राजासे कहा राजाने उनलोगोंका बड़ामान किया व यहां समुद्रके मध्यमें दूसरे बड़वानलके समान ३५ श्रीविष्णु जीके तेजसे प्रज्वलित प्रह्लादजीको मारेभयके घड़ियालआदि

जलजन्तुओं ने छोड़दिया व वे पूर्ण चिदानन्द समुद्रके मध्यमें एकाग्रचित्तहोकर टिकेथे३६इससे उन्होंने जानाहीनहीं कि हम बांधेहुये क्षारसमुद्रकेबीचमेंपड़ेहैं व वहां ब्रह्मरूप अमृतसागरमें प्राप्त मुनिप्रह्लादजीको अपनेमेंस्थितजान३७जैसे दूसरे समुद्र के मिलनेसे एकसमुद्र बढ़ता है वैसेही वह क्षारसागर बढ़ा व मानों बड़े२क्केशोंसे बड़े२ क्केशोंको ऊपरको उछालतीहुई लहरें ३८प्रह्लादजीको किनारेकोलाईं जैसेगुरूके उत्तम वचन शिष्य को भवसागरके पारको लेजातेहैं वैसेही समुद्रकीलहरें प्रह्लाद जीको तीरपरलाईं३९व ध्यानकरनेसे विष्णुभूत श्रीप्रह्लादजी को तीरपर स्थापित करके व विविध प्रकारके रत्नलेकर समुद्र उनके दर्शन को आया तबतक भगवान्‌की आज्ञापाकर प्रहृष्ट हो गरुड़जी ४० सब सर्प्परूप बन्धनोंको खाकर फिर चलेगये तब प्रह्लादसे बड़ीगम्भीर ध्वनिसे समुद्र बोला४१प्रथम दिव्य मनुष्यकारूप धरके प्रणामकिया तब समाधिलगायेहुये हरिके प्रिय प्रह्लादसे उन्होंने कहा कि ४२ हे भगवद्भक्त पुण्यात्मा प्र-ह्लादजी मैं समुद्रहूं इससे अपने दोनों नेत्रोंसेदेखकर आयेहुये मुभ्क अर्थीको पवित्रकरो समुद्रकी ऐसी बाणी सुनहरिके प्रिय महात्माप्रह्लादजी ४३ शीघ्रतासे ऊपरको देख व समुद्रके न-मस्कार करके बोले कि आपकबआये यह सुन समुद्र बोला कि ४४ हे योगिन् आप इसवृत्तांतको नहीं जानते दुष्टअसुरों ने आपकाबड़ा अपराधकियाहै क्योंकि हे वैष्णव तुमको सर्प्पों से बांधकर आज दैत्योंने हममें डालदियाथा४५फिर हमने तु-रन्त आपको तीरपर बैठादियाहै व उनसर्प्पोंकोखाकर महात्मा गरुड़ अभीगये हैं ४६ हे महात्माजी सत्संगके अर्थी मुझपर अनुग्रहकरो व इनरत्नों को ग्रहणकरो क्योंकि हमारे जैसे हरि भगवान् पूज्यहैं वैसेही उनकेदास आपभी पूज्यहैं ४७ यद्यपि इनरत्नोंसे आपका कुछ कार्य्य नहीं तथापि हम देतेहैं क्योंकि

भक्तिमान् पुरुष सूर्य्य को दीप निवेदन करता है उससे उनको कौनसा कार्य्य होता है ४८ आप तो घोर आपदों में विष्णुही से रक्षितहोतेहैं व तुम्हारे तुल्य निर्म्मल महात्मा बहुत नहीं हैं जैसे सूर्य्यएकही होतेहैं४९ बहुत कहनेसे क्याहै जो हम तुम्हारे साथ खड़ेहैं इससे कृतार्थहैं व एकक्षणभरभी आपकेसंग वार्त्ता करतेहैं इसफलकी उपमा और किसीकी नहीं दियाचाहते ५० जबइसप्रकार श्रीभगवान्केवचनोंसे समुद्रने प्रह्लादजीकी स्तुतिकी तो भगवत्प्रिय प्रह्लादजी लज्जितहुये व हर्षित भी हुये ५१ व रत्नोंको ग्रहण करके समुद्रसे बोले कि हे महात्मन् तुम अतिधन्य हो जिसमें हरिभगवान् नित्य शयन करते हैं ५२ व कल्पान्तमेंभी एकार्णवीभूत तुममें सम्पूर्ण जगत्को ग्रसकर जगन्मय जगन्नाथसोतेहैं ५३ हेसमुद्र अब हमनेत्रोंसे जगन्नाथजीको देखाचाहतेहैं तुमतो उनको सदादेखतेहो इससे धन्य हो हमसेभी दर्शनका उपाय बताओ५४ ऐसाकहकर पादोंपर गिरेहुये प्रह्लादजीको उठाकर समुद्रबोला कि हे योगीन्द्र तुम भीतो नित्यअपने हृदयमें श्रीहरिको देखतेहो ५५ जोअब नेत्रोंसे प्रत्यक्ष देखाचाहतेहो तो उन परमेश्वरकी स्तुतिकरो वे तो भक्तवत्सलहैं अवश्य दर्शनदेंगे यहकहकर समुद्र अपनेजलमें पैठगये ५६ समुद्रके चलेजानेपर रात्रिको एकाग्र मनहो अकेलेस्थित होकर उनके दर्शनको असम्भवमानकर भक्तिसे प्रह्लादजी स्तुति करनेलगे ५७ प्रह्लादजी बोले कि सैकड़ों वेदान्तके वाक्य पवनोंसे बढ़ेहुये वैराग्य अग्निकी शिखासे परितप्यमान चित्तको जिसके दर्शनकेलिये योगीलोग संशोधन करतेहैं वह कैसे हमारे नेत्रोंके समक्ष होगा ५८ मात्सर्य्य रोष काम लोभ मोह मदादि अतिदृढ़ इनशत्रुओंसे व ऊपरके नानाप्रकारके दुराचारोंसे अच्छीतरह बँधाहुआ कहां हमारा मन व कहांहरि व कहां हम बड़ाहीअन्तरहै ५९ व जिसको ब्रह्मादिक

देवगण नाना प्रकारके भय शान्तकरने की इच्छासे समुद्र के समीप लाकर उत्तम स्तोत्रों को पाठकरते हुये किसी न किसी प्रकारसे देखतेहैं अहोबड़े आश्चर्य्यकीबातहै कि उन्हींकेदेखने केलिये मेरीआशाहै ६० ऐसा कह व अपनेको परमेश्वरके दर्शनके अयोग्यमानतेहुये व उनके न मिलनेसेहारमान उद्वेगके दुःख समुद्र में मन डूबतेहुये आंशुओंकीधारा बहाते प्रह्लाद मूर्च्छित होकर पृथ्वीपर गिरपड़े ६१ तब हे भूप एकक्षणहीभर में सब कहीं विद्यमान चारभुजाधारणकिये शुभआकृति सज्जनोंके मुख्यप्रिय श्रीहरिजी दुःखमें पड़ेहुये अपने भक्तको अमृतमयहाथोंसे छपटाकर वहीं प्रकटहो आये बाहरेदयानिधान करुणासागर ६२ तब उनके अंगोंके संग से प्रह्लादकी मूर्च्छा जातीरही नेत्रऊपरको उठाया तो देखा कि प्रसन्न मुख कमलदलसमनेत्र आजानुबाहु यमुनानदीके जलकेसमान श्यामदेह कारङ्ग ६३ उदार तेजोमयरूप प्रमाण करने के अयोग्य गदा चक्र शंखकमलोंसे चिह्नित प्रभुको स्थितदेख समालिंगन करके विस्मयमय व हर्ष तीनोंसे कांपनेलगे ६४ उसको स्वप्नही मान व यह भी कि स्वप्नहीमें कृतार्थहरिको देखताहूँ यह विचारतेही अतिहर्षके सागरमें मग्नचित्तहो अपने आनन्द की मूर्च्छाको वे फिर प्राप्तहोगये ६५ तब वैसीही बिना कुछ बिछी हुई भूमिपर बैठकर अपनीगोदमें उनको करके दीननाथ अपने जनोंके मुख्य बन्धु श्रीहरि ने अपने करपल्लवसे धीरे २ प्रवन करतेहुये बार २ चूम्बकर माताकेसमान छातीमें छपटालिया ६६ इसके पीछे बहुत बेरपर प्रह्लादजीने भगवान्जीके सम्मुख नेत्रकरके विस्मययुक्त चित्तसे श्री जगन्नाथजी को देखा ६७ व जाना कि बड़ीबेरसे लक्ष्मीकी गोदमें शयनकरनेवाले महाराज मुझको अपनी गोदमेंलिये भूमिपर बैठेहैं इससे एकाएकी गोदसे उछलकरभय व भ्रमसे युक्तहो ६८ प्रणामकरनेकेलिये

पृथ्वीपर गिरपड़े व प्रसन्नहोओ यह वार २ कहतेरहगये यद्यपि बहुत वेद शास्त्र पुराण जानतेथे पर मारेसम्भ्रमके दूसरी पूजा की उक्तिका कुछ स्मरणही न किया६९तव गदा शंख चक्र धारणकियेहुये श्रीप्रभुने अपने अभय देनेवाले हाथसेपकड़ प्रह्लादको उठाकर वैठाया दयानिधितो उनका नामहीहै क्यों न ऐसा करते ७० करकमलके स्पर्शके आह्लादसे आंशुबहातेहुये व कांपतेहुये प्रह्लाद को समझाते व आह्लादित करतेहुये स्वामी श्रीहरि वोले ७१ कि हे वत्स हमारे गौरव से उत्पन्नभय व सम्भ्रमको छोड़ो भक्तोंमें तुम्हारे समान और हमको प्रिय नहींहै अव अपने अधीन हमको जान प्रार्थना करो ७२ नित्यसव कामोंसे पूर्ण तुम विविधप्रकारके हमारे जन्मोंका कीर्त्तन हमारे भक्तोंको वतातेरहो वताओ इससे अधिक और तुमको क्या प्रिय है वह भी दें ७३ यह सुन चटपटातेहुये नेत्रोंसे भगवान् जीका मुखदेखतेहुये प्रह्लादजी हाथजोड़ श्री विष्णुभगवान् से यह वोले कि७४यहवरदान करनेका कालनहीं है वस मेरेऊपर आप प्रसन्नहों क्योंकि तुम्हारे दर्शनामृतकेस्वादको छोड़ और किसी वरसे हमारा आत्मा नहीं तृप्तहोता ७५ब्रह्मादि देवताओंको बड़ेदुःखसे दिखाई देनेवाले आपको इसप्रकार देखतेहुये मेराचित्त जैसा तृप्तहुआहै ऐसा अयुतोंकल्पोंतक और किसी से न तृप्तहोगा ७६ आतंकसे तृप्तमेरा चित्त आपको देखकर अव और कुछ नहीं मांगना चाहता तव कुछ हँसतेहुयेरूप अमृत समूहोंसे अपने प्रियप्रह्लादजीको प्रिय दृष्टिसे पूरित करते हुये ७७ व मोक्ष लक्ष्मी से योजित करातेहुये जगत्पति उनसे बोले कि हे वत्स हमारे दर्शन से और कुछ तुमको प्रिय नहींहै यह वात सत्यहै ७८ परन्तु हमाराचित्त कुछ तुमको देनाचाहता है इससे हमारा प्रियकरनेकेलिये कुछ वर हमसे मांगो तव धीमान् प्रह्लादजी बोले कि हे देव जन्मान्तरों में भी ७९ हम तु-

म्हारेही दासहोवें जैसे गरुड़जी तुम्हारे भक्तहैं यह सुन नाथने कहा तुम ने यह हमको बड़ा संकटकिया ८० क्योंकि हम चाहतेथे कि तुमको हम अपनेही को देडालें परन्तु तुम सेवकही होनाचाहते हो इससे हे दैत्येश्वरकेपुत्र तुम और वरमांगो ८१ प्रह्लाद फिर भक्तोंके कामदेनेवाले हरिजीसे बोले कि हे नाथ हमारेऊपर प्रसन्नहोओ व तुम्हारी स्थिरभक्ति सदा हममेंरहे ८२ व इसीभक्तिसे सदा तुम्हारे नमस्कार कियाकरें व तुम्हारी स्तुति कियाकरें इसबातको सुनकर सन्तुष्टहुये भगवान् प्रिय बोलनेवाले अपने प्रियसे बोले कि ८३ हे वत्स जो २ तुमको अभीष्टहो वह २ सदाहो सुखीरहो व हमारे अन्तर्द्धान होजाने पर यहां तुम खेदको न प्राप्तहोना हे महामते ८४ क्योंकि तुम्हारे चित्तसे अलग हम कभी न जायँगे जैसे क्षीरसागर में सदा बसतेहैं व दो तीन दिनके पीछे फिर तुम दुष्टके वधकरने मेंउद्यत हमको देखोगे ८५ पर इसस्वरूपसे हम न दर्शनदेंगे बरन अपूर्व दैत्योंको भयभीत करनेवाले नरसिंहरूपसे दर्शन देंगे यहकह प्रणाम करतेहुये व अति लालसा से देखतेहुये८६ व असन्तुष्टही से प्रह्लाद के सम्मुख से श्रीहरि मायासे अन्तर्द्धानहोगये जब बहुतहठसेदेखतेहीरहे व हरि न दिखाईदिये तौ भक्तवत्सलभीहैं तौभी चलेगये ८७ तब हाहा ऐसाकह नेत्रोंसे आंशुबहातेहुये प्रह्लादजीने प्रणामकिया व चारोंओरजागेहुये जनोंका शब्द सुनतेहुये ८८ समुद्रके किनारे से उठकर अपने पुरको चलेगये क्योंकि अबदिन होआया रात्रिजातीरही ८९॥

हरिगीतिका॥

बहु भांति हर्षित दैत्यसुत चहुँ ओर देखत हरिमयी।
अरु मनुज हरि बररूप हरिको स्मरण करत हियेदयी॥
निज गुरुसदन कहँ गयहु पितुगृह गमननहिंकीन्ह्यो तबै।

तहँरह्यहुत्यहिदिनबालकनसँग पढ़नलाग्यहुसोजबै ११०॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषान्तरेप्रह्लादचरितेत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः४३॥

चवालीसवां अध्याय॥

दो० चौवालिसयें महँ कनककशिपु बध्यो जगदीश॥
धरि नरहरितनु करिकृपा पाल्येहु तासुत ईश १॥

मार्कण्डेयजी बोले कि जब प्रह्लाद आये व गुरुसदनमें आकर पढ़तेहुये उन दैत्यों ने देखा जो कि समुद्रमें डालआये थे उन्होंने आय दैत्यराजसे कहा १ प्रह्लादको स्वस्थ आये सुनकरके दैत्यराज विस्मयके मारे व्याकुल हुआ व भरि क्रोधके बोला कि बुलाओ क्यों न बुलाता मृत्युके बशीभूत तो थाही २ वह सुनतेही असुरोंके लायेहुये दिव्य दृष्टिवाले प्रह्लादजी ने देखा कि दैत्येंद्र बैठाहै पर मृत्यु उसके समीप खड़ी है व राज्यश्री बनाय अल्प होगई है ३ भूषण सब नीलकिरणसे मिश्रित माणिक्य की छबिसे आच्छादित होगये हैं व चितारूप ऊँचे आसन पर बैठा हुआ धुआंसे घिरेहुये अग्निके समान दिखाई देताहै ४ व उसके चारोंओर बड़े २ दांतोंवाले अति घोररूप बादरों के समान कालेरंगके व कुमार्ग्ग दिखानेवाले दैत्य यमराजके दूतों के समान घेरेथे ५ ऐसे पिताके हाथ जोड़ प्रणाम करके जब प्रह्लादजी आगे खड़ेहुये तो वह खल बिना कारणही क्रोधकर अपकार वचन कहताहुआ पुत्रसे बोला ६ सो जानो भगवत्प्रिय प्रह्लादजीसे बोला नहीं मानो अपनी मृत्युहीको पुकाराथा कि हे मूढ़ हमारा वचन सुन यह सबसे पिछला वचनहै ७ क्योंकि इसके पीछे अब तुझसे और कुछ न कहेंगे सुनकर जो बाञ्छित होकर ऐसा पुत्रसे कह चन्द्रहास नाम खड्ग खींचकर ८ वाइधर उधर चमकातेहुये उसको सबोंने देखा व वह फिर अपने पुत्रसे बोला कि हे मूढ़ आज तेरा विष्णु कहांहै वह तेरी रक्षा करे ९ तूने कहाथा कि वह सर्व्वत्रहै तो इस खम्भेमें क्यों नहीं

दिखाई देता जो इस समय उस विष्णुको खम्भेके मध्यमें स्थित
देखें तो १० तुझको न मारेंगे व यदि ऐसा न हुआ खम्भेसें तेरा
विष्णु न दिखाई दिया तो अभी तू दोखण्ड होताहै प्रह्लादजीने
भी उसे ऐसा करनेपर आरूढ़ देखकर परमेश्वरका ध्यान किया
११ प्रथमके कहेहुये हरिके वचनका स्मरण करके जोकि कहा
था कि दुष्टके मारनेमें उद्यत हमको तुम दो तीन दिनमें देखोगे
प्रणाम करके दोनों हाथ जोड़े जैसेही हाथ जोड़े हैं कि वैसेही
दैत्यके पुत्र प्रह्लादजीने देखा कि खम्भा हिला व चटचटा शब्द
हुआ १२ व जहां दैत्यने खड्ग मारदियाथा दर्प्पणके आकार
उस खड्ग व खम्भेमें चमकतीहुई प्रभुकी हजारों योजनकी मूर्त्ति
दिखाईदी १३ जो मूर्त्ति अतिरौद्र महाकाय दानवोंको भयंकर
महानेत्र महामुख महाचौहड़ी महालम्बायमान भुज १४ कानों
तक फैलाहुआ मुख इससे अतिही भयंकर महाभारीनख महा-
पाद कालाग्निके समान मुख १५ इस प्रकारका रूप करके न-
रसिंह अर्थात् कटिके ऊपरका तो सिंहका रूप व नीचेका नर
का रूप धारणकिये खम्भेके बीचमें से निकलकर बड़े जोर से
नाद किया १६ नाद सुनतेही दैत्यों ने सब ओरसे नरसिंहजी
को घेरलिया अपने पौरुषसे उन दैत्योंको मारकर १७ हिरण्य-
कशिपुकी सभाको तोड़ मींज मईडाला तब फिर बड़े २ योद्धाओं
ने आकर नृसिंहजी को घेरा १८ हे राजन् उनको तो नरसिंह
जीने क्षणमात्रमें मारडाला तब और दैत्यलोग प्रतापी नरसिंह
जीके ऊपर शस्त्रास्त्र बरसानेलगे १९ परन्तु उन भगवान्‌जीने
एकही क्षणमें अपने पराक्रमसे सब सेना मारडाली व सब दि-
शाओं को शब्दसे भरते हुये बड़े जोरसे गर्जे २० तब खड्ग
हाथोंमेंलियेहुये अट्ठासीसहस्र दैत्योंको भेजा उन्होंने भी आ-
कर सब ओर से उन देवदेवको घेरा २१ फिर भी उन्होंने हिर-
ण्यकशिपुकी सभाको तोड़ मींजडाला उनको मरेहुये जानकर

फिर दैत्यराजने अन्य महासुरोंको भेजा २२ युद्धमें उन सबोंको भी मारकर वे गर्ज्जे उन दैत्योंकोभी मारेहुये जान क्रोधसे लाल नेत्रकर २३ महाबली हिरण्यकशिपु युद्ध करने को निकला व बलसे अहंकारी उन दैत्योंसे बोला कि २४ अरे इसको मारो२ व इसे पकड़ो२ ऐसा कहतेहुये उसके सम्मुखही रणमें महा असुरोंको २५ मारकर नरसिंहजीने बड़ा नाद किया उस नादके सुननेसे जितने दैत्य मारनेसे बचगये थे सबके सबभाग खड़े हुये२६ जब तक नरसिंहजीने इन लाखों किरोड़ों दैत्योंको मारा तबतक सूर्य्य अस्ताचलको गये इससे सन्ध्याहुई २७ तबशस्त्र अस्त्र चलानेमें बड़े चतुर हिरण्यकशिपुको बड़े वेगसे व बलसे पकड़ महाबली नरसिंहजी २८ सन्ध्याके समय गृहकी देहली पर बैठकर अपनी जांघोंपर लिटाय उस शत्रुको २९ नखों से जब कमलकी भँसीड़के समान चीड़नेलगे तब वह महा असुर बोला किमेरी जिस छातीमें लगनेसे इन्द्रके हाथीके मूसलाकार दांत संग्राममें टूटगये व जिसमें लगनेसे महादेवके फरशे की धार गोंठिल होगई वह मेरी छाती आज नरसिंह के नखों से फाड़ीजाती है हाय जब भाग्य दुष्टहोजातीहै तो तृणभी बहुधा बड़े२ बीरोंका निरादर करताहै ३० दैत्येंद्रके ऐसा कहतेही नरसिंहजीने दैत्यराजका हृदय ऐसे फाड़डाला जैसे हाथी कमल के पत्तेको फाड़डाले ३१ जो दोखण्ड उसके शरीरके करडाले वे नरसिंहजीके नखों के भीतर छिपगये ३२ तब तो यह दुष्ट कहांगया यह कह श्रीहरिजी बड़े विस्मितहुये व सब कहीं देख कर कहनेलगे कि यह कर्म्म तो हमारा व्यथाही होगया ३३ हे राजेंद्र यह चिन्तनाकर महाबली नृसिंहजी ने अपने हाथोंको बड़े जोरसे भिंठका तो हे नृप दोनों उसके शरीरके खण्ड ३४ नखोंके छेदसे रेणुके समान पृथ्वीपर गिरपड़े उन्हें देखरोमाञ्चकरके फिर परमेश्वर ठठाकर हँसे ३५ व नरसिंहजीके ऊपर पुष्पोंकी

वर्षा करतेहुये ब्रह्मादिक सब देवगण प्रीतिसंयुक्तहो वहां आये ३६ व आकर महाप्रभु नरसिंहजी की उन्हों ने बड़ी पूजा की व ब्रह्माजीने प्रह्लादजीको दैत्योंका राजा बनाया व सब जनोंकी धर्म्समें तब फिर प्रीतिहुई ३७ हरिजीने सब देवों सहित इन्द्र को स्वर्ग्गमें स्थापित किया व नरसिंह भगवान् सब लोगों के हितके लिये ३८ श्रीशैलके शिखरपर जाय देवताओंसे पूजित हो विख्यात हुये व वहीं भक्तोंके हितके लिये और अभक्तोंके नाशके अर्थ स्थित हुये ३९ ॥

चौ० यह नरसिंह चरितजो पढ़ई। बहुरि सुनैजो जो चित धरई॥ सकल दुरित छूटहिं त्यहिकेरे। नृप भाषेजो चरित घनेरे १।४० नर नारी वा उत्तम येहू। उपाख्यान सुनिहैंकरि नेहू॥ दुःखशोक वैधव्य दुष्टसँग। तुरतहि तिनके छूटत यहि ढँग २।४१ दुराचार दुश्शील दुखारी। दोष कर्म्मकारी अविचारी॥ दुष्प्रज सुनत शुद्ध ह्वैजाई। अरु धर्म्मिष्ठ भोग गणपाई ३।४२ हरिसुरेश नरलोक सुपूजित। नृहरि रूपधरि करिखल भूजित॥ सकल लोकहित यह अवतारा। कनककशिपुजिन कीनसँहारा ४।४३॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेप्रह्लादनरसिंहचरितेहिरण्यकशिपुवध श्चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४॥

पैंतालीसवां अध्याय॥

दो० पैंतालिसयें महँ कह्यो वामनतनु हरिधारि॥
जिमिगे बलिकेयज्ञमहँ लीन्हसकल महिहारि १

मार्कण्डेयजी राजासहस्रानीकसेबोले कि हेराजन् जैसे राजा बलिके यज्ञमें जाकर सहस्रों दैत्योंकोमारा वामनजीका पराक्रम संक्षेप रीतिसेसुनो १ पूर्व्वकालमें विरोचन केपुत्र बलिनेजो कि महाबली व पराक्रमीथे इन्द्रादि देवताओंको जीतकर तीनोंलोकोंका राज्य भोगा २ इससे उनसे पीड़ित सब देवगण

बहुत दुर्ब्बल होगये हे नृपोत्तम इन्द्रको दुर्ब्बल व राज्य रहित देखकर ३ देवताओंकी माता अदितिजी ने बड़ा तप किया व प्रणामकर इष्ट वचनोंसे जनार्दनजी की बड़ी स्तुति की ४ तब स्तुतिसे सन्तुष्टहो देवदेव जनार्दन उनके आगे खड़े हो वचन बोले ५ कि हेसुभगे बलिके बांधनेके लिये हम तुम्हारे पुत्र होंगे यह कह विष्णुजी अपने लोकको चलेगये व अदितिभी अपने घरको चलीगई ६ हे राजन् कुछ कालके पीछे अदितिजीने कश्यपजीसे गर्भ धारणकिया तब विश्वेश्वर भगवान् वामनतनु धारणकर उत्पन्नहुये ७ उनके उत्पन्न होनेपर लोकके पितामह ब्रह्माजीने वहां आकर जातकर्म्मादिक सब क्रियाकीं ८ जब यज्ञोपवीतभी होगया तो सनातनब्रह्म श्रीहरि ब्रह्मचारीका रूप कर अदितिसे आज्ञाले राजाबलिके यज्ञमें गये ९ चलते हुये उनके पादोंके विक्षेपसे सब पृथ्वी चलउठी व बलिदानवके यज्ञ का भाग कोईभी ग्रहण न करनेलगे १० यज्ञके सब अग्नि बुझ गये ऋत्विजोंको सब मंत्र भूलगये यह सब विपरीतता देख महाबल बलि शुक्राचार्य्यसे बोले ११ हे मुनिराज दैत्यादि खीर का भाग क्यों नहीं ग्रहण करते व अग्नि क्यों शान्त होगये व पृथ्वी क्यों चलउठी १२ व ये सब ऋत्विज् लोग मंत्रोंसे कैसे नष्ट होगये जब बलिने ऐसा कहा तो शुक्राचार्य्य बलिसे बोले १३ कि हे बलिजी हमारा वचन सुनो तुमने देवताओंका निरादर कियाहै इससे उन लोगोंको राज्य देनेके लिये अदितिमें अच्युत देवदेव जगद्योनि वामनकी आकृतिसे उत्पन्नहुये हैं वे तुम्हारे यज्ञको आते हैं इसीसे उनके पादोंसे पृथ्वी कांपती है १४। १५ हे असुरनाथ व उन्हींके सम्बन्धसे कोई असुरलोग तुम्हारे यज्ञमें पायसका भाग नहीं ग्रहण करते १६ व तुम्हारे अग्निभी वामनके आगमनसे शान्त होगये हैं व ऋत्विजोंको भी इस समय होमके मंत्र नहीं भासित होते १७ अब सुरोंका

उत्तम ऐश्वर्य्य असुरोंके ऐश्वर्य्यको नष्ट करताहै यह सुन बलि नीति जाननेवालोंमें श्रेष्ठ शुक्रजीसे बोले १८ कि हे ब्रह्मन् हमारा वचन सुनो जब वामनजी यज्ञमें आवेंगे तो श्रीमान् वामनका कौन काम हमको करनाचाहिये १९ वह हमसे कहो हे महाभाग क्योंकि हम लोगोंके परमगुरु तुम्हींहो मार्कण्डेयजी बोले कि जब राजा बलिने शुक्राचार्य्यसे ऐसा कहा तो २० वे बलिसे बोले कि अच्छा अब हमाराभी वचन सुनो देवताओं के उपकारके लिये व आप लोगोंके नाशके लिये २१ तुम्हारे यज्ञमें आते हैं इसमें कुछ संशय नहीं है वरन निश्चयहै इससे जब वामन आवें तो तुम उन महात्माके लिये २२ प्रतिज्ञा न करना कि इतना हम तुमको देंगे शुक्रके ऐसे वचन सुन बलवानों में श्रेष्ठ राजाबलि २३ अपने पुरोहित शुक्रसे शुभवाणी बोले हे शुक्र जब वामनजी हमारे यज्ञमें आजायँगे तो हम मधुसूदनजीका २४ प्रत्याख्यान न करेंगे कि हम तुमको दान न देंगे क्योंकि हमने और लोगोंको कभी दान देनेका निषेध नहीं किया फिर जब विष्णु आपही आवेंगे तो उनको कैसे निषेध करेंगे २५ हे द्विज इससे जब वामनजी यहां आवें तो देखना तुम कुछ विघ्न न करना २६ जो २ द्रव्य वे मांगेंगे सो २ हम उनको देंगे हे मुनि श्रेष्ठ यदि वामनजी आवेंगे तो हम कृतार्थ होजायँगे २७ बलि ऐसा कहतेहीथे कि उनकी यज्ञशालामें वामनजीने आकर बलिके यज्ञकी बड़ी प्रशंसाकी २८ हे राजन् उनको देख राजा बलि एकाएकी उठ खड़ेहुये बड़ीभारी पूजाकी सामग्रीसे पूजाकर यह वचन बोले २९ हे देवदेव जो २ धनादिक हमसे मांगतेहो वह सब हम तुमको देंगे इससे हे वामन हमसे आज जो चाहो मांगो ३० हे राजन् जब बलिने ऐसा कहा तो देवदेवेश श्रीवामनजीने तीनपाय भूमि मांगी ३१ व कहा कि हमको केवल अग्नि बचानेके लिये कुटी बनानी है उसके लिये तीन

पैर भूमि चाहते हैं हमारा धनादिकसे कुछ प्रयोजन नहीं है ऐसा वामनजीका वचन सुन राजावलि वामनजीसे बोले कि ३२ जो तीनहीं पैरसे तृप्तिहै तो हमने तीनपैर भूमिदी जब बलिने ऐसा कहा तो वामनजी बलिसे बोले ३३ कि जो तीन पैर देचुके तो हमारे हाथमें जलदो जब देवदेवने ऐसा कहा तो बलि ३४ जल से भराहुआ सुवर्णका कलशले भक्तिसे उठकर जबतक वामन जीके हाथमें जल दियाचाहैं ३५ कि तबतक शुक्रने सूक्ष्म शरीर धारणकर कलशके भीतर जाकर जलकी धारा रूंधली तब क्रुद्धहो वामनजी ने कुशकी जड़से ३६ कलशके मुखके जलमें बैठेहुये शुक्रकानेत्र फोड़डाला तब एकनेत्रफूटेहुये शुक्र उसमेंसे निकलआये ३७ इसीसमयका किसीकविने एकपद्य बनायाहै ॥

दो० दानदेत यजमानके गई सूमके हूक ।
बलिवामनके दानमें आंखिफुरायो शूक ॥

जबकानेहोकर शुक्रनिकले तो जलकीधारा कलशसे वामन जीके हाथपरगिरी जैसेही हाथपरजलगिराथा कि एकक्षणमात्र में वामनजी बढ़े ३८ यहांतक कि एकही पादसे सब पृथ्वीदबाली व दूसरे से सब अन्तरिक्ष व तीसरेसे स्वर्गलोक ३९ उससमय बहुत दानवलोग युद्धकरनेको उठे उनसबोंकोमार बलिसे तीनोंलोक छीन इन्द्रको त्रिलोकीदे फिर बलिसे बोले कि ४० जिससे तुमने आजभक्ति से हमारे हाथमें जलदानकिया इससे इससमय हमने तुमको उत्तम पातालतलदिया ४१ हे महाभाग वहां जाकर तुम हमारेप्रसादसे भोगकरो वैवस्वतमन्वन्तर बीतजानेपर जब सावर्णिमनु आवेगा तो तुम फिर इन्द्रहोगे ४२ जब वामनजीने ऐसा कहा तो बलिजी उनके प्रणामकर सुतल लोकको गये व वहांकाराज्य भोगनेलगे ४३ व शुक्रभी स्वर्ग कोजाय वामनजीके प्रसादसे त्रिभुवनमें आतेजातेहुये देवरूप हो यहींमें मिलगये ४४ ॥

चौ० प्रातकाल उठिवामन केरी। जो शुभकथा सुनिहिहिय हेरी॥ सर्व्वपाप तजिकै सो प्रानी। विष्णु लोक पाइहि तजि ग्लानी १। ४५ इमिवामन तनुधरि भगवाना। बलिसोंतीन लोकहरिआना॥ शची पतिहि देकीन प्रसादा। जलधिगये हरिकरि शुभनादा २। ४६॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेवामनावतारचरितेपंचचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४५॥

छियालीसवां अध्याय॥

दो० छयालिसयें महँ परशुधर हरिको चरित विचित्र॥
जिनकीन्हीं निःक्षत्रमहि दीन्ह द्विजनगुनि मित्र १

मार्कण्डेयजी बोले कि इसके पीछे परशुरामनाम श्रीहरिका अवतार कहेंगे जिन्होंने क्षत्रियोंका बहुधानाशकरदिया१पूर्व्व कालमें क्षीरसमुद्रके तीरपर जाय देवताओं व ऋषियोंने श्री विष्णुभगवान्की स्तुतिकी तो श्रीहरि आकर जमदग्निमुनिके पुत्रहुये २ व परशुरामकेनामसे प्रसिद्धहो सब लोकोंमें विख्यातहुये ये दुष्टोंको दण्डदेनेकेलिये महीतलमें अवतरे३पूर्व्वकाल में कृतवीर्य्यकापुत्र बड़ाश्रीमान् कार्त्तवीर्य्यनाम महाराजहुआ वह दत्तात्रेयजीकी आराधना करके चक्रवर्त्ती महाराजाधिराज हुआ ४ व वह किसी समय जमदग्निजी के आश्रमपरगया जमदग्निजी उसको चतुरंगिणी सेनासमेत देखकर५कार्त्तवीर्य्य नृपोत्तमसे मधुर वचन बोले कि अब यहां तुम्हारीसेना उतरे क्योंकि तुमहमारे अतिथि होकर आयेहो हमारेदियेहुये बनके फल मूलादि भोजन करके फिर चलेजाना ६ मुनिके वचनके गौरवसे वहां सेनाउतार महानुभाव राजा आपभी स्थितहुआ व राजाका निमन्त्रणकर अलंघ्यकीर्त्तिवाले मुनिने अपनी धेनु को दुहा ७ उसमें से बिबिधप्रकारके हाथियों व घोड़ोंके रहने के व मनुष्योंके रहनेके विचित्र गृह व तोरणादि निकले व राजाओंके योग्य बहुतसे सुन्दर बन पुष्पबाटिकादिभी निकले८

व कई महले बहुत से गृह सब राजयोग्य सामग्री समेत निकले इन सब पदार्थों को दुहकर मुनिराज महाराज से बोले कि हे राजन् तुम्हारे रहनेकेलिये गृहबनायाहै इसमें प्रवेशकीजिये ९ व तुम्हारे ये सब श्रेष्ठ मन्त्र्यादिक इन दिव्यगृहों में निवासकरें व हाथी गजशालाओंमें घोड़े बाजिशालाओंमें बँधें भृत्यलोग इनछोटे २ गृहोंमें रहें १० ऐसा जैसे मुनिने कहा है कि सबसे उत्तम मन्दिरमें तो राजाने प्रवेशकिया व और लोग अन्यगृहों में उतरे तब फिर मुनि राजा से बोले कि ११ हे राजन् तुम्हारे स्नानकरानेकेलिये ये सौस्त्रियां हमने उत्पन्नकी हैं इससे यथेष्ट यहां तुम स्नान करो जैसे स्वर्गमें गीत नृत्यादिकोंकेसाथ इन्द्रस्नान करते हैं १२तब राजा ने इन्द्रके समान गीतादिकों व मधुर बाजाओंके साथ स्नान किया जब राजा स्नानकरचुका तो मुनिने राजाके योग्य दो अत्युत्तम विचित्र वस्त्रदिये १३ एक को पहिनकर व दूसरे को उत्तरीय अर्थात् अँगौछाबनाकर सन्ध्यातर्पणादिक्रियाकर राजाने श्रीविष्णुजी कीपूजाकी इतनेमें मुनिने नानाप्रकारका अन्नमय पर्वत उसमें से दुहा वह राजा व उनके भृत्योंको यथोचित दिया १४ जब तक राजा भोजन करचुके तबतक सूर्य्य अस्तहुये फिर रात्रिमें मुनिके बनायेहुये गृहमें राजा नृत्यगीत देखता सुनता हुआ शयनकररहा १५ जब प्रभातकाल हुआ तो यह सब स्वप्नके तुल्यहोगया केवल एक भूमिका भागरहगया उसेदेख राजाने बड़ी चिन्ताकी १६ यह महात्मा मुनिके तपकी शक्तिहै वा इस धेनुकीहै यह अपने पुरोहितसे पूँछा १७ जब कार्त्तवीर्य्यने पुरोहितसे ऐसा पूँछा तो पुरोहित उससे यहवचन बोला कि मुनि को भी ऐसीसामर्थ्य है परन्तु यह सामर्थ्य इसधेनुकी है १८ तथापि राजन् मारेलोभके देखना यहधेनु न हरलेना क्योंकि जो कोई उसके हरनेकी इच्छाकरे उसका नाश अवश्यहोजाय१९

इसबातको सुनकर सबसे श्रेष्ठमन्त्री राजासे बोला कि ब्राह्मण ब्राह्मणका प्रिय करते हैं इससे यह ब्राह्मणभी अपने पक्षका पालनकरने के कारण राजकार्य्य नहीं देखता २० हे राजन् कलसे व अवतक तुम्हारे पास नानाप्रकारकी सामग्री समेत गृहथे व सुवर्णके सब पात्र व शय्यादिकभी थे नानाप्रकार की स्त्रियांथीं २१ वे सब इसीधेनुमें लीनहोगये इससे इसीमेंहैं हम लोगोंने देखाहै इससे यह उत्तमधेनु आप अपने यहां लेतेचलें २२ क्योंकि राजेंद्र यह तुम्हारेही योग्यहै जो इच्छाहो तो हम मुनिकेयहां जाकरलावैं केवल आपकी आज्ञाहोनीचाहिये२३ जब मन्त्रीने राजासे ऐसा कहा तो राजाने कहा अच्छाधेनुले-आओ मन्त्रीने वहां जाकर धेनुके हरनेका आरम्भ किया २४ जमदग्निजीने उसमंत्रीकोरोंका तब उसने कहा कि हे ब्रह्मन् यह राजाकेही योग्यहै इससे राजाकोदेदो २५ तुम तो शाकफल का आहारकरतेहो धेनुसे तुम्हाराकौन प्रयोजन है इतना कह बलसे धेनुको पकड़कर मंत्रीने लेचलने का विचार किया २६ तब मुनि व मुनिकी स्त्रीनेभी राजाकोरोंका तब उसदुष्ट मन्त्रीने मुनिको मारकर २७ उस ब्रह्मघातीने धेनुको लेजानाचाहा कि इतनेमें धेनुपवन होकर स्वर्गको चलीगई व वहलोभी राजा अपनी माहिष्मती पुरीको चलागया २८ व मुनिकी स्त्री बड़े दुःखसे पीड़ितहो बार २ रोदनकरतीहुई अपनी छाती इक्कीस बार उन्होंने पीटी२९ इसको सुनबनसे पुष्पादिकलेकर परशु-रामजीआये व परशालियेहुये अपनी मातासेबोले ३० कि हे अम्ब अब छाती पीटनेसे कुछ नहीं है हमने कारणसे जानलि-याहै इससे उसदुष्ट मन्त्रीवाले कार्त्तवीर्य्यको मारडालेंगे ३१ जिससे कि तुमने इक्कीसबार अपनी कुक्षिपीटीहै इससे हमइ-क्कीसबार तक पृथ्वीपरके सब राजाओंको मारडालेंगे ३२ इस प्रकार प्रतिज्ञाकर व परशाले परशुरामजी माहिष्मती पुरीको

गये व पहुँचतेही राजा कार्त्तवीर्य्यको पुकारा ३३ वह युद्धकरने के लिये इक्कीस अक्षौहिणी सेनालेकर निकला इस लिये इस का व परशुरामजीका बैर व रोमहर्षण युद्धहुआ ३४ यहयुद्ध मांस भक्षण करनेवालों को अति आनन्द देनेवाला हुआ व नानाप्रकारके शस्त्रास्त्रोंकी गचापचीहुई तब परशुरामजीने महाबल पराक्रम धारणकिया ३५ क्योंकि वे तो परंज्योतिअद्वी- नात्मा विष्णुथे केवल कारणकेलिये मनुष्य मूर्त्तिको धारणकिये थे इससे अनेक क्षत्रियोंसमेत सब कार्त्तवीर्य्यकी सेना इक्मार व भूमिमें शिराकर परमअद्भुत विक्रमवाले परशुरामजीने कार्त्तवीर्य्यके बाहुओंकावन मारे रोषके काटडाला बाहुवनके कट जानेपर भार्गवजीने उसका शिरभी काटडाला ३७ विष्णुजी के हाथसे बधको प्राप्तहो चक्रवर्ती वह राजा दिव्यरूप धारण कर श्रीमान् दिव्यगन्ध अनुलेपन कियेहुआ ३८ दिव्य विमानपरचढ़ विष्णुलोक को गया व महाबली व महापराक्रमी परशुरामजीने भी मारेक्रोधके ३९ इक्कीसबार तक पृथ्वीपरके राजाओंको मारडाला इससे क्षत्रियोंका बधकरने से भूमिका भार उतारडाला ४० व सब पृथ्वी महात्मा कश्यपजीकोदेदी यह परशुरामजीके अवतारकी कथाहमने कही ४१॥

चौ० जो यहि सुनिहि भक्तिसों प्राणी। मंत्र अरु कर्म्म सहित निजवाणी॥ करिपवित्र तजि पापसमूहा। हरिपद लहिहि नयामहि ऊहा १।४२ इमि महिलहि अवतार महाप्रभु। इक्कइसवार हते क्षत्रिय विभु॥ क्षात्रतेज हति अबहूँ बिराजत। गिरिमहेन्द्रपर रामसुभ्राजत २।४३॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेपरशुरामप्रादुर्भावोनाम षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

सैंतालीसवां अध्याय॥

दो॰ सैंतालिसयें महँ कहनलग्यो मुनीश विचारि॥
रामचन्द्रकर विशदयश सुनतपढ़त अघहारि१
बालकाण्डकी सबकथा क्रमसों यामहँ नीक॥
कही जन्मसों व्याहिचर फिरआये तकठीक २

श्रीमार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन् जिन परमेश्वरने मनुष्य का अवतारले देवताओंके शत्रु सहित परिवार रावणको मारा उनके जन्मकी अति शुभकथा कहते हैं सुनो १ ब्रह्माजीके मानसी पुत्र पुलस्त्यजी हुये उनके विश्रवस नाम पुत्रहुये उनके एक राक्षस पुत्रहुआ २ जिसका लोगोंके रोदन करानेवाला रावण नाम हुआ वह बड़ा तपकर बरपाय सब लोकोंमें गया ३ व उसने इन्द्र सहित सब देवता गन्धर्व किन्नर यक्ष दानव मनुष्यादिकोंको युद्धमें जीतलिया ४ व उस दुष्टने देवादिकोंकी जितनी सुरूपवती स्त्रियांथीं सबको हरलिया व उन देवादिकों के बिबिधप्रकारके रत्नभी हर लिये ५ व बलसे महाअहंकारी उस रावणने युद्धमें कुबेरजीको जीतकर उनकी लंका नाम पुरी व पुष्पक नाम विमान छीनलिया ६ उस पुरीमें रावण सब राक्षसोंका स्वामी होकर रहनेलगा उसके अमित पराक्रमी बहुत से पुत्र उत्पन्न हुये ७ व महाबल पराक्रमवाले राक्षस लोग जो लंकामें बसतेथे व अनेक कोटियेवे रावणका आश्रयण करके ८ देवता पितर मनुष्य विद्याधर व यक्षादि बहुतोंको दिनरात्रिमें मारडालनेलगे ९ यहां तक कि उनके भयसे चरअचर सब जगत् अत्यन्त दुःखित हुआ १० उसी कालमें इन्द्रादि देवता महर्षिलोग सिद्ध विद्याधर गन्धर्व किन्नर ११ गुह्यक नाग यक्ष व और भी जो स्वर्गवासी थे सबके सब ब्रह्माजीको व महादेव जीकोभी आगेकर १२ हतविक्रमवाले वे लोग क्षीरसागरके तटपरगये व वहां श्रीपरमेश्वरकी आराधना करके हाथ जोड़

खड़ेहुये १३ तब ब्रह्माजी श्रीविष्णु भगवान्‌की पूजा गन्ध पुष्प धूपादिकोंसे कर हाथजोड़ प्रणामकरतेहुये श्रीनारायणजी की स्तुति करनेलगे १४ ॥

ब्रह्मोवाच ॥ चौ० ॥ क्षीरजलधि बासीभगवाना। नागभोगशायी गुणवाना ॥ कमलाकर लालित पदपंकज। नमोनमो अवकरत तुम्हें अज १।१५ योमान्तर्भावित भगवन्ता। योगनिद्रगत विष्णुअनन्ता ॥ गरुड़ासन गोविन्द सुदेवा। नमत तुम्हेंकरिकै बहुसेवा२।१६क्षीरोदधि कल्लोललग्नतन। शार्ङ्गपाणिपंकज पदगतमन॥ पद्मनाभ श्रीविष्णुतुम्हारे। नमोनमोहम करतपुकारे३। १७भक्तार्चितपद सुनयन माधव। योगप्रियशुभांगअवमामव ॥ नमोनमो हमनमोमुरारे। करततुम्हेंवचदीन उंचारे४।१८सुकचसुनेत्र सुमस्तकचक्री। सुमुखसदा कबहूंनहिं वक्री॥ श्रीधरसुन्दर वर्णतुम्हारे। नमोनमो है दीनउधारे ५।१९ सुभुज सुगण्ड सुकण्ठ सुनाभा। पद्मनाभ शुभवक्ष सदाभा॥ करत प्रणाम जोरि युगपानी। विनय करन हम बहु नहिंजानी ६।२० चारुदेह शार्ङ्गी भ्रुकुटीवर। चारुदन्त केशव जनदखहर॥ चारुजंघ अरु दिव्यस्वरूपा। तवपद नमत सकलसुरभूपा ७।२१ सुनख सुशांत सुविद्याधारी। गदापाणि वामन तनुकारी॥ देव धर्म्मं प्रिय बारम्बारा। करत प्रणति यहअनुग्रहतुम्हारा ८। २२ उग्रअसुर नाशक राक्षसहर। देवदुःख नाशनकरुणापर॥ भीमकर्म्मकारी भयहारी। तुम्हें नमत हमदीन पुकारी ९। २३ रावणनाशक लोकसुपाली। सकल असुर राक्षस जिनघाली॥ करत प्रणाम तिन्हें हमनीके। सकलमर्म्म जानतजोजीके १०।२४॥

मार्कण्डेयजी बोले कि जब ब्रह्माजीने ऐसी स्तुतिकी तो श्रीभगवान् करुणानिधान सन्तुष्टहुये व अपनारूप दिखाय ब्रह्माजीसे बोले कि हे पितामह देवताओं के साथ तुम किस अर्थ

आये २५ हेब्रह्मन् जिसकार्य्य केलिये तुमने स्तुतिकी वहका-र्य्य बताओ जब देवदेव प्रभ विष्णु श्रीविष्णुजीने इसप्रकार से कहातो २६ सब देवगणोंकेसाथ ब्रह्माजी जनार्दनजीसे बो-ले कि दुष्टात्मा रावणने सब जगत्का नाश करडाला २७ उस राक्षसने इन्द्रादि देवताओंको अनेकवार पराजितकरलिया व राक्षसोंने बहुतसे मनुष्योंका भक्षण करलिया व यज्ञसब दूषि-त करडाले २८ व बलसे उसनेसहस्रों लक्षों देवकन्या हरलीं इससे हेकमलनयन आपको छोड़ और किसीकी सामर्थ्य रावण के मारनेकी २९ नहीं है क्योंकि अन्यदेव इसविषयमें असम-र्थहोचुके हैं इससे आप उसका बधकरें जबब्रह्माजीने ऐसाकहा तो श्रीविष्णु भगवान् ब्रह्मासे यहबोले कि ३० हे ब्रह्मन् एका-ग्रमनहोकर जो हमकहतेहैं सुनो सूर्य्य बंशमें उत्पन्न अतिवीर्य्य वान् श्रीमान् पृथ्वीपर एक महाराज ३१ दशरथनामसे प्रसि-द्धहैं हम उनके पुत्रहोंगे व हम तो आपहोहोंगे अपने तीनअंश औरभी संगलेजायँगे क्योंकि दुष्ट रावणको मारनाहै ३२ परंतु तुम सब देवगणभी अपने २ अंशोंसे वानररूप होकर पृथ्वी पर अवतारलो तब रावणका नाशहोगा ३३ जब देवदेव श्री-विष्णुभगवान्जीने ऐसाकहा तो लोकके पितामह ब्रह्माजी व सबअन्य देवगण प्रणाम करके सुमेरुपर्व्वत परको चलेगये ३४ व अपने २ अंशोंसे वानररूपहो सबपृथ्वीपर उत्पन्नहुयेव महाराज दशरथजीके कोईपुत्र नहींथा इससे उन्होंने वेदपार-गामी मुनियोंसे ३५ पुत्र प्राप्तहोनेके लिये पुत्रेष्टियज्ञ कराया तब सुवर्णकेपात्रमें पायस लेकर ३६ श्रीविष्णुजीकी प्रेरणासे अग्नि कुण्डसे निकला मुनियोंने वह पायस लेकर मंत्रपढ़कर दोभाग समानकरडाले ३७ व मंत्रसे मन्त्रित दोनोंपिण्ड कौ-सल्या व कैकेयीनाम महाराजकी स्त्रियोंकोदिये व पिण्डखाने के समयमें उनदोनों महारानियोंने सुमित्राको ३८ अपने २

पिंडोंसे थोड़ा २ निकालकरदिया क्योंकि वे भी सुन्दरभागपाने की अधिकारिणीथीं इसरीतिसेदेले उनराजपत्नियोंने अपने २ भाग भोजनकिये ३९ सो देवदेव श्रीविष्णु भगवान्‌जीके किये हुये निन्दारहित उनपिण्डोंको खाकर वे तीनों महारानियां गर्भवतीहुईं इसप्रकार श्रीविष्णु भगवान् दशरथजीसे उनतीनों स्त्रियोंमें उत्पन्नहुये ४० हे जगतीनाथ अपनेरूपसे एकसाक्षात् आपही व तीन अंश और ये सब चाररूप प्रकटहुये उनकेनाम रामचन्द्र लक्ष्मण भरत व शत्रुघ्न ये चारहुये ४१ वसिष्ठादि मुनियोंने चारोंमहाराज कुमारोंके संस्कार वेद विधिसेकिये व मन्त्रपिण्डके अनुसार चारों महाराज कुमार विचरनेलगे ४२ जैसे कि श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी ये दोनोंजन तो नित्य एकसंग विचरतेथे व भरत शत्रुघ्न ये दोनोंप्रायः एकसंगरहतेथे जब इनके जन्मादि सब संस्कारहोगये तो अपने पिताके बड़े प्रीतिकारकेहुये ४३ व वेद शास्त्रादि पढ़कर सुलक्षण तथा महा वीर्य्यवाले होकर बड़ेहुये उनमें कौसल्याजीसे तो श्रीरामचन्द्र जीहुये व कैकेयीसे भरत व लक्ष्मण शत्रुघ्न दोनों सुमित्रामेंहुये भरत व शत्रुघ्नका श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मणका एकसंगरहनेका यहीकारणथा कि कौसल्याजीने जो खीर सुमित्राजीकोदीथी उससे लक्ष्मणजी व जो कैकेयीनेदीथी उससे शत्रुघ्नजीहुयेथे ४४ इन सब महाराज कुमारोंने वेदशास्त्र व शस्त्रशास्त्र अच्छे प्रकार पढ़े थे उसी कालमें महातपस्वी विश्वामित्रजीने ४५ विधिपूर्वक यज्ञसे श्रीविष्णु भगवान्‌की पूजाका आरम्भकिया पर राक्षसोंने उसयज्ञमें बहुतबार बड़े २ विघ्नकिये ४६ इस-लिये यज्ञकी रक्षाकरानेको रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीके लेजाने केलिये विश्वामित्रजी अयोध्याजीमें आये व हे नृप श्रेष्ठ उनके पितादशरथजीके शुभमन्दिरमें आये ४७ व महामतिवाले दश-रथजीने उनको आयेहुये देख उठकर आदरसे बैठाकर उनकी

अर्घ्य पाद्याचमनीयादिसे बड़ी पूजाकी ४८ जब मुनिराज प्र-
जानाथसे विधिपूर्वक पूजितहुये तोराजाके वनाय निकटजाय
राजासे बोले कि हे महाराज दशरथजी हम जिसलिये आये हैं
सुनो ४९ हे नृप शार्दूल वह कार्य्य तुम्हारे आगेकहते हैं दुष्ट
राक्षसोंने हमारा यज्ञ बहुतबार नष्ट भ्रष्टकरडाला ५० सोयज्ञ
की रक्षाकरनेकेलिये राम लक्ष्मण दोनों अपने पुत्रोंको हमें दो
तब राजा दशरथजी विश्वामित्रका वचनसुन ५१ बहुत उदा-
सीनहो विश्वामित्रजीसेबोले किहमारे इनबालक पुत्रोंसेतुम्हारा
कौन कार्य्यहोगा ५२ हम तुम्हारे साथ चलकर अपनी शक्ति
से तुम्हारे यज्ञकी रक्षाकरेंगे राजाके वचनसुन राजासे मुनिजी
बोले ५३ हे राजन् श्रीरामचन्द्र सबको नाशकरसक्ते हैं इससे
वे राक्षस रामचन्द्रहीके मारनेके योग्यहैं व तुम्हारे मारे वे रा-
क्षसनहीं मरसक्ते ५४ इससे हमको श्रीरामचन्द्रकोदेदो आप
चिन्ताकरनेके योग्य नहीं हैं जब धीमान् विश्वामित्र मुनि ने
ऐसा कहा तो राजा एक क्षणभर मौनरहकर फिर विश्वामित्र
जीसेबोले कि ५५ हे मुनिश्रेष्ठ जो हमकहते हैं प्रसन्नहो आप
सुनें हम तो कमलनयन रामचन्द्र को उनके भाईसहित आप
कोदेंगे ५६ किन्तु हे ब्रह्मन् इनकी माताबिना इनके देखेमरजा-
यगी इससेहम चतुरंगिणी सेनालेकर ५७वहांआय सबराक्षसों
को मारेंगे यहबात हमारेमनमें स्थितहै विश्वामित्रजी अमित
पराक्रमी राजादशरथजीसे फिरबोले कि ५८ हे नृपश्रेष्ठ रामचंद्र
अनारी नहीं हैं किन्तु ये सर्व्वज्ञ समदर्शी व सब कुछकरनेमें
समर्थहैं क्योंकि ये दोनोंजने श्रीनारायण व शेषनागजी हैं
तुम्हारे पुत्रहुये हैं इसमें कुछ भी संशय नहीं है ५९ हे राजन्
न इनकी माताको शोककरनाचाहिये न तुम्हींको थोड़ाभी शो-
ककरना चाहिये क्योंकि हम जितने कार्य्यके लिये लियेजाते हैं
उसके होजानेके पीछे फिर तुमको सौंपजायँगे जैसे कोई किसी

की थाती धर रखताहै व उसके मांगनेपर तुरन्त देदेताहै ६० जब धीमान् विश्वामित्रजीने ऐसा कहा तो मनमें उनकेशापसे डरकर राजादशरथजीने कहदिया कि अच्छालेजाओ ६१ इस रीतिसे बड़े कष्टसे जब दशरथजीने रामचन्द्रजीको छोड़ा तो लक्ष्मण सहित रामचन्द्रजीकोले विश्वामित्रजी अपने सिद्धा-श्रमनाम स्थानकोचले ६२ उनको चलतेहुयेदेख राजादशरथ जी बहुत दूरतक पीछे २ जाकर मुनिसे फिर बोले कि ६३ हे ब्रह्मन् हम प्रथम अपुत्रथे फिर बहुतसे काम्य कर्म्मोंके करने से व मुनिकेप्रसादसे अब पुत्रवान्हुये हैं ६४ इससे मनसेभी इनका वियोग हम नहींसहसक्ते इसबातको आप अच्छीतरह जानतेहैं इससेलिये तोजातेहो पर शीघ्रही हमको देजाइयेगा ६५ जब ऐसा राजा ने कहा तो विश्वामित्र जी फिर राजा से बोले कि जैसेही यज्ञसमाप्त होजायगा वैसे रामचन्द्र व लक्ष्म-णको हम फिर पहुँचाजायँगे ६६ यहबात सत्यताके साथ प्रति-ज्ञाकरके कहतेहैं आपचिन्ता न करें जब मुनिने ऐसा कहा तो राजाने रामचन्द्र व लक्ष्मणको भेजा ६७ परन्तु इच्छासे नहीं भेजा मुनि के शापकेही भयसे भेजा तब विश्वामित्र जी दोनों जनोंको लेकर अयोध्याजीसे धीरे२चले ६८ व सरयूजीके तीर परजाय जब विश्वामित्रजी अकेलेरहगये तो दोनों जनोंकोदो विद्यामुनिनेदीं ६९ एक विद्याका बलानामथा दूसरीका अति-बला सो मंत्रसहित व संग्रहसहितदीं इनदोनों विद्याओंमें यह गुणथा कि पढ़लेवाले को क्षुधा पिपासा कभी नहीं लगती थी उनके पीछे फिर भी उनमहामति ७० मुनिराजने बहुतसे अस्त्र समूह सिखाये व मार्ग्गमें बड़े२ मुनियोंके बहुतसे दिव्यआश्र-मदिखाते ७१ हुये व उनमें बसतेहुये व बाजे पुण्यस्थानों को दिखातेहीहुये गंगाजीको उत्तर शोणभद्र नदके पश्चिमकेतट पर पहुँचे ७२ इसप्रकार सिद्ध धर्म्मात्मा मुनियोंको देखतेहुये

व उनसे आशीर्व्वाद व बरपातेहुये रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी मुनिकेसाथ गये ७३ जाते२ मानों मृत्युका दूसरा मुखहीथा ऐसे ताटकानाम राक्षसीके वनमें पहुँचे तब महातपस्वी विश्वामित्र जी७४सबकर्मसहजहीमें करनेवाले श्रीरामचन्द्रजीसे यहवचन बोले कि हे राम हे राम हे महाबाहो ताटकानाम राक्षसी ७५ रावणकी आज्ञासे इसमहावनमें बसतीहै उसने बहुतसे मनुष्य मुनियोंकेपुत्र व स्वर्गोको ७६ मारडाला व भक्षणकरलियाहै इ-ससे हे सत्तम इसेमारो जब मुनिने ऐसा कहा तो श्रीरामचन्द्र जी उनमुनिसे बोले ७७ कि हे मुनिराज हम स्त्रीकावध कैसेकरें क्योंकि स्त्रीकेवधमें बुद्धिमान्लोग बड़ापाप कहते हैं ७८ राम-चन्द्रजीका ऐसा वचन सुन विश्वामित्रजी उनसे बोले कि हे रामचन्द्र जिसस्त्रीके बधसे सबजन व्याकुलतारहित ७९ होते हैं इससे उसका बधकरना निरन्तर पुण्यदायकहोताहै विश्वा-मित्रमुनि ऐसा कहतेही थे कि इतनेमें वह महाघोर निशाचरी ८० मुखबायेहुई ताटका आयहीगई मुनिसे प्रेरित श्रीरामचन्द्र जीने उसे ८१ एकहाथ उठाये आतीहुई व पश्चाद्भागमें पुरुष के आंतकी क्षुद्रघण्टिका पहिने व मुहबायेहुई देख स्त्रीकेबधमें घिनघिनाहट व बाणको साथही छोड़ा ८२ व बड़े वेगसे शर धन्वापर सन्धान करके उन्होंने उसकीछाती के दो खण्डकर डाले इससे हे राजन् वह गिरी व मरभीगई ८३ उसे इसरीति से मरवाकर व दोनोंजनोंको लिवालेकर मुनिजीने उनको ना-नाऋषियोंसेसेवित ८४नानाप्रकारके वृक्षलताओंसे भराहुआ नानाप्रकारके पुष्पोंसे उपशोभित नानाप्रकारके झरनोंके जल से युक्त विन्ध्याचलके बीचमें स्थित ८५ शाकमूलफलोंसेयुक्त दिव्य अपने सिद्धाश्रम पर पहुँचाया व रक्षाकेअर्थ उनदोनों जनोंको स्थापितकर व अच्छेप्रकार सिखाकर ८६ उसके पीछे विश्वामित्रजीने यज्ञकरने का प्रारम्भकिया जब महात्मा व म-

हातपस्वी विश्वामित्रजी यज्ञकर्म्मकी दीक्षामें प्रविष्टहुये ८७ व यज्ञकर्म्मफैला ऋत्विज् लोग कर्म्मकरनेलगे कि वैसेही मारीच व सुबाहु तथा और भी बहुतसे राक्षस ८८ रावणके भेजे हुये यज्ञनाशकरनेके लिये आये उनको ध्यायेहुये ज्ञान कमल लोचन श्रीरामचन्द्रजीने ८९ बाणसे सुबाहुको तो मारकर धरणीपर गिरादिया व रुधिरकीधारा बरसातेहुये मारीचको बिना गांसीके बाणसे ९० मारकर समुद्रमें जा गिराया जैसे पत्तेको पवन उड़ाकर स्थानन्तर में गिराता है व और निशाचरों को भी रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीने मारडाला९१ इसप्रकार रामचन्द्रजी से यज्ञकीरक्षापाय विश्वामित्रजी ने विधिपूर्व्वक यज्ञ समाप्तकर ऋत्विजों की पूजाकी ९२ व सदस्योंकी भी पूजा यथोचितकरभक्तिसे श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीकीभीपूजाकी ९३ तब देवगण यज्ञकेभागसे सन्तुष्टहो श्रीरामदेवके शिरपर पुष्पोंकी वर्षा करनेलगे ९४ तब भ्रातासहित श्रीरामचन्द्रजी राक्षसोंसे उत्पन्नभय निवारणकर व उसयज्ञको कराय नानाप्रकारकी कथा सुन ९५ विश्वामित्रजी के साथ वहां पहुँचे कि जहां अहल्याथी जिसे कि इन्द्रके संग व्यभिचारकरनेके कारण उसकेपतिने पूर्व्वकालमें शापदियाथा९६व इससे वह पाषाण होगई थी रामचन्द्रजीके दर्शनसेव उनके चरणकीधूलिके परने से वह अहल्याशाप से छूट अपने पति गौतमजी को फिर प्राप्तहुई ९७ वहां पर विश्वामित्रजी ने एकक्षणभर चिन्तना करके यहविचारा कि हमको चाहिये कि रामचन्द्रजीका विवाह कराके तो इनकमललोचनकोपहुँचावें९८यहविचारकर उन दोनों भाइयोंकोले व बहुतसे शिष्यगणोंके संग विश्वामित्रजी जनकपुरीकोचले ९९ व नानाप्रकार के देशमार्गमें नांघतेहुये राजाजनकजीके स्थानपरपहुँचे वहां बड़े२ राजपुत्र सीताजीके पानेकीइच्छासे प्रथम आचुकेथे १०० उनकोदेख जो जिसकेयो-

ग्यथा उसकी वैसीपूजाकर राजाजनकजीने जो सीतासे अर्थात् हलकेकूँडसे महादेवजीका बड़ाभारीधन्वा उत्पन्नहुआथा १०१ उसे चन्दन मालादिकोंसे पूजितकर परमशोभा युक्त बड़े भारी रंगभूमि स्थानमें स्थापित कराया १०२ व राजा जनक बड़ेऊँचे स्वरसे उन राजाओंसे बोले कि हे राजपुत्रो जिसके खींचनेसे यह धन्वा टूटजायगा १०३ धर्म्मसे उसीकी भार्य्या सर्व्वांग शोभन सीता होगी जब उन महात्मा जनकजीने ऐसा सुनाया तो १०४ सब अपनी २ पारीपर आय२ धन्वापर प्रत्यञ्चा चढ़ाने लगे पर हे राजन् सबके सब उस धनुषसे ताड़ित होहो १०५ घूम२ लज्जारहित होकर राजा लोग पृथ्वीपर गिर२ पड़े उन सबोंके भागजानेपर वह महादेवजीका धनुष १०६ संस्थापन्न कर राजाजनक श्रीरामचन्द्रजीके आगमनकी इच्छासे स्थित थे इतनेमें विश्वामित्रजी मिथिलेश्वरके स्थानपर पहुँचे १०७ जनकजीनेभी रामचन्द्र व लक्ष्मण समेत व ऋषियोंके संग विश्वामित्रजीको आयेहुये देख १०८ विधिपूर्व्वक पूजाकर विप्रों के अनुयायी विश्वामित्रजीसे राजाजनक बोले व रघुबंशके पति सुन्दरतादि गुणोंसे संयुक्त १०९ शील सदाचारादि गुणोंसे युक्त रामचन्द्रजी व महामति लक्ष्मणजीकी भी पूजा यथोचित करके प्रसन्न मनहो राजाजनक ११० सोनेकी चौकीपर बैठेहुये चारों ओरसे शिष्योंसे घिरे विश्वामित्रजीसे बोले कि हमको इससमय क्या करनेकी आज्ञाहै १११ मार्कण्डेयजी राजा सहस्रानीकजी से बोले कि उनका ऐसा वचन सुन मुनिजी राजासे बोले कि हे महाराज ये रामचन्द्रजी साक्षात् विष्णुहैं व महीपति होकर ११२ देवताओं व सब लोकोंकी रक्षा करनेके लिये राजा दशरथजीके पुत्र हुये हैं इससे देवकन्याके समान स्थित अपनी सीतानाम इनकोदो ११३ व तुमने इस अपनी कन्याके बिवाहमें महादेव के धनुष के भंग कराने की प्रतिज्ञा की है इससे शिवका धन्वा

मँगाओ व उसकी पूजाकरो ११४ बहुत अच्छा ऐसा कह राजा ने बहुत राजपुत्रोंके बलके भंग करनेवाला अद्भुत शिवका धन्वा पूर्व्वरीतिके अनुसार स्थापित कराया ११५ तब महाराज द-शरथजीके पुत्र कमललोचन श्रीरामचन्द्रजी विश्वामित्रजी के कहनेसे उन सब लोगोंके मध्यमें उठकर ११६ ब्राह्मणों व देव-ताओंके प्रणामकर व उस धन्वाको उठाय प्रत्यञ्चा चढ़ाय उन महाबाहुने उसका टंकोर किया ११७ व जैसेही बलसे खींचा है कि वह महाधनुष मध्यसे टूटगया कि मालालेकर आय सीता जीने श्रीरामचन्द्रजीके गलेमें ११८ पहिनाय सब क्षत्रियों के सम्मुख श्रीरामचन्द्रजी को अंगीकार करलिया तब वे क्षत्रिय लोग बड़े क्रुद्धहोकर श्रीरामचन्द्रजीके ऊपर ११९ गर्ज्जतेहुये बाणोंके समूह छोड़नेलगे उनको देख धनुषले बड़े वेगवान् श्री-रामजीने १२० प्रत्यञ्चाके शब्दहीसे उन सब राजाओंको क-म्पायमान करदिया व उनके बाण समूहोंको व रथों को अपने अस्त्रोंसे काटडाला १२१ व सबोंके धन्वा व पताकाभी रामचंद्र जीने लीलापूर्व्वक काटडाला तब राजाजनकजीभी अपनी सब सेना तैयारकर १२२ अपने जामाता श्रीरामचन्द्रजी के साथी हुये व महावीर लक्ष्मणजीने समरमें उन सब राजाओं को भ-गाकर १२३ उनके हाथी घोड़े व बहुतसे रथ छीनलिये वे सब बाहन छोड़२ भाग खड़ेहुये १२४ उनको मारनेके लिये लक्ष्मण जी उनके पीछे २ दौड़े तब राजाजनकजी व विश्वामित्रजी ने रोंका १२५ व सेनाको जीतेहुये भाई सहित महावीर श्रीराम-चन्द्रजी को साथले जनक अपने गृह में प्रविष्ट हुये १२६ व विश्वामित्रादि सबके सम्मत से महाराज दशरथजी के बुला-ने के लिये दूत भेजा दूत के मुखसे सुन सब प्रयोजन जान महाराज दशरथजी ने १२७ अपनी सब स्त्रियों पुत्रों रथ घोड़े हाथियों व सेना समेत वहांसे यात्राकी व सब समाज सहित

बड़ी शीघ्रता के साथ जनकपुरमें पहुँचे १२८ जनकजीने भी महाराज दशरथजी का बड़ाभारी सत्कारकर तदनन्तर अपनी कन्या विधिपूर्वक यौतुक के साथ श्रीरामचन्द्र जी को दी १२९ उनके यहां तीन कन्या और भी अतिरूपवंती थीं उन्हें अच्छी तरह भूषित कर लक्ष्मणादि तीन भाइयों को तीनों कन्या विधिपूर्वक दीं १३० इसप्रकार विवाह होजानेके पीछे कमलनयन श्रीरामचन्द्रजी अपनी माता व भ्राता व सेना सहित पिताकेसाथ१३१ विविधप्रकारके भोजन करतेहुये कुछ दिन वहांरहे तदनन्तर जब राजादशरथजीने अपने पुत्रादिकों समेत अयोध्यापुरी को चलने को मनकिया तो १३२ राजा जनकजीने देखकर अपनी कन्या सीताजीको बहुत धनदिया व रामचन्द्रजी को भी रत्न दिव्यवस्त्र व बहुतसी अन्यस्त्रियां अति शोभन वस्त्र हाथी घोड़े व कर्म्म करने के योग्य बहुतसे दास व बहुतसी दासियां व बहुतसी अन्यभी श्रेष्ठ स्त्रियां दीं १३३व बहुत रत्नोंसेभूषितकर सुशीला सीतानाम अपनीकन्या को रथपर चढ़ाकर वेदादि घोषों से व मुनियोंके सुमंगलों से युक्त करके बलीराजा जनकजीने भेजा १३४ इसप्रकार जानकीजीको बिदाकर व श्रीरामचन्द्रजी के समर्प्पणकर व विश्वामित्रजीके नमस्कारकर जनकजीलौटे १३५ व राजाजनक जीकी स्त्रियोंने चलनेकेसमय अपनी कन्याओंको बहुत सिखाया कि अपनेपतिकीसेवा व भक्तिकरना व सासुओंकी व श्वशुर की भी सेवाकरतीरहना १३६ व कन्याओंको उनकी सासुओं को सौंपकरलौटीं व अपने गृहमें पैठीं तब सेना आदि लिये हुये अयोध्याजीके निकट पहुँचगयेहुये श्रीरामचन्द्रजीको सुन १३७परशुरामजीने आकर उनका मार्ग्गरोंकलिया१३८उनको देखकर सब राजाके नौकर चाकर दीनमनहोगये व महाराज दशरथजी भी मारेशोक व दुःखके डूबगये१३९भी परिवार व

मन्त्रिवर्गादि सहित राजा परशुरामजीकेभयसे बहुत व्याकुल हुये तब सब जनोंसे व बहुत दुःखितराजा दशरथजीसे १४० बड़े तपस्वी ब्रह्मचारी व महामुनि वसिष्ठजी बोले कि तुम लोग रामचन्द्रजीकेलिये इससमय कुछ भी दुःख न करो १४१ न उनके पिताही दुःखकरें न माता न और भृत्यादिकही दुःखकरें क्योंकि हे राजन् ये श्रीराम साक्षाद्विष्णुहैं तुम्हारेगृहमें १४२ जगत्के पालन करनेके लिये उत्पन्न हुये हैं इसमें संशय नहींहै जिसके नामके कीर्त्तन करनेसे संसार सागरकी भीति नष्ट होजाती है १४३ व वे आप मूर्त्तिधारी ब्रह्महैं फिर भयादिकी वहां कौनसी कथाहै क्योंकि जहां श्रीरामप्रभुकी कथामात्र कहीजाती हैं १४४ वहां महामारी आदि भय नहीं होते न अकालमें मरण मनुष्योंका होताहै वसिष्ठजीने जैसेही ऐसा कहाहै कि परशुराम जी आगे खड़ेहुये श्रीरामचन्द्रजीसे बोले १४५ कि कितो तुम अपना राम यह नाम छोड़दो वा हमारे साथ संग्रामकरो ऐसा कहने पर श्रीराघवजी मार्गमें खड़ेहुये परशुरामजीसे बोले कि १४६ रामनाम हम क्यों छोड़ेंगे तुम्हारे संग युद्ध करेंगे खड़ेरहो यह कह समाजसे बाहर निकल राजीवलोचन भवभयमोचन श्रीरामचन्द्रजीने १४७ अपने धन्वाकी प्रत्यञ्चापर वीरपरशुरामजीके आगे टंकोर किया तब परशुराम के देहसे श्रीविष्णु का तेज १४८ निकलकर सब लोगोंके देखतेही देखते श्रीरामचन्द्रजीके मुखारविन्दमें प्रवेशकर गया यह देख परशुरामजी प्रसन्नमुखहो श्रीरामचन्द्रजीसे बोले कि १४९ हे महाबाहु राम हे राम राम तुम्हींहो इसमें कुछ संशय नहीं है आप साक्षात् विष्णुही हैं यहां उत्पन्न हुये हैं हमने आज आपको जाना १५० इससे हे वीर आप यथेष्ट जायँ व देवताओंका कार्य्यकरें व दुष्ट राक्षसादिकोंका बधकर शिष्टलोग देव मनुष्यादिकोंका पालन करें १५१ हे रामचन्द्रजी आप अपनी इच्छासे जायँ व हमभी

अब तपोवनको जाते हैं यह कह व मुनि होनेके भावसे श्रीरामादिकोंसे पूजितहो परशुराम १५२ तप करनेमें मन लगाकर महेन्द्राचलपर चलेगये तब श्रीरामचन्द्रजी के संगके सब जन हर्षितहुये व महाराज दशरथी भी बड़े प्रसन्नहुये १५३ व अपने श्रीरामचन्द्रादिकोंकेसंग अयोध्यापुरीमें पहुँच महाराजने उस पुरीकी औरभी बड़ी शोभा कराई बड़े२ राजभवन सजाये १५४ व बाजे बाजनेलगे सो सुनकर सब पुरवासी लोग उठधाये शंख नगारे आदिके शब्दोंके साथ बिवाह कियेहुये व रण जीते हुये श्रीरामचन्द्रजीको पुरीमें प्रवेश करतेहुये देख १५५ सब बहुत हर्षित हुये व रामचन्द्रजीहीके संग २ पुरीमें पैठे व राजभवनमें जाय अति हर्षाय रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी विश्वामित्रजी के निकट आये उनको आयेहुये देख १५६ राजा दशरथ व उनकी माताओंको सौंप व सबसे अच्छी तरह पूजितहो व राजासे विशेष पूजा पाकर १५७ विश्वामित्रजीने एकाएकी विदा होनेका मन किया राजाने प्रेम करके और भी कुछ दिन न जाने दिया पर वे चले चलने के समय १५८॥

चौ० अनुज सहित रामहिं मुनिराया। पितहि सौंपिहँसिकरि बहु दाया॥ बार बार हँसि वचन सुनाई। निज सिद्धाश्रम गे मुनिराई १। १५९॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेश्रीरामचरितेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७॥

अड़तालीसवां अध्याय॥

दो० अड़तालिसयें महँ अयोध्याकाण्डी सबगाथ॥
कही नृपतिसों कमहिसों भलीभांति मुनिनाथ १॥

श्रीमार्कण्डेयजी बोले कि बिवाह करके आनेके पीछे महातेजस्वी कमललोचन श्रीरामचन्द्रजी पितामें बड़ी प्रीति करते हुये व अन्य सबजनोंमें भी प्रीति उत्पन्न करते हुये १ अयोध्याजीमें सब भोग विलास करतेहुये निवसे इसप्रकार प्रीतिपूर्वक

अयोध्याजीमें आनंद करतेहुये श्रीराघवेन्द्रजीके २ अपने भ्राता शत्रुघ्न सहित भरतजी अपने मामाके यहां गये तब राजा दशरथजीने अति सुन्दर ३ युवावस्था को प्राप्त महाबली राजा होनेकेयोग्य महापण्डित पुत्र श्रीरामचन्द्रजीको देखविचारा कि अब रामचन्द्रको राज्याभिषेककर व सब राज्यभार इनके ऊपर स्थापितकर विष्णुके ४ पदके प्राप्ति का यत्नकरें यह चिन्तनाकी व अच्छीतरह इसबातका दृढ़ निश्चयकर उसमें तत्पर हो सब दिशाओंमें जानेकेलिये ५ चतुर भृत्योंको व छोटे २ राजाओंको व मन्त्रियोंको आज्ञादी कि तुम सब रामचन्द्रके राज्याभिषेक के लिये मुनिराज वसिष्ठादि जो २ वस्तुवतावें ६ उन्हेंलेकर अतिशीघ्रताके साथ आओ हे भृत्यलोगो दूत व अमात्यलोगोंने महाराजकी आज्ञासे सब दिशाओंके राजाओं को ७ बुलाकर व सबको इकट्ठेकरके कहा कि तुमलोग सब शोभायुक्त अयोध्यापुरमें अतिवेग आओ ८ व हे लोगो सबकहीं अपने२गृहोंमेंभी नृत्यगीतादिका आनन्दकरो व पुरवासियोंका आनन्द तथा देशवासियोंका भी आनन्द मंगलहो ९ क्योंकि प्रातःकाल श्रीरामचन्द्रजीका राज्याभिषेक होगा इस बात को सब लोग जानो इस बातको सुन सब मंत्रीलोग प्रणामकरके महाराजसे बोले कि १० हे महाराज यह जो आपने विचारा है आपका मत बहुत अच्छाहै क्योंकि श्रीरामजीका राज्याभिषेक हमसबलोगोंकोभी प्रियकारीहै ११ जब मंत्रियोंने ऐसाकहा तो महाराज दशरथजी फिर उनसे बोले कि हमारी आज्ञासे सब लोग अभिषेककी सामग्री लेआओ १२ यद्यपि यह पुरी सब प्रकारसे सारभूत है व सब बनीचुनी है पर आज औरभी शोभा युक्त कीजाय व यज्ञ करनेके लिये स्थान बनाया जाय १३ जब महाराजने ऐसा कहा तो शीघ्र कार्य्य करनेवाले उन मंत्रियों ने एक दूसरेसे फिर २ कहकर वैसाही सब कार्य्य वातकी बात

में करदिया १४ उस शुभ दिनको देखतेहुये महाराज वहुत हर्षितहुये कौसल्या लक्ष्मण सुमित्रा व सब नगरनिवासी भी अत्यन्त हर्षितहुये १५ व रामचन्द्रजीका अभिषेक सुन ये सब परमानन्दित हुये व सासु ससुरकी शुश्रूषामें तत्पर १६ सीता जी भी अपने पतिका शुभ सुन वहुत आनन्दितहुई व यह बात सर्व्वत्र प्रसिद्ध होगई कि विदितात्मा श्रीरामचन्द्रजीका राज्याभिषेक प्रातःकाल होगा १७ तब उसी रात्रिमें कैकेयीकी दासी मन्थरा नामथी जोकि रूपमें उलटी कूबरी थी अर्थात् अन्य कूबरवालोंके पीठपर कूबर होताहै परउसकी छातीपरथा उसने अपनी स्वामिनी कैकेयीसे यह वचनकहा १८ कि हे महाभाग्यवाली रानीजी मेरा अच्छा वचन सुनो तुम्हारे पति महाराज जी तुम्हारे नाश करनेमें उद्यतहुये हैं १९ क्योंकि कौसल्याके पुत्र ये राम प्रातःकाल राजा होंगे इससे धन वाहन खज़ाना व सब राज्य २० अब रामचन्द्रका होगा भरतका कुछभी नहीं सो भी भरत मामाके यहां गये हैं जोकि वहुत दूर हैं २१ हा बड़े कष्टकी बातहै तुम बड़े मन्दभाग्यवाली हो क्योंकि अब सौतसे अत्यन्त दुःख पाओगी ऐसा सुनकर कैकेयी उस कुबरीसे यह वचन बोली कि २२ हे कुब्जे आज हमारी चतुरताको देख कि जिससे सब राज्य भरतका होजायगा २३ व रामचन्द्रको वनवास होजायगा वैसाही यत्न अभी हम करती हैं मन्थरासे ऐसा कह अपने सब भूषण उतार २४ व उत्तम वस्त्र तथा पुष्पादि जो धारणकियेथी सब उतारकर मोटे व पुराने वस्त्र धारणकर लिये एक बारके पहिनेहुये पुष्पमाला जो उतारडाले थे फिर पहिन लिये कष्टयुक्त व विरूप बनाकर २५ भस्म धूलि आदि देहमें लगाय व भस्म धूलि संयुक्त पृथ्वीके भागपर बिना दीप के स्थानमें सन्ध्या समय अति दुःखितहो २६ व मस्तकमें श्वेत फटाहुआ वस्त्र बांधकर कुद्धहो वह रानी सोरही व महाराज भ-

त्रियोंके साथ सब कार्य्योंके लिये विचारशंकर २७ व पुण्याह स्वस्तिवाचन मंगलोंके साथ श्रीरामचन्द्रजीको यज्ञशाला के स्थानमें वसिष्ठादि ऋषियों समेत व यज्ञ सामग्री समेत २८ मंगल कार्य्योंमें जागनेवाले लोगों समेत स्थापितकर कि जहां सब ओरसे नगारे आदि बाजरहेथे व गाना नाचना होरहाथा शंख मृदंगादि वाजे बाजतेथे २९ वहां बड़ी वेर तक आपभी रहकर महाराज दशरथजी फिर वृद्धलोगोंसे रक्षित कैकेयीके द्वारपर आये ३० कि जाकर रामचन्द्रके अभिषेकके मंगल समाचार कैकेयीको सुनावें परन्तु कैकेयीका मन्दिर देखा तो उसमें सब अन्धकारथा दीप नहीं बरतेथे इससे बोले कि ३१ हेप्रिये आज तुम्हारे मन्दिरमें अन्धकार क्यों है रामचन्द्रजीके अभिषेकका हर्ष अन्त्यज कोरी पासी चमारादिकोंनेभी कियाहै ३२ व अन्य सबलोग अपने २ गृहों को मनोहर भूषित करते हैं तुमने आज नहीं किया इसका क्या कारण है यह कह महाराज ३३ उस गृह में दीपक जलवाकर तो उसमें पैठे, वहां अशोभन अंगकिये हुई अपनी पत्नी कैकेयीको पृथ्वीपर पड़ी सोतीहुई ३४ देखकर दशरथजी उसे उठाकर कपटाय उससे यह प्रिय वचन बोले कि हमारा परम वचन सुनो ३५ हे शोभने जो रामचन्द्र अपनी मातासे भी अधिक तुम्हारी भक्ति करते हैं उनरामचन्द्रका प्रातःकाल राज्याभिषेक होगा ३६ राजा ने जब ऐसा कहा तो वह शुभगुणवती भी थी पर कुछ न बोली केवल मारेरोषके बड़ीलम्बी व उष्णश्वास बार २ छोड़तीही रहगई ३७ तब रोषकियेहुई उसको दोनों हाथोंसे पकड़े उठायेहुये महाराज बोले कि हे शोभने कैकेयि तुम्हारे दुःखका क्या कारण है हम से कहो ३८ वस्त्र भूषण व रत्नादि जो २ चाहती हो वह भाण्डारसेलो व सुखिनी होओ ३९ व हमारे भाण्डारकी प्रातःकालसिद्धि होगी जब कि राजीवलोचन राम-

चन्द्र का अभिषेक होजाने पर ४० भाण्डारगृह का द्वारखोल दियाजायगा व जो चाहे उठालेजाय व अभिषेकके कार्य्यों में लगायाजायगा फिर जब रामचन्द्र राजाहो राज्यकरने लगेंगे तो फिर मराजायगा ४१ इससे महात्मा रामचन्द्रका अभिषेक बहुतमानो जब राजवर्य्यने ऐसा कहा तो पापलक्षणवाली ४२ कुबुद्धि दयाहीन दुष्टा व मन्थराकी सिखाईहुई वह कैकेयी अपने पतिराजासे क्रूर व अत्यन्त निठुर वचन बोली कि ४३ रत्नादि जो कुछ तुम्हारेहै वह सब हमाराही है इसमें कुछ भी संशय नहींहै परन्तु देवासुर महायुद्धमें प्रीतिसे जो वर हमको ४४ दियेथे हे राजन् वे दोनों अब इससमय हमेंदेदो जब उसने ऐसा कहा तो महाराज अश्रुभरूपिणी कैकेयी से बोले कि ४५ हमने न भी दियाहो तो भी तुमको सब देंगे हां और को नहीं पर जो हमने देनेही को कहरक्खाहै उसके देनेमें क्या है हमनेदिया ४६ अब शुभाङ्गीहोओ अनर्थकोपछोड़ो रामचन्द्र के अभिषेक से उत्पन्न हर्षको सेवनकरो उठो सुखीहोओ ४७ जब राजा ने ऐसा कहा तो कलहप्रिया कैकेयी फिर कठोर व राजाके मरजानेका लक्षण वचन बोली ४८ कि पूर्व्वकेदियेहुये दोनों बर जो हमको देतेहो तो प्रातःकाल होतेही कौसल्याके पुत्र ये राम बनकोजायँ व तुम्हारे वचनसे बारहबर्षतक दण्डकबन में बसें अभिषेक व राज्य भरतकाहोवे ४९ कैकेयी का घोर व अप्रिय ऐसा वचन सुनकर महाराज दशरथजी मूर्च्छित हो पृथ्वीपर गिरपड़े व कैकेयी परमानन्दितहुई ५० जो रात्रि बाकीथी उसेबिताय प्रभातहोतेही हर्षितहो सुमन्त्रनाम दूतको बुलाकर कहा कि रामको यहां लेआओ ५१ रामचन्द्रजीजानो पुण्याह स्वस्तिवाचन ब्राह्मणोंसे करारहेथे व यज्ञकेमध्यमें बैठे हुये शंख नगारे आदिका शब्दसुनरहेथे ५२ उनके निकटजाय सुमन्त्र प्रणामकर आगेखड़ेहोबोले कि हेराम हेराम हेमहाबाहो

पिताजी कुछ आपको आज्ञादेतेहैं ५३ इससे शीघ्र उठिये व जहां तुम्हारे पिताजीहैंवहां चलिये उसदूतके ऐसे वचन सुन शीघ्रउठकर श्रीराघव ५४ ब्राह्मणसे पूछकर कैकेयी के भवन कोगये प्रवेशकरतेहुये रामचन्द्रजीसे निर्दयीवाली कैकेयी बोली ५५ कि हे वत्स तुम्हारे पिताका यह मत तुमसे कहती हैं कि तुम जाकर बारह वर्षतक वनमेंवसो ५६ सो हे वीर तपकरनेमें मनलगाकर आजहीजाओ हे वत्स इसमें कुछ विचारना नहीं है आदर से हमारा वचन करो ५७ पिताका यह वचन सुनि कमलनयन श्रीरामचन्द्र तथा कह आज्ञा को अंगीकार कर व माता पिता दोनों के प्रणामकर ५८ उसमन्दिर से निकल अपने गृहसे धन्वाले कौसल्या व सुमित्राके प्रणामकर चलनेपर उद्यतहुये ५९ इसवातको सुनकर सब अयोध्यावासी दुःखव शोकमेंडूबगये व अत्यन्तव्यथितहुये व लक्ष्मणजी कैकेयीके ऊपर बड़ेक्रुद्धहुये तबद६० लाल२नेत्रकिये लक्ष्मणजीको देख महामति व धर्म्मज्ञ श्रीरामचन्द्रजीने धर्म्मवचनोंसे उनको रोंका ६१ तदनन्तर जो वहां वृद्धलोग थे उनके व मुनियोंके भी प्रणामकर श्रीराघवजी दुःखित सारथियुक्त रथपर जाने केलिये आरूढ़हुये ६२ व उनमहाराजकुमारजी ने अपने सब पदार्थ व विविधप्रकार के वस्त्र ब्राह्मणों को देदिये ६३ व तीनों सासुओंके प्रणामकर व उनकी आज्ञाले व श्वशुरकेभी प्रणाम कर जो कि मूर्च्छित पड़ेहुये नेत्रोंसे शोकसे उत्पन्न आंशुओंकी धाराछोड़रहेथे ६४ व सब ओरदेखतीहुई सीताजीभी उसीरथ पर चढ़ीं रथपरचढ़े सीतासहित श्रीराघवको जातेहुये ६५ देख दुःखित होतीहुई सुमित्राजी अपने पुत्रलक्ष्मणजी से बोलीं कि रामचन्द्रको दशरथ जानो व जानकी को हमको जानो६६ व वनको अयोध्याजानो हे गुणाकर इन्हीं दोनों पिता माताके संमानों के साथचलेजाओ स्तनोंसे दुग्धबहातीहुई माताने जब

ऐसा कहा तो६७धर्म्मात्मा लक्ष्मणजी माताकेप्रणामकर उसी रथपर आपभी चढ़लिये इसप्रकार बनकोजातेहुये रामचन्द्रजी के पीछे भाई लक्ष्मण व पतिव्रता सीताजीभी६८चलीगईं तब रामचन्द्रजी पुरसे बाहर निकले फिर विधिसे छिन्न अभिषेक वाले मेघवर्ण कमललोचन श्रीरामचन्द्रजी जब अयोध्याजी से निकले ६९ तो पुरोहित लोग मन्त्रिगण तथा मुख्य २ सब अयोध्यावासी लोग मारे दुःख के व्याकुल हो ७० पिता की आज्ञापाकरबनको जातेहुये रामचन्द्र महाराजसे यह बोले कि हे राम हे राम हे शोभन महाबाहो आपजानेके योग्य नहींहैं७१ हे राजन् यहां लौटआओ हम लोगोंको छोड़ कहांजातेहो जब उनलोगोंने ऐसा कहा तो दृढ़व्रत धारणकरनेवाले श्रीराघवजी उनसे बोले७२कि हे मन्त्रियो लौटजाओ व हे पुरोहितो तुमभी लौटो हम पिताजीकी आज्ञा अवश्यही करेंगे इससे बनको जा-यँगे ७३ व बारहबर्षतक दण्डकबनमें बस यह व्रत बिताकर पिता व माताओं के चरणोंके दर्शन करनेकेलिये फिर आवेंगे ७४ यह उन लोगों से कह सत्यपरायण श्रीरामचन्द्रजी चल खड़ेहुये व जातेहुये उनके पीछे २ दुःखित सब लोग फिर चले ७५ तब श्रीरामचन्द्रजीने फिर कहा कि तुमलोग अबपुरीको चलेजाओ व इसपुरीको हमारीमाताओं को पिताजीको शत्रु-घ्नको ७६ व सब प्रजाओंको राज्य व भरतको पालनकरो हे महाभाग्यवालो हम तो अब तपकरनेकेलिये बनकोजातेहैं७७ फिर श्रीराघवजी लक्ष्मणजीसे बोले कि जाकरसीताको मिथि-लापुरी के राजाजनकजी को सौंपदो७८ व तुम माता पिताके बशमेंरहो जाओ हमजातेहैं जब रामजीने ऐसाकहा तो भ्रातृ-बत्सल व धर्म्मात्मा लक्ष्मणजी बोले कि७९हे करुणाकरनाथ ऐसी हमको आज्ञा न दीजिये क्योंकि जहां आप जानाचाहते हैं वहां हम अवश्यचलेंगे ८० जब लक्ष्मणजीने ऐसा कहा तो

श्रीराघवजी सीताजी से बोले कि हे सीते हमारी आज्ञासे तुम अपने पिता के यहां वा हमारेही पिताजी के यहां जाओ तो अच्छा है ८१ चाहे सुमित्राजी के यहां रहना चाहे कौसल्या जी के यहां जबतक हम न आवें तबतक वहीं निवासकरो ८२ जब श्रीराघवजीने ऐसा कहा तो हाथ जोड़ सीताजी बोलीं कि हे महाभुज जिस बनमें आप जाकर बासकरेंगे ८३ वहां आप के साथ चलकर मैंभी बासकरूंगी परहे राजन् सत्यवादी आप का वियोग नहीं सहसक्ती ८४ इससे आपकी प्रार्थना करती हूँ मेरे ऊपर दया कीजिये जहां आप जाया चाहते हैं वहां मैं अवश्य जाया चाहतीहूँ ८५ इन दोनों जनोंसे ऐसाकह नाना-प्रकारके बाहनोंपर चढ़े पीछे२आतेहुये अन्यजनोंको देख जिन में कि बहुतसी स्त्रियांभी थीं धर्म्मज्ञ श्रीरामचन्द्रजी ने सबको रोंका ८६ कि हे लोगो व हे स्त्रियो तुम सब लौटकर अयोध्या जीमें रहो हम तप करनेमें मन लगाय दण्डकारण्यमें जाय कुछ वर्ष वहां रहकर तब यहां आवेंगे इसके विपरीत न करेंगे सत्यही कहते हैं ८७ वहां भाई लक्ष्मण व सीता भार्य्याको छोड़ और किसीका निर्व्वाह नहीं है इस रीतिसे बड़ी२ युक्तियों से लोगों को लौटाकर श्रीरामजी गुहके आश्रमको गये ८८ गुह तो राम-चन्द्रजीका भक्तहीथा क्योंकि स्वभावहीसे परम वैष्णवथा हाथ जोड़कर क्याकरूं ऐसा कहकर खड़ा होगया ८९ व कहनेलगा कि आपके पूर्व्वज महाराज भगीरथजी बड़ीभारी तपस्या करके सब पाप हरनेवाली शुभ गंगाजीको यहां लाये ९० इनकी सेवा नानाप्रकारके मुनिगण करते हैं व अनेक कच्छप मत्स्यादिकों से ये भरीहुई हैं बड़ी२ ऊंची लहरियोंकी मालाओंसे सबमासों में युक्त रहती हैं जल इनका स्फटिक मणिके समान श्वेतबहता है ९१ गुहसे गंगाजीकी ऐसी कथा सुन उसकी लाईहुई नौका पर चढ़के उन गंगाजी के पार उतर महाद्युतिमान् श्रीराघव

भगवान् भरद्वाजजीके आश्रमपर गये ९२ वहां पहुँचकर प्रयागतीर्थमें जाय यथाविधि नहाय लक्ष्मण व सीता भार्य्यासहित ९३ भरद्वाजजीके आश्रमपर पैठे व उन्होंने भोजनादिसे बड़ी पूजा की रात्रिभर निवासकर विमल प्रातःकाल होने पर उनसे पूँछ श्रीराघवजी ९४ भरद्वाजजी के बतलायेहुये मार्ग्ग हो धीरे२ चित्रकूटको गये जोकि नानाप्रकारके वृक्षों वलताओं से समाकीर्ण व पुण्यतीर्थ था ९५ तपस्वी का वेष धारणकर गंगाजीको उतरकर भार्य्या भ्राता समेत जब रामचन्द्रजी चले गयेथे तब उनका सारथि ९६ नष्टशोभा व दुःखित जनोंसे भरी हुई अयोध्यापुरीमें लौटआया व यहां मूर्च्छित राजादशरथजी रामचन्द्रजीके बनको जानेके विषयमें कैकेयीका कहाहुआ अप्रिय वचन सुनकर एक क्षणभरमें जब उनकी मूर्च्छा जागी तो राम २ कह २ रोदन करनेलगे ९७। ९८ तब कैकेयी राजा से बोली कि अब भरतका राज्याभिषेक करो सीता लक्ष्मण सहित रामचन्द्र बनको गये ९९ इसबातके सुनतेही राजा दशरथजी पुत्रकेशोकसे सन्तप्तहो बड़ेदुःखसे देहछोड़ देवलोक को चले गये १०० तब उनकी महापुरी अयोध्यामें हे शत्रुनाशक सब पुरुष व स्त्रियां दुःख शोकसे पीड़ितहो रोदन करनेलगे व लगीं १०१ कौसल्या व सुमित्रा व कष्टकारिणी कैकेयी मरेहुये दशरथजीके शरीरको घेरकर अपनेपतिको पुकार२ रोनेलगीं १०२ तदनन्तर सब धर्म्म जाननेवाले राजाके पुरोहित वसिष्ठजीने तेलकीनौकामें राजाकामृतकदेह धरवाकर १०३ दूतकोभेजा व मंत्रियोंसहित आपराजकार्य देखनेलगे उसदूतने जहां शत्रुघ्न सहित भरतजीथे वहांपहुंचकर १०४राजाकेमरणका वृत्तान्त न कहकर उनदोनोंभाइयोंकोलेआकर अयोध्याजीमें पहुँचादिया १०५परमार्ग्गमें भरतजीने कुनिमित्त देखकर जानलिया कि अयोध्याजीमें कछ विपरीतवृत्त है १०६यहशोचते भरतजीशो-

भारहित श्रीरहित दुःख शोकसेयुक्त व कैकेयी के कर्म्म अग्नि से जलीहुई पुरीमेंपैठे १०७ उनको देख मारेदुःखसे व्याकुल सवजन अत्यन्त रोदन करनेलगे व कहते कि हातात हा राम हालक्ष्मण हासीते १०८ यहवात कैकेयीके मुखसे सुनकर भ- रत व शत्रुघ्नभी हा तात हा लक्ष्मण हा राम व सीते कहकर प्रथम वहुतरोये फिर बड़ाक्रोध उन्होंनेकिया १०९ व कैकेयी सेकहा कि अरे तू बड़ीदुष्टा व दुष्टचित्ताहै कि जिसने रामचन्द्र जीको बनवास कराया कि जिससे सीता लक्ष्मण सहित श्री राघव बनको चलेगये ११० अयेदुष्टे अल्प भाग्यवाली तूने यह दुरन्त क्या साहसकिया कि महात्मा लक्ष्मण व सीतास- हित श्रीरामचन्द्रजी को यहांसे निकलवाय १११ मेरेही पुत्र को राजकरो यह तेरीमतिहुई हाय तुम्दुष्टा व नष्ट भाग्यवा- ली कामाग्य वर्जित में पुत्र हुआ पर दुष्टे भाई रामचन्द्र से रहितहो मैं तो राज्य करूंगाहीनहीं११२जहां पद्मपत्रके समान बड़े नेत्रवाले धर्म्मज्ञ सर्व्व शास्त्र जाननेवाले मतिमान् नरव्या- घ्र श्रीरामचन्द्रजी हैं ११३ व महा भाग्यवती सर्व्व लक्षणसं- युक्त पतिव्रता नियत व्रतकरनेवाली सीता जहां हैं ११४ व जहां महावीर्य्यवान् गुणवान् भ्रातृवत्सल लक्ष्मणजी हैं वहां मैं जाऊँगा हा कैकेयी तूने महापापकिया ११५ मतिमानों में श्रेष्ठ हमारे ज्येष्ठ भ्राता रामचन्द्रहीं हमारे राजा हैं व हम तो उनके सदा सेवकहैं ११६ मातासे ऐसा कह दुःखितहो अत्यन्त रोदन करनेलगे हा राजन् पृथिवीपाल हमको दुःखित छोड़ ११७ हे तात कहांगये अब हम क्या करें वह कहो करुणाकर पिताके समान हमारे ज्येष्ठ भाई कहां हैं ११८ व माताकेतुल्य सीताजी कहां हैं व लक्ष्मण कहां गये इसप्रकार बिलापकरतेहुये भरतसे मन्त्रियों सहित ११९वसिष्ठ भगवान् बोले जोकि काल व कर्म्म के सब विभागजानतेथे हे वत्स उठो २ तुम शोक करनेकेयोग्य

नहीं हो १२० कर्म्मकालके बशसे तुम्हारे पिता स्वर्गगहुये हे शोभन अब उनकेसंस्कार कर्मकरो१२१रामचन्द्रजीभी दुष्टोंके नाशकेलिये व शिष्टोंकेपालनके अर्थ अवतरे हैं नहीं तो वेतो जगत्केस्वामी माधव हैं १२२ बहुधा जहां गयेहैं वहां रामचन्द्र जीको व लक्ष्मणजीको भी बहुत कार्य्य करने हैं वहां जाकर जो कर्त्तव्य है करके फिर रामचन्द्रजी आवेंगे १२३ कमललोचन श्रीराम नियतसमयसे अधिक वहां न रहेंगे जब महात्मा वसिष्ठ जी ने भरतजी से ऐसा कहा तो १२४ उन्होंने वेदके विधानसे सब अपने पिताके संस्कार किये प्रथम अग्निहोत्रके अग्निसे बिधिपूर्व्वक पिताकेदेहका दाहक्रिया १२५फिर सरयूजीमें स्नान करके उनकी जलदान क्रियाकी शत्रुघ्नके व माताओंके व बन्धु बर्गों सहित १२६ उनकी ऊर्ध्व दैहिकक्रिया करके मन्त्रियोंके नायक वसिष्ठजीको संगले हाथी घोड़े पैदरोंकोभी संगले महा-मति भरतजी १२७ जिसमार्ग्ग होकर श्रीरामचन्द्रजी गयेथे उसीमार्ग्ग होकर सब समाज सहित श्रीराघवेन्द्रजीके ढूँढ़ने व बुलाने को चले महासेनालियेहुये जाते उनभरतको जान व रामचन्द्रजीके विरोधी मानकर १२८ व भरत को उनका शत्रु समझ श्रीरामजी के भक्त गुह अपनी सेना इकट्ठीकर कवच खड्गादि धारणकरके सन्नद्धहुआ१२९महाबल परिवारवाले उस ने भरतजीको मार्ग्गमें रोंकलिया व कहा कि हेदुष्ट भाई व भार्य्या समेत हमारे स्वामी रामचन्द्रजी को बनमें भी प्राप्तहो-कर मारनाचाहते हो १३० इससे हे दुरात्मन् तुम इस बड़ी भारीसेना समेत उनके मारनेहीको जाओगे जब गुहने राजकु-मार भरतजीसे ऐसा कहा तो १३१ विनययुक्तहो व रामचन्द्र जीकी ओर हाथजोड़ भरतजी उससे बोले कि जैसे तुम राम-चन्द्रजीके भक्तहो वैसेही हमभी उनके भक्त हैं १३२ हम विदेश में थे तब कैकेयी ने यह कर्म्मकिया है सो हे महामते अब हम

रामचन्द्रजीके आननेकेलिये आजजाते हैं १३३ सत्य पूर्व्वक हम इसीकार्य्यकेलिये जातेहैं इससे हे गुह हमको मार्ग्ग दो जब ऐसी विश्वासकी सत्यवाणी उन्होंने कही तब उसने गंगाजीके पार उतारा १३४ बहुतसी नावोंसे उसने इनको उतार पाया तब ये गंगाजी में स्नानकरके भरद्वाजजी के आश्रमपर पहुँचे व भरतजी उनमुनिके १३५ शिरसे प्रणामकर उनसे जैसे समाचार थे उसके अनुसार बोले भरद्वाजजीने भी उनसे कहा कि कालने ऐसा किया है १३६ इससे रामचन्द्रजी के अर्थ तुम इससमय कुछ दुःख न करो क्योंकि सत्यपराक्रम श्रीरामचन्द्रजी चित्रकूटपर विद्यमानहैं १३७ तुम्हारे वहां जानेपरभी बहुधा तो हम जानतेहैं कि वे न आवेंगे तथापि तुम वहांजाओ व जो वे कहें वह करो १३८ रामचन्द्रजी सीताकेसाथ वनमें रहते हैं व लक्ष्मण दुष्टोंके देखने में तत्पर रहते हैं १३९ जब धीमान् भरद्वाजजीने भरतजीसे ऐसा कहा तो वे यमुना उतर कर चित्रकूटनाम महापर्व्वतपर गये १४० तब उत्तरदिशा धूलिसहित दूरसे देख श्रीरामचन्द्रजी से कह उनकी आज्ञासे लक्ष्मणजीने १४१ वृक्षपर चढ़के चारोंओर देखा तो उन्होंने बहुत हर्षित बड़ीभारी एक सेना आतीहुई देखी १४२ वह हाथी घोड़े व रथादिकों से संयुक्तथी उसे देख आकर रामचन्द्रजीसे कहा कि हे भ्रातः आप सीताजीके समीप स्थिर होकर बैठें १४३ क्योंकि कोई बड़ाबलवान् राजा है वह बहुत से हाथी घोड़े रथ पैदरों समेत आताहै उनमहात्मा लक्ष्मणजीका ऐसा वचन सुनकर १४४ सत्यपराक्रम व वीरशिरोमणि रामचन्द्रजी वीरलक्ष्मणजी से बोले कि हे लक्ष्मण बहुधा तो यह है कि भरतहमको देखनेको आतेहैं १४५ विदितात्मा श्रीरामचन्द्रजी ऐसा कहते थे कि दूर अपनी सेना ठहराकर भरतजी विनय युक्त हो १४६ ब्राह्मणोंके व मन्त्रियों के साथ रोदन करतेहुये

आकर रामचन्द्रजीकेव सीताजीकेव लक्ष्मणजीकेभी चरणोंपर गिरपड़े १४७ व मन्त्री मातालोग अन्य सब सज्जन बन्धुमित्र वर्ग्गादि चारोंओरसे रामचन्द्रजीको घेरमारे दुःखके रोदन करनेलगे १४८ फिर पिताजीको स्वर्ग गयेहुये जान महामति वाले श्रीरामचन्द्रजी भाईलक्ष्मण व जानकीजी के साथ १४९ पापनाशन उसतीर्त्थमें स्नानकर व जलाञ्जलि देकर व माता आदिकों के प्रणामकर रामचन्द्रजी बहुत दुःखितहुये १५० व हे राजन् बड़ेभारी दुःख से संयुक्त भरतजी से बोले कि हे महामतिवाले भरत यहांसे शीघ्र अयोध्याकोजाओ १५१ बिना राजाकी अनाथ नगरीकापालन करो जब ऐसा रामचन्द्रजी ने कहा तो भरतजी राजीवलोचन श्रीराघवजीसे बोले कि १५२ हे पुरुष व्याग्घ्र बिना तुम्हारे हम यहां से न जायँगे जहां आप जायँगे वहां हम भी जायँगे जैसे कि सीताजी व लक्ष्मण संग जातेहैं १५३ यह सुन आगे बैठेहुये भरतजीसे फिर बोले कि जो मनुष्य धर्म्मके अनुवर्त्ती हैं उनको ज्येष्ठ भ्राता पिताके समान होताहै १५४ इससे जैसे हम पिताके वचनका उल्लंघन नहीं करते वैसेही तुमको भी हमारे वचन का उल्लंघन न करनाचाहिये हे पण्डिततम १५५ इससे हमारे समीपसे जाकर तुम प्रजाओं का परिपालन करो यह पिताजीके मुखसे निकलाहुआ बारहबर्षका हमाराब्रतहै इससे उतनेदिन बनमें विचर कर फिर तुम्हारेनिकट आवेंगे १५६ अबजाओ हमारीआज्ञामें टिको दुःख करनेके योग्य नहीं हो यह सुन आंशुओं से नेत्र भरेहुये भरतजी बोले १५७ जैसे पिता वैसेही हमारे आप हैं इसमें संशय नहीं है व विचार नहीं करना है तुम्हारी आज्ञा हमको सदा करने योग्य है अब आप अपनी पादुका हमको दें १५८ उन पादुकाओं का अवलम्बन कर बारहबर्षनन्दिग्राम अर्थात् भदसामेंबसेंगे जिसबेषसे तुमरहते हो वही हमाराभी

वेषहोगा व जो तुम्हारा व्रतहै वही हमारा महाव्रत होगा १५९॥

चौ० द्वादशवर्ष गये तुम स्वामी। यदि न आइहौ अन्तर्यामी॥ तो निजतनु हम हव्य समाना। हुतव अनलमहँ सत्य प्रमाना १।१६० इमि करिशपथ भरतभे आरत। कीन्हप्रदक्षिण बहुत पुकारत॥ नमस्कार पुनिपुनि करि रामहिं। निखिल दीन भयहरण अकामहिं २।१६१ शिरपरधरि हरिपादुक दोई। भरत चले धीरे मगजोई॥ भाइ निदेशकरत नँदिग्रामा। बसे वशी तपसीकृत सामा ३।१६२ नियताहार मूलफल शाका। भोजन करत जपत अनुवाका॥ जटाकलाप किये शिरऊपर। तरु त्वचतनु घृतशयनकु भूपर ४।१६३ वन भव भोजन करत न आना। रामवचन आदर मनमाना॥ यासों भूमिभार धरि राजू। करत पादुकासतले काजू ५।१६४॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेश्रीरामभरतचरिते अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८॥

उनचासवाँ अध्याय॥

दो० उञ्चसयें महँ कह्यउ आरण्यकाण्डकी गाथ॥ सबकमसोंमुनि नृपतिसोंसोसुनिहोहु सनाथ १

मार्कण्डेयमुनि राजा सहस्रानीकजीसे बोले कि जब भरतजी चलेगये तो उस महावनमें कमल लोचन भक्तभयमोचन पूर्णकाम श्रीराम भाई लक्ष्मण व सीता भार्य्या समेत १ शाकमूल फलाहार करतेहुये बिचरते थे एक समय लक्ष्मणजी कहीं फलादि लेनेगये थे प्रतापवान् भगवान् श्रीरामचन्द्रजी २ चित्रकूटके बनके उत्तम स्थान में जानकीजी के ऊपर शिरधर एक मुहूर्त्तभर शयन कररहे उसी समय एक दुष्टात्मा काकआया ३ व सीताजी के सम्मुखहो उनके अञ्चल के ऊपर टोंट मारकर वृक्षके ऊपर वह वायसाधम जाबैठा ४ तब रामचन्द्रजी जागे व स्तनोंके बीचसे रक्त बहताहुआ देख शोकयुक्त सीताजी से

वे कमलनयन बोले कि ५ हे भद्रे अपने स्तनों के मध्यसे रक्त बहनेका कारण बताओ जब ऐसा महाराजने कहा तो वे सीता जी विनययुक्तहो पतिसे बोलीं ६ कि हे राजेन्द्र दुष्ट चेष्टावाले वृक्षपर बैठेहुये इस काकको देखिये हे महामते आपके सोजाने पर इसी दुष्टने यह कर्म्मकिया ७ श्रीरामचन्द्रजीनेभी उस काक को देख उसके ऊपर क्रोधकिया व एक सेंठाका बिना गांसीका बाण बनाय ब्राह्मास्त्रसे संयुक्तकर व वायससे कहकर८ उस दुष्ट काकके ऊपर छोड़ा व वह भययुक्तहो भागा हे राजन् वह इन्द्र का पुत्रथा इसलिये जाकर इन्द्रलोकमें घुसा९ परन्तु प्रज्वलित श्रीरामचन्द्रजीका वह अस्त्र भी उसीके पीछे वहां पहुँचा जब इन्द्रने यह समाचार जाना तो सब देवताओंके सम्मतसे १० श्रीराघवेंद्रके अपकारी उस दुष्टको निकालदिया तब सब देव-ताओंने उसे देवलोकसे बाहर करदिया ११ तो फिर वह वहांसे भागकर श्रीरामचन्द्रजीके शरणमें आया व बोला कि हे महा-बाहो रक्षाकरो रक्षाकरो मैंने अज्ञानसे आपका अपकार किया है १२ ऐसा कहतेहुये उससे कमलनयन श्रीरामचन्द्रजी बोले कि हमारा अस्त्र कभी निष्फल नहीं होता इससे एक कोई अंग हमेंदे १३ तब तू जीवेगा दुष्ट तूने महाअपकार किया है जब प्रभुने ऐसा कहा तो उसने अपना एकनेत्र अस्त्रके लिये दिया १४ तब अस्त्र एक नेत्रको भस्मकर फिर रामचन्द्रजीके निकट आगया तबसे सब काकोंके एकही नेत्र होताहै १५ व उसीहेतु से वे एकही नेत्रसे देखते हैं बहुतदिन उस चित्रकूटपर रहकर श्रीराघव १६ नानामुनि गणोंसे सेवित दण्डकारण्यको अपने भाई व भार्य्या समेत तपस्वियोंका वेषधरे चलेगये १७ व ध-नुर्बाण तरकस भी महाबल श्रीरामचन्द्रजी धारणकिये थे जब वहां पहुँचे तब उन्होंने मुनीश्वरोंको देखा उनमें कोई तो सदा जल पानही करतेथे १८ व बहुत पत्थरोंसे अन्न फलादि कूटकर

खातेथे इस लिये अश्मकुट्ट कहाते व कोई दांतोंकोही ओखरी बनायेथे कूटापीसा अन्न नहींखाते केवल अपनेदांतोंसे चबाते इसलिये वे दन्तोलूखली कहाते और कोई दिनके चौथेकालमें भोजनकरते इससे चतुर्थकालिक कहाते ऐसे२उग्रतपकरनेवाले थे१९उनसबोंको देख श्रीरामचन्द्रजी प्रणाम करते व वे उनको अच्छे प्रकार अभिनन्दित करते इस तरह सब बन देख साक्षात्जनार्दन श्रीरामचन्द्रजी २० भ्राता व भार्य्या समेत वनमें सीताजीको नानाप्रकारके पुष्पोंसे शोभित सुन्दर २१ नानाप्रकारके आश्चर्य्योंसे युक्त बन दिखाते धीरे २ चलेजाते थे कि इतनेमें कालेरंगका रक्तनेत्रवाला व मोटे पर्व्वतके समानका२२ उजले दांतोंका बड़ी २ बाहोंका सन्ध्यासमयके बादरके समान बालोंवाला व मेघके समान गर्ज्जनेहारा व कुछ अपना अपराध किये हुआ एक राक्षस उन्होंने देखा इस लिये धन्वापर बाण चढ़ाकर श्रीराघवजीने२३क्रोधसे उसेमारा वह औरोंसे अवध्य था इससे महाप्रभु उस महाशरीरवाले राक्षसको मार पर्व्वतके एक गढ़ेमें २४ बहुतसी शिलाओंसे बन्दकर फिर वहांसे शरभंगजीके आश्रमपर गये उनके नमस्कारकर व विश्रामकर उनकी कथा सुन बहुत प्रसन्न मनहुये२५ व विन्ध्याचलके समान वर्त्तमान उन मुनिको देख भरतके श्रेष्ठभाई श्रीरामचन्द्रजी ने उनको जलदिया क्योंकि उनको जलदेकर गर्भपातकरनेवाला भी पुरुष पापसे छूटजाताहै २६ फिर सुतीक्ष्णजीके आश्रमपर जाकर उन महामुनि सुतीक्ष्णजीको देखा व उनके बताये हुये मार्ग्ग होकर जाय अगस्त्यजीके दर्शनकिये २७ उनसे श्रीरघुनन्दनजीने एक विमल खड्ग पाया व एक इषुधि अर्थात् तरकसपाया जिसमें बाण सदा भरेरहते खर्च करनेसे नहीं चुकतेथे व एक श्रीविष्णुका धन्वापाया २८ फिर अगस्त्यजी के आश्रम परसे भ्राता व भार्य्या समेत श्रीरामचन्द्रजी जाकर गोदावरी

नदीके तीर पंचबटीमें बसे २९ तब वहां गृध्रोंका राजा जटायु नाम पक्षी आकर व रामचन्द्रजीके प्रणामकर अपने कुल की कथा कहकर स्थितहुआ ३० श्रीरामचन्द्रजी भी उसे वहां देख व उससे अपने सब समाचार विशेष रीतिसे कह उससे बोले कि हे महामतिवाले तुम सीताको सदा रखाते रहना ३१ जब रामचन्द्रजीने ऐसा कहा तो जटायु आदरसे उनको छपटाकर आनंदित हुआ जब रामचन्द्रजी किसी कार्य्य के लिये दूसरे बनको एक समय चलनेलगे तो ३२ जटायुने कहा कि हम तुम्हारी भार्य्याकी रक्षाकिये रहेंगे यहशोभन आचरणवाली आप की भार्य्या यहां टिकी रहै ऐसा रामचन्द्रजी से कहकर जटायु अपने आश्रमपर चलागया ३३ व उसी जटायुके आश्रम के समीप दक्षिण ओर नानाप्रकारके पक्षियों से सेवित स्थानपर सीता सहित निवास करतेहुये ३४ कामके समान रूपवान् श्री भगवान् रामचन्द्रजी महा कथा कहरहे थे कि सुन्दरताके गुणों से संयुक्त मायामयरूप बनाकर ३५ मदनसे व्याकुल हृदय रावणकी छोटी भगिनी अच्छे रागसे गीत गातीहुई धीरेसे किसीसमय वहां आकर ३६ सीतासहित श्रीराघवजीको बनमें बैठेहुये उसनेदेखा फिर मायासे सुन्दररूप धारण कियेहुई निश्शङ्क व पुष्ट चित्तवाली शुभ वेषधारिणी वह घोर शूर्प्पणखा राक्षसी श्रीराघवजीसे बोली कि हे सुन्दर कल्याणी व भजती हुई मुझ कामिनीको आपभजें ३७। ३८ क्योंकि जो भजती हुई स्त्रीको छोड़ताहै उसकेसङ्ग भोग नहींकरता उसको महादोष होताहै जब शूर्प्पणखाने ऐसाकहा तो महाराज रामचन्द्र जी उससेबोले ३९ कि हे बाले हमारेस्त्रीहै इससे हमारे छोटे भाईको तुम जाकरभजो क्योंकि जबहमारे सदनमें भार्य्याहै तो तुमसे हमारा प्रयोजन नहींहै ४० यह सुनकर काम रूपिणी वह शूर्प्पणखा फिर रामचन्द्रजीसे बोली कि हे राघव हम र-

तिके कर्म्ममें अतीव निपुण हैं ४१ इससे रतिकर्म्म न जानती हुई इन सीताकोछोड़ हमको अङ्गीकारकरो क्योंकि हम अति शोभनहैं यह सुनकर धर्म्ममें तत्पर श्रीरामचन्द्रजी फिर उस से बोले ४२ कि हम परस्त्रीके सङ्गनहीं भोगकरते तू यहांसे लक्ष्मण के पास जा उनके यहां बन में भार्य्या नहीं है इससे वे तुझे ग्रहण करलेंगे ४३ जब ऐसा उन्होंनेकहा तो राजीवलोचन श्रीरामचन्द्रजीसे फिर वह बोली कि अच्छा जिसमें लक्ष्मण हमारेभर्त्ताहों वैसा एकपत्र आपलिखदें ४४ जब उसने ऐसाकहा तो कमलनयन व मतिमान् श्रीरामचन्द्रजीने इसकी नासिका काटलो छोड़नानहीं इसमें कुछ संशयनहींहै ४५ यह लिखकर महाराज रामचन्द्रजीने उसेपत्र देदिया ४६ उसने उसपत्रको लेकर व आनन्दयुक्तहो वहांसे जाकर लक्ष्मणजीके निकट पहुंच उन महात्माको वहपत्र देदिया ४७ वहपत्र देख कामरूपिणी उस राक्षसीसे लक्ष्मणजी बोले कि हे कामसे दुःखित हमको रामचन्द्रजीके वचनका उल्लंघन नहींकरनाहै इससे ठहरजा ४८ यह कहउसे पकड़ विमल व सुन्दर खड्ग निकाल उससे उसके दोनों कान व नासिका काटलिया ४९ जब वह नकटी व कनकटी होगई तो अति दुःखितहो रोनेलगी कि हा सब देवोंके मर्दन करनेवाले हमारे भाई रावण ५० हा कुम्भकर्ण बड़े कष्टकी बातहै कि हमको यह महा आपदा पड़ी हा हा कष्ट है हे गुणनिधि व महामति बिभीषण ५१ इस प्रकार ऐसा रोतीहुई शूर्पणखा खरदूषण व त्रिशिरके पास जाकर व उनको देखकर अपने निरादरके वृत्तांत उसनेकहे ५२ व महाबली श्रीरामचन्द्रको भाई सहित जनस्थानमें निवास कियेहुये बताया उन लोगोंने जानकर श्रीराघवजीके पासको बड़े बलवान् ५३ चौदहसहस्र राक्षसों को ले व उनके आगे वे तीनों राक्षसोंके अधिपति भी चले ५४ क्योंकि उन महाबलवानोंको

रावणने शूर्प्पणखाकी रक्षाके लिये पूर्व्वकालमें नियत किया था सो वे महाबलसे घिरेहुये राक्षस जनस्थानमें आये ५५ क्योंकि वे लोग नकटी व कनकटी शूर्प्पणखाको देखकर बड़े क्रुद्ध हुयेथे वह रावणकी भगिनी रोदन करनेके कारण आंशुओंसे भीगी जाती थी ५६ रामचन्द्रजीने भी जब उन बलवान् राक्षसोंकी बड़ीभारी सेना देखी तो सीताजीकी रक्षाके लिये वहां लक्ष्मण जीको संस्थापितकर ५७ व वहां जाकर बलसे दर्प्पित उनमहा बलवान् तीनों राक्षसोंकी भेजीहुई महाबलवती उस राक्षसोंकी सेनाको ५८ अग्निकी शिखाके समान चमकते व जलते हुये बाणोंसे एकक्षणभरमें मारडाला व खर व दूषण इन दोनों महा बलवानोंकोभी मारडाला ५९ व रणमें त्रिशिरको भी बड़े रोष से श्रीराघवजीने बधकिया उन सब दुष्ट राक्षसोंको मारकर श्री रामचन्द्रजी अपने आश्रमपर आये ६० तब रोतीहुई शूर्प्प णखा रावणके निकटगई तब नकटी अपनी भगिनीको देख रा वण ६१ दुर्बुद्धिने सीताके हरनेके विचारसे मारीचनाम राक्षस से कहा कि हे मामा हम व तुम पुष्पक विमानपर चढ़के जाके ६२ जब जनस्थानके समीप पहुँचेंगे तो हमारी आज्ञासे तुम सुवर्णके मृगकारूपधरके धीरेधीरे ६३ कार्य्यके लिये चलना व वहां जाना जहां कि सीता टिकीहो सुवर्णके मृगको बालक तुम को देख वह तुम्हारे लेनेको ६४ इच्छाकरेगी व रामचन्द्रको पक ड़नेके लिये भेजेगी व उसके कहनेसे तुम्हारे पीछे जब रामचन्द्र दौड़ें तो तुम गहनबनमें दौड़जाना ६५ फिर लक्ष्मणके बुलानेके लिये तुम कोई भ्रम होजाने का शब्द बोलना तब हम पुष्पक पर चढ़ेहुये मायारूपसे ६६ उस सीताको लावेंगे क्योंकि हमारा मन उसमें आसक्तहै व तुमभी फिर अपनी इच्छासे पीछेसे चले आना हे शोभन ६७ जब ऐसा रावणने कहा तो मारीच वचन बोला कि हे पापिष्ठ तूही जा हम तो वहां न जायँगे ६८ क्योंकि

पूर्व्वकालहीमें विश्वामित्र मुनिके यज्ञमें इन रामने हमको व्यथित करदियाथा जब मारीचने ऐसा कहा तो रावण मारेक्रोधके मूर्च्छित हो ६९ मारीचके मारडालनेपर उतारू हुआ तब मारीच रावणसे बोला कि तेरे हाथसे मरनेसे वीर श्रीरामके हाथ से मरना श्रेष्ठ है ७० इससे जहां तुम हमको लेजाना चाहते हो वहां हम जायँगे तो पुष्पकपर चढ़के जनस्थानमें मारीच आया ७१ व सुवर्णका मृग बनके जहां जनककी पुत्री श्रीसीताजी थीं वहां गया ७२ व सुवर्णका मृगका बालक देख यशस्विनी श्री जानकीजी होनेवाले कर्म्मके वशसे श्रीरामचन्द्रजीसे बोलीं ७३ कि हे महाराजकुमार यह मृगका बच्चा पकड़कर हमकोदो अयोध्याजीमें हमारे मन्दिरमें यह खेलनेके लिये होगा ७४ जब उन्होंने ऐसा कहा तो श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजीको वहीं सीताजीकी रक्षाके लिये स्थापितकर आप उस मृगके पीछेगये ७५ जब रामचन्द्रजी उसके पीछे चले तो वह मृग वनमें भागा तब रामचन्द्रजीने बाणसे उसमृगके बच्चेको मारा ७६ वह हे लक्ष्मण ऐसा जोरसे कहकर पृथ्वीपर गिरपड़ा व पर्व्वताकार वह मारीच उन रामचन्द्रजीके मारनेसे मृतक होगया ७७ हे लक्ष्मण ऐसा कहकर रोतेहुये का शब्द सुनकर सीताजी लक्ष्मणसे बोलीं हे पुत्र लक्ष्मण तुम वहां जाओ जहां यह शब्द उत्पन्न हुआहै ७८ तुम्हारे ज्येष्ठभ्राताके रोदनका शब्द सुनाई देता है हम बहुधा रामचन्द्रजी को किसी सन्देहमें पड़ेहुये लक्षित करती हैं ७९ जब उन्होंने ऐसा कहा तो लक्ष्मणजी निन्दारहित उन सीताजीसे बोले कि श्रीरामचन्द्रजीको कहीं न कुछ सन्देहही होसक्ता है न भयही होसक्ताहै ८० ऐसा कहतेहुये लक्ष्मणजीसे भावी कर्म्मके बलसे राजा विदेहकी भी कन्या जानकीजी विरुद्ध वचन बोलीं जो उनको लक्ष्मणजी के विषयमें कहना उचित न था ८१ रामचन्द्रजीके मरजाने पर हमको चाहतेहो इससे तुम

न जाओगे जब उन्होंने ऐसा कहा तो विनीतात्मा श्रीलक्ष्मण जी वह निन्द्यवचन न सहसकके ८२ हे राजकुमार श्रीरामचंद्र जीके ढूँढ़नेके लिये चलदिये व उसी बीचमें सन्न्यासीका वेष बनाय दुष्टात्मा रावण भी ८३ सीताजीके पास आकर यह वचन बोला कि श्रीमान् भरतजी अयोध्याजीसे आये हैं ८४ व रामचन्द्रजी के साथ सम्भाषण करके उसी बनमें ठहरे हैं सो रामचन्द्रजीने हमको तुम्हारे समीप भेजा है तुम इस विमान पर चढ़ो ८५ अब भरतने प्रसन्न कियाहै इससे रामचन्द्रजी अयोध्याजीको जाते हैं व कहाहै कि तुम्हारे लिये मृगका बच्चा हमने पकड़ाहै ८६ तुम इस महावनमें बहुत दिनोंसे रहते २ क्लेशित होगईथीं अब तुम्हारे स्वामी रुचिर मुखारविन्दवाले श्रीरामचन्द्रजीको राज्य मिलगया ८७ व विनीतात्मा लक्ष्मण भी जातेहैं इससे तुम इसविमानपर चढ़ो जब उसने ऐसा कहा तो वे विमानपर चढ़ीं व दुरात्मा रावण लेभागा ८८ ये तो उसके छलसे विमानपर चढ़गईथीं देखा तो वहविमान बड़ी शीघ्रता से दक्षिण दिशाको चला ८९ तब दुःखार्त्त होकर सीताजी उसी विमानपर विलाप करनेलगीं पर विमानपर चढ़ीहुई आकाश मार्गी होकर रोदन करती हुई भी सीताजी को रावणने स्पर्श नहीं किया ९० व सन्न्यास वेष छोड़ रावण अपने राक्षस के रूपमें होगया जिसके दश तो शिरथे व बड़ा भारी देहथा उसे देख सीताजी और भी दुःखितहुईं ९१ व पुकारकर कहनेलगीं कि हा राम घोररूप कपट वेषधारी किसी राक्षसने हमको छला है हमारी रक्षाकरो हम बहुत भयसे पीड़ित हैं ९२ हे महाबाहु लक्ष्मण हमको दुष्टराक्षस लियेजाता है इससे शीघ्र आकर लेजातीहुई व अति व्याकुल हमारी रक्षाकरो ९३ इस प्रकार प्रलाप करतीहुई सीताजीकी वह बड़ीभारी पुकार सुन जटायु नाम गृध्रराज वहां आपहुँचे ९४ व बोले कि हेदुष्टरावण खड़ा

हो व यहीं मैथिलीजीको छोड़दे इतना कह वीर्य्यवान् जटायुजी उससे युद्ध करनेलगे ९५ पहिले उड़कर अपने दोनों पंखोंसे रावणकी छातीमें आघात किया मारने पर जटायुको रावणने बड़ाबलवान् जाना ९६ व जटायु ने फिर अपनी बड़ी ऊँची चञ्चुसे बार २ प्रहार किये तब रावणने बड़ेवेगसे चन्द्रहास नाम अपनाखड्ग उठाकर ९७ उसी से उसदुष्टात्माने धर्म्म-चारी जटायुको मारा कि मूर्च्छितहो जटायु पृथ्वी पर गिरपड़े ९८ व रावण से बोले कि हे दुष्टात्मन् तूने हमको नहीं मार-पाया किन्तु चन्द्रहास के वीर्य्य से हम मारेगये हे राक्षसाधम ९९ हे मूढ़ आप आयुधलियेहो व दूसरा बिनाआयुधका हो तो तुमको छोड़ अन्य कोई नीचभी उस बिनाआयुधवालेको न मारेगा पर हे दुष्टराक्षस इस सीताहरणको अपनी मृत्यु तू जाने १०० हे दुष्टरावण तुमको श्रीरामचन्द्रजी मारडालेंगे इसमें कुछभी संशय नहीं है फिर दुःखशोकसे पीडित रोतीहुई श्रीमैथिलीजी जटायुसे बोलीं कि १०१ हे पक्षियोंमें उत्तम ह-मारेलिये जिससे तुमने मरणपायाहै इससे तुम रामचन्द्रजीके प्रसादसे विष्णुलोकको जाओगे १०२ व हे खगोत्तम जबतक तुम्हारा रामचन्द्रजी का सङ्गम होगा तब तक तुम्हारे प्राण अभी देहमें रहें उनसे ऐसाकह १०३ फिर अपने अंगोंसे कुछ भूषण भट उतार व वस्त्रमें बांध श्रीरामके हाथमें जाना १०४ यह कहकर सीताजीने भूमिपर फेंकदिया इसप्रकार सीता को हर व जटायुको मरणप्रायकरके १०५ पुष्पकपर चढ़ाहुआ दुष्ट निशाचर लंकाको चलागया व अशोकवनिका के मध्यमें मै-थिलीजी को स्थापितकर १०६ व इनको यहीं रक्खो ऐसा घोर राक्षसियोंसे कहकर राक्षसोंकाईश्वर रावण अपनेगृहको चलागया १०७ व लंकाके सबनिवासी एकान्त में आपस में कहनेलगे कि इस दुष्टरावणने इसपुरीके विनाशकेलिये इनको

यहां स्थापितकिया है १०८ भयंकर रूपवाली राक्षसियों से रक्षितसीताजी रामचन्द्रजीका स्मरण करतीहुई अतिदुःखित वहां रहनेलगीं १०९ व वार२ अतिदुःखसे पीड़ितहो अत्यन्त रोदनकरतीं जैसे अज्ञानी खलकेपास रहनेसे हंसपर चढ़नेवाली सरस्वतीजी दुःखितहोतीहैं ११० यहां जोभूषण सीताजीने वस्त्रमेंबांधकर भूमिपरडालेथे कहींसुग्रीवके चारसेवक वानरघूमते२ वहांगयेथे उन्होंने उनको वैसेहीवस्त्रसे बँधेहुये लेकर १११ सुग्रीवजीको देदिये व कहा कि वनमेंआज जटायु व रावण से महायुद्धहुआ ११२ यहां मायासे आयेहुये मारीच कोमार श्रीरामचन्द्रजी लौटेआतेथे कि देखा तो लक्ष्मणजी आतेथे उनकेसाथ अपने आश्रमपर आये ११३ सीताजीको वहां न देखतेही दुःखार्त होकर श्रीराघवजी नरनाट्यलीला के अनुकरण करनेकेलिये रोदन करनेलगे व महातेजस्वी लक्ष्मणजीभी अत्यन्त दुःखितहो विलापकरनेलगे ११४ जब रामचन्द्रजी रोदन करतेहुये बहुत अस्वस्थ होकर भूमि पर गिरपड़े तो धीमान् लक्ष्मणजी उनको उठाय व समझाकर ११५ समयके अनुसार जो वचनबोले वह हमसेसुनो हे महाराज बार२ आप ऐसादुःख करनेके योग्यनहीं हैं ११६ हे महाराज उठिये२ चलिये सीताजीकोढूंढ़ें जब महात्मा उन लक्ष्मणजीने ऐसाकहा ११७व दुःखितमहाराजको दुःखितभ्रातालक्ष्मणजीने उठाया तब भाईकेसाथ श्रीरामचन्द्रजी सीताजीकेढूंढ़नेको बन मेंगये ११८व प्रथम सबबनढूंढ़े फिर सबपर्वत व उनकेकँगूरेढूंढ़े फिर मुनियोंके बहुतसे आश्रमढूंढ़े भूमिपर जहांकहीं तृण व लताआदिसे सघन स्थानथा वहांभीढूंढ़ा ११९ नदीकेतटपर व अन्यभूमिके श्रेष्ठभागपर व गुहाओंमें इन सबस्थानोंमें महानुभाव श्रीरामचन्द्रजीने अपनी प्राणप्रियाको देखा पर न देखकर फिर वे अतिदुःखित होगये कि तबतकदेखा तो मारे

हुये जटायु पड़े थे १२० उनको देखबोले कि आपको किसनेमारा जो तुम ऐसीदशाको प्राप्तहुये अथवामरगयेहो कि जीतेहो हम भी इससमय आपहीके समान दुःखित हैं क्योंकि पत्नीके वियोगसे यहां आये हैं १२१ जब श्रीरामचन्द्रजीने ऐसाकहातो जटायु बड़ेकष्टसे मधुरवाणीबोले कि हे राजन् हमाराव्रत्तसुनो जो हमनेयहांदेखा व कियाहै कहते हैं १२२ रावण मायासे उन सीताको हरकर विमानपर चढ़वाय आकाशमार्ग्ग होकर दक्षिणदिशाको मुखकरकेचला तब सीतामाताने दुःखितहो बड़ा विलापकिया १२३ हे राघव तब सीताजीका शब्दसुन अपने बलसे उनको छुटानेके लिये हम यहां आये व उस दुष्टके साथ बड़ा भारी युद्धभी किया परन्तु खड्ग के बलसे उस राक्षस से मारे भी गये १२४ सो वैदेहीजीके वाक्यसे जीतेहुये हमने आप को देखा अब यहांसे स्वर्ग्गको जायँगे हे भूमिपाल श्रीराम आप शोक न करें अब परिवार सहित उस दुष्ट राक्षसको मारें १२५ जब जटायुने ऐसा कहा तो रामचन्द्रजी शोकसे फिरउनसे बोले कि हे पक्षियोंमें उत्तम तुम्हारे लिये स्वस्तिहो व तुम्हारी उत्तम गति हो १२६ तब जटायु अपना देह छोड़कर दिव्य व रम्य विमानपर चढ़ अप्सराओंसे सेव्यमानहो स्वर्ग्ग को चलेगये १२७ तब रामचन्द्रजी अपने हाथोंसे जटायुकी दाह क्रिया कर स्नानकर व तिलाञ्जलिदे भ्राताके साथ दुःखित जाते थे कि मार्ग्गमें एक मानुषी स्त्रीको उन्होंने देखा १२८ जोकि प्रथम मुख्य मुनियोंको मुख फैलाकर भयकराती व मुखसे अग्निकी ज्वाला उगिलती व अन्य जन्तुओंका भी नाश करती व क्रोध से गिरादेती व शवरी उसका नामथा उसने रामचन्द्रजीको बेर आदि फलोंसे बहुत सन्तुष्ट किया इससे उसे स्वर्ग्ग को पहुँचाकर फिर रामचन्द्र जी अन्यत्र को गये १२९। १३१ एक बनमें चले जातेहुये श्रीरामचन्द्रजी ने कबन्धनाम राक्षसको

देखा जिसका बहुत विरूप रूपथा क्योंकि पेटमें तो उसका मुख था व बड़ेलम्बे बाहुथे बादरकासा गर्ज्जनाथा १३२ उसने आकर रामचन्द्रजीका मार्गही रूँधलिया इससे देखकर रामचंद्र जीने धीरेसे उसे जलादिया तब वह दिव्यरूपी व स्वस्थचित्त हो श्रीराघवजीसे बोला १३३ हे राम हे राम हे महाबाहो हेमहामते तुमने बहुत दिनोंसे मुनिके शापसे हुआ हमारा विरूप नाशित करदिया १३४ अब तुम्हारे प्रसादसे स्वर्गको जाता हूँ इससे धन्यहूं तुम सीताके मिलनेके लिये सुग्रीवसे मित्रता करो १३५ क्योंकि वह सुग्रीव वानरोंका राजाहै उसके समीप जाय अपना सब वृत्तांत कहो वह हे नृपश्रेष्ठ ऋष्यमूक पर्व्वत पर होगा इससे आप वहीं जायँ १३६ यह कह जब वह चला गया तो लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजी एक आश्रमपर पहुँचे जोकि सिद्धमुनियोंसे शून्य पड़ाथा १३७॥

चौ० तहँ तापसी विराजत एका। जपत सदा हरिगुण अनेका॥ त्यें रामहि पूजत विलँभावा। ताहि पूजि निजकथा सुनावा १। १३८ सीतहि तुम पैहो रघुनाथा। असकहि गहि धरि पदपर माथा॥ अग्निप्रवेश कीनतनु अपना। स्वर्गगई जगताजि गुनि सपना २। १३९॥

हरिगीतिका॥

गुण सहित बहुत विनीत भ्राता सहित जगदीश्वरहरी।
दयिता वियोग अयोग दुःखित रामनदिशिकी मगधरी॥
श्रीरामदेव सुदेव सेवित जिन्हें दुख सपन्यों नहीं।
सोकरतहैं नरनाट्यलीला होतदुःखितहैं कहीं ३। १४०॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेरामचरित्रेएकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः॥४९॥

पचासवां अध्याय॥

दो० कहब पचासयें महँ सकल किष्किन्धावर काण्ड॥
जहँ सुकण्ठ भेजे कपिन हते जिते ब्रह्माण्ड १

मार्कण्डेयजी सहस्रानीकराजासे बोले कि बालीसे बैर किये दुर्ग्गमस्थानमें बैठेहुये वानरोंके राजा सुग्रीव दूरहीसे श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीको देख पवनकेपुत्र हनुमान्‌जीसे बोले १ कि धनुष हाथोंमें लियेचीर वल्कल धारणकिये कमलयुक्त दिव्य पम्पासरको देखतेहुये येदोनों किसके पुरुष हैं २ नाना प्रकारके रूपधारी ये दोनों इस समय तपस्वीके वेष धारणकिये बालीके दूत हैं यहां आये हैं यह सुग्रीवने निश्चयकिया ३ इसलिये ऋष्यमूकपर्व्वत परसे वे उछले व अन्यवनकी ओरचले सब वानरोंकेसङ्ग उत्तम अगस्त्याश्रम की ओरबढ़े ४ वहां ठहरकर सुग्रीव पवनतनय से फिर बोले हे हनुमान्‌जी तुम तापस वेष धारण कर शीघ्र वहां जाओ व पूछो कि ५ वे कौन व किसके पुत्र हैं व यहां किस अर्थ आये व ठहरे हैं यह जानकर हे महामति वायुपुत्र सब हमसे सत्य २ कहो ६ जब सुग्रीवने ऐसाकहा तो भिक्षुकका रूप धारणकर हनुमान्‌जी पम्पाकेतीर पर जाय भ्रातासमेत श्रीरामचन्द्रजीसे बोले ७ कि हे महामतिवाले आपकौन हैं हमसे सत्यकहें इस घोरबनमें कैसे प्राप्त हुये हैं व क्या प्रयोजनहै व कहांसे यहां आये ८ ऐसाकहते हुये हनुमान्‌जीसे अपनेभ्राताकी आज्ञासे लक्ष्मणजीबोले हम कहते हैं तुम रामचन्द्रजी के वृत्तान्त आदिसे सुनो व समझो ९ महाराज दशरथनाम पृथ्वी पर प्रसिद्धहुये हैं उनके ज्येष्ठ पुत्र ये श्रीरामचन्द्रजी हमारे ज्येष्ठभाई हैं १० इनका राज्याभिषेक होनेलगाथा कैकेयीने उसे रोकदिया सो पिताकी आज्ञा करनेके अर्थ ये हमारे ज्येष्ठभ्राता रामचन्द्रजी ११ हमारे व अपनी भार्य्या सीताजीके सङ्ग वहांसे निकलकर दण्डकारण्य में आये जहां कि नानाप्रकारके मुनिगण रहते हैं १२ सो जनस्थानमें बसतेहुये इन महात्मा श्रीरामचन्द्रजी की भार्य्याको कोई पापी हर लेगया १३ सीताको ढूंढतेहुये श्रीरामचन्द्रजी

यहां आये तब तुमने देखा वस यह हमने वृत्तान्त कहा १४ लक्ष्मण महात्माके ऐसे वचन सुनकर पवनकेपुत्र हनुमान्जी विश्वाससे आनन्दहुये १५ व तुम हमारे स्वामीहो ऐसा रघुपति श्रीरामचन्द्रजी से कहतेहुये समझाकर व अपने संगले आकर सुग्रीव से उन्होंने इनकी मैत्रीकराई १६ तब विदितात्मा श्रीरामचन्द्रजी के चरणारविन्द अपने शिरपरधर वानरेंद्र सुग्रीवजी मधुर वचन बोले १७ कि हे राजेन्द्र इससमयसे आप अब हमारेस्वामीहैं इसमेंकुछ संशयनहींहै व हेप्रभो हम वानरों सहित आपकेभृत्यहैं १८ हे राघव आजसे जो तुम्हाराशत्रुहै वह हमाराशत्रुहै व जोतुम्हारामित्रहैवहहमारासन्मित्रहै जो आपको दुःख है वह हमकोभी है १९ व तुम्हारीही प्रीति हमारी प्रीतिहै यह कहकर फिर राघवजीसे बोले कि महाबल पराक्रमी हमारा ज्येष्ठभाई बालीहै २० कामासक्त मन हो उसने हमारीनारी हर लीहै सो हे पुरुषव्याघ्र तुम को छोड़ इससमय और कोई बालीकेमारनेवाला नहीं है २१ इससे हे रघूत्तम श्रीरामदेव महाबाहुजी उसे आपमारें जब सुग्रीवने ऐसा कहा तो उनकपीश्वर से रामचन्द्रजीने कहा हम उसे मारडालेंगे २२ उसेमारकर बालीकाराज्य व पत्नी व तुम्हारीपत्नी तुमकोदेंगे तब विश्वासके लिये सुग्रीव श्रीरामचन्द्रजीसे बोले २३ व रामचन्द्रजीसे क्षमा करातेहुये बालीकाबल बतानेलगे कि एकही संग जो सातताल के वृक्षगिरावेगा वह बालीको मारसकेगा यह पुराणजाननेवाले लोगोंने कहरक्खाहै हे महाराजकुमार २४ सुग्रीवका प्रियकरने केलिये श्रीरामचन्द्रजीने आधीहीदूरतक खींचेहुये एकहीबाण से उनबड़ेभारी सातोवृक्षोंको काटकर एकहीसंग गिरादिया २५ व उनमहावृक्षों को काटकर सुग्रीवसे रामचन्द्रजी बोले कि हे सुग्रीव अपनेमें कुछ चिह्नबनाकर चलो बालीके संग युद्धकरो २६ जब रामचन्द्रजीने ऐसा कहा तो कुछ चिह्नकरके सुग्रीव

जाकर वालीके संग लड़े रामचन्द्रजी ने भी वहां जाय एकही
बाणसे वालीको २७ मारा यद्यपि वह बड़ा वीर्य्यवान् था पर
बाणकेलगतेही गिरा व मरभीगया फिर डरेहुये वालीकेपुत्र
अंगदको जिसने कि बड़ी विनयकी २८ व जो रणकर्म्ममें बड़ा
चतुरथा श्रीराघवजी उसे युवराजपदवीपर स्थापितकर व तारा
को व उनकी स्त्री को भी सुग्रीवकोदे २९ फिर धर्म्मात्मा कमल
लोचन श्रीरामचन्द्रजी सुग्रीव से बोले कि अब तुम फिर वा-
नरोंके राजाहोओ ३० व हे वानरेन्द्र अबसीताके खोजने में
बहुत शीघ्र यत्नकरो ऐसा कहनेपर सुग्रीव लक्ष्मण संयुक्त श्री
रामचन्द्रजी से बोले कि ३१ हे रघुनन्दनजी इससमय अब
बड़ाभारी वर्षाकाल आगया है इससे वनमें इन्द्रबसते हैं वा-
नरोंकीगति इधर उधर जानेकी नहीं रही ३२ जब वर्षाकाल
बीतजायगा व निर्म्मल शरद्काल आवेगा तब हेराघवजी सब
दिशाओंमें वानरोंको दूतबनाकर भेजेंगे, ३३ यह कहकर राम-
चन्द्रजी के प्रणाम कर कपीश्वर सुग्रीव पम्पापुर में प्रवेशकर
तारादिकोंके संग क्रीड़ाकरनेलगे ३४ व रामचन्द्रजीभी अपने
भाईलक्ष्मणकेसाथ विधिपूर्व्वक उस नीलकण्ठनाम पर्व्वतके
शृंगके ऊपर अति मनोहर वनमें बसे ३५ बड़े २ कष्टोंसे जब
वर्षाकालबीता व निर्म्मल शरदऋतु आया तो सीताजीके वि-
योगसे व्यथित श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणसे बोले कि ३६ सुग्रीवने
समयकाउल्लंघन करदिया इससे हेलक्ष्मण तुमजाओ ३७ वहे
दुष्ट वानरराज अबतक नहीं आया उसने कहा था कि वर्षा-
काल बीतजानेपर हम तुम्हारे समीप आवेंगे ३८ सो अकेले
नहीं अनेकवानर संगलेकर आवेंगे यह कहकर उससमय वह
गयाथा इससे अब जहां वह कपिनायकहो वहां तुम बड़ी शीघ्र-
तासेजाओ ३९ व ताराकेसंग विहारकरतेहुये उसदुष्टको आगे
कर सेना सहित शीघ्र यहां लाओ ४० जो कदाचि ऐश्वर्य्य

पाकर सुग्रीव यहां न आवे तो उस झूठे सुग्रीव से तुम यह कहना ४१ कि हे दुष्टबालीके मारडालनेवालाबाण अब भी हमारेहाथमें है इससे उसका स्मरणकरले तूने श्रीरामचन्द्रके वचनको भुलादिया४२जब श्रीराघवजीनें ऐसा कहा तो लक्ष्मण जी श्रीरामजीके प्रणामकर व बहुत अच्छा ऐसाही करेंगे यह कह ४३ पम्पापुरकोगये जहां कि सुग्रीव रहतेथे वहां कपिराज सुग्रीवको देख लक्ष्मणजी बोले ४४ कि तुम ताराके भोगमें आसक्तहो रामचन्द्रजीकेकार्य्यसे विमुखहोगये जो तुमने रामचन्द्र जीके आगे समय कियाथा क्या भूलगये ४५ हे दुष्ट तूने कहा था कि जहां कहीं होंगी सीताको हम ढूँढ़ेंगे जिन्होंने बालीको मार तुझको राज्यदिया४६ उनरामचन्द्रजीका पापीतुझवानरराजकोछोड़ और कौनअपमानकरेगा भार्य्याहीन श्रीरामचन्द्र जीसे प्रतिज्ञा करके अब चुपहो बैठरहा ४७ देवता अग्नि व जलकेनिकट तूने प्रतिज्ञाकीथी कि हम तुम्हारी सहायताकरेंगे क्योंकि जो२ तुम्हारेशत्रु हैं राजन् वे२ हमारेभीशत्रुहैं४८व हे देव जो तुम्हारे मित्रहैं वे हमारेभी सदामित्र हैं इससे सीताके खोजनेकेलिये हम बहुत से वानर संगलेकर ४९ तुम्हारेपास को आवेंगे यह सत्यकहतेहैं भला ऐसा कहकर उसके विपरीत कौन करेगा हां पापी तुझको छोड़कर कि रामदेवके समीपभी कहकर फिर न किया ५० हे दुष्टवानर उनसे अपना कार्य्यकरा लिया व आप चुपहोरहा हमने ऋषियों कासासत्यवत् तुझमें इससमयदेखा ५१ कि वे लोग सब के आचरणों को जानतेहैं महात्माहोते व सर्व्वज्ञहोतेहैंपर किसीके मारनेके विषयमें कुछ नहीं कहते वैसेही तुभी राक्षसहिंसासे डरताहोगा ५२ हम इसलोकमें ऐसा पुरुष नहीं देखते जो प्रथम अपना कार्य्यहोजानेपर करनेवालेका प्रत्युपकार आप भी करे क्योंकि जब कार्य्य होजाताहै तो सब की और मति होजाती है देखो बछड़ा जब

दूध नहीं देखता तो माताको छोड़देता है ५३ शास्त्रमें हमने बड़े २ पापियोंका उद्धारदेखा है परन्तु हे दुष्टवानर कृतघ्न पुरुषकी निष्कृति हमने कहीं नहीं देखी ५४ इससे कृतघ्नता न कर अपनी कीहुई प्रतिज्ञा का स्मरणकर आश्रितपालक श्री रामचन्द्रजीके शरणकोचल ५५ व यदि न चलताहो तो रामचन्द्रजीका यह वचनसुन उन्होंने कहा है कि जैसे हमनेवाली को यमालयको पहुँचाया है वैसे सुग्रीव को भी पहुँचावेंगे ५६ वहबाण हमारेपास अबभीहै जिससे बालीवानरको हमनेमारा था जब लक्ष्मणजीने ऐसाकहा तो वानरोंकानायक सुग्रीव ५७ अपने मंत्री हनुमान्‌जीके कहनेसे निकलकर उसने लक्ष्मणजी के प्रणामकिया व वह वानरराज लक्ष्मणजी से बोला भी ५८ कि अज्ञानसे पाप करनेवाले हम लोगोंके अपराध आप क्षमा करें अमित तेजस्वी श्रीरामचन्द्रजीसे जो समय हमने किया है ५९ हे महाभाग उसका उल्लंघन अब भी नहीं करते हे महाराजकुमार आज सब वानरोंको लेकर ६० तुम्हारे साथ रामचन्द्रजीके पास चलेंगे इसमें कुछ संशय नहीं है व हमको देख श्रीरामचन्द्रजी जो हमसे कहेंगे ६१ वहसब शिरसे ग्रहणकरके करेंगे इसमें भी कुछ संशय नहीं है हमारे शूरवीर बहुत वानर हैं सीताजीके खोजनेके लिये ६२ उनको सबदिशाओंमें भेजेंगे हे राजन् जब वानरोंके राजा सुग्रीवने ऐसा कहा तो लक्ष्मण जी ६३ बोले कि अच्छा शीघ्र चलो हम तो अभी रामचन्द्र जीके पास जायँगे हेवीर वानरों व ऋक्षोंकी सेना बुलाओ ६४ जिसको देखकर श्रीरामचन्द्रजी तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहों हेमहामते जब लक्ष्मणजीने ऐसा कहा तो वीर्यवान् सुग्रीवजी ६५ पासहीमें खड़ेहुये युवराज अंगदसे संज्ञापूर्वक बोले वेभी वहां से बाहर निकलकर सेनापतिसे जोकि सब सेनाको लेचलता था उससे बोले ६६ कि सेना इकट्ठी करो बस जैसेसब सेना-

पतियों ने बुलाया कि ऋक्ष व वानरोंके झुण्डके झुण्ड आये गुहाओंके रहनेवाले व पर्व्वतोंपरके व वृक्षोंपरके रहनेवाले सब आये ६७ उन सब पर्व्वताकार महापराक्रमी वानरों के साथ आकर सुग्रीवने श्रीरामचन्द्रजीके प्रणामकिया ६८ व लक्ष्मण जीभी नमस्कार करके भ्राता श्रीराघवजीसे बोले कि महाराज अब इन विनीत सुग्रीवके ऊपर आप प्रसन्नहों ६९ जब भ्राता ने ऐसा कहा तो श्रीरामचन्द्रजी सुग्रीव से बोले कि महावीर सुग्रीव यहां आओ तुम्हारे यहां सब कुशलहै ७० ऐसा रामचन्द्रजीका वचन सुन व महाराजको प्रसन्न जान सुग्रीव श्रीराघवजीसे बोले ७१ कि हे राजन् हमारी कुशल तो तब होगी जबकि श्रीसीतादेवीको लेआकर आपको देदेंगे अन्यथा कुशल कहां है ७२ जब सुग्रीवने ऐसा वचन कहा तो श्रीरामजी के प्रणाम करके पवनके पुत्र हनुमान्जी वानरोंके राजा सुग्रीव जीसे बोले कि ७३ हे सुग्रीव हमारा वाक्य सुनो ये महाराज अत्यन्त दुःखितहैं यहां तक कि सीताजीके वियोगसे फलादिक भी नहीं भोजन करते ७४ व इन्हींके दुःखसे ये लक्ष्मणजी भी सदा अति दुःखित रहते हैं इन दोनोंकी जो अवस्था है उसे सुन इनके भाई भरतभी दुःखितहोंगे ७५ व उनके दुःखसे सब उनके जन अयोध्यावासी व राज्यवासी दुःखित होतेहोंगे जिस्से ऐसा है इससे हे राजन् अब सीताजीका खोज लगाओ ७६ जब वायुके पुत्र हनुमान्जीने ऐसा कहा तो तब तेजस्वी जाम्बवान्जी रामचन्द्रजीके नमस्कार करके आगे खड़ेहुये ७७ व वानरराजसे नीतियुक्त वचन बोले क्योंकि वे बड़े नीतिमान् थे कि भो सुग्रीव वायुपुत्रने जो कहा उसे वैसाही जानो ७८ जहां कहीं यशस्विनी पतिव्रता महाभागा वैदेही जनकात्मजा रामचन्द्रजी की भार्य्या सीता जी स्थित हैं ७९ हमारे मनमें यह निश्चयहै कि अबभी वे अपने पातिव्रत धर्म्ममेंटिकी हैं क्यों-

कि कल्याण चिंतवाला उन सीताजीका निरादर पृथ्वीपर कोई
८०नहींकरसक्ता इससे हे सुग्रीव आजही वानरोंको भेजो जब
उन्होंने ऐसा कहा तो वानरोंकेनायक सुग्रीवजी बहुतप्रसन्नहुये
८१ व पश्चिम दिशाको प्रथम श्रीरामचन्द्रजीकी भार्य्या सीता
जीके ढूँढनेके लिये उन महापराक्रमीने वानरोंको भेजा ८२ फिर
उत्तर दिशाको उन्होंने बड़े निपुण वानर बहुत से भेजे व उनसे
कहा कि सीताजीका अन्वेषण सबजने जाकरो ८३ व कपिराज
ने पूर्व्वदिशाको भी रामचन्द्रजी की भार्य्या सीताजी के खोजने
को बहुतसे वानरोंको भेजा ८४ इसप्रकार तीनदिशाओं में वा-
नरों को भेजकर वानरों के अधिप बुद्धिमान् सुग्रीवजी वालिके
पुत्र अंगदसे बोले ८५ कि तुम सीताजी के खोजने के लिये द-
क्षिणदिशाको जाओ व जाम्बवान् हनुमान् मैन्द द्विविद ८६
नीलादि महाबल पराक्रमवानर जातेहुये तुम्हारेपीछे २ हमारी
आज्ञासेजायँगे ८७ सो शीघ्रहीजाकर यशस्विनी उन सीता
जीको देखआओ स्थानभी देखआना जहां रहती हैं उनकारूप
शील विशेष जानेआना ८८ कौनलेगयाहै व कहां हैं यह सब
अच्छीतरह जाने पुत्रशीघ्रही आओ जब महात्मा कपिराज
सुग्रीव उनके पितृव्यने ऐसाकहा तो ८९ अङ्गदने तुरन्तउठ
कर उनकी आज्ञा शिरपर धारणकरली ऐसा कहनेपर नीति-
मान् जाम्बवान्‌जी सब वानरों को एकओर स्थापितकर ९०
रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी सुग्रीवव हनुमान्‌जीकोएकओर स्था-
पितकरके बोले कि ९१ हे महाराज कुमार सीताजीके खोजने
के विषयमें हमारावचन सुनो व सुनकर जो आपकोरुचे तो ग्र-
हणकरो ९२ सीताको जनस्थान से रावण लियेजाताथा तब
जटायुने देखाथा व अपनी शक्तिभर युद्धभीकियाथा ९३ व सी-
ताजीके फेंकेहुयेभूषणभी जटायुनेदेखेथे उनकोहमलोग देखकर
उठालाये व सुग्रीवको देदिया ९४ सो जटायुके कहनेसे लाये

थे यहबात सत्यजानिये कि रावणनेही सीताहरीहै ९५ सो जब निश्चयहै कि रावणही लेगयाहै तो लंकामें सीताहोंगी व तुम्हारे दुःखसे दुःखित वहां तुम्हारास्मरण करतीहोंगी ९६ पर हां वहांभी जनकात्मजाजी अपनेवृत्तकी रक्षाकरतीहोंगी क्योंकि तुम्हारे ध्यानहीसे वे अपने प्राणोंकी रक्षा करतीहोंगी ९७ सो दुःखमें परायण आपकी देवीसीताजी वहींहोंगी इससे कुछसन्देहनहींहै इसमें हितवही आपकाकरेगा जो समुद्रकूदजायगा९८सो इसकार्य्यकेलिये आप वायुकेपुत्र हनुमान्को आज्ञा दें व हे सुग्रीव तुमकोभी यहीचाहिये कि पवनतनय को भेजो ९९ क्योंकि हमारे मनमें यहबात आतीहै कि हनुमान्को छोड़ और किसी वानरमें इतनाबल नहींहै जो समुद्रको लांघजाय १०० इससे हमारा वचनकीजिये क्योंकि इसमें हम सबलोगों काभी हित व पथ्यहै जब जाम्बवान्जीने नीतियुक्त व थोड़ेअक्षरोंसे १०१ ऐसा वाक्यकहा तो शीघ्रही आसनपरसे उठ कर पवनतनयके समीपजाकर सुग्रीवजी उनसेबोले कि १०२ हे वायुकेपुत्र वीर हनुमान्जी हमारा वचनसुनो ये इक्ष्वाकुवंश के तिलक महाप्रतापवान् राजाश्रीरामचन्द्रजी १०३ पिताकी आज्ञासे भ्राता व भार्य्यासहित दण्डकारण्यमेंआये ये साक्षाद्धर्म्ममें परायण हैं १०४ व सर्वात्मा सर्व्वलोकेश श्रीविष्णु हैं केवल मनुष्यका रूपही धारणकिये हैं इनकीभार्य्या वह दुष्टदुरात्मा रावण हरलेगयाहै १०५ उनके वियोगसे उत्पन्न दुःख से पीड़ित बन २ में खोजतेहुये इनको हे वीर प्रथम तुम्हीं ने देखाथा १०६ व इनके साथ आकर हमसे समयभी तुम्हीं ने करायाथा इन्हों ने महाबल पराक्रमी हमारे शत्रुको मारडाला १०७व हे वानर इन्हींके प्रसादसे हमने फिर राज्यभी पाया व हमनेभी इनकी सहायता करनेकेलिये प्रतिज्ञा कीथी१०८सो अब वहप्रतिज्ञा तुम्हारेबलसे सत्यकियाचाहतेहैं हेमारुतात्मज

अब तुम समुद्रको उतर निन्दारहित सीताजीको देखकर १०९
चले आओ क्योंकि तुमको छोड़ हम और किसी वानरमें ऐसा
बल नहीं देखते जो सीताजी को देखकर फिर इसपार उतर
आवे इससे हे महामते स्वामी का कार्य्य तुम्हीं करना जानते
हो ११० क्योंकि प्रथम तो तुम बलवान् हो फिर नीतिमान्
फिर दूततांके कर्म्ममें दक्षहो जब महात्मा सुग्रीवने हनुमान्जी
से ऐसा कहा तो १११ हनुमान्जीने कहा कि स्वामीके अर्थ
क्यों न ऐसा करें उसमें भी आप इस प्रकार कहते हैं जब हनु-
मान्जीने ऐसा कहा तो समीपही खड़ेहुये उनसे ११२ शत्रुओं
के जीतनेवाले महाबाहु श्रीरामचन्द्रजी सीताजीके स्मरणकरने
से दुःखार्त्तहो नेत्रोंमें आंशु भरके समयके अनुसार वाक्यबोले
११३ कि हम सहित सुग्रीव समुद्रके उतरने आदिकाभार तु-
म्हारे ऊपर धरते हैं ११४ इससे हे हनुमान्जी तुम हमारी प्रीति
से निश्चयकरके वहां जाओ व अपनी जातिवालोंकी प्रीतिसे
व विशेष सुग्रीवकी प्रीति से ११५ यह तो जानो बहुधा विदि-
तही है कि रावणराक्षस हमारी भार्य्या को लेगया है इससे हे
महावीर जहां सीता स्थित हैं वहां जाओ ११६ कदाचित् वे
हमारा रूप पूँछें कि वेताओ कैसे हैं तो तुम हमको व लक्ष्मण
को बनाय अच्छेप्रकार देखलो ११७ व हम दोनोंके सब अंगों
के चिह्नवनाय जानलो क्योंकि और किसी प्रकार से सीता
विश्वास न करेंगी यह हमारे मतमें है ११८ जब श्रीरामदेवजी
ने ऐसा कहा तो बली हनुमान्जी उठकर आगे खड़ेहो हाथजोड़
बोले ११९ कि हम विशेषरीतिसे आप दोनोंजनोंके लक्षण जानते
हैं व वानरोंके संग जाते हैं आप शोक न करें १२० व औरभी
कुछ चिह्न आप हमको दें जिससे सीताजी को विश्वासपड़े हे
राजीवलोचन १२१ जब वायुपुत्र ने ऐसा कहा तो कमललो-
चन श्रीरामचन्द्रजीने अपने नामसे अंकित अँगूठी निकालकर

हनुमान्‌जीकोदी १२२उसकोले पवनकेपुत्र हनुमान्‌जी रामचंद्र जी व लक्ष्मणजी तथासुग्रीवके प्रदक्षिणाकरके १२३ अञ्जनी केपुत्र हनुमान्‌जी वहांसेऊपरको उछलेव चलदिये औरभी जो वानर और दिशाओं को भेजेथे व हनुमान्‌जीके संग भी जो जानेकोथे जब चलनेलगे तो सुग्रीव सबों से बोले कि १२४ अये आज्ञाकारी बलसेदर्प्पित सब वानरो हमारी दीहुई आज्ञा सुनो १२५ तुम लोग पर्व्वतादिकोंमें कहीं बिलम्ब न करना शीघ्रही निन्दारहित उनसीताजीको देखकर चलेआना १२६ जबतक तुमलोग महाभाग्यवती श्रीरामचन्द्रजी की पत्नी को न देखआओगे तबतक हम यहीं श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मण जीके समीप स्थित रहेंगे कदाचित् विनादेखे व विलम्बसे तुम लोग आये तो नाक व कान काटलिये जायँगे १२७ इसप्रकार आज्ञापूर्व्वक उनसब वानरोंको सुग्रीवजीने भेजा तब वे सब वानर पश्चिम आदि चारोंदिशाओंकोगये १२८ वे पर्व्वतों के सब कँगूरोंपर व पर्व्वतोंकेऊपर नदियोंकेकिनारोंपर मुनियोंके आश्रमोंपर १२९ सबकन्दराओंमें बनोंमें व उपबनोंमें वृक्षोंपर व वृक्षोंकीगांठियोंमें गुहाओंमें व शिलाओंपर १३० सह्यपर्व्वत की बगलोंमें विन्ध्याचलपर व समुद्रके किनारों पर हिमवान् पर्व्वतपरभी व उसकेउत्तर किम्पुरुषादि देशोंमें १३१ मनुष्योंके रहनेवाले सबदेशोंमें व सातोंपातालोंमें फिर इसीभरतखण्डके सबमध्यदेशोंमें व काश्मीरदेशोंमें १३२ पूर्व्वके सबदेशोंमें कामरूपदेशोंमें व अयोध्यामण्डलमें व सबतीर्थों के स्थानोंमें सप्तकोङ्कनादि दक्षिण पूर्व्वदेशोंमें १३३ कहांतक गिनावें सब कहीं तीनोंदिशाओंमें देखा पर सीताजीको बिना देखेही लौटआये व रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीके चरणोंमें नमस्कार करके १३४ व सुग्रीवके भी विशेष प्रणामकरके बोले कि हम लोगोंने कमलसदृश लोचनवाली महाभाग्यवती सीताजीको नहीं देखा

यह कहकर खड़ेहोगये १३५ इसके पीछे यह सुन दुःखित श्री रामदेवजी से सुग्रीव बोले कि हेमहाराज दक्षिणदिशाके बनमें सीताजीको १३६ धीमान् वायुपुत्र वानरसिंह हनुमान् अवश्य देख आवेंगे व देखकर आतेही हैं इसमें कुछ भी संशय नहीं है १३७ हे महावाहु श्रीरामचन्द्रजी आप स्थिरहों यह वचन सत्य है यह सुन लक्ष्मणजी बोले कि इसविषयमें हमने शकुन भी देखाहै १३८ कि सब प्रकारसे सीताजीको हनुमान्देखही कर आवेंगे यह कह समझाबुझाकर रामचन्द्रजीके समीप सुग्रीव व लक्ष्मणजी स्थितरहे १३९ व जो वानरोत्तम अंगदको आगेकर यशस्विनी रामचन्द्रजीकी पत्नीको यत्नसे ढूँढ़नेगये थे बिना जानकीजीके देखे बहुत श्रमितहो दुःखितहुये १४० भक्षण बहुत दिन न मिलनेके कारण बहुत क्षुधासे पीड़ितहुये एक अतिघने बनमें घूमते २ उन्हों ने तैजस्विनी एकस्त्रीदेखी १४१ वह एक पर्व्वतकी गुहामें बैठीथी किसी ऋषिकी निन्दा रहित स्त्री थी उसने अपने आश्रमपर आयेहुये इनवानरों को देख १४२ पूँछा कि तुम कौनहो व किसकेहो व किस प्रयोजनके लिये आयेहो ऐसा कहनेपर उससिद्धासे महामति जाम्बवान् जी बोले १४३ कि हमलोग सुग्रीवजीकेसेवक हैं व यहां श्रीरामचन्द्रजीकीभार्य्या सीताजीके खोजनेकेलिये आयेहैं १४४ अब मारेभूँखोंकेमरते हैं निराहार किसदिशामें जानकीजीकोढूँढ़ें जब जाम्बवान् ने ऐसा कहा तो वह शुभरूपिणी उनवानरोंसे फिर बोली १४५ हे कपीश्वरो हम रामचन्द्र व लक्ष्मण व सीता व सुग्रीव को जानती हैं अब हमारेदियेहुये फल यहां भोजनकरो १४६ क्योंकि तुम लोग रामचन्द्रजीके कार्य्यकेलिये आयेहो इससे हमारेलिये रामचन्द्रहीके समानहो यहकह उसतपस्विनी ने अपने योगाभ्यासके बलसे उन सबों को कुछ अमृतदिया १४७ व भोजन कराकर सबोंसे फिर वह बोली कि सीताजी

का स्थान सम्पातिनाम पक्षियोंका राजा जानता है १४८ व वह पक्षी महेन्द्राचलपरके बनमें रहताहै सो हे वानरो तुम इस मार्गहोकर जाओ १४९ वह दूरसे देखनेवालापक्षी सम्पाति है इससे अवश्य बतावेगा फिर वहांसे उसके बतायेहुये मार्ग होकरजाना १५० व पवनकुमार जनककी कन्या सीताजी को अवश्यदेखेंगे जब उस तपस्विनीने ऐसा कहा तो वे वानरबड़े प्रसन्नहुये १५१ क्योंकि उसको उन लोगोंने सज्जनपाया इससे बहुत हर्षितहुये व उसके प्रणामकरके वहांसे चले व सम्पाति के देखनेकी इच्छा से सब महेन्द्राचलपरगये १५२ व वहां बैठेहुये सम्पातिको उनवानरोंने जाकर देखा व उन आयेहुये वानरोंसे वह सम्पातिनाम पक्षी बोला कि १५३ तुम कौन हो व किसके हो जो यहां आये हो शीघ्र कहो विलम्ब न करो ऐसा कहनेपर वानरोंने यथाक्रम सब वृत्तकहे १५४ हम सब रामचन्द्रजीके दूत हैं व सीताजी के खोजनेके लिये वानरों के राजा महात्मासुग्रीवजीके भेजेहुये हैं १५५ सो हे पक्षिराज एकसिद्धाके कहने से तुम्हारे देखने को यहां आयेहैं अब हे महामति महाभाग हम लोगोंसे तुम सीताजीका स्थान बताओ कहांहैं १५६ जब वानरों ने ऐसा कहा तो उसपक्षी ने लङ्काकीओर दक्षिण दिशामें देखा व लंकाकी अशोक बनिकामें बैठीहुई जानकीजी को वहींसे देखलिया १५७ व बताया कि लङ्कामें अशोकबाटिका में सीता हैं तब वानरोंने कहा तुम्हारे भाई जटायु इसप्रकार से मारेगये यहसुन स्नानकरके उसने उसे तिलाञ्जलिदिया १५८ व योगाभ्यास से उसने अपना शरीरभी छोड़दिया तब वानरों ने उसकी दाहक्रिया करके तिलाञ्जलि दिया १५९ व महेंद्राचलके सब से ऊंचे शृंगपर जाकर सब एकक्षणभर स्थित रहे समुद्र देखकर सब आपसमें बोले १६० कि देखो रावणहीश्री रामचन्द्रजीकी स्त्रीको हरलेगया था अब सम्पाति के वचनसे

घनाय सत्यविदितहुआ १६१ साईवानरोंमें ऐसा कौन है जो क्षारसमुद्र उतरकर लङ्काकोजाय व वहां परमयशस्विनी रामचन्द्रजीकी पत्नी को देख १६२ फिर समुद्र उतर आवे भाई जिसे शक्तिहो कहे ऐसा कहनेपर जाम्बवान्जी बोले कि सब वानर इसकार्य्यके करनेमें अशक्तहैं १६३ क्योंकि सागर उतरने में और की शक्ति नहीं है सो हमारे मतसे इसकार्य्यके करने में येहनुमान्जी दक्षहैं१६४अब काल न बितानाचाहिये क्योंकि आधामास अवधिसे अधिक होचुकाहै व हे वानरो यदि बिना जानकीजीके देखे चलेंगे १६५ तो काननाक आदि हम लोगों के सुग्रीव काटलेंगे इससे हम सबोंको चाहिये कि वायुके पुत्र की प्रार्थना करें हमारी तो यह मति है १६६ ॥

चौ॰ जाम्बवानके सुनिइमि वचना। तथाकहा कीशनभलि रचना॥ जाय पवनसुत पहँ सबबोले। वचन सुधासम अतिहिअमोले १। १६७ महाप्राज्ञ यहिकार्य्य विशारद। पवनतनय नययुत अरु मारद॥ रामभृत्य ताहित भयकारी। राक्षस गणके जाहु विदारी २। १६८ अञ्जनिसुत वानरकुल पालहु। जायनिशाचर गण अब घालहु॥ यहसुनि एवमस्तु हनुमाना। कहा कपिनसन सब सुख माना ३। १६९॥

चौपै॰ रघुनन्दन प्रेरो कपि पति केरो पाय निदेश बहोरी।
सबवानरसम्मतगिरिवरपरगतलहिकपिनहुतनिहोरी॥
तबअञ्जनिनन्दन तजिगतिमन्दनउदधिउतरनेकेरी।
कीन्हींमतिअपनीनिशिचरदमनीलंकाजान्नदेरी४।१७०

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेश्रीरामचरितेपंचाशत्तमोऽध्यायः ५०॥

इक्यावनवां अध्याय॥

दो॰ इक्यावनये महँ कथा सुन्दर काण्ड समस्त॥
मुनिवर्णी नृपसों सुनत होतपापसब अस्त १

मार्कण्डेयजी राजासहस्रानीकजीसे बोले कि रावणकी हरी

हुई सीताजीके रहने का स्थान खोजनेके लिये वे हनुमान्जी आकाशमार्ग्ग होकरचले १ चलनेकेसमय पूर्व्वको मुखकर गणसहित ब्रह्माजीके नमस्कारकर व मनसे श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीका ध्यानधर २ सागर व सबनदियोंके शिरझुकाकर व अपनी जातिवालोंको त्याग व प्रणामकरके ३ जबचलेतो वानरोंने कहा व पूजाकी कि हे वायुतनय कल्याणदायक व पुण्यरूप मार्ग्गमेंजाओ व फिर कुशलपूर्व्वक आगमनहो ४ व अनायास तुमवीर्य्यको प्राप्रो जिसमें अति वीर्य्यवान्होकर दूरहीसे ऊपरकामार्ग्ग देखतेरहो ५ इसरीतिसे आशीर्व्वाद पाकर अपनेको सम्पूर्ण मानकर महाबली हनुमान्जी पर्व्वत व आकाशको जोरसे दबाकर ऊपरको उछले ६ जब इसप्रकार वायुमार्ग्ग होकर रामचन्द्रजीके कार्य्यकेलिये धीमान् पवनतनयजी समुद्रके ऊपर२चले तो तब समुद्रकी प्रेरणासे ७ उनके विश्राम करनेकेलिये मैनाकनाम पर्व्वत समुद्रसेउमड़ा उसे देख व दबाकर व आदरसहित सम्भाषण करके ८ औरऊपर को उछलगये उसकेआगे सिंहिकानाम राक्षसीका मुखदिखाई दिया उसमें पैठकर व वेगसे बाहरनिकल ९ फिर प्रतापवान् श्रीहनुमान् शीघ्रचलेगये इसप्रकार सब सागरकाभाग लांघकर पवनतनय १० उसपार त्रिकूटनाम पर्व्वतके एक शिखर परके किसीवृक्षकी शाखापरजाकूदे व उसी पर्व्वतपर दिनबिताकर जबसन्ध्याहुई तो ११ सन्ध्योपासनकर हनुमान्जी धीरे२ रात्रि में लंकानाम लंकापुरीकी अधिष्ठात्री देवताको जीतकर लंकापुरीमेंपैठे १२ व अनेक रत्नोंसेयुक्त नाना आश्चर्य्यके पदार्थोंसे भरीहुई लंकामें हनुमान्जी सब राक्षसोंके सोजानेपर पैठे १३ सबसे प्रथम सब ऋद्धिसिद्धियुक्त रावणके मन्दिरमें पैठे देखा तो बड़ीभारी उत्तम शय्यापर रावण शयनकररहाथा १४ सब नासिकाओंसे बड़ेवेगसे श्वासें आतीजातीथीं ऐसी

नासिकाओं व दांतोंसेयुक्त दशमुखोंसे युक्तथा १५ व सहस्रों स्त्रियां नानाप्रकारके भूषण वस्त्र धारणकिये चारोंओर सोरही थीं उस रावणकेघरमें सीताजीको न देखकर १६ व रावणको उन सब स्त्रियोंके बीचमेंदेख दुःखितहो पवनतनयने सम्पाति केवचनका स्मरणकिया १७ व जाकर नाना प्रकारके पुष्पों से युक्त मलय पवन व सुगन्धित चन्दनसे वासित अशोकवनिकामें पहुँच १८ व उसमें प्रवेशकरके शिंशपाके वृक्षकेनीचे बैठी राक्षसियोंसे अच्छेप्रकार रक्षित श्रीरामचन्द्रजीकी पत्नी जनकात्मजाजीको देखा १९ मधुपल्लवयुक्त व पुष्पित अशोकवृक्षकी शाखापर चढ़के स्मरण करतेहुये कपीशनेजाना कि वस सीताजी यहीहैं २० सीताजीको देखकर वृक्षकेआगे हनुमान्जी स्थितहीथे कि तबतक बहुतसी स्त्रियोंको सङ्गलिये रावण भी वहां आया २१ व आकर जानकीजीसे बोला कि हे प्रिये मुझकामीको भजो अब भूषितहोओ रामचन्द्रमें लगेहुये मनकोछोड़ो २२ ऐसा कहतेहुये रावणके व अपने बीचमें तृणका अन्तरकरके श्रीवैदेहीजी कांपतीहुई धीरेसे रावणसेबोलीं २३ कि हे परदारपरायण दुष्टरावण यहांसेचलाजा बहुतहीशीघ्र श्रीरामचन्द्रजीकेवाण रणमें तेरारुधिर पानकरेंगे २४ जबऐसा जानकीजीनेकहा व बहुतअपकारवचन कहके फटकारा तो रावण राक्षसियोंसे बोला कि दोमासके अन्तरमें इस मानुषीको वशमेंकरो २५ जो हमारीइच्छासीतानकरे तो इसमानुषीको तुम सब भक्षणकरलो इतनाकह दुष्ट रावण अपने मन्दिरको चला गया २६ तब भयसे राक्षसियां जानकीजीसे बोलीं कि हे कल्याणि रावणकोभजो सधनहो सुखिनीहोओ २७ जब उन्होंने ऐसा कहा तो सीताजी बोलीं कि श्रीराघवजी बड़े विक्रमवाले हैं सगण रावणको युद्धमें मारकर हमको लेजायँगे २८ रघूत्तम श्रीरामचन्द्रजीको छोड़ हम और किसीकी भार्य्या न होंगी व

वे आकर दशशिरके भी रावणको मारकर हमारा पालन करेंगे २९ उनका ऐसा वचन सुनकर राक्षसियोंने भय दिखाया कि मारडालो मारडालो इसे व भक्षणकरो भक्षण करलो ३० तब उनमें एक त्रिजटा नाम राक्षसीथी वह उनसे जो उसने स्वप्नमें राक्षसोंके लिये अनिन्दित देखाथा कहा कि हे दुष्ट राक्षसियो रावणका विनाश सुनो ३१ वह स्वप्न सब राक्षसों समेत रावण का मृत्युदायक व भाई लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजीको विजयदायकहै ३२ व स्वप्न जो हमने देखा है वह सीताजी को उनके पतिको मिलावेगा त्रिजटाका वाक्य सुन सीताजीका समीप छोड़कर ३३ सब राक्षसियां चलीगईं तब हनुमान्जी सीताजीसे बोले व रामचन्द्रजी का सब वृत्तांत कहनेलगे ३४ जब उनको विश्वास आया तो पवनकुमारने श्रीरामचन्द्रजीकी अँगूठीदी रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीके सब चिह्न वर्णनकिये ३५ फिर कहा कि बड़ीभारी सेनालिये वानरोंके राजा सुग्रीवको संग लिये तुम्हारे पति प्रभु श्रीरामचन्द्रजी ३६ व महावीर तुम्हारे देवर लक्ष्मणजी यहां आकर सगण रावणको मार तुमको लेजायँगे ३७ ऐसा कहनेपर विश्वासमें आकर सीताजी वायुपुत्र से बोलीं कि हे वीर तुम समुद्र उतर कर यहां कैसे आये ३८ उनका ऐसा वचन सुन हनुमान्जी फिर सीताजी से बोले कि हे मातः समुद्र तो हम गोपदके समान उतरआये ३९ क्योंकि राम २ ऐसा जपतेथे सो हमीं नहीं जोई कोई राम २ जपे उसी को समुद्र गोपद तुल्य होजाताहै बड़े दुःखमें डूबीहुईहो परन्तु हे वैदेहीजी अब स्थिर होओ ४० हम यह तुमसे सत्यही कहते हैं कि शीघ्रही तुम रामचन्द्रजीको देखा चाहतीहो इसप्रकार जनकात्मजा पतिव्रता शिरोमणि सीताजीको समझाकर ४१ व उनसे चूड़ामणिले व काकजयन्तका पराभव सुन व उनके प्रणामकर महाकपिने चलनेका विचार किया व विचार करके

सब अशोकवनिका उजाड़डाली ४२ व उसके फाटक के ऊपर चढ़कर बड़े ऊंचे स्वरसे पुकारा कि वीर्य्यवान् श्रीरामचन्द्रजी सबको जीतते हैं यह कह अनेक राक्षसोंको व सेनाओं को व सेनापतियों को मारडाला ४३ फिर रावणके पुत्र व सेनापति अक्षकुमारको सेनासारथि अश्वसमेत मारा तब मेघनाद आया ४४ व उसके संग रावणके समीपजाय रामचन्द्रजी व लक्ष्मण जी तथा सुग्रीवका वीर्य्य कहकर व सब लंका जलाय रावणका अपमान कर फिर जानकीजी से वार्त्ता करके ४५ फिर समुद्र उतरकर अपनी जातिवालोंको मिलकर सीताजीका दर्शन सब से कह व उनसे पूजित होकरे ४६ वानरोंके संग आकर बड़ा भारी मधुवन उजाड़ फल खाकर रक्षकों को मार हनुमान्जी सब वानरोंको मधुपान कराय ४७ व दधिमुखको मार हर्षित हो सब आकाशमार्ग्गहोकर रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीके चरणों पर ४८ नमस्कारकर व हनुमान्जीने विशेष रामचन्द्रजी व लक्ष्मणके प्रणाम करके फिर सुग्रीवके प्रणाम किया व सबसमुद्र उतरने आदिकी कथा कहकर ४९ फिर श्रीरामचन्द्रजीसे कहा कि हमने सीताजीको देखा अशोकवनिकाके बीचमें सीतादेवी अति दुःखित ५० रहती हैं व राक्षसियोंके मध्यमें घिरीहुई सदा आपका स्मरण करती हैं नेत्रोंसे आंशुवहाती हैं दीनमुखी सदा आपकी पत्नीरहती हैं ५१ व वहांभी श्रीजनकनन्दनीजी अपने शील व पातिव्रत्यादि वृत्तसे युक्तही हैं सब कहीं हमने ढूंढ़ा तब जाकर उन पतिव्रताजी को अशोकवनिकामें देखा ५२ हमने अच्छीतरह देखा व विश्वस्त किया है रघुनन्दनजी व उन्होंने मणियुक्त एक भूषणभी आपके पास हमारे हाथोंसे प्रेषितकिया है ५३ इतना कह उनका दियाहुआ चूड़ामणि श्रीरामचन्द्रजी को दिया व कहा कि आपकी महाराणीजी ने एक वचन भी आपसे कहा है ५४ कि ॥

चौ० चित्रकूटपर जब तुमस्वामी। शयनकीन तब हरिसुत बामी॥ ममतनु चिह्न कीन्हके काका। स्मरण करहु त्यहि हति की शाका १। ५५ लघु अपराधहुपर महराजा। कीन्ह काक सँग जो वरकाजा॥ सो न असुरसुर करिसक कोई। चहै ब्रह्म शंकर किन होई २। ५६ ब्रह्मअस्त्र कियगत यकलोचन। अब रावण बधकरि कुलशोचन॥ इमि बहुवचन कहै वैदेही। रोदन करि सुनु रामसनेही ३। ५७॥

चौपै० इमिदुःखितसीताअतिसुपुनीतातासुउधारणकीजे।
यह सुनि वरबाणी पवनजभाणी राघवबहुतपसीजे॥
चूड़ामणिदेखी विलपिविशेखी वायुतनय हियलावा।
पुनिकरुणासागररामबलाकरचलनकाहिंजियभावा ४। ५८

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेश्रीरामचरितेएक
पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१॥

बावनवां अध्याय॥

दो० बावनयें महँ युद्ध अरु उत्तर काण्ड बखान॥
नृपसों किय मुनिराजदै नाना भांति प्रमान १

मार्कण्डेयजी राजासहस्रानीकजीसे बोले कि इसप्रकार हनुमान्‌जीकी कहीहुई अपनी प्राणप्रिया जानकीजीकी वार्त्तासुन बड़ीभारी वानरोंकीसेनासमेत श्रीरामचन्द्रजी समुद्रके तीरपर पहुँचे १ व तालीके वनसंयुक्त अतिरमणीक समुद्रके किनारेपर सुग्रीव जाम्बवान् व अतिहर्षित औरभी बहुत वानर २ जो कि असंख्यथे व अपनेछोटेभाई लक्ष्मणकेबीचमें बैठेहुये श्रीराघवजीसमुद्रकेतटपर नक्षत्रोंकेमध्यमें चन्द्रमाकेसमान शोभितहुये ३ उसीसमय लंकामेंराजनीति व धर्म्मशास्त्रकहनेमेंनिपुण अपने छोटेभाई विभीषणको कुलनीति कहनेपर अप्रसन्नहो रावणदुष्टने पादप्रहारकर बहुत अपकार वचनकहे ४ इसलिये वे अपने मन्त्रियोंसमेत नरसिंहमहादेव श्रीधर भक्तवत्सल श्रीरामचन्द्र

जीमें अचल भक्तिकरके इसपार चलेआये ५ व सब कार्य्यस-हजहीमें करनेवाले श्रीरामचन्द्रजीसे यह वचन बोले कि हे म-हाबाहु रामचन्द्रजी हे देवदेव हे जनार्दन ६ मैंविभीषणहूं आप के शरणमें आयाहूं इससेमेरी रक्षाकीजिये यह कह हाथजोड़ रामचन्द्रजीके चरणोंपर विभीषण गिरपड़े ७ उनके समाचार जानकर श्रीरामचन्द्रजी ने उन महामति को उठाकर समुद्रके जलसे विभीषणका अभिषेक किया ८ व कहा कि लंकाकाराज्य तुम्हाराहीहै फिर स्थितहोगये तब विभीषणने कहा कि आप सब भुवनोंके ईश्वरसाक्षात् विष्णुभगवान् हैं ९ इससे चलके सबजने समुद्रसेकहैं वह आपको लंकाजानेकेलिये मार्ग्गदेगा ऐसासुन सब वानरोंको सङ्गले श्रीरामचन्द्रजी १० समुद्रके किनारेपर निवसे व तीनदिन बीतगये समुद्रने कुछभी न कहा तब जगन्नाथ राजीवलोचन श्रीरामचन्द्रजी क्रुद्धहुये ११ व जल सुखाडालनेके लिये आग्नेयास्त्र हाथमें ग्रहण किया तब क्रोधयुक्त श्रीराघवजीसे लक्ष्मणजी यह वचन बोले कि १२ हे महामतिवाले आपका यहक्रोध तो प्रलय करनेवालाहै इसे संहारकीजिये क्योंकि प्राणियोंकी रक्षाकेलिये आपने अवतार लियाहै १३ हे देवदेवेश क्षमाकीजिये यह कह बाण पकड़लिया जब तीन रात्रि बीतगईं तब रामचन्द्रजी को क्रोध कियेहुये देख १४ व आग्नेयास्त्रसे अतिभयभीतहो मूर्त्तिधारणकर समुद्र श्रीरामचन्द्रजीसे बोला कि हे महादेव अपकारकियेहुये मेरीर-क्षाकीजिये १५ व मैंने आपको मार्ग्गदे दिया व सेतुकर्म्म करने में कुशलनलनाम वानरको भी बतादिया इससे हे राघवेन्द्र अब उसीवीर नलसे सेतुबनवालीजिये १६ जितनाचौड़ा सेतु बांधना इष्टहो उतना बँधवाइये तब अमितपराक्रमी नलादि वानरोंसे १७ समुद्रमें महासेतु बँधवाकर उसीपरहो सब वा-नरों समेत उतर श्रीरामचन्द्रजी उसपार सुवेलनाम पर्व्वतपर

सेनासमेत उतरे १८ उसीसमय हर्म्यपर स्थित दुष्टरावणको देख श्रीरामचन्द्रजीकी आज्ञासे उछलकर दूतकर्म करनेमेंभी तत्परसुग्रीव लङ्कामेंगये १९ व मारेरोषके रावणके शिरमें एक लातमारा देवगणोंने उससमय विस्मितहोकर वीर्य्यवान् सुग्रीवकोदेखा २० उसप्रतिज्ञाको सिद्धकरके फिर उसीसुवेलपर चलेआये तब असंख्यातवानर सेनाओंसे श्रीअच्युतरामचन्द्रजीने २१ रावणकीपुरीलङ्का को चारोंओरसे घिरालिया फिर श्रीराघव अपने समान लक्ष्मणजीको देख उनसे बोले कि २२ समुद्रको उतरआये व सुग्रीवजीकी सेनाकेमहाभटोंने मानोंरावणकी राजधानी लङ्काको कवलितही करलियाहै बस जो पौरुषकरना था उसका अंकुर तो जमादिया अब आगे कि तो भाग्यकेवशहै अथवा इसधन्वाके अधीनहै २३ यहसुन लक्ष्मणजी बोले कि कातरजनोंके अवलम्बन करनेके योग्य भाग्यके भरोसेपर महाराज वीरशिरोमणि क्योंहोतेहैं क्योंकि जबतक क्रोधसे ललाटके ऊपरतक भौंहोंका तिरछाहोना नहीं पहुँचता व जबतक प्रत्यञ्चाधन्वाके शिरपरतक नहींजाती तबतक तीनों लोकोंके मूलविदारण करनेवाले रावणकेभुजोंमें अहङ्कार सामर्थ्यको प्राप्तहै २४ व उसीसमय लक्ष्मणजीने रामचन्द्रजीके कानमें लगकर कहा कि पिताके बधके स्मरण करने से भक्तिभाव व वीर्य्यकीपरीक्षा करनेमें लक्षण जाननेकेलिये अङ्गदको दूतबनाकर लङ्काको भेजिये रामचन्द्रजी बहुत अच्छाकह अङ्गदकीओर बहुत मानकरनेके साथ देख बोले २५ कि हे अङ्गद तुम्हारे पिताबालीने बलवान् रावणके ऊपरजो कर्मकरके दिखाया था उसके कहने में तो हमलोग असमर्थ हैं इसीसे मोरेहर्षके पुलकावलीहो आईहै व वही तुम पुत्रहोने के कारण मानों अपने पिताको फिर लौटालायेहो फिर अब क्या कहना है जानों उस अर्थ के ऊपर तिलकही करते हो अर्थात् अब

अधिक बलदिखाओगे २६ यह सुन अङ्गद हाथजोड़ शिरपर धर प्रणामकर बोले कि जो आज्ञा महाराजकीहो कीजावे २७ कहिये तो खावां शहरपनाह फाटक धवरहरादि समेत लङ्का यहीं उठालावें अथवा हे श्रीरामचन्द्रजी शीघ्रही सब राक्षसों की सेना वहीं मारडालें वा बड़े २ सघनपर्व्वतोंसे इसछोटे से समुद्रको पाटडालें हे देव आज्ञादीजिये सब कुछ हमारेभुजों से साध्यहै २८ श्रीरामचन्द्रजी उनके वचनमात्रही से उनकी भक्ति व सामर्थ्य देख बोले कि २९ अज्ञानसे अथवा राक्षसों के राजाहोनेके अहङ्कारसे हमारे परोक्षमें तूने सीताकोहरा है पर अभीछोड़दे जाकर रावणसे ऐसा कहो यदि ऐसा न करेगा तो लक्ष्मणके चलायेहुये बाण समूहोंसे कटेहुये राक्षसोंके रु-धिरसे जगत्को भिगोतेहुये अपने पुत्रोंकेसाथ यमराजकीपुरी को जायगा यह श्री कहना ३० अङ्गद बोले कि हे देव ३१ हु-मारे दूतहोनेपर सन्धि वा विग्रह दोनोंमेंसे चाहे जो हो रावणके दशोशिर बिनाकटेहुये वा कटेहुये पृथ्वी के ऊपर लोटेंगे अ-र्थात् मेलहोजानेपर वह आकर चरणोंकेनिकट प्रणामकरेगा तो बिनाकटेहुये शिरभूमिपर लोटेंगे व यदि विग्रहही कियेरहेगा तो कटेहुये शिर पृथ्वीपर लोटेंगे ३२ तब प्रशंसा करके श्री रामचन्द्रजीने अङ्गदकोभेजा व वे अपनी उक्ति युक्तिकी चतुर-ताओंसे रावणकोजीत फिर लौटआये ३३ व श्रीराघवजी व उनके छोटेभाई लक्ष्मणजीकाबल दूतोंकीद्वारा जान भयभीत भीहुआ पर रावण अपनेको निर्भयसाही प्रकटकियेरहा ३४ व लङ्कापुरीकी रक्षाकेलिये राक्षसोंको उसने आज्ञादी व सब दिशाओंमें रक्षाकरनेकेलिये राक्षसोंको आज्ञादे फिर दशानन अपने पुत्रोंसेबोला ३५ उनमें धूम्राक्ष व धूम्रपान ये दो मुख्य थे उनसे व और राक्षसोंसे उसने कहा कि तुम सब जाओ व उनदोनों मनुष्य तपस्वियोंकोबांध हमारीपुरीकोलाओ ३६ व

शत्रुओं के नाशक वीर्य्यधारणकियेहुये हमारे भ्राताकुम्भकर्ण को नगारे आदि बजाकर जगाओ इसप्रकार रावणकी आज्ञा पाय महाबली राक्षसलोग३७उसकीआज्ञा शिरपरधर वानरों केसाथ युद्धकरनेलगे व अपनी शक्तिभर किंदोरराक्षसलड़े ३८ व वानरोंसे सबकेसब मारेगये तब रावणने औरोंको आज्ञादी कि तुमसब अमितपराक्रमी राक्षसो पूर्वकेफाटकपरजाओ३६ वेभी वहां नीलादिवानरों से युद्धकर मरणको पहुँचे व दक्षिण दिशामेंभी रावणने राक्षसोंको आज्ञादी ४० वेभी वानरोंकेनखों से विदारितहो यमपुरकोगये व पश्चिमवाले फाटकपर भी अङ्गदादि अतिगर्व्वित वानरोंने ४१ पर्व्वताकार राक्षसोंको मार यमालयको पहुँचादिया व उत्तरद्वारपर रावणने जिनराक्षसों को युद्धकेलिये स्थापितकिया ४२ वेभी मैन्दादि वानरोंसे मारे हुये पृथ्वीपरगिरपड़े तब वानरोंके समूह लङ्काके बड़े ऊँचेप्राकारपर चारोंओरसे चढ़गये४३ व भीतरवलिबलसे अहङ्कारी राक्षसोंको मारकर फिर अपनी सेनामें बड़ी शीघ्रताकेसाथ चलेआये४४इसप्रकार सब राक्षसोंके मारजाने व उनकीस्त्रियों के रोदनकरनेपर क्रोधयुक्तहो रावणनिकला ४५ व पश्चिमके द्वारपर बहुत राक्षसोंके बीचमें खड़ाहोकर कहनेलगा कि राम कहां हैं व फिर हाथमें धन्वाले वानरोंकेऊपर बाणोंकीवर्षाकरने लगा ४६ तब उसप्रतापीके बाणोंसे अङ्ग छिन्न भिन्न वानर भागखड़ेहुये ४७ व उनवानरोंको भागतेहुयेदेख श्रीरामचन्द्र जी कहनेलगे कि ये वानर क्यों भागे व इनको कहां से भय हुआ ४८ श्रीरामचन्द्रजीका ऐसा वचन सुन विभीषण बोले कि अये महाराज सुनिये इससमय रावणयुद्धकेलिये निकला है ४९ हे महामते उसीके बाणोंसे छिन्न भिन्नहो वानर इधर उधर भागेजाते हैं जब विभीषणने ऐसा कहा तो क्रोधकर धनुषचढ़ाय श्रीराघवजीने ५० प्रत्यञ्चाके शब्द व तलकेशब्द

से आकाश व दिशाओंको शब्दायमानकरदिया व कमललो-
चन श्रीरामभद्रजी रावण के सङ्ग युद्धकरनेलगे ५१ व सुग्रीव
जाम्बवान् हनुमान् अङ्गद विभीषण व और सब वानर तथा
महावीर्य्यवान् लक्ष्मणजी ५२वहां पहुँचकर बाण बरसाती हुई
राक्षसोंकीसेनाको जोकि रथ घोड़े हाथी आदिकोंसे युक्थी सब
ओरसे मारनेलगे ५३ व रामचन्द्रजी तथा रावणका अतिभ-
यंकर युद्ध हुआ रावणके चलायेहुये जो शस्त्र अस्त्र थे उनको
शस्त्रोंसे काट महाबल श्रीराघवजी ने ५४ एक बाणसे उसके
सारथिको मारा दशशरोंसे दशघोड़ोंको व एकबाणसे श्रीराघव
जीने रावणका धन्वा काटा ५५ व पन्द्रहशरोंसे मुकुट काट फिर
सुवर्णके पक्ष लगेहुये दशबाणोंसे दशों मस्तकोंमें प्रहार किया
५६ तब रामचन्द्रजीके बाणों से व्यथित होकर रावण अपने
मंत्रियोंके कहनेसे पुरीमें पैठगया यद्यपि देवमर्दक था पर देव-
देव श्रीरघुपति देवके आगे कहां चलती है ५७ पुरमें जातेही
नगारों के बजवाने व बकरियों के समूह नासिका में हुँकवाने
से जागा हुआ कुम्भकर्ण शहरपनाह को तड़ककर बाहर नि-
कला ५८ व वह ऊँचे व मोटे शरीरवाला भीमदृष्टिवाला दुष्ट
महाबल भूँखा तो थाही वानरों को खाताहुआ समर में वि-
चरनेलगा ५९ उसे देख कूदकर सुग्रीव ने शूलसे छाती में
मारा व दोनों कान दोनों हाथोंसे काट दांतोंसे उसकी नाक
काटली ६० व सब ओर से रणमें युद्धकरतेहुये राक्षसों के से-
नापतियों को वानरों से घातित कराय श्रीरामचन्द्रजी ने ६१
तीक्ष्ण बाणोंसे कुम्भकर्णका कन्धा काटडाला व इन्द्रजित् को
आयेहुये गरुड़जीकी द्वारा जीतकर ६२ रामचन्द्रजी लक्ष्मण
जीके व वानरोंके बीचमें शोभितहुये जब इन्द्रजित् व्यर्थ हो-
गया व कुम्भकर्ण मारागया तो ६३ लंकानाथ बहुत क्रुद्ध होकर
त्रिशिरो नाम अपने पुत्रको व अतिकाय महाकाय देवान्तक व

नरान्तकसे बोला कि ६४ हे पुत्रो राक्षसोंको मारतेहुये रामचंद्र को संग्राममें शीघ्रमार आओ उनसबोंसे ऐसा कह रावण फिर और पुत्रोंसे बोला कि ६५ हे महोदर व महापार्श्व तुम दोनों जने इन महाबली राक्षसोंके संग इससमरमें शत्रुओंके मारने को उद्यत होकेजाओ ६६ इन सब शत्रुओंको रणमें आके युद्ध करतेहुये देख लक्ष्मणजीने छः बाणोंसे यमालयको पहुँचादिया ६७ व वानरोंके समूहने शेष राक्षसोंको यमपुर पहुँचाया व सुग्रीवने बलसे दर्पित कुम्भ नाम राक्षस को मारडाला ६८ व देवताओंका शत्रु निकुम्भ वायुपुत्रसे मारागया व युद्ध करतेहुये विरूपाक्षको विभीषणजीने गदासे मारडाला ६९ भीम व मैंद इन दोनों वानरेंद्रोंने श्वपति नाम राक्षसको मारा अंगद जाम्बवान् व अन्य मुख्य २ वानरोंने युद्ध करतेहुये अन्य निशाचरों को मारा ७० फिर समरमें युद्ध करतेहुये श्रीरामचन्द्रजीने रण में बाणवृष्टि करनेवाले महाबली महालक्ष नाम राक्षसको मारा ७१ तब फिर मन्त्रसे पायेहुये रथपर चढ़के इन्द्रजित् आया व वानरोंके ऊपर शरोंकी वर्षा करनेलगा ७२ यहां तक कि रात्रि में ऐसी बाण वर्षा उसनेकी कि जिससे सब वानरी सेना व श्री रामचन्द्रजी भी निश्चेष्ट होगये तब जाम्बवान्के कहनेसे ७३ हनुमान्जी बड़े वीर्य्य व पराक्रमसे औषधियां लाये व उनसे भूमिपर सोतेहुये श्रीरामचन्द्रजीको व सब वानरोंको उठाबैठाया ७४ व उन्हीं वानरों को संगले उसी रात्रिमें उल्का जलवाकर हाथी घोड़े रथ राक्षसादि सहित सब लंकापुरी जलवादी ७५ व सब दिशाओंमें मेघोंके समान शरोंकी वर्षा करतेहुये मेघनादको इधर श्रीरामचन्द्रजीने अपने भ्राता लक्ष्मणजी से मरवाडाला ७६ राक्षस पुत्र मित्र बन्धुओंके मारजाने व होम जापादि कर्मों में विघ्न करानेपर ७७ क्रुद्धहो रावण फिर लंकाके फाटकसे निकला व कहनेलगा कि तापस वेषधारी मनुष्य रूपराम कहाँ

हैं ७८ व वानरों में जो योद्धा हैं कहां हैं ऐसा बड़े ऊँचे स्वरसे कहताहुआ राक्षसोंका अधिप वेगवान् व सुशिक्षित घोड़ों के रथपर चढ़ाहुआ आया ७९ आयेहुये रावणसे श्रीरामचन्द्रजी बोले कि हे दुष्टात्मन् रावण राम हम यहां हैं यहां हमारी ओर आ ८० जब रामचन्द्रजीने ऐसा कहा तो लक्ष्मणजी बोले कि हे रामचन्द्र राजीवलोचन महाबल इस राक्षससे हम युद्धकरेंगे आप खड़े रहिये ८१ यह कह लक्ष्मणजी ने बाणोंकी वर्षा से रावणको सब ओरोंसे आच्छादित करलिया व बीसबाहुओं से चलाये हुये शस्त्रास्त्रों से युद्धमें लक्ष्मणजीको ८२ रावणने भी आच्छादित करदिया इस प्रकार उन दोनोंका बड़ा भारी युद्ध हुआ व देवगण विमानों पर चढ़ेहुये आकाशसे यह महायुद्ध देखनेलगे ८३ बड़ा युद्ध होनेके पीछे लक्ष्मणजीने तीक्ष्णबाणों से रावणके चलायेहुये व हाथमेंके भी शस्त्रास्त्र काटकर सारथि को मार फिर शायकोंसे उसके घोड़ोंकोभी मारडाला ८४ व बड़े तीक्ष्ण शरोंसे रावणका धन्वा काट व ध्वजभी काटकर पर वीर नाशक महावीर्य्यवाले सौमित्रिजीने अति वेगसे उसकी छाती में भीतर पटक बहुतसे बाणमारे ८५ तब राक्षसनायकने शीघ्रही रथपरसे नीचे आय घण्टानाद करतीहुई महाशक्ति हाथ में ली ८६ अग्निकी ज्वालाके समान जिह्वा लपलपाती हुई महा उल्काके समान प्रकाश करती हुई शक्ति बड़ीदृढ़ मुष्टिसे चलाया कि जाकर लक्ष्मणजीकी छातीमें लगी ८७ व विदारण करके अन्तःकरणमें पैठगई आकाश में देवतालोग बहुत भय भीतहुये इस प्रकार शक्तिके लगनेसे पतित देख वानरोंके रोदन करनेपर ८८ दुःखितहो श्रीरामचन्द्रजी उनके समीप शीघ्रही आके बोले कि हमारे मित्र पवनके पुत्र हनुमान्वीर कहां गये ८९ यदि भूमिपर पतित हमारेभाई किसीप्रकार जीवें तो उपाय करें इतना कहतेही हे राजन् विख्यातपौरुष हनुमान्

बीर९०हाथजोड़ यहबोले कि हम यहींस्थितहैं आपआज्ञादी-
जिये श्रीरामचन्द्रजीबोले कि हेमहाबीर विशल्यकरणी औषधि
लाओ ९१ व हे महाबल मित्रहमारे प्यारे अनुज को शीघ्र
रोगरहितकरो यह सुन वेगसेउछल द्रोणपर्व्वतपरजाके महा-
बीरजी ९२ शीघ्रही उसपर्व्वतहीकोलाय क्षणमात्रही में ल-
क्ष्मणजीको श्रीरामचन्द्रजीके व अन्य देवदेवोंके देखतेही दे-
खते पीड़ारहित करदिया व सब व्रणपूरित करदिया ९३ तब
जगन्नाथजगदीश्वर श्रीरामचन्द्रजीने बड़ाक्रोधकर हाथीघोड़े
रथादि संयुक्तरावणकी बड़ीभारी सेना ९४ क्षणभरमें नष्टकर
तीक्ष्णबाणोंसे रावणका सब शरीर जर्ज्जरित करके वानरोंके
सङ्ग अलगखड़ेहोगये ९५ व रावण मूर्च्छितहोगया जब धीरे
धीरे उसकी मूर्च्छा फिर जागी तो उसने उठकर क्रोधसे बड़ासिं-
हनादकिया ९६ उसकानादसुन आकाशमें देवगण अतिभयभी-
तहुये इसीसमयमें रामचन्द्रजीके समीप महामुनि अगस्त्यजी
आये ९७ वे रावणसे बहुतदिनों से बैरबांधेथे इससे उन्हों ने
जयदेनेवाला अगस्त्य प्रोक्त आदित्य हृदय नामस्तोत्र श्रीराम
चन्द्रजीकोदिया ९८ रामचन्द्रजीनेभी जयदेनेवाला अगस्त्योक्त
वह मन्त्रजपा व अगस्त्यजीकेही दियेहुये श्रीविष्णुजीके धन्वा
पर रौद्रास्त्रचढ़ाई ९९ व पूजाकरके अच्छीतरह प्रत्यञ्चापर टङ्कोर
दे सुकुमारस्थान बिदारणकरनेवाले सुवर्णके फोंकलगेहुये ती-
क्ष्णबाण उसपरचढ़ाये १०० व प्रतापवान् श्रीरघुनाथजी रावण
के सङ्ग युद्धकरनेलगे जब वे दोनों भीमशक्तियां परस्पर युद्ध
करनेलगीं तो १०१ दोनोंकेयोगसे आकाशमें अग्नि प्रज्वलित
हो जलनेलगा हे नृपश्रेष्ठ रामचन्द्रजी व रावणकेयुद्धमें ऐसा
प्रचण्डअग्नि उत्पन्नहुआ १०२ उससंग्राममें अकथित परा-
क्रमी श्रीदाशरथि रामचन्द्रजी पैदरयुद्ध करतेथे १०३ इसलिये
इन्द्रने सहस्रघोड़े जुताहुआ अपना दिव्यरथ मातलिसारथि

के सङ्ग भेजदिया जोकि बड़ाभारी व लोकमें विख्यातहै १०४ रामचन्द्र महाराज उसकेऊपर आरूढ़हो देवताओं से पूजित होके मातलिको आज्ञादेतेहुये महाप्रतापी श्रीराघवजीने १०५ ब्रह्मासे वरपायेहुये उसदुष्टरावण को ब्रह्मास्त्रसेंहीमारा बस प्रतापवान् श्रीभगवान् रामदेवजीनेइसप्रकार जगद्वैरी क्रूररावण कोमारा १०६ जब सगणशत्रुरावणको श्रीरामचन्द्रजीनेमारा तो इन्द्रादिक देवतागण आपसमें यह बोले कि १०७ जिससे श्रीविष्णुभगवान्जी ने श्रीरामचन्द्र हो हम लोगोंके बैरी रावणको जोकि अन्य ब्रह्म रुद्रादि देवतादिकोंसे अवध्यथा मारा १०८ इससे उनअपराजित अनन्त श्रीरामनाम परमेश्वरकी पूजा यहां से उतरकर प्रणाम करकेकरें १०९ यह विचारकर शोभायुक्त नानाप्रकारके विमानोंपरसे उतर२कर पृथ्वीपरआके रुद्र इन्द्र बसु चन्द्रादि देवगण सबके विधाता सनातन ११० विष्णु जिष्णु जगन्मूर्त्ति अव्यय अनुजसहित श्रीरामचन्द्रजी की पूजा विधिपूर्व्वक चारोंओर से घेरकर करनेलगे १११ व पूजाके अन्तमें आपससें सब देवगण बोले हे देवताओ देखो ये रामचन्द्रजी हैं व ये लक्ष्मणजी हैं सूर्य्यकेपुत्र ये सुग्रीव हैं व ये वायुकेपुत्र हनुमान् स्थितहैं ११२ व ये सब अङ्गदादि हैं यह सब देवताओंने कहा तदनन्तर अपनेगन्धसे सब दिशाओं को सुगन्धित करातीहुई व भ्रमरपंक्तियोंके पदोंके पीछे २ चली आतीहुई ११३ देवोंकी स्त्रियोंके हाथों से छोड़ीहुई पुष्पों की वृष्टि श्रीरामचन्द्रजीकेव लक्ष्मणजीके शिरोंपर पतितहुई ११४ तदनन्तर हंसके ऊपर चढ़ेहुये ब्रह्माजी आकर अमोघनाम स्तोत्रसे श्रीरामचन्द्रजीकीस्तुतिकर फिर उनसेबोले कि ११५॥

चौ० भूतआदि तुम विष्णु अनन्ता। ज्ञानदृश्य व्यय श्री भगवन्ता॥ तुम वेदान्तमाहिं नितगाये। शाश्वत ब्रह्म परात्पर भाये १। ११६ तुमजो आजदशाननमारा। जासों रुदनकरत

जग सारा॥ यासों त्वरित कीन सुरकाजा। सकल लोककी प्रजानिवाजा२।११७ इमिविधि वचन सुनत पुनिशंकर। प्रीतिमान सबजन अभयंकर॥ रामहिंकरि प्रणाम पुनिदशरथ। दीन्ह दिखाय सकलविधि समरथ ३।११८ सीता परमशुद्ध ग्रह भाषत। चलेगये शिव हरिरस चाखत॥ तब निजभुजबल पुष्पकपाई। चढ़ेतासु ऊपर हरषाई ४।११९ पुनि पुनीत सीताहु चढ़ावा। पवनतनय आज्ञस करावा॥ दिव्य वसन भूषणयुत सीता। ह्वै विशोक सबविधि श्रुतिगीता ५।१२० सकलकपिन बन्दितवैदेही। लक्ष्मणयुत राघववर नेही॥ पूर्णप्रतिज्ञा करि रघुनाथा। भरतहि करिवे चले सनाथा ६।१२१ इमिचलि पहुँचे अवध कृपाला। मिलि पुरवासिन कीन्ह निहाला॥ भरत्त विनयसों किय अभिषेका। द्विज वसिष्ठ आदिक सविवेका ७। १२२धर्म्मराज चिरकाल प्रतापी। कीन्ह रामहतिजगकेपापी॥ नाना यज्ञकर्म्म करिआपू। पौरनयुत साकेत सुथापू८।१२३॥ स० रामचरित तुमसन हमभाषा भूपतिकरिकै बहुत विधान।
नहिंविस्तारसहित संक्षेपहि सबचरित्रजगविदितमहान॥
जोकरिभक्तिपढ़िहिसुनिगाइहि पाइहि राघवधामप्रधान।
अरुरघुनन्दननिजपदमाहींदेहैंभक्तिनमृषाबखान९।१२४
इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेश्रीरामचरितेद्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः५२॥

तिरपनवां अध्याय॥

दो० तिरपनयें महँ कृष्ण अरु बलके चरित अपार॥
यद्यपि पर संक्षेपही भाष्यहु मुनिन विचार १

मार्कण्डेयजी राजा सहस्रानीकसे बोले कि इसके आगे शुभदो अवतारोंकी कथाकहतेहैं एक तो तीसरे राम बलभद्रजीके व दूसरे श्रीकृष्णचन्द्रजीके जन्मकी १ हे नृपोत्तम पूर्व्वसमय का वृत्तान्त है कि असुरोंके भारसे आक्रान्त हो पृथ्वी देवताओं के मध्यमें बैठेहुये कमलासन ब्रह्माजी से बोली २ कि हे

कमलोद्भवजी देवासुर संग्राममें श्रीविष्णु भगवान्‌जी के हाथसे
जो दैत्य दानव मारेगयेथे वे सब आके कंसादि क्षत्रिय हुयेहैं ३
सो उन लोगोंके बड़ेभारी भारसे हम बहुत पीड़ितहैं इससे हे
देव जैसे हमारे भारकी हानिहो वैसाकीजिये ४ तब अच्छा ऐसा
करेंगे यह कह सब देवताओंके साथ ब्रह्माजी विष्णुजीकी भक्ति
से विख्यात क्षीरसागरके उत्तरके किनारेपर गये ५ व वहां जा-
कर जगत् के बनानेवाले ब्रह्माजी देवताओं के साथ महादेव
नरसिंह जनार्द्दनजीको गन्ध पुष्पादिकोंसे यथाक्रम ६ भक्तिपू-
र्व्वक पूजितकर फिर वाक्पुष्प नाम स्तोत्र से स्तुतिकी तब हे
राजेन्द्र जगत्पति केशव भगवान् उससे सन्तुष्ट हुये ७ यह सुन
सहस्रानीक राजाने पूँछा कि हे ब्रह्मन् ब्रह्माजीने वाक्पुष्प नाम
स्तोत्रसे कैसे श्रीहरिजीकी पूजाकी सो हे विप्रेन्द्र ब्रह्माजीका
कहा हुआ वह उत्तम स्तोत्र हमसे कहो ८ मार्कण्डेयजी बोले
कि हे राजन् सुनो ब्रह्माजीके मुखसे कहाहुआ सब पापहरने-
हारा पुण्यदायक व विष्णुजीके सन्तोष करानेमें श्रेष्ठ स्तोत्र क-
हते हैं ९ उन जगन्नाथजीकी आराधनाकर ऊपरको भुज उठा
एकाग्रमनहो यह स्तोत्र पढ़तेहुये ब्रह्माजी बोले १० कि नरनाथ
अच्युत नारायण लोकगुरु सनातन अनादि अव्यक्त अचिंत्य
अव्यय वेदान्तवेद्य पुरुषोत्तम श्रीहरिदेवके नमस्कार करते हैं
११ आनन्दरूप परम परात्पर चिदात्मक ज्ञानवानों के परम
गति सर्व्वात्मक सबमें एकरूपसे प्राप्त ध्यान करनेके योग्यस्व-
रूपवाले माधवजीके प्रणाम करते हैं १२ भक्तोंके प्रिय कान्त
स्वरूप अतीव निर्म्मल देवताओंके अधिप पण्डितोंके स्तुति
करनेके योग्य चतुर्भुज कमलवर्ण ईश्वर चक्रपाणि केशवजी
के प्रणाम करते हैं १३ गदा शंख खड्ग कमल हाथोंमें लिये
लक्ष्मी के पति सदा कल्याणरूप शार्ङ्गधारी सूर्य्यकी सी प्रभा
वाले पीताम्बर ओढ़े हार वक्षस्स्थलमें विराजित किरीट धारण

किये श्रीविष्णुजी के निरन्तर प्रणाम करते हैं १४ गण्डस्थल पर आसक्त अति रक्तकुण्डलवाले व अपनी दीप्तिसे सब आकाशको प्रकाशित करनेवाले गन्धर्व सिद्धोंके गाने के योग्य कीर्त्तिवाले जनार्दन सब प्राणियोंके पतिके नमस्कारहै १५ जो हरिभगवान् प्रत्येक युगमें असुरोंको मार सुरोंको व अपने धर्म्म कर्म्म में अच्छी तरह टिकेहुये अन्यलोगोंकी पालना करते हैं व जो इस संसारको उत्पन्न करते व नष्टभी करते हैं उन वासुदेव केशवजीके प्रणाम करते हैं १६ व जिन भगवान्ने मत्स्य रूप धारणकर रसातलमें स्थित वेदोंको लाकर हमको दिया व युद्धमें मधुकैटभ नाम दो दैत्योंको मारा वेदान्तके जाननेके योग्य उनके सदा हम प्रणाम करते हैं १७ व जिन विष्णु भगवान्जी ने कच्छपका रूप धारण करके देवता व असुरोंके क्षीरसमुद्रके मध्यमें छोड़ेहुये मन्दराचलको सबके हितके लिये धारणकर लिया उन आदि प्रकाशमान विष्णुजीके प्रणाम करते हैं १८ जिन्होंने बराहका रूप धारणकर अति बलदर्पित हिरण्याक्ष को मार इस सब शक्तियुक्त पृथ्वीका उद्धार किया उन सनातन वेदमूर्त्ति श्रीशूकर हरिके प्रणाम करते हैं १९ व जिन सनातन श्रीहरिजीने अपना नरसिंहका शरीर धारण करके सब लोगों के हितके लिये दितिके पुत्र हिरण्यकशिपु दैत्यको मारा व तीक्ष्ण नखोंसे विदारा उन नारसिंह पुरुषके नमस्कार करते हैं २० व जिन श्रीभगवान् जनार्दनजीने वामनावतारले अपने तीनपदों सेही तीनोंलोक मापकर बलिको बँधुआ किया व तीनलोक इंद्र को देदिये उन आदि वामनदेवके प्रणाम करते हैं २१ व जिन श्रीविष्णुजीने परशुरामावतार धारण करके मारेरोष के कार्त्तवीर्य्य नाम सहस्रबाहुको मारा व इक्कीसबार तक पृथ्वीको क्षत्रियरहित करदिया उनमहीभार हरनेवाले पुरुषोत्तम श्रीविष्णु जीके प्रणाम करते हैं २२ व जिन सनातन ब्रह्म श्रीरामचन्द्र

जीने समुद्रमें सेतु बांध लंकामें प्राप्त हो गणसहित रावण को जगत्के हितके लिये मारा उन सनातन श्रीरामदेवजी के निरन्तर प्रणाम करते हैं २३॥

दो० जिमि वराह नरसिंहमुख तनुधरि सुरहित कीन॥
तिमि महिसुर नाशहु प्रभो ह्वैप्रसन्न न मलीन १।२४

मार्कण्डेयजी बोले कि जब इसप्रकार से ब्रह्माजी ने श्री जगन्नाथजी की स्तुतिकी तो शंख चक्र गदा धारणकिये श्री भगवान्जी प्रकटहुये २५ व हृषीकेशजी ब्रह्मा और सबदेवताओं से बोले कि हे पितामह व हे देवताओ इसस्तुतिसे हम सन्तुष्टहुये २६ क्योंकि हे देवताओ इसस्तोत्र के पढ़तेही यद्यपि हम दुर्लभहैं पर प्रकटहोआये इससे जोलोग भक्तिमान् हो इसे पढ़ेंगे उनके पाप तुरन्त नाश होजायँगे २७ हे ब्रह्मन् इन्द्ररुद्रादि देवताओं व पृथ्वीकेसाथ तुमने हमारी प्रार्थनाकी अब कहो वह तुम्हारा कार्य्यकरें २८ जब श्रीविष्णुजीने ऐसा कहा तो लोकपितामह ब्रह्माजी बोले कि यह पृथ्वी दैत्योंकेगरू भारसे पीड़ित हो रहीहै इससे आपसे हलकीकराया चाहते हैं २९ इसीसे देवताओंके साथ यहां आये और कुछ यहां आनेकाकारण नहीं है ऐसा कहनेपर श्रीभगवान्जीने कहा देवताओ अपनेस्थानको जाओ३०व ब्रह्माभी अपनेस्थानको जायँ देवकी में वसुदेव से पृथ्वीतलपर अवतार लेकर ३१ शुक्र व कृष्ण दो हमारी शक्तियां कंसादिकों को मारेंगी श्रीहरिका ऐसा वाक्यसुन श्रीभगवान्जी के नमस्कार करके देवगण चलेगये ३२ जब देवगण चलेगये तो देव देव श्रीजनार्दनजी ने शिष्ट लोगोंके पालन करनेकेलिये व दुष्टोंके मारनेकेअर्थ ३३ हे नृप अपनी शुक्ल व कृष्ण दो शक्तियांभेजीं उनदोनों में शुक्लशक्ति तो वसुदेवजी से रोहिणी में उत्पन्नहुई ३४ व वैसेही कृष्ण शक्ति वसुदेवजी से देवकीजी में उत्पन्नहुई रोहिणीजीके पुत्र

करके रुक्मिणीजी कोपाय उनकेसङ्ग रमण करनेलगे ५८ वब-
लदेवजीने द्यूतखेलनेके समय मृषावादी कलिङ्गराजकेदांत उ-
खाड़ व सुवर्णकेलिये मिथ्याकहतेहुये रुक्मीको मारडाला ५९
और कृष्णचन्द्रजीने प्राग्ज्योतिष देशादिके हयग्रीवादि बहुत
दैत्योंकोमार व नरकासुरको बधकर बहुतसा धन वहांसे लाकर
द्वारकामेंभरदिया ६० फिर भौमासुरसेले अदितिके कुण्डलदेसब
देव गणसहित इन्द्रको जीत पारिजात वहांसेले फिर द्वारकापुरी
कोंआये ६१ एकसमय कुरुवंशियोंने कृष्णचन्द्रजीके पुत्र साम्ब
को बँधुआकरलियाथा तब महाबली बलरामजी अकेलेजाय
कौरवोंको भयउत्पन्नकर साम्बको छुटालाये ऐसेवीर्य्यवान् थे ६२
व श्रीमान् श्रीकृष्णचन्द्रजीने बाणासुरकेबाहुओंका वन बाणोंसे
समरमें काटडाला व उसकी अपनीसेना से कोटिगुण अधिक
सेनाको बलदेवजीने क्षयकरडाला ६३ फिर देवताओंका अ-
पकारी महाबली द्विविद नाम वानर बलदेवजी से मारागया
फिर अर्जुनकेसारथि बनके कंसकेशत्रु श्रीकृष्णचन्द्रजीने ६४
बहुतसे प्राणिओंका बधकराय पृथ्वीकाभारउतारडाला व जग-
तकेलिये बलदेवजीने तीर्थयात्राकीथी ६५ व जितने दुष्टों
को बलदेवजीने माराहै उनकीसंख्या नहीं होसक्ती हे राजन्
इसप्रकार राम व कृष्णचन्द्र दोनोंजने दुष्टोंकाबधकरके ६६ व
पृथ्वीका भारउतार अपनी इच्छासे स्वर्गको चलेगये ये दिव्य
अवतार हमने तुमसे कहे ६७॥

चौ० रामकृष्णके चरित अपारा। पर हमतो संक्षेपप्रचारा॥
कल्कि चरित अब सुनहु भुआला। जिन जनुलै कलिकेअघ
घाला॥१॥ ६८ इमिसिति कृष्ण शक्ति हरिकेरी। अतिबलवती
जगति कियफेरी॥ हरि महिभार अपार बहोरी। पुनि हरिमहँ
मिलिगई न थोरी॥२॥ ६९॥

इतिनरसिंहपुराणेभाषानुवादेबलरामकृष्णचरितेत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३

चौवनवां अध्याय॥

दो० चौवनयें अध्याय महँ कल्की चरित पुनीत॥
मुनिवर्ण्यो भूपालसों सुनतसुखद युतप्रीत १
अरुकलिके गुणदोषवहु भाषि सहितविचार॥
परत नभवजो चलततनर त्यहिगुणकेअनुसार २

मार्कण्डेयजी राजा सहस्रानीकसे बोले कि हे राजन् एकाग्रचित्तहो सुनो अब इसके आगे सबपाप नाशनेवाला कल्कीजी के जन्म का इतिहास कहते हैं १ जब कलिकालके कारण पृथ्वीपर धर्म्मनष्टहोजायगा व पाप बढ़जायगा व इसीसे सब जन पीड़ित होजायँगे २ तब क्षीरसागर के किनारे पर स्तुति पूर्व्वक देवोंकी प्रार्थनासे नानाजनों से भरेहुये सम्भल नाम ग्राममें ३ विष्णुयशा नाम ब्राह्मणके यहां पुत्रहो कल्कीके नाम से प्रसिद्ध राजा होवेंगे व घोड़े पर आरूढ़ हो खड्ग से सब म्लेच्छों को मारेंगे ४॥

स० महिनाशकसबम्लेच्छसँहारी पुरुषोत्तम धरिकल्कीरूप।
करिवहुयागजातरूपी प्रभु धर्म्मथापि महिपर सुरभूप॥
सकलप्रजा आनन्दितकरिकै आपगयेनिजलोकअनूप।
यहकल्कीकरचरितयथामतिहमतुमसनकहमनअनुरूप१।५

दो० पापहरण हरिके कहे दश अवतार पुनीत॥
जोवैष्णवनितपढ़त्यहि सुनतविष्णुपदगीत२।६

इतनी कथा सुन राजा सहस्रानीकजीने मार्कण्डेयजीसे कहा हेविप्रेन्द्र तुम्हारे प्रसादसे श्रीनारायणदेवके सुननेवालोंके पाप नाशनेवाले दशअवतार हमनेसुने ७ अब विस्तारसे कलियुग का वर्णनकरो क्योंकि तुम सब जाननेवालों में श्रेष्ठहो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य व शूद्र हे मुनिसत्तम ८ कलियुगमें क्या २ भोजन करेंगे व कौन कौन आचार करेंगे सूतजी भरद्वाजादिकों से बोले कि भरद्वाज सहित सब ऋषिलोगो सुनो ९ जब कृष्ण

भगवान् कृष्णरूप धारणकरते हैं अर्थात् कलियुगमें तव सव धर्म्म नष्ट होजाते हैं इससे कलियुग महाघोर युग है क्योंकि वह सबपापोंकाही साधकहै १० इससे कलियुगमें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य व शूद्र सब अपने२ धर्म्मसे विमुख होते हैं व ब्राह्मणलोग देवताओंसे पराङ्मुख होते हैं ११ जो कुछ धर्म्मभी करते हैं वह व्याजपूर्वकही करते हैं व दम्भहीकेसाथ आचार करते हैं निन्दा सबकी सदा कियाकरते हैं व चाहे किसी कामके न हों पर वृथा अहङ्कारकेमारे दूषित बनेरहते हैं १२ सब नर अपने पाण्डित्यके गर्व से सत्यबोलना छोड़देते हैं हमीं अधिक हैं यह सबकोई कहते हैं १३ व सब अधर्म्म करने के लोभी होते हैं व औरोंकी निन्दा सबकरते हैं इसीसे कलियुग में सब लोग अल्पआयुर्बल के होतेहैं १४ व अल्पायुहोने से कोई मनुष्य विद्यानहीं पढ़पाते व विद्या न पढ़नेसे अधर्म्महीं कियाकरतेहैं १५ व ब्राह्मणादि सबवर्ण परस्परमें ऐसाव्यवहार करतेहैं कि वर्णसङ्कर होजातेहैं फिर वेमूढ़ काम क्रोधमें तत्पर रहते इससे वृथा सन्तापसे पीड़ितरहते हैं १६ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य सब धर्म्मसे पराङ्मुखरहेंगे व सबएक दूसरेसे वैरबांधेरहेंगे कि एक दूसरेको बधकरडालनेकी इच्छा कियाकरेगा १७ व सत्य तप रहितहोनेसे सब ब्राह्मण क्षत्रिय व वैश्य शूद्रकेतुल्य होंगे उत्तमलोग नीचताको पहुँचेंगे व नीचलोग उत्तमता को १८ राजालोग द्रव्यखींचनेमें निरतहोंगे व लोभहीमें सदा परायण बनेरहेंगे ऊपरसे तो मानो धर्म्मकाजामा धारणकियेरहेंगे परसब धर्म्मका विध्वंसही कियाकरेंगे १९ सब अधर्म्मयुक्त इसघोर कलियुगमें जो२ हाथी घोड़ेआदिसे युक्तहोगा वहीराजा होगा २० पुत्रलोग अपने२बापोंको सेवाआदि कर्म्मोंके करनेमें लगावेंगेव पतोहैं अपनी सासुओंको अपनीसेवा शुश्रूषामें व स्त्रियां अपने२पतियों व पुत्रोंको छोड़२ अन्यत्रचलीजायँगी२१

पुरुषोंकी उत्पत्तिथोड़ी व स्त्रियोंकी वहुत कुत्तोंकीबढ़ती गौओं
कानाश जिसके धनहो उसीकीवड़ाई व सज्जनोंकाभी आचार
अपूजितहोगा वृष्टि वहुधा खण्डित हुआकरेगी मार्ग सबचोर
घेरेरहेंगे व विनावृद्धोंकी सेवा करनेहीसे सवकोई अपनेमनसे
सबकुछ जानलिया करेगा २२ कोई ऐसा न होगा जो अपनेमन
से कविनहो व वेदवादीलोग सव मदिरा पानकरेंगे व ब्राह्मण
क्षत्रिय वैश्य शूद्रोंके सेवकहोंगे २३ पुत्रलोग पितासे अप्रीति
रक्खेंगे व विद्यार्थी शिष्यलोग गुरूसे अप्रीति करेंगे स्त्रीअपति
से वैररक्खेगी यहसव कलियुगमें होगा २४ रात्रिदिन लोभही
मेंलगनेसे मन निरादरितरहेगा व सव दुष्टहीकर्म्मकरेंगे ब्राह्मण
लोगसदा परायेहीअन्नके भोजनके लोभीहोंगे २५ परस्त्री गा-
मी सवहोंगे व दूसरेकी द्रव्य सब ग्रहणकरेंगे घोर कलिकाल
में धर्म्म करतेहुये पुरुषका २६ निन्दक लोग सदा उपहास
कियाकरेंगे ब्राह्मणभी एकादश्यादि व्रत न करेंगे व वेदकीभी
निन्द्राकरेंगे २७।२८ हेतुकेवादोंसे प्रत्येक यज्ञादिकोंकी निन्दा
करके न कोई यज्ञकरेंगे न हवनकरेंगे केवल ब्राह्मणलोग दम्भ
केलिये पितरोंके श्राद्धादिकरेंगे २९ कोई मनुष्य सत्पात्र पढ़े
लिखे सदाचारनिष्ठ लोगोंकोही दान न देंगे किन्तु देंगे भी तो
सर्व्व साधारणकोदेंगे व धेनुओंसे केवल दुग्धहीकेनिमित्त प्रीति
करेंगे ३० राजाओंके नौकर चाकर धनकेलिये ब्राह्मणोंकोभी
वँधुआकरेंगे व ब्राह्मणलोग दान जप व्रतादिका फल वेंचडालें-
गे ३१ व ब्राह्मणलोग भङ्गी चमार तेली पासी कुम्हार कलवारा-
दि चण्डालोंसे भी दानलेलेंगे व कलियुगके प्रथम चरणमेंभी
लोग हरिकी निन्दाकरेंगे ३२ व कलियुगके अन्तमें तो कोई
हरिके नामका स्मरणभी न करेगा सबलोग शूद्रकी स्त्रीके सङ्ग
भोगकरेंगे व बिधवाकेसङ्गभी भोगकरनेकी इच्छाकरेंगे ३३ क-
लियुगमें ब्राह्मण शूद्रोंका अन्न भोजनकरेंगे व अधम शूद्रलोग

जब घर द्वारछोड़ सन्न्यासी बनवैठेंगे तो न ब्राह्मण क्षत्रिय व वैश्योंकी सेवाकरेंगे न औरभी अपने धर्म्मका कोईकर्म्मही करेंगे सुखकेलिये यज्ञोपवीतभी धारणकरलेंगे व जटारखाय भस्म व धूलिभीलगालेंगे३४।३५व जालकी बुद्धिमें चतुरहो शूद्रलोग सिंहासनोंपर बैठकर धर्म्मकीबातें सबको सुनावेंगे हे ब्राह्मणो इ-तने ये व औरभी बहुतसे पाषण्ड कलियुगमें होंगे ३६व ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य सब कलियुगमें पाषण्डीहोंगे उनमें ब्राह्मणलोग बहुधा गीतविद्यामें निरतहोंगे जो अन्त्यजोंका धर्म्महै व वेद-वादसे पराङ्मुखहोंगे जोकि उनका मुख्यधर्म्महै ३७ व कलियुग में ब्राह्मणादि शूद्रोंके मार्ग्गपर चलनेलगेंगे सबके पास द्रव्य अल्परहेगा वृथाबड़े धनवालोंकासा चिह्नबनाये रहेंगे व वृथा अहङ्कारसे दूषित बनेरहेंगे ३८ कलियुगमें हर्त्ता तो बहुतहोंगे परदाता न होंगे व अच्छेमार्ग्गपर चलनेवाले पढ़ेलिखेभी ब्रा-ह्मण दान लिया करेंगे ३९ अपनी स्तुति अपनेही मुखसे ब-हुधा सब लोग किया करेंगे व दूसरे की निन्दाभी सब करेंगे देवता वेद व ब्राह्मण तीर्थ व्रतादिकोंमें सब विश्वासहीन होंगे ४० व सब लोग बिना सुनीहुई वार्त्ता करनेमें बक्तृत्व दिखावेंगे व ब्राह्मणोंसे वैर रक्खेंगे व सब अपने २ धर्म्मका त्याग करेंगे कृतघ्न होके सब भिन्नवृत्तियोंको धारण करेंगे ४१ कलियुगमें याचकलोग बहुधा चुगुली करेंगे व सब लोग पराये अपवाद के कहनेमें निरतहोंगे व अपनी स्तुति करनेमें परायण होंगे४२ सब जन सर्व्वदा परधन हरनेका विचारकिया करेंगे व जब दू-सरेके घरमें बैठकर भोजन करने लगेंगे तो परमानन्दित होंगे ४३ व उसीदिन बहुधा देवताओंकी पूजा करके चन्दनादि लं-गावेंगे व भोजन कर होनेपर वहीं निन्दाभी करने लगेंगे ४४ व ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्र व अन्य अन्त्यजादि भी अ-त्यन्त कामी होंगे परस्पर एक दूसरेसे कामकी इच्छा करेंगे४५

फिर जब सब वर्ण सब वर्णों के संग मैथुनादि करलेंगे तो न कोई शिष्य रहेगा न गुरू न पुत्र न पिता न भार्य्या न पति क्यों-कि फिर तो वर्णसंकरही होजायगा ४६ व ब्राह्मणलोग शूद्रोंके यहांकी जीविकासेही जीवेंगे इससे नरककोही जायँगे बहुतपानी न बरसेगा इससे लोग आकाशहीकी ओर देखाकरेंगे ४७ तब सब लोग भूँखके भयसे व्याकुल होजाया करेंगे सन्न्यासी लोग केवल अन्नके निमित्त शिष्य किया करेंगे ४८ व स्त्रियां दोनों हाथोंसे अपना शिर खजुलाती हुई गुरुजनोंकी व पतियों की आज्ञाका भंग करेंगी ४९ जब २ विप्र न यज्ञ करेंगे व न होम करेंगे तब २ पण्डितलोग कलियुगकी वृद्धिका अनुमान करेंगे ५० जब सब धर्म्म नष्ट होजाते हैं तो जगत् शोभा रहित हो-जाता व निर्द्धन होजाताहै हे ब्राह्मण श्रेष्ठो इस प्रकार कलियुग का स्वरूप तुम लोगोंसे हमनेकहा ५१ परन्तु हे द्विजो जो लोग हरिके भक्त होते हैं उनको कलियुग नहीं बाधित करता सत्य-युगमें तप करना सबसे श्रेष्ठथा व त्रेतामें ध्यानका करना ५२ द्वापरमें यज्ञ व कलियुगमें केवल दान देना जो सत्ययुगमें दश वर्ष करनेसे कर्म्म सिद्ध होताथा वह त्रेतामें एक वर्षमें ५३ व वही द्वापरमें एक मासमें व कलियुगमें वही एकदिन रात्रि में होताहै सत्ययुगमें ध्यान करनेसे त्रेतामें यज्ञ करनेसे द्वापर में पूजन करनेसे ५४ जो मिलताथा वह कलियुगमें श्रीरामनाम के कीर्त्तनसे मिलताहै व समस्त जगत्के आधार परमार्त्थस्व-रूपी ५५ श्रीविष्णु भगवान्जीका ध्यान करताहुआ पुरुष क-लियुगमें नहीं कष्टपाता अहो वे लोग बड़े भाग्यवाले हैं जो एक बार भी केशव भगवान्का अर्चन ५६ घोर इस कलियुग में करते हैं जो कलियुग सब कर्म्मों से बाहर करदिया गया है परन्तु कलियुग में वेदोक्त कर्म्मों की न्यूनता व वृद्धि नहीं होती ५७ इससे इस युगमें सब फल देनेवाला केवल श्रीहरिका

स्मरणही है इससे सदा हरिस्मरण करना चाहिये ५८ ॥

दो० हरि केशव गोविन्द जग धाम,जनार्द्दन राम ॥
वासुदेव अच्युतजगन्मय पीताम्बर श्याम १।५९
यहजो नितकीर्त्तन करत नहिं बाधत कलि ताहि ॥
यासों कीर्त्तन करहुसब काभूले जगमाहि २।६०
सर्व्व भयंकर काल कलि काल माहिं जो लोग॥
हरिपरअरु तिनसंगरत लोगमहातसयोग ३।६१
हरिकीर्त्तन तत्पर बहुरि श्रीहरि नामहि लीन ॥
हरिपूजा जो करतनित सो कृतार्त्थ अघहीन ४।६२
सर्व्वदुःख वारणसकल पुण्यफलद कलिमाहिं ॥
हरिकीर्त्तन तुमसनकहा यासम दूसरनाहिं ५।६३॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

दो० पचपनयें महँ शुक्रकृत हरिकी स्तुति अरुतासु ॥
लहि प्रसाद पायहु नयन भृगुसुत यही प्रकासु १

राजा सहस्रानीक मार्कण्डेयजीसे बोले कि हे मार्कण्डेयजी राजा बलिकेयज्ञमें उनके गुरू शुक्राचार्य्यकानेत्र कैसे वामनजी नेफोड़ा व फिर शुक्रने स्तुतिकरके कैसे नेत्रपाया १ मार्कण्डेयजी बोले कि जब वामनजीने शुक्रकानेत्र फोड़डाला तो वे बहुततीर्थोंमेंजाकर व गङ्गाजीके जलकेभीतर स्थितहो देवदेवेश वामन शङ्ख चक्र गदा धारणकियेको हृदयमें चिन्तनाकर सनातन नरसिंहजीकी स्तुतिकरनेलगे २।३ श्रीशुक्राचार्य्यजीबोलेकि॥

चौ०. वामन बिश्वेश्वर पुरुषोत्तम । देवविष्णु रूपी तुम्हरे नम ॥ बलिदर्प्पघ्न निरन्तर स्वामी। बार बारतव चरणनमामी १।४ धीर शूरदर चक्र गदाधर। महादेव अच्युत हरि शिवकर ॥ ज्ञानपयोधि विशुद्ध स्वरूपा। तुम्हें नमत हम हे सुरभूपा २।५ सर्व्वशक्ति मय सर्व्वग देवा। अजर अनादि नित्य

तव सेवा ॥ गरुडध्वज सब भावन करऊँ। बहुरि प्रणाम करत हरवरऊँ ३।६ भक्तिमान सुर असुर पुकारत। नारायण तव नाम उचारत॥ हृषीकेश जगगुरु भगवन्ता। करत प्रणामिनिहोरितुरन्ता ४। ७मनमहँ करि सङ्कल्प यतीजन। ज्यहि ध्यावत नरहरिकिरि शुभमन॥ अनौपम्य अरु ज्योतीरूपा। नरकेसरी नमन अनुरूपा ५। ८ ब्रह्मादिक सुरगण नहिंजाना। तव स्वरूप किमि श्रीभगवाना॥ जासुसकल अवतारन केरी। पूजा करत देव मन हेरी ६। ६ जिन यह विश्वरचा प्रथमाही। करिखल बंध पाला पुनिताही॥ जामहँ लीनहोत पुनिसोई। करत प्रणाम तिन्हें नहिं गोई ७। १० जो नित निजभक्तनसों पूजित। भक्तप्रियहरितिन्हकियसूचित॥ नमत देवदिव्यामल रूपी। और तुम्हें हमकिमि अनुरूपी ८। ११ जो तोषित कैभक्तन काहीं। दुर्ल्लभ देतपदारथ आहीं॥ सर्व्व साक्षि श्रीविष्णु उदारा। करत प्रणाम सनातन चारा ९। १२॥

मार्कण्डेयजी बोले कि हे पार्थिव जबधीमान् शुक्राचार्य्यजीने ऐसीस्तुतिकी तब शंख चक्र गदाधर श्रीभगवान् उनके आगे प्रकटहुये १३ व नारायणदेव एक नेत्रवाले शुक्रसे बोले कि किसअर्थ तुमने गङ्गाजीके जलमें हमारी स्तुति की १४ शुक्रजी बोले कि हे देवदेव पूर्व्वकालमें हमने बड़ा अपराध कियाथा वह दोष मिटानेकेलिये इससमय हमने आपकी स्तुति की १५ श्रीभगवान्जी बोले कि हमाराअपराध करनेसे तुम्हारा एक नेत्र नष्टहोगयाथा परन्तु अब हम तुम्हारे इस स्तोत्रसे सन्तुष्टहुये १६ यहकह देवदेवेश श्रीविष्णुजीने हँसतेहीसे अपने पाञ्चजन्य नाम शंखसे उनमुनिके उसफूटेहुये नेत्रमें स्पर्शकरदिया १७ जैसेही देवदेव श्रीविष्णुजीने शंखसे स्पर्श कियाहै कि मुनिकानेत्र फिर पूर्व्वसमयके तुल्य निर्म्मलहोगया १८ इस प्रकार मुनिको नेत्रदे व उनसे पूजितहो श्रीमाधवजी तुरन्त

अन्तर्द्धान होगये व शुक्रभी अपने आश्रमको चलेगये १६॥
स० कहामहात्मामुनिगुनिमनमें जिमिभृगुपायहु नेत्रबहोरि।
श्रीहरि केरो पाय प्रसादा सो हम तुम सन कहा निहोरि॥
पुनि अब काह सुना तुम चाहत सोपूँछहु नृप सकल न थोरि।
हमसबकहब भलीविधितुमसोंअंतरपरिहिनतनिकबरोरि१।२०
इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५॥

छप्पनवां अध्याय॥

दो० छप्पनयें अध्यायमहँ विष्णु प्रतिष्ठा केर॥
सकल विधान महानमुनि कह्योकहत करिटेर १

राजा सहस्रानीकजीने मार्कण्डेयजीसे पूँछा कि अब हम इस समय देवदेव शार्ङ्गधन्वावाले श्रीनरसिंहजीकी प्रतिष्ठाका विधान सुना चाहते हैं १ मार्कण्डेयमुनि बोले कि हे भूपाल देवताओंके देव चक्रधारी श्रीविष्णुजीकी प्रतिष्ठाका विधान जैसा शास्त्रोंमें पुण्यदायक लिखाहै कहते हैं २ हेराजन् जो लोग विष्णु की प्रतिष्ठा करनेकी इच्छा करते हों उनको चाहिये कि प्रथम पृथ्वीका शोधनकरें ३ प्रथम साढ़ेतीनहाथ गहिरा वा दोहाथ गहिरा एक गढ़ाखोदें उसको शब्वेंतसे सनीहुई शुद्ध तड़ागादि की मृत्तिकासे पूरितकरें ४ फिर यह जानलें कि अधिष्ठानपत्थर का बनाना है वा ईंटों का वा मृत्तिकाका फिर उसके अनुसार वास्तुविद्या जाननेवाले पुरुषके कथनानुसार पाषाणादिका ढेर एक ठिकाने लगादें ५ फिर सूत्रसे मापकर समान व चौकोना सब ओरसे बनावें उसमें पत्थरकी भीति मुख्यहै उसके अभाव में फिर ईंटोंकी है ६ उसके भी अभावमें मृत्तिकाकी भीति बनानी चाहिये द्वार जहांतक हो मन्दिरका पूर्व ओर को होना चाहिये फिर उसमें सांखू शीशम आदि अच्छी जातिके काष्ठों के खम्भे लगावें जोकि फलदायकहों ७ उनमें अच्छे बढ़इयों से कमल व कमलके पत्रादि चित्रविचित्र बनवावें इस प्रकार

सुन्दर हरिमन्दिर बनवाकर ८ सुन्दर विचित्र कपाट लगवावे द्वार जहांतकहो पूर्व्वहीको हो अतिहृद्ध व बालकसे श्रीहरिकी मूर्त्ति न बनवावे ९ व कोढ़ी आदिसेभी व अङ्गभङ्गसे न बनवावे और क्षयी सृगी आदिवाले बहुत दिनोंके रोगियोंसे भी न बनवावे विश्वकर्म्माके कहेहुये मार्गके अनुसार जैसी पुराणोंमें कही है १० वैसी दिव्य प्रतिमा अच्छे पुष्टांग व बुद्धिमान् पुरुषसे बनवावे जिसका सुन्दर मुखहो कर्णभी सुन्दरहों व नेत्र अति सुन्दरहों ११ प्रतिमाकी दृष्टि न नीचेकोहो न ऊँचेको न तिरछी दृष्टि हो किन्तु कमल के समान बड़े गोलता लियेहुये नेत्रोंकी समदृष्टि युक्त प्रतिमा बनवावे १२ सुन्दर भौंहें सुन्दर चौड़ा ललाट सुन्दरही कपोल सम अर्थात् नेत्र कर्णादि युगल अंग समान हों छोटे बड़े न होने पावें व शुभ कुन्दुरू के समान लाल ओष्ठहों चिबुक सुन्दरहों व ग्रीवा सुन्दर बनवावे १३ दक्षिण भुजामें नाभि आरागज पुष्ठियों समेत दिव्य चक्र धारण करावे यह चक्र सूर्य्यवत् प्रकाशित होना चाहिये १४ व वामपार्श्व के भुजमें चन्द्र सम प्रकाशित उज्ज्वल शंख हो जिसका पांचजन्य तो नामहै व दैत्योंके दर्पका नाश करताहै १५ फिर दिव्यहार प्रतिमाके गलमें शोभित हो कण्ठमें शंख कीसी तीनरेखाहों स्तन सुन्दरहों हृदय मनोहरहो उदर पिप्पल पत्रसम चढ़ाउतारहो सबप्रकारसे सुन्दरहो १६ बामहस्त कटि प्रदेशमें लगाहो व दक्षिण हस्त कमलमें लगाहो दोनों बाहुओं में बहूँटे बँधेहों सुन्दर नाभि व त्रिबलीसे युक्तहो १७ कटिभी सुन्दरहो ऊरु जंघा सब सुन्दर जैसी चाहियें चढ़ाउतारहों सुन्दर वस्त्र व क्षुद्रघण्टिका धारण कियेहो हे राजसत्तम ऐसी प्रतिमा बनवाकर १८ व सुवर्ण वस्त्रादि देनेसे प्रतिमाके बनाने वालोंका सत्कारकर शुक्लपक्षमें जब शुभनक्षत्र तिथि लग्नादि हों तब पण्डितको चाहिये कि प्रतिमाका स्थापनकरे १९ स्था-

पनके पूर्वही मन्दिरके आगे उत्तम यज्ञमण्डल बनावे जिसके चार द्वार चारोंदिशाओंमें हों व चार तोरण चारोंदिशाओं में दिव्य काष्ठके लगेहों २० उसमें जहां तहां सप्तधान्यके अंकुर जमाये जायँ व शंख नगारे आदि बाजे बाजतेरहें पण्डित लोग प्रथम छत्तीस घड़ोंसे प्रतिमाको धोवें २१ फिर मण्डपके भीतर लेजाकर वेदवादी पण्डितों से मंत्रपूर्व्वक पंचगव्यसे स्थापित करावे सो दुग्ध घृत दधि इत्यादिकोंसे अलग २ स्नान करावे २२ फिर उष्ण जलसे स्नानकराय शीतल जलसे स्नानकरावे फिर हरिद्रा कुंकुम चन्दनादिकोंसे उपलेपितकरे २३ पुष्प मालादिकोंसे अलंकृत कर फिर दिव्य वस्त्रों से भूषित करे फिर पुण्याहवाचन कराय ऋचाओं व जलसे मूर्त्तिको पोंछकर २४ फिर भक्त ब्राह्मणोंके संग स्नानकरके शंख नगारे आदि वजवाते गातेहुये प्रतिमा लेजाकर सातरात्रि वा तीन रात्रि तक किसी बड़ी नदीके जलमें स्थापितकरे २५ नदी के अभाव में किसी ह्रद वा तड़ागमें रखके मूर्त्तिकी रक्षा करतारहे इसप्रकार जलमें अधिवासित कराके २६ फिर ब्राह्मणोंकेही हाथोंसे जल के भीतरसे निकलवाकर व पूर्व्ववत् वस्त्रादि से भूषित करातेहुये व शंख नगारे आदि बजवाते व वेदमंत्रोंके उच्चारणके साथ केशवजीको २७ कमलके आकार गोल बनेहुये शुद्ध मण्डपमें लाके फिर विष्णुसूक्त मंत्रोंसे स्नान व अलंकारादि करावे २८ फिर ब्राह्मणों को विधिवत् भोजन करवाये कमसे कम सोलह ऋत्विज् पूजितकरे उनमें चार तो वेद पाठकरें चार रक्षा पाठ पढ़ें २९ व चार पण्डित चारों दिशाओं में बैठकर होमकरें व पुष्प अक्षतादि मिलाकर सब दिशाओंमें क्षेत्रपालादिकों को चार बलिदें ३० उनमें एक पण्डितसे इन्द्रादिक प्रसन्नहों यह कहकर दिलावे व प्रत्येकको सायंकालकी सन्ध्यामें अर्द्धरात्रिमें वा प्रातःकालमें ३१ जब सूर्य्योदय हो आवे तो मातृगणों के

विप्रगणोंको पुष्पादि वलि दिलवावे व एक ओर फिर २ पुरुष-सूक्त जपाजाय ३२ व हे राजन् विष्णुकेमन्दिरमें एकओर मन से विष्णुका ध्यान करताहुआ यजमान ब्राह्मणोंसहित एकरात्रि व दिन उपवासकरके स्थितरहे ३३ व फिर ब्राह्मणोंके साथ जहां प्रतिमाहो उसद्वारमें प्रवेशकरके ब्राह्मणों से वेदसूक्त पढ़ाता हुआ शुभलग्नमें दृढ़तापूर्व्वक उस प्रतिमाका उपस्थानकरके ३४ फिर विष्णुसूक्तसे वा पावमान मन्त्रसे आचार्य्य कुशस-हित जलसे देवदेवका प्रोक्षणकरे ३५ फिर मूर्त्तिके आगे अग्नि स्थापितकरके व चारोंओर कुशबिछाकर अर्थात् कुशकण्डिका करके होमकरे तदनन्तर जातकर्म्मादिक कर्म्म गायत्रीसे करे वा नमोनारायणायआदि किसी वैष्णवी मन्त्रसेकरे ३६ एक२ क्रिया करनेमें चार २ आहुतियां दें यह कार्य्य आचार्य्य अ-पनेआप करे वा अस्त्रों से दिग्बन्धन भी आचार्य्यही करे वा औरों से करावे ३७ फिर त्रातारमिन्द्र इत्यादि मन्त्रसे वेदीपर घृत छोड़े व परोदिवास और याम्यमन्त्रसे व वारुणयान्निर्म्मम इससेभी ३८ याते सोम इससे उत्तरदिशा में घृतकी आहुति दे व परोमात्र इत्यादि दो सूक्तों से सर्व्वत्र घृतसे आहुति करे ३९ इसप्रकार होमकरके फिर यदस्य व स्विष्टकृत् इन मन्त्रों कोजपे फिर ऋत्विजों को यथायोग्य दक्षिणादे ४० दो वस्त्र व कुण्डल तथा अंगूठी गुरूकोदे यदि विभवहो तो गुरूको जो कु-ण्डलादिदे सुवर्णहीकेदे ४१ फिर आठसहस्रकलशोंसे वा आठ-सौसे व इकीसकुम्भोंसे प्रतिमाका स्नानकरावे ४२ फिर शंख व नगारोंके शब्दोंसे व वेदमन्त्रोंके उच्चारणसे व यव धान आदि केअंकुरोंसेयुक्त पात्रोंसमेत ४३ दीप यष्टि पताका छत्र तोरणा-दिकोंसे युक्तकरे फिर यथा विभवका विस्तार हो वैसे पदार्थोंसे स्नानकराय ४४ व उससमयभी ब्राह्मणोंको यथाशक्ति दान दे श्रीहरिको स्थापितकरे हे राजन् जोकोई इसप्रकारसे श्रीविष्णु-

देवकी प्रतिष्ठाकरताहै ४५ वह सबपापोंसे छूटकर व सबभूषणों से भूषित हो विचित्र बिमानपर अपने इक्कीसकुलमें उत्पन्नपुरुषोंसमेत चढ़के ४६ इसलोकसे लेकर सब लोकोंमें बड़ीपूजा पाय व बन्धुओंको उनलोकोंमें स्थापित करताहुआ आपविष्णुलोकमें जाकर पूजितहोता है ४७ व वहींज्ञानपाके वैष्णव पद को पाताहै इस प्रकार हमने श्रीविष्णुजी की प्रतिष्ठाका विधान तुमसेकहा ४८ सुनने व पढ़ने वालोंके सबपापोंका नाशकरता है इसमें कुछभी अन्तर नहींहै ४९॥

चौपै॰ सुनिये महिपाला परमविशाला जोथापत हरिकाहीं।
क्षितितलपरविधिसोंलहिसबसिधिसोंविष्णुलोकसोजाहीं॥
जहँ कैस्यहु जाई नरसुखपाई बसत सदा नहिं फेरी।
आवत यहिलोका जहँबहुशोका तुमसोंकहत सुटेरी १।५०॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेषट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६॥

सत्तावनवां अध्याय॥

दो॰ सत्तावनयें महँ कहे हरिभक्तनके चीन्ह॥
जिन्हेंसुनेनरहोतहैं विष्णुभक्तिलवलीन्ह १

राजा सहस्रानीक मार्कण्डेयजीसे बोले कि हे द्विज नरसिंह जीके भक्तोंके लक्षण हमसेकहो कि जिनकी सङ्गतिमात्रसे विष्णुलोक दूर नहीं रहता १ श्रीमार्कण्डेयजी बोले कि विष्णुजीके भक्त सदा श्रीविष्णुके पूजन के विधानमें महाउत्साही होते हैं व अपनी इन्द्रियोंको अपने वशमें रखते अपने धर्म्मसे सम्पन्न रहते इसीसे वे लोग सब अर्थोंको सिद्ध करलेते हैं २ व परोपकार करनेमें सदा निरतरहते गुरुओंकी शुश्रूषामें तत्परहोते अपने वर्णाश्रमके आचारसे युक्त रहते व सबसे प्रियही वचन बोलते हैं ३ वेद व वेदार्थोंके निश्चयों को जानते रोष रहित होते किसी वस्तुकी इच्छा नहीं करते शान्तस्वरूप व प्रसन्नमुख रहके नित्य धर्म्ममें परायणरहते हैं ४ व हितकारी वचन सोभी

थोड़ाबोलते हैं समयपर अपनी शक्तिके अनुसार अतिथियोंका प्रियकरते हैं दम्भ व मायासे विनिर्म्मुक्त रहते हैं काम क्रोधसे अति वर्ज्जित रहते हैं ५ वे लोग इसप्रकारके धीर क्षमावान् बहुत पढ़ेसुनेहोते व विष्णुका सङ्कीर्त्तन सुनतेही उनके रोमावलीहो आतीहै ६ व विष्णुकी मूर्त्तिके पूजनमें सदाप्रयत्न कियाकरते व उनकी कथामें सदाआदर करते हैं ऐसे महात्माओं को विष्णुभक्त कहते हैं ७ इतनासुन राजाने फिर प्रश्नकिया कि हे भृगुवर्य्य गुरुजी हे विद्वन् आपने कहा कि जो अपने वर्ण व आश्रमके धर्म्ममें स्थितहैं वे केशवजी के भक्तहैं ८ इससे आप वर्णों व आश्रमों के धर्म्म हमसे कहने के योग्य हैं कि जिनके करने से सनातनदेव नरसिंहजी सन्तुष्टहोते हैं ९ मार्कण्डेयजी बोले कि इसविषयमें पूर्व्वकालका उत्तम वृत्तांत वर्णन करते हैं जिसमें मुनियों के साथ महात्मा हारीतजी का सम्वाद है १० धर्म्मके तत्त्व जाननेवाले बहुत वेद शास्त्रोंके पढ़नेवाले बैठेहुये हारीतजी से प्रणामकर धर्म्म सुनने की इच्छा कियेहुये मुनि लोग बोले ११ कि हे सर्व्वधर्म्मज्ञ व सबधर्म्मोंके प्रवृत्त करने वाले हे भगवन् वर्णों व आश्रमोंके सनातन व निरन्तर धर्म्म हम लोगोंसे कहिये १२ जगत्के बनानेवाले श्रीनारायण देव पूर्व्वकाल में जलके ऊपर शेषनामके शरीरको शय्याबनाय लक्ष्मीजी के साथ शयनकररहे थे १३ सोतेहुये उन नारायणजी की नाभिसे कमलजमा व उसके मध्यमें वेद वेदाङ्गों के भूषण ब्रह्माजी उत्पन्नहुये १४ उनसे देवदेवजी ने कहा कि तुम बार बार जगत्की सृष्टिकरो तब उन्होंने अपने बाहुसे क्षत्रियों को उत्पन्नकिया व वैश्योंको ऊरुसे १५ व शूद्रोंको पादोंसे बनाया व उन लोगोंके धर्म्मशास्त्र व मर्य्यादा तदनन्तर ब्रह्माजी ने कहा १६ सो उसीरीतिसे सब तुम से कहतेहैं हे ब्राह्मणोत्तमो सुनो वह धनकरता यशकरता व आयुबढ़ाता तथा स्वर्गमोक्ष

के फल देताहै १७ ब्राह्मणी में ब्राह्मणहीसे जो उत्पन्न हो वह ब्राह्मण कहाता है उसके धर्म्म व उसके रहनेके योग्य देश कहतेहैं १८ जिसदेशमें अपने स्वभावहीसे कृष्णसार मृगरहता हो उसमें बसाहुआ ब्राह्मण अपना धर्म्मकरे १९ ब्राह्मणों के जो छः कर्म्म पण्डितोंने कहे हैं उन्हींको जो निरन्तर करते हैं वे सुखपाते हैं २० वेद शास्त्रादिकों का पढ़ना व पढ़ाना यज्ञकरना व यज्ञकराना दानदेना व दानलेना इन्हींको छः कर्म्म कहते हैं २१ उसमें पढ़ाना तीनप्रकारका होताहै एक धर्म्मके अर्थ दूसरा अपने अर्थ कुछ उससे द्रव्यादि लेकर तीसरा कारण से जैसे किसीकी नौकरी चाकरीकरके पढ़ावे व शुश्रूषा का कारण तीनों प्रकार की अध्यापकता में है २२ योग्यही शिष्यों को पढ़ावे व योग्यही यजमानों को यज्ञकरावे व विधिपूर्व्वक ही दानले जिससे गृहके धर्म्मचलें २३ शुभदेशमें एकाग्रचित्त हो वेदमें अभ्यासकरे व नित्य नैमित्तिक व काम्य कर्म्म यत्न पूर्व्वक क्रियाकरे २४ व गुरुकी सेवा भी पठनावस्थामें जैसी चाहिये निरालसहोके करतारहे सायंकाल व प्रातःकाल विधि पूर्व्वक अग्नि में आहुति देतारहे २५ व स्नानकरके वैश्वदेव प्रतिदिनकरे व अतिथि कोई आजाय तो अपनी शक्तिके अनुसार गृहस्थ उसका भी पूजन सत्कार करे २६ औरोंको भी आयेहुये देखकर बिरोध रहित पूजे अपनी स्त्री के संग नित्य भोगकरे व परस्त्रीके संग कभी न करे२७सदा सत्यवचन बोले क्रोधको जीतेरहे अपने धर्म्ममें सदा निरतहो जब अपनेकर्म्म के करनेकासमय आजाय तो प्रमाद न करे कि उससमय अन्य कर्म्म करनेलगे २८ प्रिय व हितबाणी सदा बोले पर परलोकके बिरोध करनेवाली बाणी कभी न कहे इसप्रकार संक्षेप रीतिसे ब्राह्मणका धर्म्म हमने कहा २९ इसप्रकार जोकोई ब्राह्मणधर्म्म करताहै वह ब्रह्मकेस्थानको वा ब्रह्माके स्थानको जाताहै ३०॥

चौपै॰ यह सवअघहारी धर्म्मप्रचारी ब्राह्मणधर्म्म बखाना।
क्षत्रिय मुखकेरे धर्म्म घनेरे कहवै सहित विधाना॥
सुनिये चितधैकै मन इत कैकै विप्रवर्य्य शुभरीती।
सोसवसुखपावतनिजमनभावतसुनतपढ़तकरिप्रीती॥१३॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेब्राह्मणधर्म्मकथनन्नाम सप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७॥

अट्ठावनवां अध्याय॥

दो॰ अट्ठावनयें महँ कहे क्षत्रियादिके धर्म्म॥
पुनिगृहस्थकेधर्म्मसव जिमिकरनेंत्यहिकर्म्म१

हारीतमुनि सव मुनियोंसे वोले कि अव यथाक्रम क्षत्रियादिकोंके धर्म्म कहते हैं जिस २ विधिसे क्षत्रियादि प्रवृत्त होते हैं १ राज्यमें टिकाहुआ क्षत्रियधर्म्मसे प्रजाओंका पालन करे व विधिपूर्व्वक यज्ञ करताहुआ वेदशास्त्रपढ़े २ व धर्म्ममें वुद्धि करके उत्तम ब्राह्मणों को दानदे अपनी स्त्रीके संग नित्य भोग करे व परस्त्रीके संग कभी न भोगकरे ३ नीतिशास्त्रके अर्थमें कुशलरहे व सन्धि विग्रह आदिके तत्त्वोंको जाने देवता व ब्राह्मणों का सदा भक्त रहे पितरों के श्राद्धादि कर्म्म करतारहे ४ धर्म्महीसे जीतनेकी इच्छाकरे अधर्म्मको छोड़े जो ऐसा करता है वह क्षत्रिय उत्तमगति पाताहै ५ गौओंकी रक्षा कृषी व वाणिज्य विधिपूर्व्वक वैश्यकरे व यथाशक्ति दान धर्म्मकरे गुरुओं की शुश्रूषा भी करतारहै ६ लोभ व दम्भसे विनिर्म्मुक्तरहै सत्य वचनबोले किसीकी निन्दा न करे न आप निन्दितहो अपनीही स्त्रीके संग भोगकरे इन्द्रियोंको दमनकरे परस्त्रीकासंग त्यागे ७ यज्ञके कालमें धनोंसे ब्राह्मणोंकी पूजा बड़ी शीघ्रतासेकरे यज्ञ करना वेदशास्त्र पढ़ना व दानदेना ये तीनकर्म्म नित्य निरालस होकरे ८ जब पितरोंका काल आवे तो उनके श्राद्धतर्प्पणादि कार्य्यकरे व नरसिंहजीकी पूजा तो नित्यकरे अपने धर्म्ममें टिके

हुये वैश्यका यह धर्म्म तुमसे हमने कहा ९ इस धर्म्मकी सेवा करताहुआ वैश्य स्वर्गवासी होताहै इसमें संशय नहीं है शूद्र तीनोंवर्णोंकी सेवाकरे १० व ब्राह्मणोंकी सेवा विशेष रीति से दासवत्करे उनको बिना मांगेही जो बस्तु अपनेहो दिया करे व जीविकाके अर्थ खेतीकरे ११ सब ग्रहों का प्रत्येक मासमें न्याय धर्म्मसे पूजनकरे बहुधा पुराने फटे वस्त्र धारणकरे व ब्राह्मणके जूँठे पात्रादिकोंको शुद्ध कियाकरे १२ अपनीही स्त्रियों के संग भोगकरे पराई स्त्रीका संग सदा त्यागे कथा पुराण नित्य ब्राह्मणके मुखसे सुने व नरसिंहजीका पूजन नित्यकरे १३ व ब्राह्मणके नमस्कार श्रद्धापूर्व्वक जैसेही देखे कियाकरे सत्यही बोले किसीसे अति प्रीति व बैर न करे १४ मन वचन व कर्म्म से ऐसा करताहुआ शूद्र इन्द्रके स्थानको प्राप्त होताहै व उसके सब पाप नष्ट होजाते हैं इससे पुण्यभागी होताहै १५ हे ब्राह्मणो वर्णों के बिबिध प्रकारके धर्म्म हमने यथाक्रम कहे अब क्रमसे चारो आश्रमों के धर्म्म कहते हैं हे मुनीन्द्रो सुनो १६ हारीतजी बोले कि जब ब्राह्मणकुमारका यज्ञोपवीत हो तो वह गुरुके गृहमें पढ़नेके लिये जाबसे व कर्म्म मन वचनसे गुरूका प्रिय व हित सदाकरे १७ सदा ब्रह्मचर्य्यसे रहे इससे भूमिपर शयनकरे खट्वादिकों पर नहीं व अग्निकी उपासना सदा करे गुरूको जल आनदे व इन्धन भी बनादिसे लेआन दियाकरे १८ पर विधिपूर्व्वक मध्याह्न के पूर्व्वही वेद पढ़ले क्योंकि जो विधि छोड़कर पढ़ताहै वह वेदाध्ययनका फल नहीं पाता १९ जो कुछ कर्म्म कोई विधिको छोड़ अविधिसे करता है उसका फल उसे नहीं मिलता व करनेवाला भी विधिसे च्युत कहाता है २० इससे वेदपाठकी सिद्धिके लिये नियमित व्रतों को करे व गुरूके समीप सम्पूर्ण शौच व आचारके विधान सीखे २१ ब्रह्मचारी सावधानहो व एकाग्र चित्त करके मृगचर्म्म दंडकाष्ठ

मेखला व यज्ञोपवीत धारण कियेरहे २२ सन्ध्या व प्रातःकाल
भिक्षा के अन्नसे दोवार भोजन करे इन्द्रियों को अपने वशमें
रक्खे न गुरूके कुलमें भिक्षामांगे न अपनी जातिके कुलके व-
न्धुओंके यहां २३ जव अन्य गृहोंका अलाभ हो तो पूर्व २
को छोड़ताजाय आचमनकर पवित्रहो नित्य गुरूकी आज्ञाही
से भोजनकरे २४ शयनसे उठकर प्रथम कुश या मृत्तिका दांतों
के शुद्ध करनेके लिये व वस्त्रादिक जिसकी आवश्यकताहो गुरू
को उठादे २५ जव गुरू स्नान करले तो पीछे आप भी यत्न
से स्नानकरे ब्रह्मचारी व व्रती नित्य दन्तधावन न करे २६ छत्र
उपानह उवटन लगाना गन्धमाल्यादि ब्रह्मचारी न धारणकरे
व नांच गाना कथालाप व मैथुन तो विशेष रीतिसे वरावे २७
मधुमांस रसका आस्वाद व स्त्री काम क्रोध लोभ व अन्यलोगों
का अपवाद त्यागे २८ स्त्रियोंको वार २ हठसे न देखे न स्पर्श
करे व किसीको मारे नहीं अकेलाही सवकहीं शयनकरे व वीर्य्य
कभी न पातकरे २९ व जो विना उसकी इच्छाके शयन करनेमें
कहीं वीर्य्यका पात होजाय तो स्नानकर सूर्य्य व अग्निकी पूजा
कर पुनर्म्मां इस ऋचाको जपे ३० व व्रतमें टिकाहुआ ब्रह्म-
चारी आस्तिकतासे तीनों कालकी सन्ध्या प्रतिदिन कियाकरे
व न्यायपूर्व्वक अपनी इन्द्रियोंको वशमें रक्खे ३१ सन्ध्याकर्म्म
के पीछे गुरूके चरणोंमें प्रणामकर यदि सम्भवहोतो नित्यभक्ति
से माता पिताके यथायोग्य प्रणामकरे ३२ क्योंकि गुरू माता
पिता इन तीनोंके सन्तुष्ट होनेपर सव देव संतुष्ट होते हैं इससे
अहंकार छोड़के ब्रह्मचारी इन तीनोंकी आज्ञामें टिके ३३ इस
प्रकार चारो वा दो वा एक वेद पढ़के गुरूको दक्षिणा दे फिर
अपनी इच्छासे निवास करे ३४ विरक्त चित्तहो तो बनको वा
तीर्त्थादिकों को चलाजाय संरक्त चित्त हो तो गृहस्थ होजाय
क्योंकि जो रागसहित गृहछोड़ बनादिको चलाजाताहै वह अ-

वश्य नरकको जाताहै ३५ व जिसकी जिह्वा लिंगेंद्रिय उदर व बाणी येसबशुद्धहोतेहैं तब कियेहुये भी बिवाहको छोड़ संन्यासी होताहै वह ब्राह्मण ब्राह्मणके शरीरहीको जानो धारण कियेहै ३६ इसप्रकारकी विधिपर स्थितहोके व निरालसीहो जो कालको बिताताहै वह फिरभी दृढ़व्रतकरनेवाला ब्रह्मचारीहोताहै ३७ जो ब्रह्मचारी इसविधिपर स्थितहो गुरूकी सेवा करताहुआ पृथ्वीपर बिचरताहै वह दुर्लभ विद्याकोपाय उसका सबफल पाताहै ३८ हारीतजी फिर मुनियोंसे बोले कि वेदाध्ययनकर श्रुति व शास्त्रोंके अर्थोंका निश्चयजान गुरु से वरपाय फिर समावर्त्तनकर्म्म करे ३९ गृहमेंआय अपने नाम व गोत्रकीको छोड़ जिसकेभ्राता विद्यमानहो व शुभरूपवतीहो तथासब अंग संयुक्तहो आचरण शील सज्जनोंकाहो ऐसी कन्याके संग बिवाहकरे ४० अत्यन्त गौरवर्णवाली कन्याकेसंग बिवाह न करे न अधिकअङ्गवालीके संग न रोगिणीकेसंग न बड़ी बरबरही के संग न बहुत रोमवालीके न अंगहीन के न भयङ्कर दर्शन वालीके संग बिवाहकरे ४१ न नक्षत्र वृक्ष व नदीके नामवाली के साथ न पर्व्वतके मध्यके नामवालीके न पक्षी सर्प्प व दास के नामवालीके न भयङ्कर नामवाली के साथ बिवाहकरे ४२ किन्तु सब सुन्दर पूर्णअंगवालीकेसौम्यनामवाली हंस व हस्ती के समान चलनेवाली के संग ओष्ठ केश व दांत छोटेवालीके व कोमल अंगवाली स्त्रीकेसंग बिवाहकरे ४३ सो ब्राह्मणोत्तम ब्राह्मबिवाहके विधानसे अच्छेप्रकार बिवाहकरै जैसा योग हो अपने वर्णके अनुसार बिवाहकी सबरीतेंकरे ४४ व नित्य प्रातःकालउठ शौचकर दन्तधावनपूर्व्वक उत्तम ब्राह्मण स्नानकरे ४५ व जिससेकि मुखमें पूर्व्वदिनकेजूँठआदि लगेरहनेसे मनुष्य अपवित्र होता है इससे सूखे वा गीलेकाष्ठसे दन्तधावन अवश्यकरे ४६ बेर कदम्ब करञ्जा व कञ्जी बरगद लहचिचिड़ा बेल

मदार वा अकौआ व गूलर४७इतनेवृक्ष दन्तधावनकेकर्म्ममें प्रशस्तहैं व दन्तधावन काष्ठ तथा उनकी उत्तमता आगे भी कहते हैं ४८ सब कांटेवालेवृक्ष दन्तधावनमें पुण्यदायक हैं व सब दुधारेवृक्ष यशस्वी हैं दन्तधावनका प्रमाण ८ अंगुलका कहाहै ४९ अथवा प्रादेशमात्रका काष्ठ जो बीतामरसे कुछेकही न्यूनहोताहै उतना दन्तधावनका प्रमाणहै बस उसीसे दांतोंको धोनाचाहिये ५० परन्तु प्रतिपत् अमावास्या षष्ठी व नवमीको दांतोंमें काष्ठका संयोग करने से पुरुष अपने सातकुलतक को भस्मकरताहै इससे इनतिथियोंमें दन्तधावन न करनाचाहिये ५१ व जिसदिन दन्तधावनकेलिये काष्ठ न मिले अथवा जिस दिन दन्तधावन करनेका निषेधहो उसदिन जलके बारहकुल्ले करनेसे मुखकीशुद्धि कीजातीहै ५२ स्नानकरके मंत्रपढ़ आच-मनकरके फिरआचमनकरे व फिर देहपोंछकरमंत्रपढ़के जलकी अंजलिदे ५३ क्योंकिप्रातःकाल सूर्य्यकेसाथ मन्देहोनाम राक्षस ब्रह्माजीके वरदानसे युद्ध करतेहैं इससे गायत्रीपढ़के उससमय जलांजलि ऊपरको उछालनेसे ५४ रविजीके वैरी उन मन्देहो नाम राक्षसोंको वह पुरुष मारताहै तब ब्राह्मणोंसे रक्षितहो सूर्य्य नारायण आकाशमें चलनेलगते हैं ५५ उस समय मरीच्यादि ऋषि व सनकादि योगीलोगभी सूर्य्यकी रक्षा करते हैं इससे ब्राह्मणको चाहिये कि प्रातःकाल वा सायंकालकी सन्ध्या का उल्लंघन न करे ५६ जो कोई उल्लंघन मारे मोहके करता है वह निश्चय नरकको जाताहै सन्ध्या समय स्नानकर व सूर्य्य नारायण को जलांजलि दे ५७ व प्रदक्षिणाकर जलका स्पर्श करनेसे शुद्ध होताहै पूर्व्वकालकी सन्ध्याका प्रारम्भ तब करना चाहिये जबकि कुछ २ नक्षत्र दिखाई देते रहते हैं ५८ व तब तक गायत्रीमें अभ्यास करना चाहिये जब तक कि नक्षत्रों को देखता है फिर गृहमें आके पण्डितको चाहिये कि थोड़ा होम

करे ५९ व यह होम नौकरों चाकरों व भृत्यवर्गों की रक्षाकेलिये होताहै फिर शिष्योंकी रक्षाके लिये कुछ वेदपाठकरे ६० व अपनी रक्षाके लिये ईश्वरके सामने जाय व कुश पुष्प इन्धनादि ग्रामसे बाहर दूरसे लावे ६१ इसी प्रकार फिर पवित्रदेश में बैठकर मध्याह्नकी सब क्रियाकरे अब संक्षेपरीतिसे पापनाशन स्नानविधि वर्णनकरतेहैं ६२ जिसविधिसे स्नानकरनेसे तुरन्त पातकसे छूटजाता है पण्डितको चाहिये जब स्नानकरने को चले श्वेततिल व कुशलेले ६३ व प्रसन्नमनहो शुद्ध व मनोरस किसी नदीपरजाय जब नदी विद्यमानहो तो थोड़े जलमें न स्नानकरे ६४ नदीके तटपर पहुँच पवित्र स्थानपर कुश व मृत्तिका जलसे भिगोदे फिर मिट्टी व जल सब अपने शरीरमें लगावे ६५ फिर स्नानकरे इसप्रकार स्नानकरनेसे शरीरका शोधनकर आचमन करे स्नानकरनेके समय जलमें पैठकर जलके देव वरुणजीके नमस्कारकरे ६६ व फिर चित्तमें हरिहीका स्मरण करताहुआ बहुतजलमें बुड्डीमारके स्नानकरे फिर स्नानकरके जल आचमनकरे ६७ फिर पावमानी मंत्रोंसे सूर्य्यके सारथि अरुणदेवके ऊपर जलछोड़े फिर कुशकी फुनगीसे जल बोरकर अपनेऊपर छिड़के ६८ व इदंविष्णुर्विचक्रमे इसमंत्रसे अपने सर्व्वांगमें मृत्तिका लेपनकरे तब नारायणदेवका स्मरण करता हुआ जलमें पैठे ६९ जल में अच्छेप्रकार बुड्डीमारकर फिर तीनबार अघमर्षण पढ़े स्नानकर कुश तिल व जलसे देवता पितर व ऋषियों का ७० तर्प्पण करके उसजलसे निकले व जलके तीरपरआय धोये व शुक्ल दोवस्त्र धोती अँगोछा धारण करे ७१ वस्त्र धारणकरके फिर शिरकेबाल न हिलावे स्नान करनेके समय व स्नानकर होनेपर भी अतिरक्त व नीलवस्त्र नहीं अच्छाहोता इनदोनों का निषेधहै ७२ बिनाकिनारा व बिना छीराका वस्त्र पण्डितको चाहिये कि न धारणकरे स्नानके

पीछे मृत्तिका लगाकर जलसे चरणधोवे ७३ व अच्छीतरह देखकर तीनवार आचमनकरे व दोवार मुखधोवे फिर पाद व शिरपर जलछिरके फिर तीनवार आचमनकर ७४ अंगुष्ठ व अंगुष्ठके लगेवाली अँगुलीसे नासिकाका स्पर्शकरे व अंगुष्ठ और कनिष्ठिकासे नाभि व हृदयका स्पर्शकरे ७५ व सब अँगुलियोंसे शिरका स्पर्शकरे व बाहोंकोभी सब अँगुलियोंसेही स्पर्शकरे इसविधिसे आचमनकर शुद्धमनहो ब्राह्मण ७६ हाथों में कुशले पूर्व्वको मुखकर एकाग्रचित्तहो जैसा शास्त्रमें लिखा है निरालसहो प्राणायामकरे ७७ तदनन्तर वेदमाता गायत्री का जप यज्ञकरे जप यज्ञ तीनप्रकार का होताहै उसका भेद समभो ७८ एकवाचिक दूसरा उपांशु तीसरा मानसिक बस येही तीनप्रकारहैं इनतीनों जपयज्ञोंमें प्रथमसे दूसरा व उससे तीसरा अधिक कल्याणदायकहै ७९ जोकि उच्च नीच व स्वरित शब्दोंसे स्पष्ट अक्षरों से उच्चारित कियाजाय कि अच्छेप्रकार सबको सुनाई दे वह वाचिक जप यज्ञ कहाता है ८० व जो धीरे से मन्त्रका उच्चारण करे व कुछेकही ओष्ठ चलावे व कुछ आपही मंत्रको जानपावे वह उपांशु जप कहाता है ८१ जो बुद्धिसेही अक्षरोंकी पंक्ति समभीजाय वर्णसे वर्ण पदसे पदभी बुद्धिहीसे जानेजायँ व शब्दके अर्थका ध्यान कियाजाय वह मानसजप कहाताहै ८२ जपकरनेसे नित्य स्तुतिकीगई देवता प्रसन्नहोतीहै व प्रसन्नहो विपुलभोग व निरन्तर मुक्तिको देती है ८३ यक्ष राक्षस पिशाच व सूर्य्यादि दूषण करनेवाले सब ग्रह मंत्र जप करनेवालेके समीप नहींजाते किन्तु उसके दूरही दूर चलेजाते हैं ८४ नक्षत्रादिक अच्छीतरह जानकर संकल्प करके तब निरालसहो उसीमें मनलगा प्रतिदिन गायत्री का जपयज्ञकरे ८५ जो पुरुष सहस्रवार जपता वह तो परमसंख्या को जपता है जो सौवार जपता वह मध्यमा संख्याको जपता

व जो दशबार जपताहै वह नीचसंख्या पूरीकरताहै पर इनमेंसे जो किसीभी संख्याको नित्य जपताहै वह पापोंसे नहींलिप्तहोता ८६ फिर सूर्य्यको पुष्पांजलिदेके ऊपरको बाहु उठाय उदुत्यम् चित्रम् तच्चक्षुः इत्यादि मंत्रोंको जपे ८७ फिर प्रदक्षिणावर्त्त घूम कर दिवाकरके नमस्कारकरे फिर उनके तीर्थोंसे देवादिकोंका तर्प्पणकरे ८८ देवताओं व देवगणोंको ऋषियों व ऋषिगणोंको पितरों व पितृगणोंको पण्डित नित्य तर्प्पितकरे ८९ फिर तर्प्पणके अंतमें स्नानवस्त्र निचोड़कर फिर आचमनकरें कुशोंपर बैठकर व कुशहाथों में लियेहुये यज्ञकर्म्म विधिसे करे ९० पूर्वको मुख करके बुद्धिमान् ब्रह्मयज्ञकरे तदनन्तर तिल पुष्प व जल सहित सूर्य्यनारायण को अर्घ्य दे ९१ उठकर अपने शिरकी बराबर ऊँचा उठाय हंसंशुचिषत् इस ऋचासे जलमें सूर्य्यार्घ्य दे फिर घरमें आवे ९२ तब विधिपूर्वक पुरुषसूक्तसे श्रीविष्णुजी की पूजाकरे फिर वैश्वदेव व बलिकर्म्म यथाविधिकरे ९३ वैश्वदेव करनेके पीछे जितनीदेर में गोदोहन होताहै उतनी देर तक अतिथि की प्रतीक्षा गृहस्थ करे जो बिनादेखा हुआ अतिथि आवे प्रथम उसका सत्कारकरे ९४ सो जैसेहीसुने कि कोई अतिथि आयाहै कि द्वारही पर उसेआगे बढ़के स्वागत पूँछकर ग्रहणकरे क्योंकि अतिथिका स्वागत करनेसे गृहस्थोंके अग्नि सन्तुष्टहोते हैं ९५ व आसनदेनेसे इन्द्र प्रसन्नहोते हैं व पाद धोनेसे उसके पितृगण प्रसन्नहोते हैं ९६ व अन्नादि देनेसे प्रजापति सन्तुष्टहोते हैं इससे गृहस्थ अतिथिकी पूजा अवश्य करे ९७ शक्तिमान् को चाहिये कि नित्यभक्तिसे विष्णुकी पूजा करके फिर अतिथिकी चिन्तनाकरे व जो आपभी सन्न्यासी हो तोभी ब्रह्मचारीको भिक्षादे ९८ जितना अन्न भोजनकेलिये बनाया गयाहो यदि कोई अतिथि न आयाहो तोभी उसमें से एक भिक्षुके लिये भिक्षा निकालकर अलग धरदे तब भोजन

करे उस भिक्षामें जितने व्यञ्जनादि बने हों सब थोड़े २ धरे ९९ व बिना वैश्वदेव करनेपरही जो भिक्षु भिक्षाके अर्थ आजाय तो अवश्यही उसे दे दे क्योंकि उससमयका देनातो स्वर्ग के सोपानोंका करनेवाला होताहै १०० वैश्वदेवकाही अन्नभिक्षादेकर उस भिक्षुका विसर्ज्जन करें क्योंकि वैश्वदेव न करने के दोषको भिक्षुनाश करसक्ता है १०१ अतिथिके पीछे फिर सुवासिनी अर्थात् जिन कन्याओंका विवाहहुआहो परँ पति केगृहको न गईहों उनको भोजनकरावे फ़िर अविवाहित कुमारियों को तदनन्तर रोगियों को फिर बालकों को तदनुवृद्धोंको तदनन्तर जो शेषरहे आप भोजनकरे १०२ कितो पूर्व्व को मुखकरके वा उत्तरको मुखकर मौनव्रत धारणकर अथवा थोड़ा बोलताहुआ प्रथम अन्नके नमस्कारकरके हर्षित मनसे १०३ अलग २ पंच प्राणाहुतियां करके तब सब लवण घृतादि मिश्रितस्वादु करनेवाले अन्नका भोजनकरे १०४ भोजनके अंत में आचमनकरके उदरकास्पर्श करताहुआ इष्टदेवताका स्मरण करे फिर इतिहास व पुराण सुनकर कुछकाल बितावे १०५ फिर संध्याके समय गृहसे बाहर नदी तड़ागादि के तीरजाय विधिसे सन्ध्योपासन करे फिर होमकरके अतिथि का पूजन करके रात्रिमें भोजनकरे १०६ क्योंकि वेदकी आज्ञासे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंको प्रातःकाल व सायंकाल भोजन करनाचाहिये अग्निहोत्र करनेवाला फिर बीचमें कुछ भोजन न करे १०७ शिष्योंको सदा पढ़ायाकरे पर अनध्यायोंमें न पढ़ावे अनध्याय स्मृतियों के कहेहुये सब व पुराणोंके कहेहुये प्रसिद्ध हैं १०८ महानवमी द्वादशी भरणी व अक्षय तृतीयाको गुरू शिष्योंको न पढ़ावे १०९ व माघमासकी सप्तमीको व मार्ग्गमें भी अध्ययनन करनाचाहिये अध्यापन व भोजन स्नानकालमें न करना चाहिये ११० हितचाहनेवाला गृहस्थ विधिपूर्व्वक दानमी अव-

श्य कियाकरे दानोंमें सुवर्णदान गोदान व भूमिदान विशेषकरके ११११ये दान जो ब्राह्मणोंको देताहै वह सबपापोंसे विनिर्मुक्तहोके स्वर्गलोक में जाकर पूजितहोताहै ११२ मंगलाचारसे संयुक्त होकर जो गृहस्थ पवित्रहो श्रद्धापूर्व्वक श्राद्धकरताहै वह ब्रह्मा के वा ब्रह्मके परमपदको जाताहै ११३ व नरसिंहके प्रसादसे अपनी जाति में उत्कर्षता को प्राप्तहोताहै व फिर ब्राह्मणों के साथ अपनी जातिमें से मुक्तिको पाताहै ११४॥

चौपै० हेवाडव उत्तमनिजकृति सत्तम शाश्वत धर्म्मसमूहा।
तुमसन हम गावा और सुनावा करि बहु विधिसोंऊहा॥
यहिगृहीजोकरई हित चित धरई सो पावे हरिलोका।
यामहिंनहिंशंका देकेडंका तहां बसतगतशोका१।११५

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेगृहस्थधर्म्मनिरूपणन्नामाष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ५८॥

उनसठवां अध्याय॥

दो० उनसठयें अध्याय महँ वानप्रस्थ सुधर्म्म॥
कहेसकल मुनिमुनिनसों जिन्हें सुनेनहिंभर्म्म१

हारीत मुनि मुनियों से बोले कि हे महाभागो इसके आगे अब वानप्रस्थके लक्षण व सब धर्म्मों में अगन्य धर्म्म कहते हैं हमसे सुनो १ गृहस्थ जब पुत्रपौत्रों को देखले व अपनेको भी वृद्ध देखे तो अपनी स्त्री पुत्रको सौंप आप अपने शिष्यों के साथ बनको चलाजाय २ व वहां जटाकलाप चीर वस्त्र नख रोमादि धारणकिये स्थित हो वैतानिक विधिसे हवनकरतारहै ३ वृक्षोंके पत्तोंसे व मृत्तिका से उत्पन्न तिनीपसादी आदि मुन्यन्नों से वा कन्दमूल फलोंसे निरालसहो नित्यक्रिया करता रहै ४ तीनोंकालों में स्नानकरता हुआ सदातीव्र तपस्याकरे कि तो पक्षभरके पीछे एकबार भोजनकरे वा मासभरके पीछे भोजन करके पराकव्रत करे ५ अथवा प्रतिदिन चौथेपहर में

भोजनकरे वा अठयेंपहरमें वा दिनके छठेंकालमें अथवा वायु भक्षणकरके रहै ६ ग्रीष्ममें पञ्चाग्नितापे व वर्षामें बिना आवरण बैठाहुआ अपने ऊपर सब जलले हेमन्तमें कण्ठतक जलके भीतरमें बैठे इसप्रकार तपकरताहुआ कालबितावे ७ इसप्रकार अपने कर्म्मों के भोगसे अपनी शुद्धिकरके अग्नि को अपने में स्थापित करके मौनव्रत धारणकर वहां से उत्तर दिशाको चलाजाय ८ जबतक देहपात न हो तबतक बनमें बस कर मौनव्रत धारणकर तापसवेष बनाये रहै व अतीन्द्रिय ब्रह्म को स्मरणकरतारहै फिर ब्रह्मलोकमें जाकर पूजित हो ९॥

चौपै०जो इमिवनवसिकैतपमहँलसिकैकरिसमाधिविधिनीके।
श्री हरिको ध्यावै पाप नशावै शान्त करे मन ठीके॥
सो हरिपद पावै निजमनभावै बसै तहां चिरकाला।
बनवासिकधर्म्मासकलसुकर्म्मातुमसनकहाविशाला॥१०

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेवानप्रस्थधर्म्मो नामैकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९॥

साठवां अध्याय॥

दो० सठयें महँ यतिधर्म्म कह मुनि सब मुनिनसुनाय॥
जिन्हें सुने सब जननको यति सब बडो दिखाय १

हारीतजी बोले कि इसके आगे सन्न्यासियोंका उत्तमधर्म्म वर्णन करतेहैं श्रद्धासे सन्न्यासी जिसका अनुष्ठानकरके बन्धन से छूटजाता है १ इसप्रकार वानप्रस्थाश्रम में बनमें बसकर सब पापोंको भस्मकरके विधिसे सब कर्म्मोंको छोड़कर चौथे यति आश्रमको जाय २ जब इससन्न्यासाश्रमको चलनेलगे तो ऋषियोंको देवताओंको व अपने पितरों को तथा अपने लिये भी दिव्ययज्ञदान श्राद्धादिदेके व मनुष्योंकोभी यथा शक्तिदान दे ३ व अग्निकी इष्टिकरके व प्राजापत्य इष्टि अर्थात् यज्ञ करके अग्निको अपने आत्मामें स्थापित करके मन्त्रपढ़ता

हुआ ब्राह्मण सन्न्यासी होजाय ४ तबसे फिर पुत्रादिकोंके सुख व उनमें लोभछोड़दे व सब प्राणियोंके अभयकरनेकेलिये भूमि पर जलदानकरे ५ व एक बांसका दण्ड बल्कलसहित अच्छा चीकना व समान पोढ़ोंवाला कृष्ण वृषभके वालोंसे वेष्टित चार अंगुलतक हो उसे ग्रहणकरे ६ अन्यकाष्ठका दण्ड आसुर कहाता है व बहुत बड़ा व गोला भी आसुरही कहाता है इससे तीन ग्रन्थियों से युक्त दण्डधारणकरे व वस्त्रसे छानकर जल सदापानकरे ७ व तीनगांठियों से युक्तदण्ड तथा जलसे धोया हुआ दण्डहो मन्त्रपढ़के दक्षिणहाथसे दण्डको ग्रहणकरे ८ व एक वस्त्रभी किंतो रेशमी वा कुशकीजड़ोंका वा कपासकेही सूतकालियेरहे उसीमें भिक्षाबांधे वह भिक्षाकमलके आकारके किंतो पात्रमें लियाकरे ९ भिक्षा किंतो छःमुट्ठी किंतो पांचमुट्ठी ले अधिक न ले सोभी मन्त्रहीपढ़कर भिक्षाग्रहणकरे इसकोलिये पात्र तो वही कमण्डलु उसके पासहोगा वस्त्रऊपरसे लपेटा रहेगा १० एकआसन भी काष्ठका अपनेलिये रखसक्ताहै वह अच्छीतरह बराबर व गोला हो यह आसन शौचकरनेकेलिये ऋषियों ने कल्पित किया है ११ एक कौपीन व एक अचला ऊपर से लपेटनेकेलिये होना चाहिये व शीत निवारणकरने वाली एककन्थाभी चाहिये खराऊँभी लियेरहै बस और किसी वस्तुका संग्रह न करे १२ इतने सन्न्यासीके धर्म्मसे लक्षणकहे सो इनको ग्रहणकर व अन्य सब पदार्थों का परित्याग करके किसी उत्तम तीर्थ को चलाजाय १३ वहां स्नानकर विधिपूर्व्वक आचमनकरके जलयुक्त वस्त्रसे मन्त्रपढ़के सूर्य्यको तर्प्पण करके फिर नमस्कारकरे १४ फिर पूर्व्वको मुखकर बैठके तीन प्राणायाम करे व यथा शक्ति गायत्रीका जपकरके परम पदका ध्यानकरे १५ अपनी स्थितिकेलिये नित्य भिक्षामांग लायाकरे सो भी सन्ध्याकालमें सन्न्यासी ब्राह्मणों के द्वारपर

विचरे १६ जितने से भोजन होजाय वस उतनाही अन्नले अधिक नहीं वह अन्नले जलसे पात्रको शुद्धकर व आप आचमनकर संयमसे १७ सूर्यादि देवताओं को निवेदनकरके व जलसे प्रोक्षणकरके पत्तोंके दोने में वा पत्रावलीमें धरके मौन होकर सन्न्यासी भोजनकरे १८ परन्तु वरगद पीपल कुम्भी तिन्दुक कचनार व कञ्जाके पत्तोंमें कभी न भोजनकरे १९ भोजन करके हाथ पैर मुख धोय आचमन करके सूर्य्यनारायणका उपस्थानकरे फिर जप ध्यान इतिहासादिकों से यति शेष अपना दिन बितावे २० जो सन्न्यासी कांस्यकेपात्रमें भोजन करते हैं वे सब मांसभक्षी कहाते हैं कांस्यका जो पात्र है वह गृहस्थ हीकेलिये है और किसी आश्रमवालेके लिये नहींहै व कांस्य पात्रमें भोजन करनेवाला सन्न्यासी फिर सब पापों को प्राप्त होताहै २१ भोजन कियेहुये पात्रसे मन्त्रसे पवित्र करके यति नित्य भोजन करसक्ताहै उसका वह पात्र दूषित नहीं होता बरन यज्ञपात्रके समान वह पवित्र रहताहै २२ सन्ध्या करके फिर गृहादिकोंमें जहां हो रात्रिको शयन कररहे हृदय कमल में नारायणहरिका ध्यान करतारहे २३ ऐसा करने से उसपद को प्राप्तहोताहै जहांसे कि फिर कभी निवृत्तही नहींहोताहै २४॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेयतिधर्मोनामषष्टितमोऽध्यायः ६०॥

इकसठवां अध्याय॥

दो० इकसठयेमहँमुनिकह्यो योगशास्त्रकेलक्ष्म॥
जिन्हेंकियेसबनरतके खुलतहृदयकेपक्ष्म १

हारीतजी सब मुनियोंसेबोले कि वर्णोंके व आश्रमोंके धर्म लक्षण तो हमने कहे जिससे ब्राह्मणादिक स्वर्ग व मोक्ष पासक्ते हैं १ अब संक्षेपरीतिसे योगशास्त्रका उत्तमसार कहतेहैं जिस के अभ्यासके बलसे मुक्तिकी इच्छा कियेहुये लोग मोक्षपातेहैं २ योगाभ्यास करनेवाले पुरुषके पाप इसीलोकमें नष्टहोजाते

हैं इससे योगपर होके क्रियाओं के पीछे योगाभ्यास करने में ध्यान दियाकरे ३ प्राणायामसे थमकरे व प्राणायामहीसे इन्द्रियों को बशमेंकरे व धारणाओंसे फिर दुर्द्धर्ष अपने मनको बशमें लावे ४ तदनन्तर एक सबका कारण आनन्दबोध एकीभूत आमयरहित सूक्ष्मसेभी सूक्ष्म अच्युत गदाधरका ध्यानकरे ५ अपने हृदयकमलपर स्थित तपाये सुवर्णके समान प्रकाशित एकान्तमें बैठकर अपने आत्मा परमेश्वर का ध्यानकरे ६ जो सब प्राणियोंके चित्तके जाननेवालाहै व जो सबके हृदयमेंटिका है जो सबके उत्पन्नकरनेको अरणिरूपहै सो मैंहूं ऐसी चिन्तना करे ७ जबतक वह अपने सम्मुख नदेखपड़े तबतक ध्यानका करना कहाहै ध्यानके पीछे श्रुतियों व स्मृतियोंके कहेहुये कर्म्म करतारहे ८ जैसे अश्व बिनारथके व जैसे रथ बिना घोड़ोंका ऐसेही तपव विद्या तपस्वीके लिये हैं अर्थात् जैसे बिनारथके घोड़ेनहीं कामदेते न बिना घोड़ोंकेरथ ऐसेही न बिनातपके विद्या कामदेतीहै न बिनाविद्याके तप सिद्धहोताहै ९ जैसे अन्न मधु से संयुक्तहोनेसे व मधुसे अन्नसे संयुक्तहो भोजन दिव्यहोजाता है ऐसेही जब विद्या व तप दोनों एकमें मिलजातेहैं तो महौषध होजातेहैं १० जैसे पक्षी दोनों पंखोंसेही उड़तेहैं वैसेही ज्ञान व कर्म्म दोनोंसे शाश्वतब्रह्म प्राप्तहोताहै ११ विद्या व तपस्या दोनोंसे युक्त ब्राह्मण योगाभ्यासमें तत्परही देहके द्वंद्व छोड़के शीघ्र बन्धनसे छूटजाताहै १२ जबतक देवयानमार्ग्गपरहोके परमपदको जीव नहींजाता तबतक देहकेचिह्नोंका विनाश कहीं नहींहोता १३ हे ब्राह्मणो हमने संक्षेपसे वर्णआश्रमके धर्म्मों का विभागकहा जोकि सनातनसे चलाआताहै १४ मार्कण्डेय जी राजा सहस्रानीकसे बोले किस्वर्ग्ग व मोक्षके फलदेनेवाले इसधर्म्मको सुन ऋषिलोग हारीतजीकि प्रणामकर आनन्दित हो अपने २ स्थानको चलेगये १५ हारीतमुनिके मुखसे निक-

लाहुआ यह धर्म्मशास्त्र सुन जो कोई इसके अनुसार धर्म्म करता है वह परमगतिको पाताहै १६ (मुखज) ब्राह्मण का जो कर्म्म व जो (बाहुज) क्षत्रियका कर्म्म व (ऊरुज) वैश्यका जो कर्म्म व (पादज) शूद्रका जो कर्म्म है नृप १७ अपना २ कर्म्म करतेहुये ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र सद्गतिको प्राप्तहोते हैं व अपने कर्म्म के जो विरुद्ध कर्म्म करता है वह तुरन्त पतित हो नरकको जाताहै १८ जो कर्म्म जिसकेलिये कहाहै वह उन २ पुरुषोंसे प्रतिष्ठितहै इससे यदि कोई आपत्काल न पड़े तो अपना २ धर्म्म कर्म्म सदा नित्यकरे १९ हे राजेंद्र चारोवर्ण व चारो आश्रम अपने विमल धर्म्मविना वे परमगतिको नहींजाते २० जैसे अपना धर्म्म करनेसे नरसिंहजी प्रसन्नहोतेहैं वैसेही वर्ण व आश्रमके धर्म्मसे नरसिंहजीकी पूजाकरे २१ उत्पन्नवैराग्य के बलसे योगाभ्यास से व ध्यानसे व अपने वर्णाश्रमके अनुसार क्रिया करनेसे सदा चैतन्य सुख सत्यात्मक ब्रह्मरूप श्रीविष्णुके पदको देहछोड़के पुरुष जाताहै २२॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेयोगशास्त्रनिरूपणन्नामैकषष्टितमोऽध्यायः ६१॥

बासठवां अध्याय॥

दो० बासठयें अध्यायमहँ हरिपूजन प्रकार॥
वर्णनकीनमुनीशसों कहासहितविस्तार १

मार्कण्डेयजी बोले कि वर्णोंके व आश्रमोंके लक्षण तो हमने तुमसे कहे हे राजेन्द्र फिर कहो तुम्हारे क्या सुननेकी इच्छा है १ राजा सहस्रानीक बोले कि आपने कहा कि स्नानकरके देवेश अच्युतकी पूजा घरमेंजाके करे सो हे विप्रेन्द्र वह पूजा किसप्रकारसे कीजाय २ जिनमन्त्रोंसे जिनस्थानोंमें श्रीविष्णु की पूजा कीजाती है वे मन्त्र व वे स्थान हमसे कहिये हे महामुने ३ मार्कण्डेयजी बोले कि अमिततेजस्वी श्रीविष्णुभगवान्

के पूजनका विधान हम कहेंगे जिसको करके सब मुनिलोग मोक्षपद को प्राप्तहों ४ कर्म्मकाण्ड क्रिया करनेवालोंका देव अग्निमें रहताहै व ज्ञानी पण्डितोंका देव मनमें रहताहै अल्प-बुद्धियोंका देव प्रतिमाओं में रहता व योगियोंके हृदयमें हरि देव रहतेहैं ५ इससे अग्नि हृदय सूर्य्य स्थण्डिल आठप्रकार की प्रतिमा इनमें श्रीहरिकी पूजा ऋषियोंने कहीहै ६ क्योंकि वह परमेश्वर सबको उत्पन्न करानेवाला व सर्व्वमय है इससे स्थण्डिलादि सबकहीं विद्यमानहै चाहेजहां उसकी पूजाकरे आनुष्टुभसूक्तके विष्णुजी तो देवताहैं ७ व जगत् के वीज जो पुरुष नारायणजीहैं वही इसके ऋषिहैं इससे जो कोई पुरुषसूक्त से पुष्पदेताहै ८ उसने जानों सचराचर जगत्की पूजाकरली इसलिये पुरुष सूक्तकी पहिली ऋचासे तो श्रीहरिका आवा-हनकरे ९ व दूसरी ऋचासे आसनदे व तीसरीसे पाद्य चौथी से अर्घ देनाचाहिये व पांचवींसे आचमन १० छठींसे स्नान करावे सातवीं से वस्त्र धारणकरावे आठवींसे यज्ञोपवीत पहि-नावे व नववीं ऋचासे चन्दन चढ़ावे ११ दशवींसे पुष्पदान करे ग्यारहवींसे धूपदे बारहवींसे दीपदानकरे व तेरहवींसे पू-जन १२ चौदहवींसे स्तुतिकरके पन्द्रहवींसे प्रदक्षिणाकरे सोल-हवींसे उद्वासनकरे शेषकर्म्म पूर्व्वकेही समानकरे १३ जो कोई स्नान वस्त्र नैवेद्य आचमन प्रतिदिन उसके मन्त्रसे देताहै वह छःमासोंमें सिद्ध होजाताहै १४ व जो वर्षपर्य्यन्त नित्यस्नानादि करताहै वह सायुज्य मुक्ति पाताहै अग्निमें खीर शष्कुली आ-दिसे श्रीहरिकी पूजा करनी चाहिये जलमें पुष्पों से हृदय में ध्यान करनेसे १५ व सूर्य्यमण्डलमें जपसे पण्डितलोग श्रीहरि की पूजाकरतेहैं प्रथम आदित्यमण्डलमें शंख चक्र गदा हाथों में लिये अनामय देवदेव दिव्यरूप श्रीविष्णु का ध्यान करके तब उपासना करतेहैं १६ ॥

हरिगीतिका॥

ध्यायिय सदा रवि बिम्ब मण्डल मध्यवर्त्ति नरायणम्।
कमलासनस्थ किरीट कुण्डल हार केयुर धारणम्॥
घृत शंख चक्र सुवर्णमय वपु सकल अङ्ग विभूषितम्।
यहध्यानरविगतरामजीको सर्व्वभाँतिअदूषितम् १।१७
यह सूक्त केवलपढ़त प्रतिदिन रविहि हरिकरि मानई।
सो सर्व्व पाप विमुक्त ह्वै श्रीविष्णु पदहि सिधारई॥
जासों रमाधव तुष्टि कारक होत सो नर है सही।
यासोंनअचरजकरिययह सुनिबातहमसाँचीकही २।१८
विन मूल्य पत्ररुपुष्प फल जल मिलतसबकहुँ देखिये।
इनसों भलीविधि भक्तिसों हरिपूजि अनत न पेखिये॥
जब भक्तिही सों मिलत पुरुष पुराण पत्रादिक दिये।
तबमुक्तिसाधनअर्थकिमिनाहिं यत्नकीजैनिजहिये ३।१९
इमि पुरुष पूर्ण पुराण श्रीहरि यजन विधि तुमसों कहा।
यहि रीतिसों करि प्रीति पूजन करहु फल पैहो महा॥
यदि होय इष्ट प्रविष्टहोनो हरि गरिष्ठ सुलोक में।
तोकरहुनितअर्चनमहीपति लहहुसुगतिअशोकमें ४।२०

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेश्रीविष्णुपूजनविधिर्नाम द्विषष्टितमोऽध्यायः ६२॥

तिरसठवां अध्याय॥

दो० तिरसठयें महँ हरियजन अष्टाक्षर सों भाष॥
मंत्रमहातम हितसुरप धनद बिभीषण साष १
जिमितृणविन्दु मुनीशकर शापलह्योदेवेन्द्र॥
तासों स्त्री ह्वै जपिभये अष्टाक्षर पुरुषेन्द्र २

राजासहस्रानीकजीने मार्कण्डेयजी से फिर प्रश्नकिया कि हेब्रह्मन् तुमने सत्यकहा वैदिक परमविधिहै जो कि देवाधिदेव श्रीविष्णुजीके पूजन के विधानमें हमसे वर्णित कियाहै १ परन्तु

हे ब्रह्मन् इस विधिसे तो वैदिक लोगही मधुसूदनजीकी पूजा करतेहैं और कोई नहीं करते इससे ऐसापूजन का विधान कहिये जो सबजनोंका हितकारीहो २ मार्कण्डेयजी बोले कि अष्टाक्षर मंत्रसेही अनामय अच्युत नरसिंहजी की पूजानित्य चन्दन पुष्पादिकों से मनुष्यकरे ३ क्योंकि हे राजन् अष्टाक्षर मंत्र सर्ब्बपाप हरनेमें उत्कृष्टहै व समस्त यज्ञोंका फलदेता है व सबशान्तिकरता तथाशुभदायक है ४ ॐनमोनारायणाय बस इसीमंत्र से गन्ध पुष्पादि सबनिवेदनकरे क्योंकि इसमंत्र से पूजितहोनेपर उसीक्षण श्रीनारायणदेव प्रसन्नहोजाते हैं ५ उसको बहुत मंत्रोंसे क्याहै व उसे बहुत व्रतोंसे क्याहै ॐनमो नारायणाय यहीमंत्र सर्ब्बार्त्थसाधकहै ६ पवित्रहो एकाग्रचित्त कर इसमन्त्रको जो जपै वह सब पापोंसे छूटकर विष्णुजी की सायुज्य मुक्तिपावै ७ क्योंकि यह विष्णुभगवान्जी का पूजन सबतीर्थोंका फल देताहै व सब तीर्थोंसे श्रेष्ठहै व एकाग्रचित्त होके करने से सबयज्ञोंका फल देताहै ८ इससे हे नृप प्रतिमादिकों में इसीसे पूजनकरो व हे नृप मुख्य ब्राह्मणोंको विधि पूर्व्वक दान देतेरहो ९ हे नृप श्रेष्ठ ऐसा करनेपर नरसिंहजी के प्रसादसे पुरुष श्रीविष्णुजीके तेजको प्राप्तहोताहै जिसे कि मुक्तिकी इच्छाकियेहुये लोग चाहतेहैं १० हे राजन् पूर्व्वसमय का वृत्तान्त है कि अपधर्म्म करनेके कारण तृणविन्दु मुनिके शापसे इन्द्र स्त्रीका स्वरूप होगयेथे पर अष्टाक्षर मन्त्रके जपने से फिर उनका स्त्रीत्व जातारहा ११ यहसुन राजासहस्रानीक जी बोले कि हे भूदेव जी इन्द्रका पापमोचन वृत्त यह हमसे कहो उन्होंने कौनसा अपधर्म्म कियाथा व स्त्रीत्वको वे कैसे प्राप्तहुये इसका कारण हमसे कहो १२ मार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन् यह बड़े कौतूहलसे युक्त बड़ाभारी आख्यानहै सुनो इसके पढ़ने सुननेवालोंको विष्णुका भक्त यह करताहै १३ पूर्व्व

समयमें देवताओंका राज्य करतेहुये इन्द्रको बाहरकी वस्तुओं में अपनेआप वैराग्य होगया १४ तब इन्द्रका स्वभाव राज्यों में व नानाप्रकारके भोगों में विषमहोगया क्योंकि उन्होंने जो चिन्तना की तो यह सब उनको कुछ न समझपड़ा सो कैसे समझपड़ता जिनकामन विरागी होजाताहै उनको स्वर्गका भी राज्य कुछभी नहीं दिखाईदेता १५ क्योंकि राज्यका सारांश विषयों का भोगकरनाहै बस भोगके अन्तमें फिर कुछ नहीं है इसबातका विचारकर मुनिलोग निरन्तर मोक्षहीके अधिकारकी परिचिन्तना करतेहैं १६ तपस्याकी प्रवृत्ति सदा भोगही करनेके लियेहोतीहै व भोगकरनेके पीछे तपस्या नष्टहोजातीहै व जोलोग मैत्री आदिके संयोगसे पराङ्मुख रहतेहैं व विमुक्तिहीकी सेवाकरते हैं वे न तपही करते न भोगही करतेहैं १७ ऐसा विचारकर देवराज किंकिणी आदिसे युक्त विमानपर चढ़ महादेवजीकी आराधना करनेकेलिये सब कामोंसे विमुक्तहो कैलास पर्वतपर गये १८ एकदिन इन्द्र मानससरके किनारेपर गये वहां उन्होंने पार्वती जीके युगलचरण पूजतीहुई कुबेरकी स्त्रीको काम महारथकी ध्वजाकेही समान देखा १९ जिसके शरीरका रंग तपायेहुये पकेसुवर्णके समान चमकताथा नेत्र ऐसे विशालथे कि कानोंके निकटतक पहुँचगयेथे व इतने सूक्ष्म वस्त्र धारणकियेथी कि सब अंग चमचमातेहुये दिखाईदेतेथे जैसे कि कुहरके भीतरसे निकलतीहुई चन्द्रलेखाका प्रकाशहोताहै २० उसको सहस्र नेत्रोंसे यथेच्छ देखके कामसे मोहितमति इन्द्र उस समय तो उसकेसमीप न गये वहांसे दूरमार्गहीमें उनका गृहथा उसमें जाय बनाय अच्छीतरह निश्चयकर विषय करनेकी अभिलाषासे इन्द्र वहां थँभरहे २१ व विचारनेलगे कि प्रथम तो सुन्दर कुलमें जन्मपाना श्रेष्ठहै फिर सब अंग सुन्दर शरीर का रूपहोना श्रेष्ठहै फिर ऐसा होनेपर धनहोना दुर्लभहै फिर

धनकी स्वामिता तो बड़े पुण्यसे मिलतीहै २२ सो हमने स्वर्ग
की स्वामितापाई तथापि भोग करनेकेलिये भाग्य नहींहै क्यों-
कि उस राज्यको छोड़ विमुक्तिकी कामनासे अब यहांआके बैठे
हैं बस चित्तमें यह दुर्म्मति आके टिकीहै और कुछ नहीं २३
यद्यपि इसराज्यादिक से मोक्षकामोह होताहै पर राज्यहोनेपर
मोक्षका कारणही क्याहै यह तो वैसा विचारहै कि किसीके द्वार
पर पक्के अन्नसे युक्त खेतलगाहो व वह उसेछोड़जाके बनमें खेती
करे २४ क्योंकि जो मनुष्य संसारके दुःखोंसे उपहतहोते व कुछ
भी करनेमें समर्त्थ नहींहोते बनाय कर्म्म नहीं करसक्के इससे
भाग्य बर्ज्जितहैं बस वेही महामूढ़ मोक्षकी इच्छा करतेहैं २५
यद्यपि बड़े बुद्धिमान् व वीरथे पर यह विचारकर कुबेरकी स्त्री
के रूपसे मोहितमनहो अपने कुलका आचार छोड़ धैर्य्यका
परित्यागकर देवताओंके चक्रवर्त्ती इन्द्रने कामका स्मरणकिया
२६ तब अतिव्याकुल चित्तवृत्ति काम बेचारा धीरे २ वहांआया
क्योंकि उसी कैलासपर पूर्व्वसमयमें महादेवजीने उसके शरीर
का नाशकियाथा इससे ऐसे धैर्य्य शिवजीके स्थानपर ऐसाकौन
है जो निशंक होके जाय २७ व आके काम बोला कि हे नाथ
आज्ञा दीजिये क्या कार्य्य है आपका शत्रुभूत कौन है शीघ्रही
आज्ञा दीजिये बिलम्ब न कीजिये उसका अपवाद अभी करताहूँ
२८ कामका अतिमनोहर वचनसुनके इन्द्रकामन बहुत सन्तुष्ट
हुआ व अपनाअर्त्थ सिद्धजानकर वे बहुतही शीघ्र हँसके व-
चनबोले २९ कि हे मार हे काम जबसे तुम अनंग होगयेहो
तबसे तुमने महादेवकोभी जब अर्द्धशरीरमात्र करदिया है तो
लोकमें फिर और कौन तुम्हारे बाणका आघात सहसक्काहै ३०
इससे यह जो पार्व्वतीके पूजनमें एकाग्रचित्तभी लगायेहुई हमा-
रे चित्तको यहां मोहित करतीहै हे अनंग इस बड़े २ लोचनों
वालीको ऐसाकरो कि वह आपआके हमारे अंगोंका संगकरे ३१

जब अपने कार्य्यके लिये बड़े गौरवसे इन्द्रने कामसे ऐसा कहा तो उसने अपने चापपर पुष्पका बाणचढ़ाय विमोहनास्त्र का स्मरणकिया ३२ ऐसा करतेही कामसे मोहितहो वह स्त्री पूजाकरना छोड़ इन्द्रके पासआके हँसनेलगी भलाकहो ऐसा कौनहै जो कामके धन्वाका शब्द सहसके ३३ तब इन्द्र उस स्त्रीसे यह वचन बोले कि हे चंचलनेत्रे तुम कौनहो जोकि पुरुषोंके मनोंको जानो मोहितही करातीहो कहो किसपुण्यात्मा की प्राणप्यारीहो ३४ जब इन्द्रने ऐसा कहा तो मदसे विह्वलांगी रोमांच होनेके कारण पसीनेसे भीगके कांपतीहुई कामके बाणसे व्याकुलचित्त वहस्त्री गद्गदवाणीसे धीरेमें यह वचनबोली कि ३५ मैं यक्ष की तो कन्याहूँ व कुबेरकी स्त्रीहूँ यहां पार्व्वती की पूजाकेलिये आईथी कहिये तुम्हारा कौनकार्य्य है हे नाथ कहो कामरूप तुम कौनहो जो यहां बैठेहो ३६ इन्द्रबोले तुम आओ हमकोभजो व शीघ्र बहुत दिनोंतक हमारे अंगोंकी प्रीतिकरो तुम्हारे विना हमको अपना जीवनभी कुछ नहीं है व देवताओं का राज्यभी कुछ नहींहै ३७ जब इन्द्रने ऐसे मधुर वचनकहे तो कन्दर्प्पसे सन्तापित मनोहर देहवाली वह कुबेर की स्त्री विमानपर चढ़के इन्द्रके गलेमें लपटगई ३८ व इन्द्र उसकेसंग शीघ्र मन्दराचलकी कंदराओंमें चलेगये जिनमें कि देवता असुर कोई कुछ देखहीनहीं सक्तेथे व विचित्ररत्नोंके अंकुरोंसे प्रकाशितथीं ३९ वहांजाय उसकेसंग इन्द्रने अच्छी तरह भोगकिया क्योंकि उनका उदारवीर्य्य था व देवताओं के ऐश्वर्य्यसे उसका आदर करनेलगे उस विहारको क्या वर्णन करें जिसमें कि चतुरताके निधि इन्द्रने सोभी कामार्त्तहो अपने हाथसे फूलोंकी शय्या बनाई ४० व कामभोगमें बड़ेचतुर इन्द्र भोगकरनेसे बनाय कृतार्थहुये व पराई स्त्रीके संगके भोगको उन्होंनेमोक्षसेभी अधिक रसीला समझा ४१ व जो और स्त्रियां

उस चित्रसेनानाम कुबेरकी स्त्रीकेसंग आईथीं वे सब लौटकर मारेसम्भ्रमके जाय कुबेरजीसे बोलीं ४२ उसबातको सुन कुछेक स्त्रियोंको विमानपर चढ़ाकर कुवेर वहांकोगये व सब दिशाओंमें अपनी स्त्रीको ढूँढ़नेलगे जिसे कि उनकेमतसे कोई चोर पकड़लेगया था ४३ उस चोरके वचनभी उन्होंने सुनेथे पर विदित न हुआ इससे विषकेतुल्य उस वचनके सुननेसे कुवेर का मुख लालहोगया फिर कुछबोल न सके अग्निकेजलेहुये वृक्ष के समान मारे शोकके कालेहोगये ४४ तव चित्रसेना के संग वाली स्त्रियोंने जाके कुवेरकेमंत्री कण्ठकुब्ज से कहा कि किसी प्रकार कुवेरजीका मोह मिटाओ तव उनका मोह मिटाने को उनका मंत्री कण्ठकुब्ज वहां आया ४५ उसको आयाहुआ सुनके कुवेरने नेत्रखोले व देखके वचन कहा कि यद्यपि उनका मन कुछ स्वस्थ होगयाथा पर ऊंधीसांसें लेतेहुये मनको अति दीनकरके बोले कि ४६ युवावस्था वहीहै जिसमें युवती का विनोदहो व धन वहीहै जो अपने लोगोंके काममेंआवे जीवन वहीहै जिससे सुन्दर धर्म्म कियाजाय स्वामित्व उसीकानामहै जिसमें दुष्टोंको दण्ड दियाजाय ४७ मेरे धनको धिक्कार है व बड़ेभारी गुह्यकों के राज्यको धिक्कारहै अब मैं अग्निमें प्रवेश करताहूँ क्योंकि जो मृतक होजाते हैं उनका फिर कुछभी निरादर नहींहोता ४८ मैं पास लेटाहीरहा व वहांसे उठ तड़ागपर पार्व्वतीके पूजनेके लिये कहकर किसीकी बुलाईहुई मेरी स्त्री चलीगई अब हम नहींजानते कि जिसने बुलालियाहै उसको कुछ अपनी मृत्युका भयहै वा नहीं ४९ यहसुन वह कण्ठकुब्ज मन्त्री अपने स्वामीका मोह मिटानेकेलिये बोला कि हे नाथ सुनिये स्त्री के वियोगसे अपने शरीरका नाशकरना योग्यनहीं है ५० देखो एकही स्त्री रामचन्द्रजीकेथी उसे राक्षस हरले गया पर वे भी मृतक नहींहोगये व तुम्हारे तो अनेकों स्त्रियां

हैं फिर चित्तमें क्या विषादकरतेहो ५१ शोकछोड़ विक्रम करनेमें बुद्धिकरो हे यक्षराज धैर्य्यको धारणकरो साधुलोग बहुत नहींबकते मनमें क्रोध करते हैं व बाहरसे निरादर को सहतेहैं ५२ व कियेहुये कार्य्य को गुरुकरके दिखाते हैं व हे कुबेरजी तुम तो सहायवान् हो फिर भी कातर होतेहो क्योंकि तुम्हारे छोटेभाई विभीषण इस समयमें तुम्हारी सहायता करेंगे ५३ यह बात सुनके कुबेर बोले कि विभीषण हमारे प्रतिपक्षियों मेंहैं वे अपने धनके भागको नहीं भूलते हमसे हिस्सा लियाचाहतेहैं इससे इन्द्रके वज्रसेभी निष्ठुरस्वभाववाले दुर्जनलोग होतेहैं उनकेसाथ उपकारभी करो परं वे कभी प्रसन्न नहींहोते ५४ फिर अपने गोत्रवालेलोग तो न उपकारोंसे न गुणोंसे न सौहृदोंसे कभी प्रसन्नमन होतेहैं तब कण्ठकुब्ज बोला कि हे धनाधिनाथ तुमने योग्य वचनकहा ५५ गोत्रीलोग विरुद्धहोनेपर आपसमें एक दूसरेको मारडालतेहैं परन्तु जब और किसीसे उनका निरादर नहींहोता तभी परस्परमें युद्धकरतेहैं पर अन्य किसीका अनादर नहीं सहते अर्थात् जब कोई उनके गोत्र वाले को निरादरित करताहै तो वे एकहोजातेहैं जैसे कि उष्ण भीजल तृणोंको नहीं जलाता क्योंकि तृण जलकेही पालित होतेहैं इससे सूर्य्यादि तापसे उष्ण जलभी तृणों की रक्षाही करताहै ५६ इससे हे धनाधिनाथ अतिवेगसे विभीषणके पास चलिये अपने बाहुओंके बलसे उत्पन्न कियेहुये धनके भोगने वाले पुरुषोंको अपने बन्धुवर्गोंके संग कौन विरोधहै ५७ जब इसप्रकार कण्ठकुब्ज मन्त्रीने कहा तो विचार करतेहुये कुबेर तुरन्त विभीषणके पासको चलेगये ५८ तब अपने बड़ेभाईको आयेहुये सुन लंकाकेपति विभीषणजी बड़े विनयकेसाथ तुरन्त आये ५९ व अपने भाईको उदासीन मन देख आप सन्तप्त मनहो विभीषणजी यह बड़ा वचनबोले कि ६० हे यक्षेश दुःखी

क्योंहो तुम्हारे चित्तमें क्या कष्टहै हमसे कहिये हम निश्चय करनेके पीछे अवश्य वह कष्ट मिटावेंगे ६१ तब एकान्त में लेजाकर विभीषणजी से कुवेरने अपना दुःख निवेदन किया कुवेर बोले कि हे भाई नहींजानते कोई पकड़लेगया धों अपने से कहीं चलीगई अथवा किसी हमारे वैरीने मारडाला ६२ प्रातः इससमय हम अपनी चित्रसेना स्त्रीको नहीं देखते सोभाई यह स्त्रीके हेतुसे उत्पन्न हमको बड़ाभारी कष्टहै ६३ अववित्ता अपनी प्राणप्रियाको पाये प्राणों को मारडालेंगे विभीषणजी बोले कि चाहेजहांहो तुम्हारी स्त्रीको हम लेआवेंगे ६४ हेनाथ हमलोगोंके तृणोंके हरनेमें आजकल कौन समर्थहै तब विभीषणजीने नाड़ीजंघानाम राक्षसीसे ६५ अत्यन्त आज्ञाकेसाथ बार २ कहा क्योंकि वह नानाप्रकारकी माया जानती थी यह कि कुवेर भाईकी जो चित्रसेनानाम भार्य्या है ६६ वह मानस सरकेतीरपर थी उसेकौन हरलेगया जाके इन्द्रादिकोंके घरोंमें देखकेउसेजानो ६७ हे राजन् तदनन्तर वह राक्षसी मायामयी शरीर धारणकर स्वर्गको गई व इन्द्रादिकोंके मन्दिरों में ६८ देखनेलगी कि वह जिसको अपनी दृष्टिसे क्षणभरभी देखे तो पत्थरभी मोहितहोजाय व रूप तो उसने ऐसा अपना बनाया था कि उसके समान चराचर जगत् में किसीका रूपथाही नहीं ६९ व उसीसमयमें हेराजन् इन्द्रभी चित्रसेनाके मेजेहुये मन्दराचलपरसे बड़ी शीघ्रताके साथ वहां आये७० क्योंकि उसने नन्दनवनके पुष्प लेनेकेलिये भेजाथा जब इन्द्र आये तो अपने स्थानमें उन्होंने उस सूक्ष्मअंगवाली राक्षसीस्त्रीको देखा ७१ उसे अतीव रूपसे सम्पन्न व गीतोंके गानेमें परायण देख देवराज कामके बशीभूतहुये७२व देवताओंके वैद्य अश्विनीकुमार को देवराजजीने उसके पासको भेजा कि उसे यहां क्रीड़ाकरनेके जनानेमन्दिरमें लिवालाओ७३ तब अश्विनीकुमार उसकेपास

जाके कहनेलगें कि हे सूक्ष्मअंगोंवालीचल इन्द्रके समीपपहुँच ७४ जब दोनोंनें ऐसाकहा तो वह मधुरवचन बोली नाड़ीजंघा ने कहा कि जब इन्द्र आपहमारेपास आवेंगे ७५ तो हमउनका वचन करेंगी यों हम किसीप्रकार न करेंगी उनदोनोंनें इन्द्रके पास आकर उसका वचनकहा ७६ तब इन्द्र कामातुर तो थेही झट उसके पासजाके बोले हे तन्वङ्गि आज्ञादीजिये कौनकाम हम तुम्हाराकरें हम तो सर्वप्रकारसे तुम्हारे दासभूत हैं जो मांगो हम वही कहदें कि देंगे ७७ यहसुन वह सूक्ष्माङ्गी राक्षसी बोली कि हे नाथ यदि हमारा मांगादोगे इसमें संशयनहो तो फिर हमभी तुम्हारे वशमेंहोंगी इसमें भी संशय नहींहै ७८ आज तुम हमको अपनी सब स्त्रियां दिखाओ हमारे रूपके समान सुन्दरी स्त्री तुम्हारेहै वा नहीं ७९ जब उसने ऐसाकहा तो इन्द्र फिर उससे बोले कि हे देवि तुमको हम अपनी सब स्त्रियोंका समूह दिखावेंगे ८० इतना कह इन्द्रने अपनी सब स्त्रियों को दिखाकर फिर उससे कहा कि कोई अभी गुप्तभी हमारे स्त्रीहै ८१ सो एक युवतीको छोड़ हमने सबस्त्रियां तुमको दिखादीं पर वह स्त्री मन्दिरहीमेंहै परन्तु देवता वा दैत्यों को नहीं दिखाईदेती ८२ उसे हम तुमको दिखावेंगे पर तुम किसी से न कहना तब उसको साथले इन्द्र आकाशमार्ग होके मन्दराचल परको गये ८३ जब सूर्य्यसम प्रकाशित विमानपर चढ़ेहुये इन्द्र उसकेसंग जातेथे तो आकाशमार्गमें नारदजी केभी दर्शनहुये ८४ उननारदजीको देखके औरइन्द्र लज्जित भी हुये परन्तु नमस्कार करके बड़े ऊँचेस्वरसे बोले कि महामुनिजी कहां जातेहो तब आशीर्वाद कहके मुनिराज देवराज से बोले कि ८५ हे देवराज हम मानससरमें स्नानकरनेकेलिये जातेहैं तुम सुखीहोओ यह कह उसस्त्रीसे कहा कि नाड़ीजंघे महात्मा राक्षसोंके यहां सब कुशलहै ८६ व तेरेभाई विभीषण

सबप्रकारसे कुशलीहैं जब मुनिने ऐसा कहा तो उसका मुख कालाहोगया ८७ व देवराजभी विस्मितहुये कि इसदुष्टाने हम को छलितकिया व नारद मानसमें स्नानकरनेके लिये कैलास पर चलेगये ८८ इन्द्र उसके मारनेके विचारसे मन्दराचल को चलेजातेथे कि वीचमें महात्मातृणविन्दु मुनिका आश्रममिला ८९ एकक्षणभर वहां विश्रामकर उसराक्षसीके केशपकड़कर नाड़ीजंघा निशाचरीके मारडालनेकी इच्छा इन्द्रनेकी ९० तब तककहींसे तृणविन्दुजी अपने आश्रमपर आगये च हे राजेन् इन्द्रकी पकड़ीहुई वह राक्षसी बड़ी पुकारके साथ रोदनकररही थी ९१ व कहतीथी कि इससमय मारीजातीहुई मुझको कोई पुण्यात्मा बचावे तबआके महातपस्वी तृणविन्दुजी ९२ बोले कि इसस्त्रीको बनमेंरोदन करतीहुई छोड़दे मुनिजी ऐसा कहते-हीथे कि इन्द्रने उस राक्षसीको ९३ बड़े कोपकेसाथ चित्तकरके बज्रसे मारडाला व फिर २ इन्द्रकीओर देखतेहुये मुनिने बड़ा कोपकरके यह कहा कि ९४ हे दुष्ट जिससे कि इसस्त्रीको तुमने हमारे तपोबन में मारडालाहै इससे हमारे शापसे निश्चय है कि तुम स्त्रीहोजाओगे ९५ यह सुन इन्द्रबोले कि हेनाथ यह महादुष्टा राक्षसी हमने मारीहै व हम देवताओंके स्वामी इन्द्र हैं इससे इससमय शापनदीजिये ९६ तब तृणविन्दु मुनिबोले कि हमारे इसतपोबनमें बहुतसे दुष्ट रहतेहैं व बहुत साधुभी रहतेहैं पर हमें क्याकरना हमारे तपके प्रभावसे वे कोई भी परस्पर एक दूसरेको नहीं मारते ९७ बस इतना कहतेही इन्द्र स्त्री होगये व शक्ति पराक्रमसे हतहोके अपने स्वर्ग को चले आये ९८ अब इन्द्र देवताओंकी सभामें सदा न बैठनेलगे व इन्द्रको स्त्रीत्वको प्राप्त देख देवगण बहुत दुःखितहुये ९९ तब सब देवगण इन्द्रको साथले व दुःखित इन्द्राणीभी संगमें होके सब ब्रह्माजीके स्थानको गये १०० उससमय ब्रह्माजी समाधि

में थे तब तक इन्द्रादि वहीं स्थितरहे जब ब्रह्माजीकी समाधि सम्पहुई तो इन्द्र सहित सब देवतालोग बोले कि १०१ तृण-विन्दुमुनिके शापसे इन्द्र स्त्रीत्वको प्राप्त होगये हैं व हे ब्रह्मन् वे मुनि बड़े क्रोधी हैं अनुग्रह नहीं करते १०२ ब्रह्माजी बोले कि महात्मा तृणविन्दुजीका कुछ अपराध नहीं है इन्द्र स्त्रीबध करनेके कारण अपने कर्म्महीसे स्त्रीत्वको प्राप्तहुये हैं १०३ व हे देवताओ देवराजने बड़ी अनीतिकी है कुबेरकी स्त्री चित्र-सेनाको हरलिया है व उसे गुप्त रखते हैं १०४ व इसको छोड़ तृणविन्दुके तपोबनमें एकस्त्रीको मारडालाहै उस कर्म्मविपाक से इन्द्र स्त्रीके भाव को पहुँचे हैं १०५ यह सुन देवगण बोले कि हे नाथ जो इन दुर्बुद्धिवाले इन्द्रने यह अनीतिकी है उसको इन्द्राणी सहित हम लोग मिटावेंगे १०६ हे विभो जोकि कुबेर की स्त्री छिपीहुई यहां है उसे हमलोग सम्मति करके कुबेरको देदेंगे १०७ व त्रयोदशी और चतुर्दशी को इन्द्र सदा नन्दन बनमें यक्षों व राक्षसोंका पूजन किया करेंगे १०८ तब इन्द्राणी ने गुप्त चित्रसेनाको अपने संगले कुबेरके भवनमें जाके छोड़ दिया क्योंकि उनके छोड़े बिना अपने प्रियका कष्ट मिटताहुआ इन्द्राणीने न देखा १०९ तब अकालमें एक दूत कुबेरपुरी से लंकापुरीको गया व उसने कुबेरसे चित्रसेनाके आनेके समा-चार कहे ११० कि हे धनाधिप इन्द्राणीके साथ तुम्हारी कांता आई व अपनी सखीको प्राप्तहोके चरितार्थहुई १११ यहसुन कुबेर भी कृतार्थहुये व अपने स्थानको गये तब देवताओंने आकर फिर ब्रह्माजीसे कहा कि हे ब्रह्मन् तुम्हारे प्रसादसे हम लोगोंने यह सब किया इसमें संशय नहीं है ११२ पर जैसे पति हीन नारी नहीं शोभितहोती व बिना स्वामीकी सेना व श्रीकृष्ण बिना गोकुल वैसेही बिना इन्द्रके अमरावती नहीं शोभितहोती ११३ अब इन्द्रके लिये कोई जप क्रिया तप दान ज्ञान तीर्थ

आप बतावें जिसके करने से इनका स्त्रीत्वछूटे ११४ ब्रह्माजी बोले कि मुनिका शाप न हम मिटासक्ते हैं न शङ्कर व विष्णुके पूजनको छोड़ और कोई तीर्थ भी ऐसा नहीं देखते जो मुनि का शाप मिटासके ११५ अब अष्टाक्षर मंत्रसे इन्द्र तब तक श्रीविष्णुकी पूजाकरें व मन्त्र जपें कि जब तक स्त्रीत्वसे न छूटें ११६ हे इन्द्र तुम स्नानकरके एकाग्र मनसे श्रद्धायुक्तहो अपनी शुद्धिके लिये ॐनमोनारायणाय इस मन्त्रको जपो ११७ जब दोलाख मन्त्र जपोगे तब स्त्री भावसे छूटजाओगे यह ब्रह्मा का वचन सुन इन्द्रने वैसाही किया विधिसे दोलक्ष अष्टाक्षरमन्त्र जपा ११८ तो श्रीविष्णुजीके प्रसादसे स्त्रीभावसे छूटगये मार्कण्डेयजी सहस्रानीकजीसे बोले कि तुमसे यह सब उत्तम विष्णु जीका माहात्म्य हमने ११९ भृगुमुनिके कहनेसे कहा तुम निशल्सहो यह सबकरो॥ हरिगीतिका॥

अखिल कारण अघ उधारण विष्णु गाथा जो सुनैं।
कै पापरहित परस्त्रिगामी जो कभूँ मनसों गुनैं॥
सब जाहिं हरिपुर शंकनाहीं बहुरि आदर जो करैं।
सोऊसहाखल पतितपामर पापततिहतिकैतरैं १। १२०
पुनि सूत बोले मुनिनसों इमिन्नपहि संबोधित कियो।
भृगुवर्य्यमुनिसोंहरिचरितसुनि हरिभजनमहँचितदियो॥
आराध्य प्रभुहि महीपमणिगो विष्णुपदकहँ निर्भयम्।
यहदिव्यगाथा सुनै अरु पुनिकहै पावै सोजयम् २। १२१

चौ० भरद्वाजमुनियहतुमपाहीं। सहसनीकनृपचरितकहाहीं॥ बहुरिकहा अब चहतकहौसब। वर्णनकरिहैंहमनीकीढब३। १२२ जो नरसुनै पुरातनिगाथा। मुक्तिदायिनीहोन सनाथा॥ सोहरिपुरकहँ जातन शङ्का। निर्म्मल ज्ञानलहतशुभअङ्का ४। १२३॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेऽष्टाक्षरमन्त्रमाहात्म्यनिरूपणन्नाम त्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३॥

चौंसठवां अध्याय॥

दो० चौंसठयें महँ सूतनारायण भजन महत्व॥
पुण्डरीक देवर्षि सम्वादक कह्यो सतत्व १

इतनी कथा सुन भरद्वाजजीने सूतजीसे यह प्रश्नकिया कि हे सूतजी कोईलोग तो सत्य वचनकी प्रशंसा करतेहैं कोई तप की कोई शौचकी कोई सांख्यशास्त्रकी प्रशंसा करते हैं व कोई योगकी १ कोई ज्ञानकी प्रशंसा करते कोई मिट्टीकेढीले लोहे पत्थर व सुवर्ण कोसमान समझनेकी प्रशंसा करतेहैं व कोई क्षमा की बड़ाई करते व वैसेही कोई दयाकरने व सरलता से रहने की प्रशंसा करते हैं २ कोई दान करने की प्रशंसा करते कोई कहते हैं कि परमेश्वर शुभ है कोई कहते हैं कि अच्छे प्रकार का ज्ञान अच्छा होता है कोई वैराग्य को उत्तम मानते हैं ३ कोई कहते हैं कि अग्निष्टोमादि कर्म्म श्रेष्ठ हैं कोई आत्मज्ञान को सबसे श्रेष्ठ कहते हैं इसको सांख्यतत्त्व के जानने वाले प्रधान कहते हैं ४ इसप्रकार धर्म्म अर्थ काम व मोक्ष इनचारों के लिये केवल उपाय व नाशके भेदसे बहुधा ऐसा सब लोग कहते हैं ५ जब लोकमें कृत्य अकृत्यके विधान ऐसे हैं तो मनुष्य केवल व्यामोहही को प्राप्तहोते हैं अपने मनसे सब मुक्तही बैठेरहते हैं ६ इन सबों में जो परमउत्तमहोने के कारण अनुष्ठान करने के योग्य हो वह आप कहने के योग्यहैं क्योंकि सर्व्वज्ञ हैं पर इसका भी विचाररहे कि वह हमारे सब अर्थोंका साधकहो ७ सूतजी बोले कि सुनो यह संसार को छुड़ानेवाला अत्यन्तगूढ़है इसविषयमें एकपुरातनयहइतिहास पण्डितलोग कहते हैं ८ उसमें पुण्डरीकमुनि व देवर्षिनारदजी का सम्वाद है एक वेदसम्पन्न महामति पुण्डरीकनाम ब्राह्मण थे ९ वे ब्रह्मचर्य्याश्रम में टिके गुरुओं के वशमें रहते थे जितेन्द्रिय थे क्रोधको जीतेरहते व सन्ध्योपासन कर्म्ममें बड़े ने-

छिकथे १० वेद व वेदकेषडङ्गोंमें निपुणथे व षट्शास्त्रोंमें अति विचक्षणथे समिधोंसे सूर्य्य व अग्निकीसेवा प्रातःकाल यत्नसे करते थे ११ यज्ञपति विष्णुजीका ध्यानकर व श्रीविभुकी आराधनाकरतेहुये तपस्या व वेदाध्ययनमें निरतहोने से साक्षात् ब्रह्मपुत्रही के समान होगयेथे १२ जल इन्धन व पुष्पादिके आने आदि कर्म्मों से बार २ अपने गुरुओंको उन्होंने सन्तुष्ट करलियाथा माता पिताकीभी बड़ीभारी शुश्रूषाकरतेथे व भिक्षा के अन्नका आहारकरते सब जनोंको बड़ेप्रिय रहते थे १३ वेद विद्याको सदा पढ़ते व प्राणायाम करने में परायण रहते सब अर्थोंकेरूप उन ब्राह्मण देवको संसार में निस्पृहा होगई १४ हे महाराज उनकी बुद्धि संसारसागर के उतरनेकीहुई इससे पिता माता भ्राता पितामह १५ पितृव्य मातुल सखा सम्बन्धी व बान्धवोंको तृणकेसमान छोड़कर बड़ीप्रसन्नता व सुख के साथ१६ इसपृथ्वीपर शाकमूल फलाहार करतेहुये विचरने लगे उन्होंने यह विचारांश किया कि युवावस्था अनित्यहै रूप व आयुर्बलभी अनित्यहै व धन द्रव्यादिक का सञ्चयभी अनित्यहै १७ यही विचारतेहुये उन्होंने तीनोंलोकोंको भी मिट्टी के ढेलेकेसमान समझा व पुराणों के कहेहुये मार्गके अनुसार सब तीर्थोंमें विचरेंगे १८ यह अपने मनमें निश्चयकरलिया इससे गङ्गा यमुना गोमती व गण्डकी १९ शतरुद्र पयोष्णी सरयू सरस्वती प्रयाग नर्म्मदा व सब महानदियोंमें व नदोंमें गये २० फिर गया विन्ध्याचलपर के सब तीर्थ व हिमवान् पर के तीर्थ व अन्य सब तीर्थोंमें भी महातेजस्वी व महाव्रत वे मुनि गये २१ इसप्रकार वे महाबाहु यथाकाल यथा विधि सब तीर्थोंमें विचरे घूमते २ वे बीर कभी शालग्रामतीर्थ में पहुँचे२२जब महाभाग पुण्डरीकजी पुण्यकर्म्मके वशानुगहोके उस तीर्थ में पहुँचे तो उसकी सेवा तत्त्वजाननेवाले औरभी

बहुत से तपोधन ऋषिलोग करते थे २३ वह तो पुराणोंमें प्र-
सिद्धहीहै कि मुनियोंकारम्य आश्रमहै उसीतीर्थमें होकर चक्र
नदी वहीहै इससे चक्रशिलाओंसे वह चिह्नितहै २४ बड़ारम्य
विस्तीर्ण व एकान्तस्थल व सदा चित्तके प्रसन्न करनेवाला है
कोई २ प्राणीभी वहांके चक्रांकितथे इससे उनकादर्शन पुण्य-
दायकथा २५ व और भी पुण्यतीर्थ के प्रसंगसे बहुत लोग
यथेष्ट उसमें विचरतेथे उस महापुण्य शालग्रामतीर्थ में वे म-
हामति २६ पुण्डरीकजी प्रसन्नात्माहो तीर्थोंकी सेवा करने
लगे यहां सरस्वतीनदी में एक देवहृदतीर्थ है उसमें स्नानक-
रके २७ व जातिस्मरण करानेवाले चक्रकुण्ड में व चक्रनद्य-
मृतसें व वैसेही अन्यभी बहुतसेतीर्थ वहांथे सबोंमेंविचरतेथे
२८ तब क्षेत्रकेप्रभावसे व तीर्थोंके तेजसे उन महात्माकामन
बहुत प्रसन्नहुआ २९ वे श्री विशुद्धात्माहोके उसतीर्थमें योग
ध्यानकरनेमें परायणहुये व जगत्पतिकी आराधना करके उसी
तीर्थ में सिद्धिकी आकांक्षा करनेलगे ३० शास्त्रोंके कहेहुये वि-
धानसे व परमभक्तिसे निर्द्वन्द्व व जितेन्द्रियहोके कुछदिन वहां
वे बसे ३१ शाक मूल फलका आहारकरते सन्तुष्ट व समदर्शी
रहते यम नियम व आसन बांधनेसे३२ तीक्ष्णप्राणायामोंसे व
निरन्तर प्रत्याहारोंसे धारणाओंसे व ध्यानों से व समाधियों
से निरालसहो ३३ उसके पीछे उन्होंने योगाभ्यासकिया इससे
उनके सब कल्मषदूरहोगये व उनमें चित्तलगाय देवदेवेश की
आराधनाकी ३४ पुरुषार्थमें विशारद महाभाग पुण्डरीक विष्णु
में मनलगाय उनके परमप्रसादकी आकांक्षा करतेहुये ३५ शा-
लग्रामाश्रममें बसतेहुये उनमहात्मा पुण्डरीकजीका बहुतकाल
बीतगया ३६ तब हे भरद्वाजजी परमार्थज्ञानी नारदमुनिजी
एकसमय वहां आये जोकि तेजसे दूसरे आदित्यही के समान
थे ३७ और उन्हीं पुण्डरीकजीके देखनेही की इच्छासे वैष्णवोंके

हितमें रत व विष्णुकी भक्तिसे परीतात्मानारदजी वहांआये३८ सब तेजकी दीप्तिसे युक्त महामति महाप्राज्ञ सर्व्वशास्त्र विशारद श्रीनारदजीको आयेहुये देख ३९ पुण्डरीकजीने हाथ जोड़ नम्रहो व हर्षित चित्तसे यथोचित अर्घ्यदे प्रणाम किया ४० व अपने मनमें विचारा कि उत्तम वेषधारण किये तेजस्वी अति अद्भुत आकार बीणा हाथमें लिये प्रसन्नचित्त जटामण्डल से भूषित ये कौनहैं ४१ सूर्य्य हैं अथवा अग्नि वा इन्द्र वा वरुण यह चिन्तना करतेहुये परमतेजस्वी उन ब्राह्मणजीने पूँछा ४२ पुण्डरीकजी बोले कि हे परमप्रकाशवाले आप कौनहैं जो यहां आके प्राप्त हुये हैं क्योंकि बहुधा आपके दर्शन इस पृथ्वीपर अपुण्यात्माओंको दुर्ल्लभहैं ४३ नारदजी बोले कि हेपुण्डरीक तुम्हारे दर्शनके कुतूहलसे हम नारदहैं यहां प्राप्तहुये हैं क्योंकि तुम्हारे तुल्य निरन्तर श्रीहरिके भक्त ब्राह्मणका ४४ जो कोई स्मरण करता वा उसके संग सम्भाषण करता वा उसकी पूजा करता है तो वह चाण्डालभी हो पर वह द्विजोत्तम भगवद्भक्त उसे भी पवित्र करता है ४५ फिर हम तो देवदेव शार्ङ्ग धन्वा वाले श्रीवासुदेवजीके दासहैं जब भक्तिसे पर्य्याकुलात्मा नारदजीने ऐसा कहा तो ४६ उनके दर्शनसे अत्यन्त विस्मित हो वे ब्राह्मणदेव मधुर वचन बोले कि प्राणियों में हम आज धन्य हैं व देवताओंके भी पूजा करनेके योग्यहैं ४७ आज हमारे पितर कृतार्थ हुये व इस समय जन्म धरनेका फल हुआ हे नारदजी अनुग्रह कीजिये हम तुम्हारे विशेष भक्तहैं ४८ हे ब्रह्मन् अपने कर्म्मोंसे भ्रमण करतेहुये हम कौन२ कर्म्मकरें जो परमगुप्त करनेके योग्यहो उसका उपदेश देनेके आप योग्यहैं ४९ आप सब लोगोंकी परमगतिहैं पर वैष्णवोंके तो विशेष करके परमगति हैं श्रीनारदजी बोले कि हे द्विज इस संसारमें अनेक शास्त्रहैं व अनेक कर्म्म हैं ५० व वैसेही प्राणियोंके धर्म्ममार्ग्ग

भी बहुतहैं इससे हे द्विजोत्तम इस जगत्की विलक्षणताहै ५१ कोई लोग तो ऐसा कहते हैं कि यह सब जगत् ब्रह्मसे उत्पन्न होताहै व उसीमें जाकर लीनभी होजाताहै ५२ व तत्त्वोंके देखनेमें तत्पर अन्यलोग कहते हैं कि आत्मा बहुत व नित्य हैं व सबोंमें अलग २ प्राप्तहैं हे बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ ५३ इत्यादि वचनों की चिन्तनाकर व फिर जैसी उनकी मति होती व जैसा सुनते हैं नानामतों में विशारद ऋषिलोग वैसा कहते हैं ५४ परन्तु हे ब्रह्मन् एकाग्रचित्तहो सुनो तुमसे इस विषयमें घोर संसारसे छुड़ानेवाला परमगुप्त व परमार्थरूप यह कहते हैं ५५ मनुष्योंकी दृष्टि भविष्य भूत व कुछ दूरकी बातको नहीं ग्रहण करती इसलिये वर्त्तमान कालके पदार्थोंको देख निश्चित होजाती है ५६ इससे हे प्रिय एकाग्रचित्त होके सुनो जो पूँछते हुये हमसे पूर्व्वकालमें श्रीब्रह्माजीने कहाहै वह तुमसे कहते हैं हे पापरहित ५७ किसी समय ब्रह्मलोकमें स्थित कमलयोनि पितामहजीसे यथायोग्य प्रणाम करके हमने पूँछा ५८ नारद बोले कि हे देव वह कौन ज्ञानहै जो सबसे परहै व योग कौनसा है जो सबसे परहै हे पितामहजी यह हमसे निश्चय करके आप कहें ५९ ब्रह्माजी बोले कि जो पुरुष प्रकृतिसे परेहै व पचीसवां तत्त्वहै वही सब पृथ्वी जल अग्नि वायु व आकाश इन महाभूतोंका नर कहाता है ६० व नरसे उत्पन्न सब चौबीसो तत्त्व नार कहाते हैं व वेही नारही अयन स्थान उनके हैं इससे वे नारायण कहाते हैं ६१ इससे यह सब जगत् नारायणहै क्योंकि सृष्टिके समय नारायणसे उत्पन्न हुआहै व प्रलयके समय उन्हीं नारायणहीमें अच्छी तरह लीन होजाताहै ६२ इससे नारायण परब्रह्महैं व परतत्त्वभी नारायणही हैं परज्योति भी नारायण हैं परात्माभी नारायणही कहाते हैं ६३ व परसे भी पर नारायणही हैं व उनसे पर और कोई भी नहीं है इससे इस जगत्में

जो कुछ दिखाई देता है व सुनाई देता है ६४ उसके भीतर व
बाहर व्याप्तहोके नारायण स्थितहैं ऐसा जानके देवलोग बार२
साकार जानके ६५ नमोनारायणाय ऐसा कहतेहुये ध्यानकरके
फिर अन्य किसीके स्मरण करनेमें मन नहीं लगाते इससे उ-
सको दानोंसे क्याहै व तीर्थोंसे क्याहै व तपोंसे क्याहै व यज्ञों
से क्याहै ६६ जो अनन्यबुद्धिहो नित्यनारायणका ध्यानकरता
है बस यही श्रेष्ठ ज्ञानहै व यही परयोग है ६७ परस्पर एक दू-
सरेसे विरुद्ध अर्थ कहनेवाले अन्य शास्त्रोंके विस्तारसे क्याहै
जैसे बहुत मार्ग होते हैं पर एकही पुरमें वे सब प्रवेश करते
हैं ६८ ऐसेही सब ज्ञान उन्हीं नारायण ईश्वरमें प्रवेश करते
हैं क्योंकि वे नारायण सनातन देव सूक्ष्मस्वरूपसे प्रकटहो सब
में प्राप्तहैं ६९ व जगत्के आदिमें भी थे व न उनके आदि में
कुछथा न उनका अन्त कभी होताहै व अपने आप वे उत्पन्न
होते हैं फिर सबको उत्पन्न कराते हैं विष्णु विभु अचिन्त्यात्मा
नित्य व सत् असत् सबके आत्माहैं ७० वासुदेव जगद्वास पु-
राण कवि अव्यय ये सब उन्हीं नारायणके नाम हैं जिससे कि
चर अचर सम्पूर्ण त्रैलोक्य उनमें स्थितहै ७१ इससे वे भग-
वान् देव विष्णु ऐसे नाम से पुकारे जाते हैं व युगके नाश में
जिससे कि सब प्राणियों का व सब चौबीसो तत्त्वों का ७२
निवास उन्हींमें होताहै इससे वे वासुदेव कहेजाते हैं व उन्हींको
कोई पुरुष कहते हैं कोई ईश्वर कोई अव्यय ७३ कोई किञ्चित्
विज्ञानमात्र परब्रह्म कहते हैं व कोई आदि अन्तहीन काल
कहते हैं व कोई सनातन जीव कहते हैं ७४ व कोई परमात्मा
व कोई अनामय कोई क्षेत्रज्ञ ऐसा कहते हैं व कोई उनको छ-
ब्बीसवां कहते हैं ७५ व कोई अंगुष्ठमात्र उनका शरीर कहते
कोई कमलकी धूलिके समान कहते ये व और भी संज्ञाओं के
भेद मुनियोंने पृथक् २ इन्हींके किये हैं ७६ शास्त्रोंमें विष्णुहीके

सब ये नाम कहे हैं जिनसे लोगोंको व्यामोह होताहै इससे जो एकही शास्त्रहो तो संशय रहित ज्ञानहो ७७ और बहुत शास्त्रों के होनेके कारण ज्ञानका निश्चय अति दुर्लभ है इससे सब शास्त्रोंको देख व फिर २ विचार करके ७८ यह एक सिद्धान्त हुआहै कि सदा नारायण ध्यान करनेके योग्यहैं इससे व्यामोह करनेवाले सब शास्त्रोंके अर्थ विस्तारोंको छोड़के ७९ अनन्य चित्तहो निरालसहोके नारायणका ध्यानकरो ऐसा जानके उन देवदेवका निरन्तर ध्यानकरो ८० शीघ्रही वहां जाओगे व सा-युज्यमुक्ति पाओगे इसमें संशय नहीं है इसप्रकार अतिदुर्लभ ब्रह्माजीका कहाहुआ ज्ञानयोग सुनके ८१ हे विप्रेन्द्र तबसे हम नारायण परायणहुये निरन्तर ब्रह्म नमोनारायणाय यहमंत्र जो कोई अपने मुखसे कहते हैं ८२ व अन्तकालमें भी जपतेहुये प्राण छोड़ते हैं वे विष्णुजीके परमपदको जातेहैं इससे हे तात परमात्मा व सनातन देव नारायणही हैं ८३ इससे तत्त्व की चिन्ता करता हुआ पुरुष नित्यनारायणका ध्यानकरे नारायण जगद्व्यापी परमात्मा व सनातनहैं ८४ सब जगतोंके सृष्टि सं-हार व पालनमें तत्पर रहते हैं इससे श्रवण करने पढ़ने व ध्यान करने से ८५ हित चाहनेवाले पुरुष को चाहिये कि उन्हीं का ध्यानकरे हेब्रह्मन् जोलोग इच्छारहित नित्य संतुष्टचित्त ज्ञानी जितेन्द्रिय ८६ प्रीति अप्रीति विवर्जित पक्षरहित शान्तस्व-भाव सर्व्वसंकल्पों से वर्जित ममतारहित व निरहंकार होते ८७ व ध्यानयोगमें पर होते वे लोग जगत्पति को देखते हैं व महात्मा लज्जा छोड़के वासुदेव जगन्नाथ सबके गुरु श्रीहरिका ८८ कीर्त्तन करते हैं वे जगत्पति श्रीजगन्नाथजी को देखते हैं इससे हे विप्रेन्द्र तुमभी नारायणमें परहोओ ८९ नारायणसे अन्य कौन वाञ्छित देनेमें समर्थ होसक्ता है जो प्रभु निन्दापू-र्व्वक भी कीर्त्तन करतेसे अपना पद देतेहैं ९० इससे निश्चय

करके जप वेदाध्ययन नित्य तुम उन्हीं देवदेवेश श्रीनारायणही के उद्देशसे निरालसहो करो ९१ उनके विषयमें बहुत मंत्रोंसे क्याहै व वहां बहुत व्रतोंसे क्याहै नमोनारायणाय यही मंत्र सब कार्य्योंके अर्थोंका साधकहै ९२ हे द्विज श्रेष्ठ चाहे चीर वस्त्र धारणकरे वा जटाधारीहो वा दण्डधारण करे वा मूँड़मुँड़ाये रहे वा सब भूषण वस्त्रादिकोंसे भूषित रहे चिह्न धारण करना कुछ धर्म्मका कारण नहींहै ९३ क्योंकि जो मनुष्य क्रूरदुरात्मा सदा पापाचारमें रत होते हैं पर नारायणमें परायण होने से वे भी परमस्थानको जाते हैं ९४ हम देवदेव शार्ङ्गधारी श्रीवासुदेव जीके दासहैं जिसकी ऐसी बुद्धि जन्मान्तर सहस्रों के पीछे भी होती है ९५ वह पुरुष श्रीविष्णुजीकी सालोक्य मुक्ति पाताहै इससें कुछभी संशय नहीं है व जो पुरुष अपनी इन्द्रियोंको जीत कर उन्हीं नारायणहीमें अपने प्राण लगादेता है उसको क्या कहनाहै वह तो नारायणही होजाताहै ९६ सूतजी भरद्वाजजी से बोले कि यह कह परोपकार करने में निरत व तीनों लोकों के मुख्यभूषण नारदजी वहीं अन्तर्द्धान होगये ९७ व धर्म्मात्मा पुण्डरीकभी नारायणमें परायणहो नमोऽस्तुकेशवाय ऐसा फिर२ उच्चारण करतेहुये ९८ व हे महायोगिन् प्रसन्नहोओ ऐसा सदा उच्चारण करके अपने हृदय कमलमें गोविन्द जनार्दनजीका प्रतिष्ठापन करके ९९ तपस्याकी सिद्धि करनेवाले उस शालग्रामाश्रममें पुरुषार्थ करनेमें बड़े चतुर तपोधन पुण्डरीकजी बहुत कालतक बसे १०० व स्वप्नमें भी वे महातप करनेवाले केशव से अन्यको नहीं देखते थे देखो उन महात्माकी निद्राभी परमेश्वरके अर्थकी विरोधिनी न हुई १०१ तप ब्रह्मचर्य्य व विशेष शौच जन्मजन्मान्तरके आरूढ़ संस्कारसे १०२ व देवदेव सब लोगोंके एक साक्षी श्रीविष्णुजीके प्रसादसे वे ब्राह्मण पाप रहित होके परमवैष्णवी सिद्धिको प्राप्तहुये १०३ यहां तककि

सिंह व्याघ्र व वैसेही और भी प्राणियों के मारनेवाले वनके जन्तु सहज विरोधको छोड़ उनके समीप इकट्ठे होनेलगे १०४ व हे द्विजश्रेष्ठ सब अपनी इन्द्रियों की वृत्तियों को शान्त कर वहां बसनेलगे फिर कभी धीमान् पुण्डरीकके समीप श्रीभगवान् १०५ पुण्डरीकाक्ष जगन्नाथ आय प्रकट हुये जोकि शंख चक्र गदा हाथोंमें लिये पीताम्बर ओढ़े पुष्पोंकी माला पहिने थे १०६ श्रीवत्ससे शोभित श्रीवास कौस्तुभमणिसे भूषितथे गरुड़पर आरूढ़हो अंजनके पर्व्वतकेसमान शोभित होते १०७ उस समय सुमेरुके शृंगपर आरूढ़ बिजुली समेत श्यामबादल के समान शोभाथी व मोतियोंकी झालर लटकतेहुये चांदीके छत्रसे शोभितथे १०८ व चामर व्यजनादि सब अपूर्व्वथे उनसे भी शोभित होतेथे उन देवदेवेशको देखकर पुण्डरीकजी हाथ जोड़के १०९ शिरके बल भूमिपर गिरपड़े व भयके मारे और भी अवनत होगये व मानों हृषीकेशजीको दोनों नेत्रोंसे पानही कियेलेतेथे इससे बनाय आकुल होगयेथे ११० फिर पुण्डरीक बड़ीभारी तृप्तिको प्राप्तहुये बहुत दिनोंसे नारायणजीका दर्शन चाहतेथे इससे उन्हींको देखतेहुये खड़े होरहे १११ तब भगवान् कमलनाभ त्रिविक्रमजी उन मुनिसे बोले कि हे महामते वत्स पुण्डरीक हम तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहुये ११२ तुम्हारे मन में जो वर्त्तमानहो वर मांगो देंगे सूतजी भरद्वाजजीसे बोले कि देवदेवका भाषित इतना वचन सुन ११३ महामति पुण्डरीक जीने यह विज्ञापित किया पुण्डरीकजी बोले कि कहां मैं अत्यंत दुर्बुद्धि व कहां अपना हित अच्छीतरहसे देखना ११४ इससे हे माधव हे देवेश जो मेरा हितहो उसे आपही विज्ञापितकरें जब पुण्डरीकने ऐसा कहा तो अच्छीतरह प्रसन्नहो श्रीभगवान्जी फिर ११५ हाथ जोड़े समीप खड़ेहुये पुण्डरीकजी से बोले कि हे सुव्रत तुम्हारा कुशलहो हमारेही साथ आओ ११६

हमाराही रूप धारण किये नित्यात्माहो हमारेही पार्षद होओ सूतजी बोले कि भक्तवत्सल श्रीधरजीके ऐसा कहतेही ११७ देवताओंके नगारे बाजे व पुष्पोंकी वर्षाहुई व इन्द्रादि देवता व सिद्धों ने साधु २ उच्चारण किया ११८ सिद्ध व गन्धर्वोंने गाया व किन्नरोंने विशेष गानकिया फिर उन मुनिको लै जगत्पति श्रीवासुदेवजी ११९ सब देवताओंसे नमस्कृतहो गरुड़ पर आरूढ़ होके चलेगये इससे तुमभी हे विप्रेन्द्र विष्णुभक्ति से युक्तहो १२० उन्हींमें चित्त लगा व उन्हींमें अपने प्राण पहुँचाके व भक्तोंके हित करने में तत्परहो यथायोग पूजा करके पुरुषोत्तमजीको भजो १२१ व ॥

चौ० सर्व्वपाप नाशिनि हरिगाथा। पुण्यरूप सुनि होहु सनाथा॥ ज्यहि उपायसों विष्णु द्विजेन्द्रा। सर्व्वेश्वर बाहनविहगेन्द्रा १। १२२ विश्वात्मा प्रसन्न तुमपाहीं। होहिं करहु सो मृषा न काहीं॥ अश्वमेधशत अरु बजपेया। सहस किये जो गति नहिंछैया २। १२३ नारायणसों बिमुख परानी। लहहिं पुण्यगति नहिं हम मानी॥ अजर अमर नहिं आदि न अन्ता। निर्गुण सगुण आदि भगवन्ता ३। १२४ स्थूलसूक्ष्म अत्यंत निरूपम। उपमा योग्य योगि ज्ञानंगम॥ त्रिभुवन गुरु त्वहिं नमत महेशा। है प्रपन्न बिनवों भक्तेशा ४। १२५॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेपुण्डरीकनारदसंवादे चतुष्षष्टितमोऽध्यायः ६४॥

पैंसठवां अध्याय॥

दो० पैंसठयें महँ विष्णुके गुह्य क्षेत्र सहनाम॥
सूतकह्यो मुनिसों सकल जो सबपूरणकाम १॥

इतनी कथा सुन फिर भरद्वाजजीने पूँछा कि तुमसे अब श्री हरिके गुह्यक्षेत्र सुना चाहते हैं व उनके पाप हरनेवाले नामभी बताओ १ सूतजी बोले कि मन्दराचल पर बैठेहुये शंख चक्र

गदा धारण कियेहुये देवदेव केशव श्रीहरिदेवसे ब्रह्माजी एक समय पूँछनेलगे २ ब्रह्माजी बोले कि हे हरिजी किन २ क्षेत्रों में हमारे व मुक्तिकी कामना कियेहुये भक्तोंके देखनेके योग्य विशेष रीतिसे हो ३ हे जगन्नाथ जो तुम्हारे गुह्यनाम व क्षेत्रहों व हे पद्मके समान विस्तृत नेत्रवाले तुमसे हम सुना चाहते हैं ४ निरालस होके मनुष्य क्या जपताहुआ सुगति पाताहै हेसुरेश्वर अपने भक्तों के हितके लिये वह हमसे कहो ५ श्रीभगवान्जी बोले कि हे ब्रह्मन् हमारे गुह्यनाम व गुह्यक्षेत्र अभी सुनो हम निश्चयसे कहते हैं ६ कोकामुख क्षेत्रमें हमारा बाराहनामहै व मन्दराचलपर मधुसूदन कपिलद्वीपमें अनन्त प्रभासमें रविनन्दन ७ वैकुण्ठमें माल्योदपान महेन्द्राचलपर नृपात्मज ऋषभमें महाविष्णु व द्वारका में भूपति ८ पाण्डुसह्य पर देवेश वसुरूढ़में जगत्पति वल्लीवटमें महायोग चित्रकूटपर नराधिप ९ नैमिशमें पीतवास गोनिःक्रमण अर्थात् गोप्रतारतीर्थ में श्रीहरि शालग्रामक्षेत्रमें तपोवास व गन्धमादन पर अचिन्त्य १० कुब्जागारमें हृषीकेश गन्धद्वारमें पयोधर सकलमें गरुड़ध्वज व सायकमें गोविन्दनामहै ११ वृन्दावनमें गोपाल मथुरा में स्वयम्भुव केदारमें माधव व वाराणसीमें माधव १२ पुष्कर में पुष्कराक्ष धृष्टद्युम्नमें जयध्वज तृणविन्दुबनमें वीर सिंधुसागरमें अशोक १३ कसेरटमें महाबाहु तैजसबनमें अमृत विश्वासयूपमें विश्वेश महावनमें नरसिंह १४ हलांगरमें रिपुहर देवशालामें त्रिविक्रम दशपुरमें पुरुषोत्तम कुब्जकमें वामन १५ वितस्तातीरपर विद्याधर वाराहक्षेत्रमें धरणीधर देवदारु वनमें गुह्य कावेरी में नागशायी १६ प्रयागमें योगमूर्त्ति पयोष्णी में सुदर्शन कुमारतीर्थमें कौमार लोहितमें हयशीर्षक १७ उज्जयिनीमें त्रिविक्रम लिंगकूटमें चतुर्भुज भद्रामें हरिहरको देख पापसे छूटजाताहै १८ कुरुक्षेत्रमें विश्वरूप मणिकुण्डमें हला-

युध अयोध्याजीमें लोकनाथ कुण्डिनमें कुण्डिनेश्वर १९ भा-ण्डारमें वासुदेव चक्रतीर्थमें सुदर्शन आढ्यमें विष्णुपद शूकर में शूकरहीनाम कहाजाता है २० मानसतीर्थमें ब्रह्मेश दण्ड-कारण्यमें श्यामल त्रिकूटपर नागमोक्ष व मेरुपृष्ठपर भास्कर २१ पुष्पभद्रामें बिरज केरलकमें बाल विपाशाके तीरपर यशस्कर व माहिष्मतीमें हुताशन २२ क्षीरसागरमें पद्मनाभ विमलमें सनातन शिवनदी में शिवकर गया में गदाधर २३ व सर्व्वत्र परमात्मा इससे जो सर्व्वत्र परमात्माको देखताहै वह भवबंधन से छूटजाताहै अरसठनाम हमने तुमसे कहे २४ व इतनेही गुह्य क्षेत्रभी विशेषतासे कहे हैं ब्रह्मन् इतने हमारे नाम २५ जोकोई प्रातःकाल उठके पढ़े वा नित्यसुने वह लक्ष गोदान करने का फलपावे २६ प्रतिदिन स्नानादि करके पवित्रहो इतने नाम जो पढ़े उसको हमारे प्रसादसे दुस्स्वप्न नहो इसमें संशय नहींहै २७ अरसठनाम जो मनुष्य त्रिकालपढ़े वह सब पापोंसे वि-मुक्तहो हमारे लोकमें जाके हर्षित होता रहे २८ यथाशक्ति म-नुष्योंको ये क्षेत्र देखनेचाहियें वैष्णवोंको तो विशेष करके देखने चाहियें क्योंकि इनकेदेखनेवालोंको हमअवश्य मुक्तिदेतेहैं २९॥

चौपै० तब सूत सुबोले वचन अमोले जो पूजे हरिकाहीं।
कैताके आगे अति अनुरागे सुमिरे विष्णु सदाहीं॥
हरिबासरमाहीं बहुफलकाहीं तादिन पढ़े विशेखी।
पावेहरिलोका विगतविशोकास्तोत्रपढ़े जो देखी १।३०

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेपञ्चषष्टितमोऽध्यायः ६५॥

छाछठवां अध्याय॥

दो० छासठयहुँ महँ तीर्थ के नाम नये प्राचीन॥
कहे सूतमुनि सों बहुत देखहिं लोग प्रवीन १

सूतजी बोले कि हे ब्रह्मन् इननामोंसे श्रीहरिका एकस्तोत्र उत्पन्नहुआ अब और जो नाम हैं वे भी हमसे सुनो १ प्रथम

सब पुण्य गंगातीर्थ है फिर यमुना फिर गोमती सरयू सरस्वती चन्द्रभागा चर्म्मण्वती२ कुरुक्षेत्र गया तीनोंपुष्कर अर्ब्बुद व महापुण्य नर्म्मदा इतने तीर्थ उत्तरदेशमें हैं३ तापी पयोष्णी ये दोनों बड़ी पुण्य नदियां हैं इनदोनोंके संगमपर उत्तम तीर्थ व वैसेही ब्रह्मवती आदिकी मेखलाओंसे बहुत तीर्थ बनेहैं४ सब पापों के क्षय करनेवाला एक विरज नाम महातीर्थ है व गोदावरी नदी सब कहीं महापुण्यवती है हे मुनिसत्तमो ५ व तुंगभद्रा महापुण्या नदी है हे कमलोद्भव जहां मुनियोंसे पूजित हो हम महादेवके साथ प्रीतिसे बसते हैं६ व दक्षिण गंगात-रंगा कावेरी विशेषनदी व सह्यपर्व्वतपर आमलकग्राममें हम टिके रहते हैं हे कमलोद्भव ७ व देवदेवके नामसे हे ब्रह्मन् तुम हमारी वहां सदा पूजा करतेहो वहांभी सब पापोंके हरनेवाले अनेक तीर्थ हैं जिनमें स्नानकरके व उनका जल पीके मनुष्य पापोंसे छूटताहै ८ इस प्रकार मधुसूदन भगवान् ब्रह्मासे तीर्थ कहके चलेगये व ब्रह्माजी भी अपने पुरको चलेगये ९ भरद्वाज जी इतनी कथा सुनकर फिर बोले कि उस आमलकग्राममें जि-तने पुण्यतीर्थ हैं हे धर्म्मज्ञ वे सब हमसे यथार्थ से वर्णनकरो १० क्षेत्रकी उत्पत्ति तीर्थयात्रापर्व्व वहां जो कुछ होताहो सब कहो क्योंकि वहां ये देव देवेश ब्रह्माजी से आप पूजितहोतेहैं ११ सूतजी बोले कि हे महामुने पापनाशनेवाले व पुण्य स-ह्यामलक तीर्थ की उत्पत्त्यादि हम कहतेहैं सुनो १२ पूर्व्वकाल में सह्यपर्व्वतके बनके उत्तम विभागमें एकआमलकी अर्थात् औरकाबड़ाभारीवृक्षथा पण्डितलोग उसका महोग्रनाम कहते थे १३ उसवृक्षके फल बहुतबड़े व रसीले मीठेहोतेथे देखनेमेंभी बहुतदिव्यथे पर वृक्षऊंचाथा इससे दुर्लभथे १४ तब सब श्रेष्ठ ब्राह्मणोंसेभी श्रेष्ठ ब्रह्माजी महाफलोंसेयुक्त उसबड़ेभारी वृक्षको देख१५ विचारनेलगे कि यह क्यापदार्थहै फिर ध्यानकीदृष्टिसे

देखा तो अच्छीतरहदिखाईदिया कि यहआमलकीकावृक्षहै १६ उसके ऊपर शंख चक्र गदाधारणकियेहुये मनुष्य व देवताओं के स्वामी श्रीविष्णुजीको देखा फिर जब उठकर देखा तो खाली केवल प्रतिमाथी १७ तब उसवृक्षकेनीचेजाय ब्रह्माजी बनाय जड़केपास बैठेव देवदेवेश अव्यय श्रीविष्णुजी की आराधना करनेलगे १८ लोकके पितामह ब्रह्माजी गन्ध पुष्पादिकों से नित्य पूजाकरनेलगे द्वादश वा सप्तसंख्याओंसे नित्य श्रीहरि की पूजा ब्रह्माजी करते १९ फिर हे मुनिश्रेष्ठ उसतीर्थका माहात्म्य न कहसके श्रीसह्यामलकग्राम में अव्यय देवताओंके देव व ईश श्रीविष्णुजीकी२० आराधना करनेसे बारहमूर्त्तियों कीपूजाकरने के लिये बारह ब्रह्माहोगये व उसवृक्ष की जड़ से विष्णुकेचरणसे एक पश्चिममुखको तीर्थनिकला२१ वह पुण्य पापनाशन चक्रनाम तीर्थ होगया चक्रतीर्थ में स्नान करके मनुष्य सब पापोंसे छूटताहै २२ व बहुत सहस्रोंवर्षतक जाके ब्रह्मलोकमें पूजितहोताहै वहीं एकशंखतीर्थ भी हुआ उसमें स्नानकरके मनुष्य वाजपेययज्ञका फलपाताहै २३ पौषमासमें जब पुष्यार्क योग पड़ता है तब उस तीर्थ की यात्रा का दिन होताहै पूर्व्वकालमें गङ्गाजलसे भरीहुई ब्रह्माजीकी कूँड़ी उस पर्व्वतपर गिरपड़ी थी २४ जहां पर्व्वतपर वह ब्रह्माजीकी कूँड़ी गिरीथी वहां एक अशुभ हरनेवाला तीर्थ होगया उसतीर्थ का कुण्डिकातीर्थ नामहुआ उसके समीप एकशिलागृहभी बनगया २५ उसतीर्थमें जैसेही कोई मनुष्य स्नान करताहै वैसेही सिद्धहोजाताहै व जो मनुष्य तीनरात्रि वहां व्रतकरके फिर स्नानकरताहै २६ वह सब पापोंसे विनिर्म्मुक्तहो ब्रह्मलोकमें जाके औरोंसे पूजितहोताहै कुण्डिकातीर्थ से उत्तर व पिण्ड तीर्थ से दक्षिण२७ तीर्थोंमें गुह्य व उत्तम ऋणमोचन तीर्थ है तीनरात्रि वहां रहकर जो स्नानकरता है २८ हे ब्रह्मन् वह

तीनों ऋणोंसे छूटजाता है इसमें संशय नहींहै व पिण्डस्थान में जो अपने पितरोंका श्राद्धकरता है २९ व पितरोंकेलिये सुन्दरपिण्ड बनाकर देताहै उसके पितर अच्छीतरहसे तृप्तहोके पितृलोकको जातेहैं इसमें कुछ भी संशय नहीं है ३० व वहीं एक पापमोचनतीर्थ है उसमें जो पांचदिन रहके स्नानकरता है सब पापोंको क्षयकरके विष्णुलोकमेंजाके मोदित होताहै३१ व वहीं बड़ीभारीधारा जो शिरपरधारण करता है वह सबयज्ञों का फलपाके स्वर्गलोकमें पूजित होताहै ३२ वहीं एक धनुःपातनाम महातीर्थ है उसमें जो स्नानकरताहै वह आयुर्य्योग फलपाकेस्वर्गलोकमें पूजितहोताहै३३व वहींशरविन्दुतीर्थमें स्नानकरके मनुष्य इन्द्रलोक को जाताहै व सह्यपर्व्वतपर वाराहतीर्थ में जो स्नान करता है ३४ व एकदिनरात्रि वहां बसताहै वह विष्णुलोक में जाके पूजितहोताहै व सह्यहीपर एक आकाश गंगानाम उत्तमतीर्थ है ३५ उसमें शिलाकेनीचे से श्वेतमृत्तिका निकलाकरतीहै उसमें जो मनुष्य स्नान करताहै हे द्विजवरोत्तम ३६ सब यज्ञोंका फलपाके विष्णुलोकमें जाके पूजितहोताहै हे ब्रह्मन् आमलसह्यपर्व्वत से जो २ जल निकलताहै ३७ वहां तीर्थही जानो व उसमें स्नानकरने से पापों से छूटजाता है इससे जैसेही सह्यपर्व्वतपर कोई गया व स्नान किया कि सब पापों से छूटगया ३८ सह्यपर्व्वतपर उत्पन्न इन पुण्यतीर्थोंमें जो मनुष्य नरोंके इन्द्र श्रीहरिको सुन्दर पुष्प भक्तिसे देताहै वह पापसे छूट श्रीविष्णुजीमें प्रवेशकरताहै३९ अन्यतीर्थोंकेजलोंमें एकबारका स्नानकरना बहुतहै व गंगाजी में तो बार२ स्नानकरना चाहिये क्योंकि गङ्गा सब्बतीर्थमयी हैं व श्रीहरि सर्व्वदेवमय हैं ४० गीता सब्बशास्त्रमयी है व सब धर्म्म दयापर है हे विप्र इसरीतिसे तुमसे उत्तम क्षेत्रोंका माहात्म्य कहा ४१ व श्रीसह्यामलकग्राम के तीर्थों में स्नान क-

रनेका माहात्म्य व फलभी कहा है द्विजसत्तम तीर्थोंकाभी जो तीर्थ है वह वह है जो देवदेव श्रीविष्णुजी के चरणकेनीचे से निकला है ४२ दोनों जल सहस्र अश्वमेधयज्ञोंके तुल्यहैं सो वे दोनों वेदवादीलोग चक्रतीर्थको बतातेहैं इससे उसमें स्नान करने से मनुष्य फिर नहीं जन्मलेते व श्रीमधुसूदनजीके पादों के प्रणाम करके भी जन्म नहीं पाते ४३ ॥

हरिगीतिका ॥

गंगा प्रयाग सुपुण्यपुष्कर यमुन कुरुजांगल घने ॥
नैमिषरु काशी आदिजल सबबहुतकालन अघहने ॥
पर हरिचरण जल तुरतही हरि पाप पावनही करे ॥
यासोंनिरन्तरसकलजन हरिचरणजलपीकैतरे १।४४॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेतीर्थप्रशंसाकरणे षट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय ॥

दो० सरसठयें अध्याय महँ मानसितीर्थ बखान ॥
अरुअगस्त्यजलदानविधिग्रन्थसमाप्तिसमान१

सूतजी भरद्वाजजीसेबोले कि हे द्विजसत्तम इसप्रकार पृथ्वी से उत्पन्न भौम सब तीर्थ तुमसे हमने कहे परन्तु मानसी तीर्थ विशेष फलदायक होतेहैं१ मन निर्म्मलरखना तीर्थहै व रागादिकोंसे व्याकुल नहोनाभी तीर्थहै सत्य तीर्थहीहै सबकेऊपर दयाकरनाभी तीर्थहीहै व इन्द्रियोंको जीतना तीर्थहै २ गुरुकी शुश्रूषा तीर्थ व माताकीसेवा तीर्थ है अपने धर्म्मका करना तीर्थ व अग्निकी उपासनाकरना अर्थात् होमकरना तीर्थहै ३ इतने तो पुण्यतीर्थहैं अब हमसे इससमय व्रतसुनो दिन रात्रिमें एकहीबार भोजनकरना व्रतहै व दिनभर कुछतखाना कुछ दिनरहेका भोजन वा दोघड़ी रात्रिबीतेकाभोजन नक्तव्रत कहाताहै४पूर्णमासी व अमावास्याको एकबार भोजनकरे क्योंकि

इनदोनों तिथियोंमें एकबार भोजनकरनेसेप्राणी पुण्यगति पाता है५व चतुर्थी व चतुर्दशी व सप्तमी को नक्तव्रतकरे व अष्टमी और त्रयोदशीको भी क्योंकि इनमें नक्तव्रत करनेसे वाञ्छित फल मिलताहै ६ हे मुनिश्रेष्ठ नरसिंहजीकी अच्छेप्रकार पूजा करके एकादशीकेदिन उपवास करनेसे सब पापोंसे करनेवाला छूटताहै ७ जिसदिन रविवासरको हस्तनक्षत्रहो उसदिन सौर नक्तव्रत करनाचाहिये व उसदिन स्नानकर सूर्य्यके मध्यमें श्री विष्णुका ध्यानकर सब रोगोंसे छूटताहै ८ जब अपनेसे दूनी छाया दिनमेंहो उसीका सौरनक्त नाम जानो रात्रि में भोजन करनेका नक्त नहींनामहै ९ गुरुवारयुक्त त्रयोदशी तिथिमें प्रहर भर दिनचढ़ेके लगभग तिल तण्डुल जलसे देवों ऋषियों व पितरों का तर्प्पण करके १० व नरसिंहजी की पूजाकरके जो उपवास करताहै वह सब पापोंसे छूटके विष्णुलोक में जाकर पूजित होताहै ११ हे महामुने जब अगस्त्यमुनि उदयको प्राप्त हों तो सात रात्रियोंतक पूजाकरके महात्मा अगस्त्यजी को अर्घ्य देनाचाहिये १२ शंखमें जलभर श्वेतपुष्प व अक्षत छोड़ श्वेत पुष्पादिकोंसे पूजित अगस्त्यजीको नीचे लिखेहुये मन्त्रसे अर्घ्यदे १३ ॥

श्लोक काशपुष्पप्रतीकाश अग्निमारुतसम्भव ॥
मित्रावरुणयोःपुत्र कुम्भयोने नमोऽस्तुते १४
आतापी भक्षितोयेन वातापी चमहासुरः ॥
समुद्रश्शोषितोयेनसोऽगस्त्यःप्रीयताम्मम१५

अर्थात्

दो॰ काशपुष्पसम काशयुत अग्नि पवन सम्भूत ॥
मित्रावरुण तनूज घटभव प्रणमत है पूत १ । १४
आतापिहि भक्षण कियो अरु वातापि महान ॥
जो शोष्यहुजलनिधिप्रसनसोअगस्त्यभगवान२।१५

इसतरह जो कोई अगस्त्यजीकी दक्षिणदिशाकी ओरमुख कर अगस्त्यजीको जलदानकरता है वह सब पापोंसे छूटकर दुस्तर अन्धकारको तरताहै १६ हे महामुनि भरद्वाज मुनियों केसमीप हमने तुमसे इसप्रकार नरसिंहपुराणकहा १७(सर्ग) सृष्टि (प्रतिसर्ग) ब्रह्मादिकोंकी सृष्टि (वंश) मनु आदिराजा-ओं व ऋषियों का वंश (मन्वन्तर) स्वायम्भुवादि १४ (वं-शानुचरित) सूर्य्यवंशी सोमवंशी राजाओंके चरित यह सब इसपुराणमें क्रमसे हमने कहा १८ यह पुराण प्रथम ब्रह्माजीने मरीच्यादि ऋषियों से कहा था व मरीचिजीने फिर अन्य सब ऋषियों से कहा तब मार्कण्डेयजीने भी सुना १९ फिर मार्क-ण्डेयजीने नागकुलमें उत्पन्न राजासे कहा फिर नरसिंहजी के प्रसाद से धीमान् श्रीव्यासजी ने पाया २० उनके प्रसाद से हमने पाया सो सब पाप नाशनेवाला यह नरसिंहजीका पुराण हमने तुमसे २१ मुनियोंके समीप कहा तुम्हारेलिये स्वस्तिहो अब हम जातेहैं जो कोई पवित्र हो यह उत्तमपुराण सुनता है २२ वह माघमासमें प्रयागमें स्नान करने का फलपाता है व जो कोई श्रीनरहरिकी भक्तिसे नित्य यह पुराण सुनाताहै २३ सब तीर्थों का फल पाके विष्णुलोक में जाके पूजित होता है ब्राह्मणोंके साथ इसे सुन महामुनि भरद्वाजजी २४ ॥

चौ० सूतहि पूजि तहां मुनिसंगा। बसे जहां जनपावन गंगा ॥ सबमुनिगे जहँतहँ यहगावा। सर्व्वपापहर पुण्यप्रभावा १।२५ जो पुराण यह सुनत सुनावत। कै प्रसन्न त्यहि हरिअ-पनावत ॥ देवदेव जब होतप्रसन्ना। सर्व्वपाप क्षयकरत ससन्ना २।२६ क्षीणपापबन्धनसों लोगा। पावतमुक्ति रहित सबशोगा॥ यामहँ नहिं सन्देह कछूका। सुनत पुराण पापक्षोटूका ३।२७॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेश्रीनसततीर्थकथनन्नाम सप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७॥

अरसठवां अध्याय ॥

दो० अरसठयें अध्यायमहँ कही फल स्तुति सूत ॥
सो सुनिमनगुनियहिपढ़हुकरिनिजमनमजबूत १

चौ० बोले सूत सुनहु मुनिराया। यह नरसिंहपुराण सुनाया ॥ सर्व्व पापहर पुण्यप्रदायक। दुःख निवारण अति मन भायक १। १ सकल पुण्यफलदायि पुराना। सर्व्वयज्ञ फलदान बखाना ॥ जो पढ़िहैं सुनिहैं यहि केरो। पूर्ण अर्द्धवा श्लोकसु टेरो २। २ तिन्हें पापबन्धन नहिं कबहूँ। होतकहत मुनिकैचित सबहूँ ॥ यह विष्णवर्प्पित सकल पुराणा। पुण्यसर्व्वकामद परमाणा ३। ३ करि हरिभक्ति पढ़ें जो सुनईं। तिनके फल सुनिये हम भनईं ॥ शतजन्मार्ज्जित पापसमूहा। छूटत तुरत करतबहु हूहा ४। ४ अरु सहस्रकुल युतते प्राणी। जाहिं परमपद मृषा न बाणी ॥ काह तीर्थका धेनु प्रदाना। का तप का मखकिये विधाना ५। ५ जो प्रतिदिन हरितत्पर होई। सुनत पुराण सकल अघखोई ॥ जो उठि प्रात कबहुँ नरकोई। पढ़े पद्य बीसकमन गोई ६। ६ ज्योतिष्टोम यज्ञफल पाई। पूजित होवत हरिपुर जाई ॥ यह पवित्र अरुपूज्य पुराना। अज्ञानी सों कबहुँ नभाना ७। ७ विष्णुभक्त विप्रनके लायक। याकर श्रवण सकलसुखदायक ॥ यहि पुराणकर श्रवण महाना। यहां वहां सब सुखद बखाना ८। ८ श्रोता अरु पाठकगणकेरे। त्वरित पापनाशत नहिंदेरे ॥ यहिमहँ कहा बहुत अचभ्मने। सुनहु मुनीश्वर करहु प्रमाने ९। ९ श्रद्धासों वा श्रद्धाहीना। उत्तमसुनें पुराण प्रवीना ॥ भरद्वाज आदिक मुनि वृन्दा। भे कृतकृत्य द्विजाग्न्य विनिन्दा १०। १० हर्षितह्वै किय सूत सुपूजा ॥ मनसों छोड़ि सकलविधि दूजा ॥ गेसब निज निज आश्रमकाहीं। सुमिरत सुमिरत हरि मनमाहीं ११। ११ ॥

इतिश्रीनरसिंहपुराणेभाषानुवादेऽष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

हरिगीतिका ॥

मुनिवेदनवशशि१९४७शरदऽसितरविदशमिभाद्रसुमासमें।
भाषानुवाद महेशदत्त प्रसाद हरि हिय बास में ॥
किय पाय परम निदेश नवलकिशोरजी को पावनो।
नरसिंह विशद पुराण केरो श्रवण सुखद सुहावनो १

शार्दूलविक्रीडितम् ॥

संवत्सप्तपयोधिनन्दविधुगेपक्षेऽवलक्षेरवौ।
भाद्रेशाहजहांपुरेनरहरेर्दिव्यम्पुराणंयमे ॥
भाषाबद्धमकार्य्यपण्डितमुदेक्षाम्यन्तुतद्विद्वरा।
शर्मार्थ्वेप्सुमहेशदत्तसुकुलेराज्ञापितैश्श्रीमता २

दो० स्वस्ति श्री शुभगुणसदन मुन्शीनवलकिशोर ॥
दानमान बुधजनन को करत सदा नहिं थोर ३
यद्यपिगुण मण्डितसकल पण्डित पण्डितआप ॥
मानितवर भूपालके पर अमान गत दाप ४
मान देत गुणलेत कहि देत मधुर वर बैन ॥
तासों सुनि मन गुनिभले होत बुधन मन चैन ५
सो शोचत बहुकाल सों सकलपुराण समूह ॥
भाषा माहिं प्रचारनो करवावन करि ऊह ६
बहुत कराये जगत हित छपवाये ते भूरि ॥
स्वल्पमूल्य पर दीन हित भेजिदेत बहु दूरि ७
तिन मोहूँको आदरी आज्ञाकरी बहोरि ॥
तुम नरसिंहपुराण की भाषा करहु निचोरि ८
जासों संस्कृत पठित नर थोड़ेही यहि देश ॥
भाषा पाठक बहु यही भाषा करन निदेश ९

दोवै। सुकुलबहोरणरामतनय वर धीर धीर मणि नामा।
तासुइन्द्रमणिसुत तासुत बिश्राम रामगुण धामा ॥
तासुतनुज श्रीरजावन्द सुखकन्द द्विजन में ठीके।

अवधराम शुभनाम सकलसुखधाम तासुसुतनीके १०
विप्र महेशदत्त सुतताके बारहबङ्कि प्रदेशा।
वहिरालयजनपद गोमतितट धनावली कृतवेशा॥
मैं उनकी आज्ञाधरि शिरपर श्री नरसिंहपुराना।
भाषाकीनयथामतिबहुविधिकरिकैनिजचितध्याना ११
प्रतिश्लोक प्रतिचरण बहुरि प्रतिपद भाषांतरकीनी।
तदपि भूल जो होइ कहूँ बुध देखहिं दृष्टि प्रवीनी॥
पढ़ेंसुधारि सकल निज मतिसों मोपर करें सनेहू।
जासोंभ्रान्ति धर्म्म पुरुषनको भूलत सबन सँदेहू १२

समाप्तमिदन्नरसिंहपुराणम्॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
अक्टूबर सन् १८९० ई०॥